हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

मतदाता सूची की शुचिता

यह एक रोचक तथ्य है। इस समय दुनिया की चिंता और चर्चा के केंद्र में आए वेनेजुएला की जितनी कुल आबादी है, उससे कहीं ज्यादा मतदाताओं के नाम उत्तर प्रदेश की मतदाता सूची से बाहर हो गए हैं। देश के 12 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में इस समय मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का काम चल रहा है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश से जिस बड़ी संख्या में नाम हटाए जाने की सूचना आई है, वह कई लोगों को चौंका सकती है। चुनाव आयोग द्वारा जारी ब्योरों के मुताबिक, राज्य के 2 करोड़, 89 लाख मतदाताओं के नाम हटा दिए गए हैं। मंगलवार को उत्तर प्रदेश की जो मसौदा सूची जारी की गई, वह बताती है कि राज्य में 46.23 लाख मतदाताओं की मृत्यु हो चुकी है, जबकि 2.17 करोड़ मतदाता या तो अपने दर्ज पते पर नहीं मिले या वे कहीं और चले गए हैं। लगभग 25.47 लाख मतदाताओं के नाम एक से अधिक जगहों पर पाए गए हैं। आयोग ने मतदाताओं को मौका दिया है कि वे 6 फरवरी तक अपनी आपत्ति दर्ज करा सकते हैं। जाहिर है, 2.17 करोड़ मतदाताओं के लिए यह आखिरी मौका है और उन्हें अपनी सजगता का परिचय देना चाहिए।

निस्संदेह, यह कवायद आसान नहीं है, इसीलिए चुनाव आयोग को तीखी आलोचना झेलनी पड़ी कि उसने इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए बहुत कम समय मुकर्रर किया है। एसआईआर से जुड़े अधिकारियों पर किस कदर दबाव था, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अनेक बूथ स्तर अधिकारियों (बीएलओ) ने खुदकशी कर ली, और कई ने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट को हस्तक्षेप करना पड़ा। चुनाव आयोग इस आलोचना से कभी मुक्त नहीं हो सकता कि उसने इस ऐतिहासिक काम को विवादास्पद बना दिया। अव्वल तो बिहार विधानसभा चुनाव से ऐन पहले उसने आनन-फानन में एसआईआर का एलान किया। उसमें भी अपनी पात्रता सिद्ध करने के लिए मतदाताओं से ऐसे प्रमाणपत्र मांगे गए, जो बड़ी संख्या में वोटर को मतदाता सूची से बाहर कर देते। आखिरकार नागरिक संगठनों और राजनीतिक पार्टियों की गुहार के बाद सुप्रीम कोर्ट को हस्तक्षेप करना पड़ा और आयोग को आधारकार्ड को मान्य दस्तावेज मानने के लिए बाध्य होना पड़ा। विडंबना यह है कि आयोग की इस कवायद के खिलाफ दायर याचिकाओं पर शीर्ष अदालत का अंतिम निर्णय आने से पहले बिहार में नई विधानसभा गठित हो चुकी है और सरकार वजूद में आ चुकी है। एक सफल लोकतंत्र के लिए यह आदर्श स्थिति नहीं हो सकती।

एसआईआर के जरिये चुनाव आयोग को पारदर्शिता की नजीर पेश करनी चाहिए थी, पर दुर्योग से वह तारीख-दर-तारीख सुप्रीम कोर्ट में सफाई पेश कर रहा है।

दो दशकों के बाद हो रहे एसआईआर के जरिये चुनाव आयोग को पारदर्शिता की ऐसी नजीर पेश करनी चाहिए थी, जिससे विश्व के तमाम लोकतंत्र उससे सबक लेते, मगर दुर्योग से वह तारीख-दर-तारीख सुप्रीम कोर्ट में अपनी सफाई पेश कर रहा है। यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट को उसे निर्देश जारी करना पड़ा है कि जिनके नाम मतदाता सूची से हटाए जा रहे हैं, उसे भी सार्वजनिक किया जाए, जबकि यह पारदर्शिता का बुनियादी तकाजा था। चुनाव आयोग का मुख्य दायित्व मतदाताओं के हितों की रक्षा करना है। राज्य-दर-राज्य बड़ी संख्या में वोटरों की छंटनी के बाद उसे देश को मुत्मईन करना होगा कि उसकी कवायद पूर्णतः दोषरहित है। आयोग को नहीं भूलना चाहिए कि उसकी प्रतिष्ठा इस एक बुनियाद पर टिकी है कि वह हिन्दुस्तान की सभी राजनीतिक पार्टियों और तमाम मतदाताओं को एक समान धरातल मुहैया कराता है!

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले

07 जनवरी, 1951

युद्धोन्माद के बीच शांतिदूत

आज जब सारी दुनिया तेजी से तीसरे विश्वयुद्ध की ओर दौड़ रही है, पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया दो विरोधी साम्राज्यवादी शक्तियों की टक्कर से आक्रान्त है, अमरीका के नेतृत्व में पश्चिमी दुनिया खुल्लमखुल्ला लड़ाई की तैयारियां कर रही है, जर्मनी और जापान का पुनश्शस्त्रीकरण किया जा रहा है तथा सोवियत लौह आवरण के पीछे भी उतने ही वेग से हलचलें जारी हैं, एक ऐसा व्यक्ति भी है जो अपनी सहज मुस्कान और शाश्वत निर्भीकता के साथ शांति की आवाज बुलन्द कर रहा है। दिल्ली के लाल किले में उसकी यह आवाज गूंज उठी है, हिमालय की चोटियां इस आवाज को दुहरा चुकी हैं, लेक सक्सेस और फ्लशिंग मोडो के विशाल भवन उस आवाज को सुन चुके हैं और आज वही आवाज टेम्स नदी की उत्ताल तरंगों को भी उद्वेलित कर रही है।

कहना अनुचित न होगा कि यदि दौलत और सत्ता के नशे में चूर राष्ट्र क्षण भर भी उस आवाज को सुन पाते तो आज दुनिया तीसरे विश्वयुद्ध की कल्पनाओं से इतनी भयभीत न होती। और आज भी स्थिति एकदम काबू से बाहर नहीं हो पाई है। यदि आज भी वे राष्ट्र महसूस कर सकें कि विश्व-विजय का सबसे सीधा और सरल मार्ग प्रेम और शांति का है, अणु-बम अथवा उनके अन्य प्रलयकारी अस्त्र-शस्त्रों का नहीं, तो इस विस्फोटक ज्वालामुखी को शीतल उपजाऊ मैदान में परिवर्तित होते अधिक देर न लगे।

राष्ट्रमंडलीय सम्मेलनः लंदन में राष्ट्रमंडल के प्रधानमंत्रियों का सम्मेलन इस सप्ताह प्रारंभ हो चुका है। उसमें समस्त संसार की वर्तमान परिस्थितियों पर विचार-विमर्ष किया जा रहा है। शांति का यह अग्रदूत नेहरू स्पष्ट शब्दों में कह चुका है कि विश्व-शांति का रास्ता शस्त्रीकरण की यह पागल दौड़ नहीं, जनता की प्रगति तथा समृद्धि के लिए सच्चा प्रयत्न करना है।

चीन के बारे में भी नेहरूजी ने कम जोरदार शब्दों में अपने विचार व्यक्त नहीं किये। उन्होंने स्पष्ट कहा कि चीन रूस का पिट्ठू नहीं, हां दोस्त अवश्य हो सकता है। उसके प्रति कोई भी कठोर नीति अपनाने से विश्व-शांति को बाधा पहुंचेगी। ब्रिटेन ने भी भारत की इस नीति का समर्थन किया है। किन्तु आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री अब भी अमरीका का पल्ला पकड़ कर ही चलना चाहते हैं।

असहमति का भी सम्मान होना चाहिए

यहां स्कैन करें

मनोज कुमार झा | सदस्य, राज्यसभा

जो शब्द कभी देशद्रोह या हिंसक षड्यंत्र जैसे गंभीर आरोपों के लिए सुरक्षित था, वह अब असहमति जताने वाले विपक्ष या नागरिकों के लिए सहज राजनीतिक हथियार बन गया है।

दुनिया भर में लोकतंत्र अपने स्वभाव से ही प्रतिस्पर्द्धी व्यवस्था है। विभिन्न राजनीतिक दल, परस्पर टकराती विचारधाराएं और जनहित व लोकोन्मुख राजनीति की भिन्न व्याख्याएं- ये लोकतंत्र की कमजोरी नहीं, उसकी ताकत हैं। एक परिपक्व लोकतंत्र में राजनीतिक विपक्ष बाधा नहीं, बल्कि संतुलन का माध्यम होता है। इस अर्थ में प्रतिद्वंद्वी राजनीतिक दल लोकतंत्र के आभूषण हैं, जो उसे सौंदर्य, गहराई व मजबूती प्रदान करते हैं। जब विपक्ष को बार-बार 'राष्ट्र-विरोधी' कहा जाने लगे, तब लोकतंत्र की यह आभा फीकी पड़ने लगती है। उससे भय और संदेह का वातावरण बनता है।

भारतीय लोकतंत्र कभी भी शांत या एकस्वर नहीं रहा। समरूप सोच को भारतीय लोकतंत्र ने कभी नैसर्गिक गहना नहीं समझा। संविधान सभा की बहसों से लेकर आज के संसदीय टकरावों तक, असहमति इसकी स्थायी विशेषता रही है। संविधान निर्माताओं ने भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए जान-बूझकर सर्वसम्मति के मिथक को खारिज किया। उन्होंने ऐसे गणराज्य की कल्पना की थी, जहां सरकार की आलोचना को राष्ट्र से शत्रुता नहीं समझा जाएगा, और असहमति को देशभक्ति के विरुद्ध अपराध नहीं माना जाएगा। आज यह बुनियादी फर्क धुंधला-सा होता दिख रहा है।

राजनीतिक विरोधियों को 'राष्ट्र-विरोधी' ठहराने की बढ़ती प्रवृत्ति लोकतांत्रिक संस्कृति में एक खतरनाक बदलाव का संकेत है। जो शब्द कभी देशद्रोह या हिंसक षड्यंत्र जैसे गंभीर आरोपों के लिए सुरक्षित था, वह अब असहमति जताने वाले नागरिकों, आंदोलनकारियों, पत्रकारों और विपक्षी दलों के लिए सहज राजनीतिक हथियार बन गया है। यह केवल भाषा में अतिवाद का लक्षण मात्र नहीं है, बल्कि यह सायास रणनीति लगने लगी है। जब विरोधी को राष्ट्र-विरोधी घोषित कर दिया जाता है, तब उसके तर्कों से संवाद करने की आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है।

इस तरह की प्रवृत्तियां गहरे स्तर पर लोकतंत्र को प्रभावित करती हैं। राष्ट्र किसी भी सरकार से बड़ा और किसी भी राजनीतिक दल से पुराना होता है और निरंतरता में होता है। जब राष्ट्रभक्ति को किसी एक राजनीतिक दल की कथा से जोड़ दिया जाता है, तब लोकतंत्र नैतिक कट्टरता की ओर फिसलने लगता है। राजनीति विचारों की प्रतिस्पर्द्धा न रहकर 'देशभक्त' और 'देशद्रोही' के बीच नैतिक युद्ध में बदल जाती है।

भारतीय इतिहास इस सोच का स्पष्ट प्रतिवाद प्रस्तुत करता है। हमारा स्वतंत्रता संग्राम स्वयं गहरे मतभेदों से भरा था- चाहे वे मतभेद संघर्ष के तरीकों को लेकर हों, सामाजिक न्याय की परिभाषा को लेकर हों या भविष्य के भारत की संरचना को लेकर। गांधी और आंबेडकर के बीच जाति और सामाजिक सुधार पर तीखे मतभेद थे; नेहरू और पटेल के आर्थिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण अलग-अलग थे; समाजवादी, उदारवादी और क्रांतिकारी एक-दूसरे से असहमत थे। इन मतभेदों को कभी राष्ट्र के प्रति विश्वासघात नहीं कहा गया। एक साझा राष्ट्रीय उद्देश्य की स्वीकृति ने असहमति को विनाशकारी बनने से रोके रखा।

यही नैतिक आत्मविश्वास स्वतंत्र भारत के शुरुआती वर्षों में भी दिखाई देता है। विपक्ष सरकार का तीखा आलोचक था, पर उसकी देशभक्ति पर प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जाता था। संसद में बहसें तीखी होती थीं, लेकिन उनकी भाषा सांविधानिक मर्यादा में रहती थी। असहमति और राष्ट्रप्रेम के सह-अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए किसी विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं थी, यह लोकतांत्रिक समझ का हिस्सा था।

जब राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी शत्रु में बदल दिए जाते हैं, तब संस्थाएं कमजोर होने लगती हैं। संसद विचार-विमर्श के मंच के बजाय नारेबाजी का रंगमंच बन जाती है। इससे भी अधिक खतरनाक यह है कि नागरिकों को यह सिखाया जाने लगता है कि सत्ता से प्रश्न करना राष्ट्र के खिलाफ खड़ा होना है। भयग्रस्त लोकतंत्र कभी मजबूत नहीं होता। वह विविधता से शक्ति लेने के बजाय एकरूपता में सुरक्षा खोजता है।

यह प्रवृत्ति राष्ट्रवाद को भी खोखला कर देती है। जब देशभक्ति एक राजनीतिक हथियार बन जाती है, तब उसका नैतिक अर्थ नष्ट हो जाता है। सच्चा राष्ट्रप्रेम देश की उपलब्धियों पर गर्व के साथ-साथ उसकी कमियों को स्वीकार करने और अन्याय को चुनौती देने का साहस भी मांगता है। आलोचना से डरने वाला राष्ट्रवाद आत्मविश्वासी नहीं, असुरक्षित होता है। वह मौन को एकता और आज्ञापालन को निष्ठा समझने लगता है।

संविधान सभा की बहसें और उससे निर्मित संविधान इस संदर्भ में हमारा सबसे स्पष्ट मार्गदर्शक है। वह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, असहमति के अधिकार और राजनीतिक विपक्ष की वैधता को सुनिश्चित करता है। वह एकमतता की मांग नहीं करता, बल्कि सांविधानिक निष्ठा की अपेक्षा करता है। यह निष्ठा सत्ता में बैठे लोगों के प्रति अंध-समर्थन में नहीं, बल्कि न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व जैसे मूल्यों की रक्षा में निहित है। आज की सबसे बड़ी चिंता यह है कि विरोधियों को अवैध ठहराने की भाषा सामान्य होती जा रही है।

इसलिए यह संकट केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि नैतिक और मानसिक भी है। जो लोकतंत्र असहमति को शत्रुता में बदले बिना संभाल नहीं सकता, वह एक तरह की सामूहिक मानसिक बीमारी से ग्रस्त हो जाता है। वह भिन्नता के साथ जीने की परिपक्वता खो देता है। इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए सभी पक्षों में संयम आवश्यक है। राजनीतिक नेतृत्व को आसान अपमानजनक भाषा से बचना होगा, और नागरिकों को असहमति तथा राष्ट्र-विरोध के बीच फर्क समझना होगा। लोकतांत्रिक नैतिकता की पुनःस्थापना आवश्यक है- जहां विरोधियों की आलोचना हो, पर उनका अमानवीकरण न किया जाए।

भारत आज एक ऐसे चौराहे पर खड़ा है, जहां से दो रास्ते निकलते हैं- एक रास्ता उस गणराज्य की ओर जाता है, जो असहमति को आत्मविश्वास के साथ स्वीकार करता है, और दूसरा उस लोकतंत्र की ओर, जो संदेह और बहिष्कार से खुद को खोखला कर लेता है। इतिहास का मत इस संदर्भ में बिल्कुल स्पष्ट है। राष्ट्र प्रभुत्व से नहीं, बल्कि नैतिक संयम से टिकते हैं; एकरूपता से नहीं, बल्कि न्याय से मजबूत होते हैं; और मतभेदों को दबाकर नहीं, बल्कि उन्हें लोकतांत्रिक ढंग से समाहित करके आगे बढ़ते हैं। यदि भारत को अपने लोकतंत्र की चमक बनाए रखनी है, तो उसे राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को राष्ट्र का शत्रु नहीं, बल्कि साझा राष्ट्रीय यात्रा के अनिवार्य सहभागी के रूप में देखना होगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

अरावली, विंध्य से पश्चिमी घाट तक संकट में पहाड़ियां

यहां स्कैन करें

पंकज चतुर्वेदी | वरिष्ठ पत्रकार

पिछले हफ्ते सर्वोच्च न्यायालय ने जिस तरह अरावली को लेकर पूर्व में दिए गए अपने ही आदेश पर रोक लगाई, वह महज चार राज्यों में फैली इस पर्वत-शृंखला का सवाल नहीं, बल्कि प्रायः उपेक्षित रहने वाले पूरे देश के 'पहाड़ पर्यावरण' के संरक्षण का बड़ा कदम है। पहाड़ केवल पर्यटन या खनन नहीं हैं, धरती के अस्तित्व का महत्वपूर्ण अंग भी हैं। बावजूद इसके, बीते कुछ वर्षों में वायनाड की त्रासदी, महाराष्ट्र में ढहते पहाड़ों के बीच दबते गांव, उत्तराखंड से हिमाचल तक धंसते-उजड़ते पहाड़ हमें याद दिलाते हैं कि हमने धरती को तो मां मान लिया है, पर पहाड़ को परिजन नहीं मानते।

जिस पहाड़ के निर्माण में हजारों-हजार साल लगते हैं, हमारा समाज उसे उन निर्माणों की सामग्री जुटाने के नाम पर तोड़ देता है, जो बमुश्किल सौ साल चलते हैं। पहाड़ केवल पत्थर के ढेर नहीं होते, इलाके के जंगल, जल और वायु की दशा-दिशा तय करने के साध्य होते हैं। ये देश भर की अधिकांश नदियों के उद्गम स्थल भी हैं। चूंकि यहां विभिन्न खनिजों के भंडार भी उपलब्ध हैं, इसलिए मनुष्य ने पहाड़ों का जमकर शोषण किया।

अब यह समझना पड़ेगा कि भारत में 15 प्रतिशत या 0.49 मिलियन वर्ग किलोमीटर भूभाग भूस्खलन के प्रति संवेदनशील हो चुके हैं। इससे सबसे अधिक प्रभावित हिस्से हिमालय, पश्चिमी घाट, नीलगिरी और विंध्य हैं। जहां पर्यटन, धर्म और व्यापार है, वहां अंधाधुंध निर्माण से जब पहाड़ खिसकता है, तो उसकी चर्चा दूर तक होती है। दुर्योग से, ऐसी घटनाओं पर मुआवजे की खानापूर्ति ही उचित समझी जाती है।

यह समझना पड़ेगा कि भारत में 15 प्रतिशत या 0.49 मिलियन वर्ग किलोमीटर भूभाग भूस्खलन के प्रति संवेदनशील हो चुके हैं।

हिमालय के अलावा देश के जिन-जिन इलाकों में भूस्खलन हो रहा है, उनमें से अधिकांश क्षेत्र सह्याद्री, पश्चिमी घाट या पूर्वी घाट पर्वतमाला के करीब हैं। इन सभी स्थानों पर घटना की वजह आम तौर पर एक दिन में तीन से चार सौ मिलीमीटर बारिश मानी जाती है। इन सभी जगहों पर पहाड़ों पर बस्ती व खेत के लिए बेशुमार पेड़ काटे गए हैं। जब मिट्टी पर पानी की बड़ी बूंदें सीधी गिरती हैं, तो वे मिट्टी को काटती हैं, जो बहकर करीबी जल निधि- नदी, जोहड़, तालाब को उथला करती है। इन दोनों से पहाड़ ऊपर से और धरातल से कमजोर होता है। यही नहीं, इन सभी क्षेत्रों में निर्माण और खनन के लिए शक्तिशाली विस्फोटकों का इस्तेमाल लंबे समय से हो रहा है।

यहां विंध्य की चर्चा भी लाजिमी है, जो देश के पर्यावरण और अस्तित्व के लिए लगभग अरावली की तरह ही महत्वपूर्ण पर्वत-शृंखला है। इसके प्रति लापरवाही जलवायु परिवर्तन के दौर में किसी बड़ी त्रासदी का आमंत्रण है। यह पर्वतमाला भारत के बीचोबीच गोलाकार स्थित है, जो उत्तर और दक्षिण भारत को पारंपरिक रूप से विभाजित करती है। यह नर्मदा घाटी के उत्तर तथा गंगा मैदान के दक्षिण में फैली 1,050-1,200 किलोमीटर लंबी शृंखला है और मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात व बिहार को जोड़ती है। यह चंबल, बेतवा, केन, सोन जैसी प्रमुख नदियों का उद्गम स्थल भी है। विंध्य क्षेत्र में अवैध खनन से भूस्खलन, मिट्टी का कटाव और भूजल क्षय का खतरा बढ़ा है। वनों की कटाई, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से जैव विविधता का ह्रास हो रहा है, साथ ही बाढ़ व सूखे की आशंका बढ़ गई है। इलाके में मानव बस्तियों के विस्तार से भूकंपीय जोखिम भी है। फिर भी, इस पर्वतमाला की सुध लेने वाला कोई नहीं है।

केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की पहली जलवायु परिवर्तन मूल्यांकन रिपोर्ट में स्पष्ट चेताया गया था कि समुद्र और बड़ी पर्वतमालाओं के आसपास के पहाड़ी इलाके बदलते मौसम के लिए बेहद संवेदनशील हैं और यहां प्राकृतिक आपदाओं की अधिक आशंका है। ऐसी चेतावनियों के बावजूद विकास के नाम पर पहाड़ों के साथ की जा रही बर्बरता जारी है। लिहाजा, जिस तरह विकास के नाम पर पेड़ों को काटने को लेकर कानून सख्त हैं, जरूरत है कि अरावली के लिए गठित विशेषज्ञ समिति इस तरह के दिशा-निर्देश तैयार करे, ताकि पूरे देश के पहाड़ राहत महसूस कर सकें। इनसे भले ही हमें लगेगा कि पहाड़ों को राहत मिल रही है, लेकिन वास्तव में इससे इंसान ही लाभान्वित होंगे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

आप अकेले नहीं

इस ब्रह्मांड में कोई भी मनुष्य वास्तव में असहाय या अकेला नहीं है। मनुष्य अक्सर यह मान लेता है कि धन, संपत्ति और बाहरी साधन ही जीवन का सबसे बड़ा सहारा हैं। यह धारणा अधूरी ही नहीं, भ्रामक है। धन एक सीमित वस्तु है- वह आता है और चला जाता है। जो स्वयं नश्वर है, वह किसी को स्थायी सहारा कैसे दे सकता है? इसी प्रकार, शरीर, वस्त्र और भौतिक साधन भी अस्थायी हैं। वे स्थायी आश्रय नहीं बन सकते।

स्थायी आश्रय वही हो सकता है, जिसका अस्तित्व अनादि और अविनाशी है। वही परम पुरुष है, जो इस सृष्टि का मूल आधार है। परम पुरुष ने इस संसार को अराजक नहीं छोड़ा, बल्कि एक व्यवस्था के अंतर्गत इसे संचालित किया है। इस व्यवस्था में अनुशासन, दंड और सुधार- तीनों का स्थान है। इसके मूल में कठोरता नहीं, बल्कि गहरा प्रेम और करुणा छिपी है। माता-पिता जैसे कभी-कभी बच्चे को अनुशासित करते हैं, वैसे ही यह दैवी व्यवस्था भी मनुष्य को सही दिशा देने के लिए कार्य करती है, इसलिए मनुष्य को जीवन की कठिनाइयों से भयभीत नहीं होना चाहिए।

जब इस ब्रह्मांड की सर्वोच्च शक्ति आपके साथ है, तो चिंता और आशंका का औचित्य नहीं रह जाता। जीवन में आपके सामने कर्तव्य की पुकार है और उस कर्तव्य को निभाने के लिए आवश्यक शक्ति भी आपको पहले से प्रदान की जा चुकी है। परम पुरुष से बार-बार शक्ति मांगने की आवश्यकता नहीं। जो शक्ति आपको मिली है, उसका उपयोग करना ही आपकी जिम्मेदारी है।

अक्सर लोग प्रार्थना करते हैं, 'हे भगवान, मुझे शक्ति दीजिए, लेकिन जब तक आपके भीतर दी गई शक्ति शेष है, तब तक मांगने का प्रश्न ही नहीं उठता। पहले उस शक्ति का उपयोग कीजिए। केवल तभी, जब आप सचमुच अपनी सारी ऊर्जा, बुद्धि और सामर्थ्य लगा चुके हों, विनम्र भाव से कह सकते हैं, 'मैंने जो शक्ति पाई थी, उसका उपयोग कर लिया है। मुझे और सामर्थ्य दीजिए।' परम पुरुष को उनके कर्तव्य की याद दिलाने की कोई आवश्यकता नहीं है; वे स्वयं जानते हैं कि कब, क्या और कितना देना है।

जब मनुष्य को यह अनुभूति हो जाती है कि वह कभी उपेक्षित नहीं है, तब संसार की कोई शक्ति उसका अहित नहीं कर सकती। सृष्टि की प्रत्येक इकाई उसके सहयोग में लग जाती है। यही दैवी विधान है कि मनुष्य को सौहार्दपूर्ण ढंग से जीना चाहिए और अपनी अंतर्निहित शक्ति का सर्वोत्तम उपयोग करना चाहिए। विलाप और निराशा समय की बर्बादी है। 'अब मेरा क्या होगा?' जैसी सोच मनुष्य को कमजोर बनाती है। परम पुरुष सब देख रहे हैं और हर परिस्थिति में वह आवश्यक कदम उठाते हैं, इसलिए स्मरण रखें- आप कभी अकेले नहीं हैं।

विलाप और निराशा समय की बर्बादी है। 'अब मेरा क्या होगा?' जैसी सोच मनुष्य को कमजोर बनाती है। परम पुरुष सब देख रहे हैं और हर परिस्थिति में वह आवश्यक कदम उठाते हैं।

श्री श्री आनंदमूर्ति

एंटोनियो गुटेरस | संयुक्त राष्ट्र महासचिव

हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते थे कि नया साल ऐसे आएगा। दुनिया को संयुक्त राष्ट्र की आज पहले से कहीं ज्यादा जरूरत है। हम शांति, सतत विकास और मानवाधिकारों के लिए खड़े रहेंगे। अपने उसूलों से कभी समझौता नहीं करेंगे।

अनुलोम-विलोम

निकोलस मादुरो

अमेरिका ने मादुरो को शहीद बना दिया

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के कायराना अपहरण के बाद की प्रेस कॉन्फ्रेंस में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ऐसा माहौल बनाया, मानो उप-राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिग्स को उन्होंने ही नया राष्ट्रपति बनाया था। दावा किया गया था कि वह अमेरिका की गैर-कानूनी कार्रवाई में पूरा सहयोग कर रही हैं। फिर डेल्सी रोड्रिग्स ने सार्वजनिक भाषण में ट्रंप को ललकारा व बताया कि मादुरो ही वेनेजुएला के राष्ट्रपति हैं। यह भी जोड़ा कि वेनेजुएला ट्रंप की तेल चोरी की इस कोशिश का पुरजोर विरोध करेगा। हालांकि, इस प्रतिरोध के पीछे का 'सिम्बोलिज्म' देखिए, तो चीजें और साफ होंगी- डेल्सी रोड्रिग्स ने यह पूरा भाषण पूर्व राष्ट्रपति कॉमरेड ह्यूगो शावेज की तस्वीर के साथ दिया। वही कॉमरेड ह्यूगो, जो लैटिन अमेरिका में अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ हाल-फिलहाल के सबसे बड़े लड़ाके रहे हैं। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में जॉर्ज बुश के भाषण के अगले दिन अपने भाषण में बुश को 'शैतान' कहा था! खैर, ट्रंप ने अपनी इस मूर्खतापूर्ण हरकत से तानाशाह मादुरो को शहीद बना दिया है! हकीकत यही है कि उनके करीब 30 प्रतिशत समर्थक तो सड़कों पर हैं ही, उनमें से कई हथियारबंद हैं, ताकि अगली अमेरिकी कार्रवाई का वे सशस्त्र प्रतिरोध कर सकें। अब उनके विरोधियों में से भी ज्यादातर उनके साथ आ रहे हैं। मादुरो देश के भीतर उनके दुश्मन थे, लेकिन इस बाहरी साम्राज्यवादी दुश्मन से कम। कॉमरेड डेल्सी रोड्रिग्स के भाषण का वीडियो ढूंढ़कर सुनिए- शायद आंखें खुलें!

समर अनार्य, टिप्पणीकार

जो वेनेजुएला में हुआ, वही इराक और सीरिया में हुआ था। वही ईरान और रूस में करने की कोशिशें लगातार जारी हैं। सिद्धांत एक ही है। पहले प्रतिबंध लगाकर अर्थव्यवस्था को कमजोर करो, फिर आम जनता और उसके बाद सैन्य नेतृत्व का विरोध करने का इंतजार करो। फिर शीर्ष सैन्य नेतृत्व को खरीद लो और राजधानी पर कब्जा कर लो। वेनेजुएला में ये तीनों चरण पूरे किए गए। ईरान और रूस में दूसरे चरण पर मामला अटका हुआ है, क्योंकि ये देश प्रतिबंध के असर को कम करने के कुछ जुगाड़ ढूंढ़ते रहते हैं। इसके अलावा, इन देशों में आम लोगों में जागरूकता और मुल्क के लिए वफादारी भी गजब की है। कोशिश इन्होंने ईरान में भी की थी। वहां पहली ही स्ट्राइक में दर्जन भर टॉप जनरल मार दिए गए थे, क्योंकि वे बिके नहीं। राष्ट्रपति और सुप्रीम लीडर तक को टारगेट किया गया था। मगर चौबीस घंटे के अंदर वहां दूसरी पंक्ति का सैन्य नेतृत्व मैदान में आ गया और इजरायल व अमेरिका को पीछे हटने को मजबूर कर दिया।

अब्बास खान, टिप्पणीकार

गलत हीरो चुनने की हमारी पुरानी आदत

नब्बे के दशक की शुरुआत में एक फैशन हुआ करता था- लड़के-लड़कियां अपने कमरे में पोस्टर लगाते थे फिल्मी हीरो, क्रिकेटर, पॉप स्टार आदि के। मानो वे उसकी पूजा करते हों। लखनऊ में हजरतगंज के कॉफी हाउस के सामने जो कॉरिडोर है, वहां पोस्टर बेचने वालों की लाइन लगी रहती थी। जब अमेरिका ने सद्दाम हुसैन पर हमला किया, तब सद्दाम के पोस्टर हाथों-हाथ बिक रहे थे। नौजवान सद्दाम को अपना हीरो बना रहे थे। मैं तब कोई 15-16 साल का था, लेकिन तब भी इतनी समझ थी कि यह बेवकूफी है। यह गलत हीरो की पूजा है। ऐसा शासक अंत में किसी बिल में छिपकर मारा जाएगा। ठीक यही हुआ। फिर 9/11 हुआ, और उस वक्त भी एक तबका ओसामा बिन लादेन के लिए तालियां बजा रहा था, जबकि उसका अंत किस तरह हुआ, यह हम सबने देखा है।

साल 2014 के आसपास लगा कि देश ने कुछ सीखा है। राष्ट्रवाद, हिंदू पहचान, राष्ट्रीय स्वाभिमान... सब कुछ एक दिशा में जाता दिखा। लगा कि अब हम सही लोगों को नायक चुनेंगे, लेकिन यह विवेक दस साल भी नहीं टिक पाया। जिन्हें कल तक 'तालिबानी सोच' कहकर गाली दी जाती थी, आज वही तालिबान 'भारत के लिए अच्छे' बताए जाने लगे। कल तक कहा जाता था कि आतंकवाद आतंकवाद होता है, अच्छा-बुरा नहीं होता। आज समझाया जाता है कि यह वाला आतंकवाद 'ठीक' है। सरकार की मजबूरी हो सकती है तालिबान से समझौता करना, पर आम जनता के लिए भला ऐसी क्या मजबूरी हो गई कि अकस्मात् जो कल तक तालिबानी सोच बताते थे, अब तालिबानी कूटनीति बताने लगे?

दुनिया में कहीं भी कोई तानाशाह गिरता है, चाहे उसके अपने देश के लोग भी उसके साथ न हों, भारत में एक धड़ा उसे हीरो बना देता है। वेनेजुएला का उदाहरण ताजा है। अब उसके राष्ट्रपति हमारे नए नायक हैं। मजेदार बात यह भी है कि इनमें से किसी का भारत से कोई लगाव नहीं रहा। तालिबान ने भारत को नुकसान ही पहुंचाया है। वेनेजुएला तो खुद अपने उसी राष्ट्रपति के हाथों बर्बाद हो चुका है। फिर भी हमें हर हारते हुए तानाशाह में अपना हीरो दिख जाता है। यह वही पुरानी बीमारी है- गलत हीरो चुनने की। कई बार राजनीति न समझ आए, तो चुप रहना बेहतर होता है। हर गिरते हुए आदमी के साथ खड़ा होना बुद्धिमानी नहीं होती। इतिहास एक ही बात बार-बार सिखाता है- गलत नायक की पूजा सिर्फ उस नायक को ही नहीं, पूजा करने वाले को भी गिराती है।

नितिन त्रिपाठी, टिप्पणीकार

यह जंग यहीं नहीं रुकेगी

193 देशों को संयुक्त राष्ट्र ने अपनी मान्यता दे रखी है।

078 देश किसी न किसी प्रकार से युद्ध या संघर्ष झेल रहे हैं।

अभी कुछ दिन पहले ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप दुनिया में आठ लड़ाइयों को खत्म करने का दावा कर रहे थे। उन्होंने यह भी कहा था कि राष्ट्रपति बनते ही रूस-यूक्रेन युद्ध रुकवा देंगे, पर अब बाजी पलट गई है। वेनेजुएला में अमेरिकी हस्तक्षेप शायद एक शुरुआत भर है। आशंका है, जगह-जगह जंग के हालात बनेंगे। पेश है विदेश मामलों के विशेषज्ञ प्रोफेसर हर्ष वी पंत की कलम से एक पड़ताल...

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप दुनिया में तनाव बढ़ाते चले जा रहे हैं। उनकी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीतिक टीम (एनएसएस) ने पश्चिमी गोलार्ध में 'हड़पों और विस्तार करो' लक्ष्य का एलान किया, तब दुनिया ने शायद यह सोचा नहीं होगा कि यह एक गंभीर और तेजी से फैलने वाली बात हो जाएगी। वेनेजुएला के बारे में ट्रंप ने घोषित अमेरिकी रणनीति को राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी को अगवा करने के लिए 'ऑपरेशन एब्सोल्यूट रिजॉल्व' के जरिए नाटकीय ढंग से पलट दिया है।

ट्रंप हफ्तों से वेनेजुएला और मादुरो पर नजरें गड़ाए हुए थे। पहले उन्होंने राजधानी कराकस के पास अमेरिका का सबसे बड़ा नौसैनिक बेड़ा तैनात किया और सीआईए को वहां हत्याकांड मचाने की इजाजत दी। ट्रंप की इस कार्रवाई ने अमेरिका के अंदर और बाहर, दोनों जगह कई चिंताएं पैदा कर दी हैं। वेनेजुएला में इस ऑपरेशन की वैधता को लेकर सवाल उठ रहे हैं और दुनिया दो गुटों में बंट गई है। अमेरिका के अंदर की बात करें, तो कांग्रेस में जल्द ही प्रमुख सांविधानिक और निगरानी सवालों पर बहस हो सकती है, क्योंकि वहां के सांसद बंटे हुए दिख रहे हैं। अमेरिका की विदेश रणनीति पर अब तक हावी रहा मोनरो सिद्धांत ढलता लग रहा है और उसकी जगह एक नए ट्रंप सिद्धांत के हावी होने के काले बादल मंडरा रहे हैं। यह नया सिद्धांत दुनिया भर में अमेरिकी प्रभाव को फिर से परिभाषित कर सकता है। इस दिशा में निकोलस मादुरो को हटाना और जेल में डालना अमेरिकी सैन्य शक्ति का नया प्रदर्शन है।

अमेरिका ने एक विशाल बेड़ा इकट्ठा किया और बिना किसी अमेरिकी सैनिक की जान गंवाए वेनेजुएला में अपना लक्ष्य हासिल कर लिया। 1823 में राष्ट्रपति जेम्स मोनरो द्वारा स्थापित सिद्धांत की जगह ट्रंप ने एक अपना 'डॉनरो सिद्धांत' चलाया, जिसमें अन्य महाशक्तियों को पश्चिमी गोलार्ध में अमेरिका के प्रभाव वाले क्षेत्र में दखल न देने की चेतावनी दी गई। ट्रंप ने मार-ए-लागो में कहा, मोनरो सिद्धांत एक बड़ी बात है, लेकिन हमने इसे बहुत पीछे छोड़ दिया है। हमारी नई राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के तहत, पश्चिमी गोलार्ध में अमेरिकी प्रभुत्व पर फिर कभी सवाल नहीं उठाया जाएगा। उन्होंने कहा कि कोलंबिया के राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो को अपनी जान बचानी पड़ेगी और यह भी संकेत दिया कि वह मेक्सिको के साथ भी कुछ करेंगे। क्यूबा भी निस्संदेह अमेरिकी एजेंडे में है, जिसे रूबियो संचालित कर रहे हैं।

ट्रंप की नीयत साफ तौर पर सामने आ गई है कि दूसरे देशों की खनिज संपदा पर उनकी गिद्ध-दृष्टि है। वह पहले ही यूक्रेन के प्राकृतिक संसाधनों पर गिद्ध-दृष्टि डाल चुके हैं और उन्होंने वेनेजुएला के विशाल तेल भंडारों पर नियंत्रण की अपनी इच्छा को भी नहीं छिपाया है। उनकी इस इच्छा से ग्रीनलैंड और डेनमार्क में यह डर और गहरा हो जाएगा कि ट्रंप अपने उत्तर के देशों के साथ-साथ दक्षिण के देशों पर भी नजरें गड़ाएंगे। अमेरिका ने ग्रीनलैंड को अपने देश में मिला लेने की अपनी इच्छा नहीं छोड़ी है। आर्कटिक में उसकी रणनीतिक स्थिति के साथ-साथ उन प्राकृतिक संसाधनों पर नजर है, जो अब ग्लोबल वार्मिंग के कारण बर्फ पिघलने से ज्यादा सुलभ होने लगे हैं।

ऑपरेशन मादुरो से इस वैश्विक सिद्धांत पर करारा प्रहार हुआ है कि दुनिया को चलाने का सबसे अच्छा तरीका अंतरराष्ट्रीय कानून का पालन करना है। ट्रंप उन कानूनों को नजरअंदाज कर सकते हैं, जो उन्हें पसंद नहीं हैं। वैश्विक कानून के सिद्धांत का समर्थन करने वाले अमेरिका के ब्रिटेन जैसे प्रमुख यूरोपीय सहयोगी प्रधानमंत्री कीर स्टारमर प्रतिक्रिया देने में बगलें झांक रहे हैं। वे एक ओर, अंतरराष्ट्रीय कानून के शासन सिद्धांत का समर्थन करते हैं, तो दूसरी ओर, ट्रंप को भी नाराज नहीं करना चाहते हैं, हालांकि, वह साफ-साफ यह भी नहीं कह पा रहे हैं कि यह मादुरो ऑपरेशन संयुक्त राष्ट्र चार्टर या सिद्धांतों का खुला उल्लंघन है।

चीन ने यद्यपि अमेरिकी कार्रवाई की निंदा करते हुए कहा है कि अमेरिका की दबंगई से अंतरराष्ट्रीय कानून व वेनेजुएला की संप्रभुता का गंभीर उल्लंघन हुआ है और लैटिन अमेरिका और कैरेबियन क्षेत्र में शांति व सुरक्षा को खतरा पैदा हो गया है। अमेरिका को दूसरे देशों की संप्रभुता और सुरक्षा का उल्लंघन करना बंद कर देना चाहिए। हालांकि, वह अमेरिकी कार्रवाई में अपने लिए एक अवसर देख रहा है। वह ताइवान को अपना बागी प्रांत मानता है और यह घोषणा कर चुका है कि इसे बीजिंग के नियंत्रण में वापस लाना उसकी राष्ट्रीय प्राथमिकता है।

ट्रंप ने कोलंबिया और ईरान के खिलाफ कड़ी चेतावनी जारी की है और कार्रवाई के संकेत दिए हैं। बल प्रयोग की यह बढ़ती प्रवृत्ति वैश्विक समुदाय के लिए ऐसी आशंकाओं को बहुत चिंताजनक बनाती है। ईरान में, इस्लामिक शासन के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन जारी रहने से पश्चिम एशिया में नए सिरे से सैन्य कार्रवाई की आशंका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, भले ही ट्रंप व्यापार कनेक्टिविटी फिर से शुरू करने और अब्राहम समझौते के दूसरे चरण को फिर से शुरू करने का संकेत दे रहे हों। ईरान के क्षेत्रीय सहयोगी कमजोर हो गए हैं और गाजा की स्थिति अनसुलझी है। ऐसे में, यह क्षेत्र वॉशिंगटन में बैठे कुछ लोगों को अमेरिकी हस्तक्षेप के लिए सही मौका लग सकता है।

कूटनीति सैन्य बल से ही तय होती है। बल का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांत और व्यवहार, दोनों का अभिन्न अंग रहा है, जो वैश्विक व्यवस्था की अराजक प्रकृति और देशों की सुरक्षा, शक्ति और प्रभाव की लगातार खोज में निहित है। भले ही वैश्विक संस्थाओं और कानूनी ढांचों ने हिंसा को नियंत्रित करने की अपनी महत्वाकांक्षा का विस्तार किया है, फिर भी बल सरकारों के निर्णायक साधन के रूप में काम करता रहता है। देश इस पर न केवल मुख्य हितों की रक्षा करने और संभावित विरोधियों को रोकने के लिए, बल्कि रणनीतिक माहौल को सक्रिय रूप से आकार देने के लिए भी निर्भर रहते हैं। इस अर्थ में बल का प्रयोग जबरदस्ती और दबाव के साधन के रूप में विशेष महत्व रखता है, जो समकालीन भू-राजनीति में इसकी स्थायी प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

ट्रंप के दुस्साहस ने इस बात को पुष्ट किया है कि बल का प्रयोग वह केंद्रीय तंत्र बना हुआ है, जिसके माध्यम से देश एक-दूसरे के साथ अपने संबंधों की शर्तों को परिभाषित करते हैं। इस रणनीति में बल प्रयोग पर निर्भरता बढ़ने की संभावना है, क्योंकि इससे रणनीतिक प्रतिस्पर्धा तेज होती है और विकसित हो रही अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में बल प्रयोग पर नियंत्रण कमजोर पड़ता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र की कमजोरी दुनिया पर भारी पड़ने वाली है, क्योंकि अमेरिका ने जो नया दौर शुरू किया है, वह शायद जल्दी खत्म नहीं होगा।

चंद देशों के खतरनाक मंसूबे और बिगड़ती विश्व व्यवस्था

अमेरिका की चौधराहट : निशाने पर कई देश

विगत छह दशक में देखें, तो अमेरिका ने पांच बार ही युद्ध की औपचारिक घोषणा की है, जबकि वह दुनिया में दस से ज्यादा देशों में सीधी और बड़ी सैन्य कार्रवाई कर चुका है। छोटे हस्तक्षेपों की सूची बहुत लंबी है और उसका परोक्ष हस्तक्षेप तो शायद दुनिया के तमाम संघर्षों में नजर आ जाता है। वेनेजुएला के बाद उसकी नजर क्यूबा, कोलंबिया, ग्रीनलैंड पर है। अभी कुछ ही दिन पहले अमेरिकी राष्ट्रपति अपने शांति प्रयासों के लिए नोबेल सम्मान मांग रहे थे, लेकिन अब एक साथ अनेक देशों को धमकाते हुए अशांति में योगदान देने लगे हैं।

रूस की महत्वाकांक्षा : यूक्रेन पर शिकंजे की कोशिश

रूस की साम्राज्यवादी मानसिकता बीते एक दशक से सामने आती रही है। फरवरी 2014 में रूस और यूक्रेन के बीच खींचतान की शुरुआत हुई थी और फरवरी 2022 में रूस ने यूक्रेन पर सीधे हमला बोल दिया। इस हमले में हजारों लोग मारे जा चुके हैं। यूक्रेन के अनेक इलाकों पर रूस का पहले भी कब्जा था और अब रूस अपने इलाके के विस्तार में लगा है। यूक्रेन को भड़काने में अमेरिका, नाटो और यूरोपीय देशों का बड़ा हाथ रहा है। अमेरिका अब यूक्रेन की ज्यादा मदद नहीं कर रहा है, इससे भी रूस की महत्वाकांक्षा बढ़ती जा रही है।

चीन की आक्रामकता : करीबी देशों पर ललचाई निगाह

चीन की वाम सरकार के साम्राज्यवादी इरादे किसी से छिपे नहीं हैं। तिब्बत पर कब्जे से ताइवान को कब्जाने के इरादे तक, चीन की नीतियां दुनिया के अनेक देशों को चिंता में डाल रही हैं। चीन भारत की ओर भी अपनी सीमा के विस्तार का मंसूबा रखता है और तनाव बढ़ाता रहता है। चीन का आधिकारिक मत है कि ताइवान चीन का अभिन्न अंग है और पुनर्मिलन अपरिहार्य है। बीजिंग ने इस लक्ष्य को पाने के लिए सैन्य बल के प्रयोग से इनकार नहीं किया है। चीन भी अमेरिका की तरह ही वैश्विक कानूनों को नहीं मान रहा है।

दहशत फैलाती कट्टरता : देशों में सांप्रदायिकता का जहर

ईरान तनाव का एक बड़ा कारण बना हुआ है। फलस्तीन से पाकिस्तान तक, सांप्रदायिक कट्टरता लगातार खतरे पैदा कर रही है। ईरान आतंकी संगठन हमास की मदद करता रहा है। अमेरिका के साथ भी उसके रिश्ते तनावपूर्ण हैं। हालांकि, ईरान में हालात बिगड़ रहे हैं, आशंका जताई जा रही है कि ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई अपने शासन के पतन की स्थिति में मॉस्को भाग जाएंगे। अफ्रीका और लातीन अमेरिका के अनेक देशों में तरह-तरह की कट्टरता को बढ़ावा मिल रहा है।

...और तमाशबीन संयुक्त राष्ट्र : सिर्फ नसीहत

दुनिया में जगह-जगह युद्ध के हालात हैं और 80 साल का हो चुका संयुक्त राष्ट्र केवल मौखिक बयानबाजी तक सिमटता जा रहा है। अमेरिका, चीन और रूस जैसे वीटो पावर वाले देश संयुक्त राष्ट्र की बातों पर कान नहीं दे रहे हैं। पिछले सप्ताहांत वेनेजुएला की घटना, रूस-यूक्रेन युद्ध तथा गाजा में जारी मानवीय संकट के सामने संयुक्त राष्ट्र लाचार हो गया है। सवाल उठ रहे हैं कि यदि संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के अपने पहले वादे को पूरा नहीं कर सकता, तो क्या उसका कोई भविष्य है?

दुनिया में युद्ध

द्वितीय विश्व युद्ध से साल 2001 के बीच दुनिया में 153 क्षेत्रों में युद्ध या संघर्ष हुए।

248 दुनिया में कुल हथियारबंद लड़ाइयां

201 लड़ाइयों की शुरुआत अमेरिका ने की

066 देशों ने बीते वर्षों में आतंकी हमले झेले हैं

आज चल रहे बड़े संघर्ष

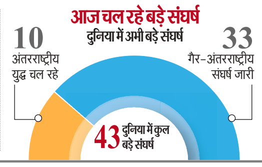

बढ़ती जन हानि

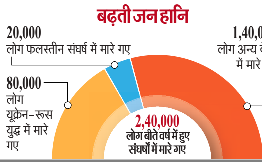

आखिर क्यों हो रहे युद्ध?

दुनिया में युद्ध की सबसे बड़ी वजह प्राकृतिक संसाधन या ऊर्जा है। वेनेजुएला में जो हुआ है, उसके पीछे तेल है। यूक्रेन के खनिज पर रूस ही नहीं, अमेरिका की भी नजर है। दूसरी बड़ी वजह साम्राज्यवादी मानसिकता है। तीसरी वजह, मजहबी द्वेष या सांप्रदायिकता है, जिससे आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है। चौथी बड़ी वजह, गरीबी या आर्थिक विषमता है।

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। पिता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। खर्चों में वृद्धि होगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

वृष : मन परेशान रहेगा। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी। खर्चों में वृद्धि होगी। पिता से धन की प्राप्ति हो सकती है। रहन-सहन कष्टमय।

मिथुन : मन परेशान हो सकता है। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। शैक्षिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर मिलेंगे।

कर्क : वाणी में मधुरता रहेगी। परंतु फिर भी धैर्यशीलता बनाए रखें। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। परिवार से दूर किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

सिंह : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। परंतु कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है।

कन्या : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। नौकरी में अफसरों से सद्भाव बनाकर रहें। कार्यक्षेत्र में बदलाव की संभावना बन रही है। परिश्रम अधिक रहेगा।

तुला : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। माता की सेहत का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी। रहन-सहन कष्टमय रहेगा। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में वृद्धि होगी।

वृश्चिक : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। बातचीत में संतुलित रहें। शैक्षिक कार्यों के प्रति सचेत रहें। कठिनाई आ सकती है। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं।

धनु : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के अवसर मिलेंगे।

मकर : आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहेंगे। किसी नए कारोबार में निवेश कर सकते हैं। कारोबार के लिए परिवार से दूर किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

कुंभ : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। परंतु किसी दूसरे स्थान पर भी जाना हो सकता है। परिवार का साथ मिलेगा।

मीन : धैर्यशीलता बनाए रखें। नौकरी के लिए परीक्षा व साक्षात्कार आदि कार्यों में सफलता मिलेगी। शासन-सत्ता का सहयोग मिलेगा। आय वृद्धि होगी।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

07, जनवरी, बुधवार, **शक संवत्**: 17, पौष (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग**: 24 पौष मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम**: 17 रज्जब, 1447, **विक्रमी संवत्**: माघ कृष्ण पंचमी तिथि सूर्योदय पूर्व 06.34 बजे तक पश्चात षष्ठी तिथि, मघा नक्षत्र प्रातः 11.57 बजे तक पश्चात पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र, आयुष्मान योग सायं 06.34 मिनट तक पश्चात सौभाग्य योग, कौलव करण, चन्द्रमा सिंह राशि में (दिन-रात)।
सूर्य दक्षिणायन। हेमंत ऋतु। दोपहर 12 बजे से दोपहर 01.30 बजे तक राहुकालम्। गण्डमूल प्रातः 11.57 मिनट तक।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

मेरे पुत्र की जब से शादी हुई है और उसे नए कमरे में शिफ्ट किया है, तभी से उसकी तबीयत खराब रहती है। कृपया कोई उपाय बताएं। –कमलनाथ, पीलीभीत

- आपके पुत्र का शयन कक्ष घर की दक्षिण दिशा में है, जो ठीक है। उसके शयन कक्ष की पूर्व दिशा में टॉयलेट है, जो कि गलत है।
- उसका सिरहाना भी टॉयलेट की दीवार पर है, जो कि नहीं होना चाहिए।
- टॉयलेट का फर्श भी ऊंचा है, इसको कमरे के लेवल पर करवाएं।
- बेड के सामने शीशा लगा है, उसको हटवा दें।
- कमरे की कलर थीम स्लेटी है, उसे क्रीम करवाएं।

वर्ग पहेली : 8202

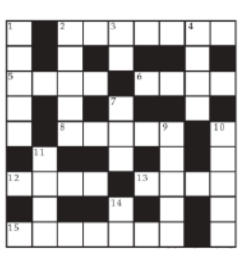

बाएं से दाएं
2. नकल करना; नाटक में भाग लेना; हावभाव प्रदर्शन करना (4,3)
5. नाम के अनुरूप; जैसा नाम (4)
6. एकत्रित करना; सहेजना (4)
8. नया बना रईस; नवधनाढ्य (5)
12. समाज का; समाज से संबंधित (4)
13. एकाग्र होने का भाव; चित्त् का स्थिर होना; अचंचलता (4)
15. मदद करना; साथ मिलकर काम करना (4,3)

ऊपर से नीचे
1. नाम मात्र के लिए; दिखावे के तौर पर (5)
2. अपनत्व; आत्मीयता; स्वजन भावना (5)
3. आकाश; आसमान; गगन; सावन का महीना; व्योम (2)
4. जम न पाना; द्रुत गमन करना; फिसलना; सरकना (4)
7. अवरोधक; बाधा उत्पन्न करने वाला; रोकने वाला (3)
9. थोड़ा हट कर निकल जाना; लज्जा के कारण सामने न आना; कतराना (2,3)
10. डट जाना; वार झेलना; सामना करना (2,3)
11. भारी आयोजन; बड़ा कार्यक्रम; धूमधाम से होने वाला उत्सव (4)
14. अवाक्; गूंगा; जो चुप हो; दीन; लाचार (2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8201

सुडोकू : 8184

*कठिन

5	1				8			9
					1			
	7		2	6				
3		7				5		
	4			3			8	
		6				2		4
				2	3		6	
			5					
9			6				4	2

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3×3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8183

1	7	5	2	9	4	3	8	6
4	3	8	5	6	7	9	1	2
9	2	6	3	1	8	4	7	5
3	1	2	4	8	5	7	6	9
5	9	4	7	3	6	1	2	8
8	6	7	9	2	1	5	4	3
2	5	1	8	7	9	6	3	4
7	4	3	6	5	2	8	9	1
6	8	9	1	4	3	2	5	7

क्रिकेट और खेल भावना के हित में

इन दिनों भारत और बांग्लादेश के बीच तनाव का मैदान बना हुआ है क्रिकेट का खेल। पिछले दिनों आईपीएल मैचों के लिए कोलकाता नाइट राइडर्स केकेआर ने अपनी टीम में बांग्लादेशी क्रिकेटर मुस्तफिजुर रहमान को शामिल किया था। वह भी ऐसे हालात में जब बांग्लादेश अंतरिम सरकार के शासन में रोज हिंदुओं को सरेआम मारने की घटनाएं सामने आ रही हैं। जिनका भारत में कई संगठनों की ओर से भारी-विरोध प्रदर्शन रहा था। ऐसे में आने वाले दिनों में देश में खेली जाने रही आईपीएल प्रतियोगिता में बांग्लादेश खिलाड़ी के चयन ने आग में घी का काम किया। उसे टीम से हटाने की मांग को लेकर देश भर में व्यापक प्रदर्शन। बाद में भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने केकेआर को मुस्तफिजुर रहमान को टीम से बाहर करने का निर्देश दिया। जवाब में बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड बीसीबी ने अपनी आपात बैठक बुलाई, अंतरिम सरकार के सलाह पर अगले माह फरवरी में भारत में होने जा रही टी20 विश्व कप चैंपियनशिप के अपनी टीम के मैचों को भारत के बाहर श्रीलंका कराने की आईसीसी से मांग की। इसके पीछे अपने खिलाड़ियों से जुड़ी सुरक्षा की चिंता की आड़ ली। बांग्लादेश के इस अनुरोध पर फैसला अब आईसीसी को लेना है। जिसका आधार मूल्यांकन तथ्यों, अंतरराष्ट्रीय नियमों और खेल की भावना के आधार पर किया जाना चाहिए। लेकिन हद तो तब हो गई जब बांग्लादेश की सरकार ने अब आईपीएल मैचों के प्रसारण पर भी प्रतिबंध लगा दिया। बांग्लादेश के इन तमाम फैसलों के पीछे मुख्य वजह मुस्तफिजूर रहमान को केकेआर टीम से हटाया जाना रहा। दुर्भाग्य से अब यह विषय एक खेल संबंधी विषय नहीं रहा। बल्कि इसमें कूटनीति, सुरक्षा, राजनीति और वैश्विक प्राशासन से जुड़े अनेक पहलू शामिल हो गए हैं। बता दें कि विश्वकप प्रतियोगिता में बांग्लादेश के चार मैच कोलकाता-मुंबई में 7,9,14,17 फरवरी को होने हैं। आईसीसी के नियम के अनुसार यह विश्वकप के वेन्यू पहले से तय होते हैं। केवल युद्ध, बड़े पैमाने पर हिंसा या गंभीर सुरक्षा खतरे में ही मैच स्थल को बदला जाता है। भारत में कहीं भी ऐसी स्थितियां नहीं हैं। यहां क्रिकेट विश्वकप, आईपीएल, जी20 शिखर सम्मेलन जैसे कई बड़े अंतरराष्ट्रीय आयोजन सफलतापूर्वक हो चुके हैं। फिर भारत का रुख हमेशा द्विपक्षीय संबंधों में भरोसा बनाए रखने का रहा है। बांग्लादेश में चल रही राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद दोनों देशें के बीच गहरे सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों को देखते हुए नई दिल्ली ने ढाका में मौजूदा सरकार के धुरवीकरण वाले बयानों के सामने अब तक संयम ही दिखाया है। दिवंगत प्रधानमंत्री खालिदा जिया के अंतिम संस्कार में भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर शामिल हुए। जो इस बात का संकेत है कि भारत, बांग्लादेश के साथ संबंधों का मजबूत सेतु बनाने का उत्सुक है। ऐसे में आईसीसी को बांग्लादेश की मांग पर क्रिकेट के हित और खेल भावना को ध्यान में रखकर ही कोई फैसला लेना होगा।

नववर्ष संकल्प- नवाचार और सर्वांगीण विकास को समर्पित सुशासन

परिवर्तन के दो वर्ष: विजन 2047 की ओर बढ़ते कदम

अरुण चतुर्वेदी
अध्यक्ष,राज्य वित्त आयोग, राजस्थान

"राजस्थान में नया वर्ष नववर्ष संकल्प वर्ष, नवाचार, सर्वांगीण विकास को समर्पित सुशासन के रूप में सामने आया है। यह संकल्प विगत दो वर्षों में हुए ठोस कार्यों प्रशासनिक सुधारों और भविष्य की स्पष्ट दृष्टि का स्वाभाविक विस्तार है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में सरकार ने शासन को परिणामों की कसौटी पर खड़ा किया है।

नववर्ष केवल तिथियों का परिवर्तन नहीं होता, वह शासन की दिशा, विकास की गति और जन-आकांक्षाओं को नए सिरे से परिभाषित करने का अवसर भी होता है। राजस्थान में नया वर्ष नववर्ष संकल्प वर्ष, नवाचार, सर्वांगीण विकास को समर्पित सुशासन के रूप में सामने आया है। यह संकल्प विगत दो वर्षों में हुए ठोस कार्यों प्रशासनिक सुधारों और भविष्य की स्पष्ट दृष्टि का स्वाभाविक विस्तार है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में सरकार ने शासन को परिणामों की कसौटी पर खड़ा किया है। इन दो वर्षों ने यह संकेत दिया है कि यह सरकार दीर्घकालिक, संतुलित और समावेशी विकास में विश्वास रखती है। राज्य में सत्ता परिवर्तन के समय सबसे बड़ी चुनौती जनता के विश्वास की पुनर्स्थापना थी। भर्ती परीक्षाओं में अनियमितताओं, प्रशासनिक शिथिलता और निर्णयों में अनिश्चितता ने आम नागरिक और सरकार के बीच दूरी बढ़ा दी थी।

सुशासन की नींव रखी

सरकार ने अपने पहले ही चरण में इस वास्तविकता को स्वीकार किया और विश्वास की बहाली से सुशासन की नींव रखी। भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिताए कड़े कानून, तकनीकी निगरानी और समयबद्ध निर्णयों ने विशेष रूप से युवाओं में यह भरोसा पैदा किया कि योग्यता और ईमानदारी को अब प्राथमिकता मिलेगी। यह प्रशासनिक सुधार होने के साथ ही सामाजिक न्याय की दिशा में एक आवश्यक हस्तक्षेप था। सुशासन का अर्थ नीतियों का धरातल पर प्रभावी क्रियान्वयन है। निर्णय प्रक्रिया में स्थिरता लाने के साथ ही प्रशासनिक जवाबदेही तय की गई और ई-गवर्नेंस के माध्यम से आम नागरिक को शासन से सीधे जोड़ा गया। सही मायने में शासन का उद्देश्य सत्ता संचालन नहीं, बल्कि अंतिम व्यक्ति तक जनकल्याण है। राजस्थान जैसे भौगोलिक और जलवायु चुनौतियों वाले राज्य में विकास की सबसे बड़ी परीक्षा संसाधनों के संतुलित उपयोग की होती है।

समाधान की दिशा में कदम

सरकार ने जल संकट को केवल आपात समस्या न मानकर दीर्घकालिक समाधान की दिशा में कदम बढ़ाए। पारंपरिक जल स्त्रोतों का पुनर्जीवन, वर्षा जल संचयन, सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों और जनभागीदारी आधारित अभियानों ने जल संरक्षण को सरकारी योजना से आगे बढ़ाकर जन-आंदोलन का स्वरूप दिया। यह सोच दर्शाती है कि सरकार विकास को पर्यावरण की कीमत पर नहीं, बल्कि उसके संरक्षण के साथ आगे बढ़ाना चाहती है। ऊर्जा क्षेत्र में भी यही दृष्टिकोण दिखाई देता है। नवीकरणीय ऊर्जा, विशेषकर सौर ऊर्जा को आत्मनिर्भर राजस्थान की बुनियाद बनाया गया। इससे एक ओर पर्यावरणीय संतुलन को मजबूती मिली, तो दूसरी ओर औद्योगिक निवेश, ऊर्जा सुरक्षा और रोजगार सृजन को नई दिशा प्राप्त हुई। यह मॉडल बताता है कि आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकते हैं।

महिला सशक्तिकरण

राज्य की विकास रणनीति में महिला, युवा और किसान को केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि विकास के सक्रिय सहभागी के रूप में देखा गया है। महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों, आजीविका मिशन और आर्थिक स्वावलंबन की पहलों ने सामाजिक बदलाव को गति दी है। महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने यह स्पष्ट किया है कि जब महिलाएं सशक्त होती हैं, तो परिवार, समाज और अर्थव्यवस्था तीनों मजबूत होते हैं। युवाओं के लिए सरकार की नीति केवल रोजगार घोषणाओं तक सीमित नहीं रही। कौशल विकास, रोजगारपरक शिक्षा और पारदर्शी भर्ती प्रक्रियाओं ने युवाओं में भविष्य को लेकर भरोसा जगाया है। इसी तरह किसान केंद्रित नीतियों जैसे सिंचाई क्षमता विस्तार, कृषि अधोसंरचना, बाजार से जुड़ाव और मूल्य संवर्धन ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थायित्व प्रदान किया है। औद्योगिक और आर्थिक विकास के मोर्चे पर राजस्थान ने बीते दो वर्षों में एक नई पहचान गढ़ने का प्रयास किया है।

निवेशकों के लिए आकर्षक

निवेश अनुकूल वातावरण, आधारभूत संरचना में सुधार और लॉजिस्टिक्स को सशक्त करने की नीति ने राज्य को निवेशकों के लिए आकर्षक बनाया है। राइजिंग राजस्थान की सोच केवल बड़े उद्योगों तक सीमित नहीं, बल्कि स्थानीय संसाधनों, कारीगरों, युवाओं और छोटे उद्यमों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास है। यह मॉडल आर्थिक वृद्धि के साथ सामाजिक संतुलन बनाए रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयोग है। नववर्ष संकल्प वर्ष का सबसे सार्थक पहलू नवाचार है। डिजिटल गवर्नेंस, ऑनलाइन सेवाएं, डेटा आधारित निर्णय प्रणाली और पारदर्शी निगरानी तंत्र ने शासन को अधिक संवेदनशील और उत्तरदायी बनाया है। आम नागरिक के लिए सेवाओं की सुलभता बढ़ी है और प्रशासन की जवाबदेही भी स्पष्ट हुई है। इन सभी प्रयासों का स्वाभाविक विस्तार विजन 2047 है।

शिक्षा और स्वास्थ्य

यह विजन एक ऐसे विकसित राज्य की परिकल्पना है, जहां जल और ऊर्जा में आत्मनिर्भरता हो, शिक्षा और स्वास्थ्य की गुणवत्ता वैश्विक मानकों के अनुरूप हो, युवाओं को सम्मानजनक रोजगार मिले और विकास पर्यावरण व संस्कृति के साथ संतुलित रहे।मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का यह विजन संकेत देता है कि आने वाले वर्षों में राजस्थान केवल विकास की दौड़ में शामिल नहीं होगा, बल्कि सुशासन, नवाचार और समावेशी विकास का राष्ट्रीय मॉडल प्रस्तुत करेगा। नववर्ष संकल्प किसी एक वर्ष की कार्ययोजना नहीं, बल्कि बीते दो वर्षों के अनुभव और आने वाले दशकों की सोच का संगम है। यही पारदर्शिता, प्रतिबद्धता और जनकेंद्रित दृष्टि से राजस्थान न केवल विजन 2047 की ओर अग्रसर होगा, बल्कि विकसित भारत की यात्रा में एक प्रेरक अध्याय भी लिखेगा।

जीवन बोध

सन्तोष की दौलत

भक्त सदैव यही मानते हैं कि दातार तू ही देने वाला है तुझे बेहतर है कि मेरे लिए क्या बेहतर है। भक्त कभी गिले-शिकवे में नहीं पड़ते उतावलेपन में नहीं, बल्कि हर हालत में संतुष्ट रहता है। यह मानता है की सन्तोष की दौलत ही सबसे श्रेष्ठ है। संसार की अन्य धन-दौलतों के जैसा अमीर नहीं होता। अगर ऐसा होता, तो आज संसार में हमें यह देखने को मिलता कि ये धन-दौलते होते हुए भी इन्सान मन में किस प्रकार के भाव रखते हैं। संसार भर में हम देखते हैं कि बड़े-बड़े मुल्क भी छीनने के लिए किस प्रकार के हथकंडे अपनाते है। एक-दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ बनी हुई है। लेकिन भक्त ऐसा नहीं मानते। वे कभी इन चीजों को अपना आधार नहीं बनाते। वे सदैव सन्तोषी रहते हैं। संसार के साधन कभी किसी को भरपूर नहीं मिल पाए हैं। ये तो इस प्रकार से हैं जैसे एक कटोरे में सुराख हो। उसमें जितना भी डालते जाएं, यह भरता नहीं है, खाली का खाली ही रहता है। इसी प्रकार सांसारिक साधनों से कोई सम्पन्नता को प्राप्त नहीं कर पाता। बाबा गुरबचन सिंह जी भी अक्सर बताते थे, कि जब वे बाहर के मुल्कों में प्रचार के लिए जाया करते थे तो अक्सर वहां उन पर सवाल किए जाते कि आपके देश में तो बहुत गरीबी है,कंगाली है। हमारे मुल्कों में तो सम्पन्नता है।

-संत निरंकारी बाबा

हेल्थ इज वेल्थ

- किडनी आपके शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो एक-दो नहीं बल्कि बहुत से काम करता है।
- किडनी आपके ब्लड को साफ करती है, बॉडी का पानी बैलेंस करती है और शरीर से टॉक्सिंस निकालती है।
- जब किडनी सही से काम नहीं करती, तो टॉक्सिंस आपके शरीर में लंबे समय तक रहते हैं और हेल्थ पर बुरा असर डालते हैं।
- इसके लिए आप बेहद सिंपल फूड्स शामिल करके अपनी किडनी को फिट रख सकते हैं।
- ऐसे फूड्स,जो आपकी किडनी को नेचुरली सपोर्ट कर सकते हैं, अगर रोजाना इन्हें खाया जाए,तो किडनी का काम आसान हो जाता है।
- लौकी कोई आम सब्जी नहीं है,इसमें पानी और पोटैशियम भरपूर मात्रा में होता है, जो किडनी को धीरे-धीरे वेस्ट निकालने में मदद करता है।
- लहसुन किडनी को सीधे तो नहीं, लेकिन इंडायरेक्टली मदद करता है, ये उसकी इंफ्लेमेशन कम करता है।

जल तरंग

लेखकों की पिकनिक

इस बार पुस्तक मेले में किताबों की नहीं, लेखकों की पिकनिक तय हुई। निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया,प्रगतिशील, प्रगतिवादी, प्रतिक्रियावादी, विवादप्रिय, सर्ववादी और सर्वनाशवादी सभी लेखक संघों ने मिलकर ठाना कि, जब साल भर साहित्य में एक-दूसरे को स्वाद चखाते ही रहते हैं, तो क्यों न एक दिन सचमुच स्वाद खुद भी चखा जाए। अध्यक्षता का भार स्वाभाविक रूप से परम श्रद्धेय परसादी लाल जी जुगाड़ी को सौंपा गया,जो एक साथ परजीवी, बहुजीवी, बुद्धिजीवी, आलोचक, समीक्षक और विमोचक हैं। पहले उन्होंने अपनी मरणासन्न व्यस्तता का हवाला देकर आने से इन्कार किया, पर प्रथम श्रेणी यात्रा-भत्ते की अग्रिम राशि ने उनमें तुरंत साहित्यिक प्राण फूंक दिए। नियम तय हुआ,हर लेखक घर से बना खाना लाएगा। खुद न बना सके तो किसी और का उठा लाए, पर लंच बॉक्स अपना होना चाहिए। जांच खाने की नहीं, डिब्बे की होगी। कोई अगर खाली डिब्बा लाना चाहे तो अध्यक्ष महोदय से पूर्व अनुमति अनिवार्य। यह भी तय हुआ कि अध्यक्ष स्वयं सभी के लंच बॉक्स खोलेंगे, थोड़ा चखेंगे और बांट देंगे। कुछ भाग्यशाली लेखक अपने डिब्बे उन्हें सौंप देंगे,आज किताब नहीं, लंच बॉक्स ही पीठ खुजाने का साधन थे। सब लेखक अपने-अपने डिब्बे लेकर पंक्तिबद्ध बैठ गए। अध्यक्ष महोदय भी अपना लंच बॉक्स लाए,भरा था या खाली, किसी ने देखने का साहस नहीं किया। उसे मेज पर ससम्मान रखा गया, अगरबत्ती जली, चरण-स्पर्श हुआ। अध्यक्ष का डिब्बा प्रतीक था,खुलने के लिए नहीं, पूजने के लिए। वे दूसरों के डिब्बे खोलने आए थे,अपना नहीं। जिनके डिब्बे की प्रशंसा उनके श्रीमुख से निकल जाती, उनकी रेसिपी अगले सत्र की पाठ्यक्रम-सूची में तय मानी जाती। वर्षों से वे अकादमियों और समितियों में पकाकर खिलाते आए थे,अब न उन्हें खाने की जरूरत थी, न खिलाने की। बस सूंघना ही पर्याप्त था। उनकी नाक कद से भी लंबी हो चुकी थी,देशी खाने को विदेशी अकादमियों में पहचान दिलाने की क्षमता दूर से ही सक्रिय हो जाती थी। कई डिब्बों में बासी भोजन था, जिसकी दुर्गंध खुले मैदान में फैल रही थी। पर जैसे ही वे अध्यक्ष के हाथ में आए, चमत्कार हुआ,सड़ांध सुगंध में बदल गई। भीनी-भीनी साहित्यिक खुशबू उठने लगी। इशारा होते ही तालियां बजीं। दो लेखकों के नाम पहले से तय थे। उनके डिब्बे खोले जाने का नाटक हुआ, कैमरे चमके। अध्यक्ष महोदय ने आल्हादित मुद्रा में चेहरा पांच मिनट तक स्थिर रखा,जब तक कि फ्लैश बुझ नहीं गए। जयशंकर, महादेवी और दिनकर की टिफिनों से उठी अधूरी साहित्यिक भूख आज तृप्त हुई। यह व्यंजन पेट ही नहीं, मन को भी तृप्त कर रहा है। पुस्तक मेले हों या गोष्ठियाँ,यह मंच का सितारा बनेगा। शब्दों की इस रसोई से परंपरा जीवित रहेगी। कहकर उन्होंने वरदहस्त रख दिया। लेखक धन्य हुआ।

-डॉ.मुकेश असीमित

यह लेखक के अपने विचार है।

आज का विचार

आत्मविश्वास सफलता की सीढ़ी है। यह वह शक्ति है, जो लक्ष्य-प्राप्ति की ऊर्जा देती है और कहती है मैं कर सकता हूं, मैं करूंगा। जिसे खुद पर विश्वास है, वह दुनिया बदल सकता है।

-श्री चन्द्रप्रभ जी

विंडो टू द वर्ल्ड

श्री देवी तालाब, जालंधर

जालंधर का प्रसिद्ध तीर्थस्थल सिद्ध शक्तिपीठ श्री देवी तालाब मंदिर एक विशाल सरोवर है, इसका इतिहास माता सती से जुड़ा है। इस सरोवर का नाम देश के 108 पावन सरोवरों में लिया जाता है। शहर में किसी समय 12 सरोवर थे। इनमें श्री देवी तालाब धार्मिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। तालाब के बीच 48 सतंभ भी बनाए गए।

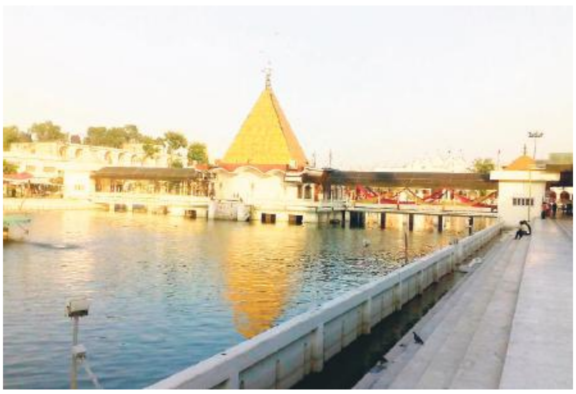

अपनों से अपनी सी बात

सन्तुलन से सफ़लता

हर व्यक्ति को जीवन में निराशा एवं प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना ही पड़ता है, लेकिन सफ़ल और सार्थक जीवन वही है जो सफ़लता और असफलता, अनुकूलता और प्रतिकूलता, सुख और दुःख, हर्ष और विषाद के बीच सन्तुलन बनाए रखता है।जीवन की समग्र समस्याओं का समाधान व्यक्ति चिन्तन के द्वारा खोज सकता है। जीवन का एक बड़ा सच यह हैं कि व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों मे भी सामान्य रूप जीवन यापन कर सकता हैं।आवश्यकता है तो बस मानसिक सन्तुलन बनाए रखने की।सकारात्मक चिन्तन वाला व्यक्ति इन्हीं परिस्थितियों मे धैर्य, शान्ति और सद्भावना से समस्याओं को समाहित कर लेता है, समस्याओं के साथ सन्तुलन स्थापित करता हुआ ऐसा व्यक्ति जीवन को मधुरता से भर लेता है सकारात्मक चिन्तन के माध्यम से इच्छा शक्ति जागती हैं, तीव्र इच्छा शक्ति से ही व्यक्ति आगे बढ़ता है और प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बना लेता हैं।किसी कार्य के लिए कितना भी संघर्ष करना पड़े, वह कार्य कितना भी मुश्किल क्यों न हो, परिस्थितियां चाहे कितनी भी मुश्किल क्यों न हो, संकल्प और इच्छा शक्ति से वह उसमें सफ़ल होता जाता है। बार बार उन परिस्थितियों के बारे में न सोचते हुए एक आशावादी दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति इन परिस्थितियों से छुटकारा पा सकता है प्रतिकूल परिस्थितियों के बारे में सोचते रहने से समस्याओं का समाधान सम्भव नहीं हैं।जब विचारों की उलझन को कम किया जाय, निर्वैचारिकता की स्थिति विकसित की जाय तब विचारों की निरन्तरता कम होगी।विचारों को कम करने में योग और साधना की महत्पूर्ण भूमिका है।

-ललित अकिंचन

Feedback@dainiknavajyoti.com

दृष्टिकोण

रोजगार गारंटी में सुधारः नाकामियों का ठीकरा सुधार के उपायों पर फोड़ना गलत

भावनाओं के बजाय तथ्यों पर आधारित हो बहस

"रोजगार गारंटी कानून ने ग्रामीण आय को स्थिर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और संकट के वक्त सुरक्षा प्रदान की। कोविड की वैश्विक महामारी जैसे संकट के समय में इसके योगदान को स्वीकार किया गया है। लेकिन समय के साथ अनुभव से इसकी दीर्घकालिक ढांचागत कमियां भी उजागर हुई हैं।

लोकतंत्र में लोकनीति पर सार्वजनिक बहस स्वाभाविक ही नहीं, बल्कि जरूरी भी है। आजीविकाओं (खास तौर से ग्रामीण परिवारों के लिए) को आकार देने वाले कानूनों की कड़ाई से समीक्षा की ही जानी चाहिए। लेकिन इस तरह की समीक्षा नए कानून के प्रावधानों के सावधानी पूर्वक अध्ययन पर आधारित होनी चाहिए। यह पिछले फ्रेमवर्क से निकाले गए अनुमानों या नुकसान के भय पर आधारित नहीं होनी चाहिए। मगर विकसित भारत-गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण) कानून 2025 की ज्यादातर आलोचनाएं इस जाल में फंस जाती हैं। इनमें जल्दबाजी में पिछली नाकामियों का विश्लेषण कर उनका ठीकरा सुधार पर ही फोड़ दिया जाता है।

दो दशक पहले बनाए गए रोजगार गारंटी कानून ने ग्रामीण आय को स्थिर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और संकट के वक्त सुरक्षा प्रदान की। कोविड की वैश्विक महामारी जैसे संकट के समय में इसके योगदान को स्वीकार किया गया है। लेकिन समय के साथ अनुभव से इसकी दीर्घकालिक ढांचागत कमियां भी उजागर हुई हैं। मजदूरी के भुगतान में बार-बार देरी हो रही थी। प्रक्रियात्मक अवरोधों ने बेरोजगारी भत्ते को अप्रभावी बना दिया था। विभिन्न राज्यों में इस योजना तक पहुंच में काफी अंतर था। प्रशासनिक क्षमता असमान थी तथा फर्जी जॉब कार्ड, उपस्थिति के रजिस्टर में हेरफेर और खराब गुणवत्ता वाली संपदाओं के सृजन से बड़े पैमाने पर धन की बर्बादी हुई। ये छोटी नहीं, बल्कि प्रक्रियात्मक खामियां थीं। इसलिए मुख्य मुद्दा यह नहीं है कि क्या सुधार की जरूरत थी। मुद्दा यह है कि क्या नए फ्रेमवर्क में इन खामियों को सार्थक ढंग से दूर किया गया है।

आम दावा है कि नए कानून में बुनियादी कमियां तो बनीं रहीं और समूची बहस को संक्षिप्ताक्षरों की होड़ में समेट दिया गया। लेकिन हकीकत में इसका उलट ही सच के ज्यादा करीब है। नया कानून डिलीवरी की उन कमियों को दूर करने पर केंद्रित है जिनकी वजह से पिछले फ्रेमवर्क की विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचा था।

कमजोर परंपरागत प्रणालियों की जगह सत्यापित कामगार पंजीकरण ने ले ली है। देरी के लिए स्वतः मुआवजे के प्रावधान के साथ मजदूरी भुगतान की वैधानिक समय सीमाएं तय की गई हैं। अयोग्यता के उन प्रक्रियात्मक प्रावधानों को खत्म कर दिया गया है जिनकी वजह से बेरोजगारी भत्ता अप्रभावी बन गया था। स्पष्ट समयसीमा और जवाबदेही के साथ शिकायत निवारण को मजबूत किया गया है। ये दिखावटी बदलाव नहीं हैं। ये उन खामियों को दूर करते हैं जिनसे कामगारों का विश्वास टूटता था। एक अन्य आलोचना यह है कि रोजगार गारंटी को खत्म कर दिया गया है। इनके अनुसार नई योजना में पुरानी कमजोरियां बनी हुई हैं। इस तरह की आलोचना सही नहीं है। वेतन रोजगार के कानूनी अधिकार को बरकरार और न्यायसंगत रखा गया है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह कि रोजगार की वैधानिक पात्रता को 100 दिनों से बढ़ाते हुए 125 दिन कर दिया गया है। बदलाव क्रियान्वयन की संरचना में किया गया है। पुराने कानून का मॉडल टुकड़ों में बंटा हुआ और प्रतिक्रियात्मक था। यह अक्सर संकट शुरू हो जाने के बाद ही हरकत में आता था। नए कानून का फ्रेमवर्क योजनाबद्ध और लागू करने योग्य है। इसे पूर्वानुमान के आधार पर कार्य सौंपे जाने के लिए डिजाइन किया गया है। वैधानिक सुधार के जरिए क्रियान्वयन की नाकामियों को दूर किए जाने को दोहराव नहीं, बल्कि संशोधन माना जाना चाहिए। बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे अधिक गरीब आबादी वाले राज्यों को पहले के फ्रेमवर्क के तहत सबसे कम लाभ मिलने के सम्बन्ध में जो चिंताएं जताई गईं हैं, वे सही हैं लेकिन यह बात सुधार की जरूरत को और मजबूत करती है, न कि उसे कमजोर करती है। इन राज्यों में मनरेगा का लाभ कम पहुंचा यह योजना की एक बड़ी विफलता थी। बिना किसी ठोस योजना के सिर्फ मांग के आधार पर चलने वाला मॉडल उन राज्यों के पक्ष में रहा जिनकी प्रशासनिक क्षमता बेहतर थी, जबकि अधिक जरूरत और पलायन वाले राज्य पिछड़ गए। नया फ्रेमवर्क सीधे तौर पर इस असंतुलन को दूर करता है, यह रोजगार पैदा करने के काम को 'विकसित ग्राम पंचायत योजनाओं' से जोड़ता है, जहाँ स्थानीय मांग और कामों की पहले से मंजूरी को सुनिश्चित फंडिंग के साथ मिलाया जाता है। असमान वितरण ही सुधार की ज़रूरत की असली वजह थी; पुरानी व्यवस्था को बनाए रखने का मतलब केवल मौजूदा असमानताओं को और बढ़ाना होता। इसके अलावा, निष्पक्ष मानकों पर आधारित आवंटन से राज्यों के बीच संसाधनों के बंटवारे में अधिक पारदर्शिता और निष्पक्षता आएगी। आलोचना का एक पक्ष यह भी है कि 125 दिनों का रोजगार देने का विस्तार केवल दिखावा है, क्योंकि अब राज्यों को भी खर्च का एक हिस्सा उठाना होगा। यह तर्क पहले के उदाहरणों और सुरक्षा उपायों दोनों को नज़रअंदाज़ करता है। केंद्र और राज्यों के बीच खर्च बांटने का यह तरीका केंद्र-प्रायोजित योजनाओं के पुराने नियमों के अनुसार ही रखा गया है। वहीं, उत्तर-पूर्वी और हिमालयी राज्यों तथा जम्मू-कश्मीर के लिए 90:10 के अनुपात (जहाँ केंद्र 90 और राज्य 10 प्रतिशत खर्च उठाते हैं) को जारी रखा गया है।

-शैलेश कुमार सिंह
सचिव, ग्रामीण विकास विभाग

अश्लीलता के विरुद्ध

एआइ टूल ग्रोक से बनायी गयी अश्लील तस्वीरों को एक्स पर पोस्ट किये जाने पर भारत सरकार की सख्त चेतावनी के बाद एक्स ने जिस तरह रक्षात्मक रवैया अपनाया, वह एक और उदाहरण है कि सख्ती बरतकर ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की मनमानियों पर रोक लगायी जा सकती है. दरअसल, एक्स पर बीते कई दिनों से महिलाओं की अश्लील तस्वीरें पोस्ट की जा रही थीं. हद तो तब हो गयी, जब एक यूजर ने एआइ की मदद से मस्क की बिकिनी पहने हुई तस्वीर बनायी और उसे पोस्ट कर दिया. उस पोस्ट पर गंभीरता बरतने के बजाय मस्क मजे लेते नजर आये. उन्होंने ग्रोक का बचाव करते हुए कहा था कि कलम यह तय नहीं करती कि क्या लिखा जाये. यह कलम पकड़ने वाला शख्स तय करता है. उनका मंतव्य यह था कि आपत्तिजनक कंटेंट की जिम्मेदारी टूल की नहीं, बल्कि उसका इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति की होती है. मस्क के इस रवैये ने लोगों को गुस्से से भर दिया. पूरे मामले में राज्यसभा सदस्य प्रियंका चतुर्वेदी ने केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव को चिट्ठी लिखकर कहा था कि कुछ लोग एआइ की मदद से महिला की असली तस्वीरों को आपत्तिजनक कंटेंट में बदल रहे हैं, जो बेहद गंभीर मामला है. उन्होंने अविलंब इस पर कार्रवाई करने की मांग की. इस पर सरकार की तरफ से एक्स को नोटिस भेजकर 72 घंटों में जवाब देने के लिए कहा गया कि कंपनी ने इस मामले में क्या कार्रवाई की है. मंत्रालय ने इस पर भी चिंता जतायी कि ग्रोक का दुरुपयोग महिलाओं के अश्लील और अभद्र कंटेंट बनाने के लिए किया जा रहा है, तथा एक्स इस संदर्भ में आइटी एक्ट, 2000 और आइटी रूल्स, 2021 के तहत अपनी जिम्मेदारियां निभाने में नाकाम रहा है. केंद्र सरकार के सख्त रवैये पर मस्क को मामले की गंभीरता का अहसास हुआ. सरकार की चेतावनी के बाद एक्स ने ग्रोक से अश्लील कंटेंट तुरंत हटाने की बात तो कही ही, यह भी कहा कि अगर कोई यूजर ग्रोक का इस्तेमाल करके आपत्तिजनक कंटेंट बनाता है, तो उसके खिलाफ भी वही कार्रवाई होगी, जो सीधे गैरकानूनी कंटेंट अपलोड करने पर होती है. यानी यूजर के अकाउंट को प्रतिबंधित कर दिया जायेगा. गौरतलब है कि एआइ टूल ग्रोक पहले भी विवादों में रहा है. पिछले साल उसने नेताओं और मंत्रियों के लिए अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया था. पर भारत में, जाहिर है, ऐसी मनमानी नहीं चलने वाली.

एआइ टूल ग्रोक से बनायी गयी अश्लील तस्वीरों को एक्स पर पोस्ट किये जाने पर सरकार की सख्ती के बाद एक्स को मामले की गंभीरता का अहसास हुआ. यह प्रसंग एक और उदाहरण है कि भारत में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को यहां के नियम-कानूनों के अनुरूप चलना पड़ेगा.

रक्षा खरीद प्रक्रिया में तेजी देशहित में है

हर्ष कक्कड़
मेजर जनरल (सेवानिवृत्त)
kakarharsha@gmail.com

पिछले साल के अंत में रक्षा अधिग्रहण परिषद ने 79,000 करोड़ रुपये की रक्षा खरीद के प्रस्ताव को मंजूरी दी. रक्षा खरीद प्रक्रिया की अवधि घटाने के लिए नयी नियमावली भी लागू हो चुकी है. हमारे सशस्त्र बल अपनी रक्षा क्षमता बढ़ा रहे हैं, क्योंकि उन्हें अंदेशा है कि ऑपरेशन सिंदूर 2.0 कभी भी शुरू हो सकता है और वैसी स्थिति में चीन फिर पाकिस्तान की मदद करेगा. इस कारण सेना चाहती है कि रक्षा जरूरतों के लिए न सिर्फ पर्याप्त बजट हो, बल्कि रक्षा उत्पादों व उपकरणों की उपलब्धता में भी ज्यादा समय न लगे.

पिछले साल के अंत में रक्षा मंत्री के नेतृत्व वाली रक्षा अधिग्रहण परिषद ने 79,000 करोड़ रुपये की रक्षा खरीद के प्रस्ताव को मंजूरी दी. वित्त वर्ष 2025-26 के लिए रक्षा क्षेत्र के लिए बजट में 6.81 लाख करोड़ रुपये आवंटित किये गये थे, जिनमें से 1.49 लाख करोड़ रुपये पूंजीगत खर्च के लिए रखे गये थे. इस धनराशि का 75 प्रतिशत घरेलू उत्पादन के लिए रखा गया था, ताकि रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को गति दी जा सके. रिपोर्टों के मुताबिक, वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही तक सरकार ने पूंजीगत खर्च के लिए आवंटित धनराशि का 80 फीसदी खर्च कर दिया, जो 1.2 लाख करोड़ रुपये बैठता है. ऐसे में, उम्मीद है कि वित्त वर्ष के खात्मे तक पूरी आवंटित धनराशि का इस्तेमाल हो जायेगा. यह अच्छी बात है, क्योंकि इससे पहले तक रक्षा मंत्रालय आवंटित धनराशि का पूरा इस्तेमाल नहीं कर पाता था. दरअसल सशस्त्र बलों की ओर से लगातार यह मांग की जाती रही थी कि उनकी जरूरतों के हिसाब से बजट में ऐसा प्रावधान किया जाये कि यदि उसका कुछ हिस्सा खर्च न हो पाये, तो उसे लौटाये बिना अगले बजट में जोड़ दिया जाये. उसकी वजह यह है कि रक्षा खरीद की प्रक्रिया लंबी होती है. जब सेना को हथियारों व उपकरणों की जरूरत होती है, तो उसका प्रस्ताव बनाकर भेजा जाता है, उसे मंजूरी मिलती है, उसकी जांच होती है, फिर रक्षा उत्पादों की आपूर्ति होती है.

सरकार ने रक्षा खरीद प्रक्रिया की अवधि कम करने के लिए नयी रक्षा खरीद नियमावली जारी की है, जो पिछले साल एक नवंबर से लागू हो चुकी है. इसका उद्देश्य रक्षा खरीद प्रक्रिया की अवधि को पांच-आठ साल से घटाकर दो साल करने का है. सरकार ने तत्काल आपातकालीन रक्षा खरीद के लिए 40,000 करोड़ रुपये के फंड का प्रावधान भी रखा है. इसके तहत रक्षा उत्पादों की खरीद के प्रस्ताव को 40 दिन में मंजूरी मिल जानी है और एक साल के अंदर इनकी आपूर्ति हो जानी है. इस प्रावधान के तहत रक्षा बल ड्रोन और गोला-बारूद की आसान खरीद कर सकते हैं, जो देश में ही उपलब्ध हैं. इसके अलावा सेना रक्षा बजट को बढ़ाकर जीडीपी के तीन प्रतिशत के आसपास करने की मांग करती आ रही है, ताकि नयी सुरक्षा चुनौतियों के मद्देनजर सेना के आधुनिकीकरण के अभियान को अंजाम दिया जा सके. जबकि अभी रक्षा बजट जीडीपी का मात्र 1.9 प्रतिशत है. बेशक सरकार एक बार में रक्षा बजट बढ़ाकर जीडीपी का तीन प्रतिशत नहीं कर सकती. उसे इसमें लगातार वृद्धि करनी चाहिए. लेकिन भारत चूंकि एक विकासशील देश है, ऐसे में, सरकार को बजट आवंटन में सामाजिक तथा कल्याणकारी योजनाओं तथा जनसंख्या की विकास जरूरतों का भी ध्यान रखना होगा. रक्षा खरीद की प्रक्रिया चूंकि धीमी होती है, लिहाजा अभी जिन रक्षा उत्पादों की खरीद का आदेश पारित किया जाता है, उनकी आपूर्ति में समय लग जाता है. उसमें भी जो रक्षा उपकरण आधुनिकतम और परिष्कृत होते हैं, उनकी उपलब्धता में उतना ही अधिक समय लगता है. जैसे एचएएल (हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड) हर साल तेजस लड़ाकू विमान का सीमित संख्या में ही उत्पादन कर पाती है. नौसेना के लिए राफेल की खरीद का आदेश पिछले साल दिया गया, पर नौसेना को वे राफेल 2028-29 में ही मिल पायेंगे. इसी तरह 31 एमक्यू 9बी प्रीडेटर ड्रोन के ऑर्डर पिछले साल जारी किये, पर इसकी पहली खेप 2029 तक ही मिल पायेगी. यह सिलसिला अगले कुछ वर्षों तक जारी रहेगा.

भविष्य की आवश्यकताओं के हिसाब से रक्षा उपकरणों की सूची बनाने के लिए व्यापक अध्ययन और विश्लेषण की जरूरत पड़ती है. ऐसा इसलिए, क्योंकि जिन रक्षा उपकरणों को सैन्य बेड़े में शामिल किया जाता है, उनका इस्तेमाल आगामी कई दशकों तक होता है. लड़ाकू विमानों, जहाजों और टैंकों को लगातार अपग्रेड किया जाता है, जिससे कि वे लंबे समय तक सेवा में बने रह सकें. ऐसे में, रक्षा खरीद प्रक्रिया में लिया गया कोई गलत फैसले का आर्थिक और सुरक्षा के मोर्चे पर होने वाला नुकसान बहुत ज्यादा हो सकता है. इसीलिए रक्षा खरीद प्रक्रिया में हड़बड़ी नहीं की जाती. युद्ध के बदलते स्वरूप के मद्देनजर भी सशस्त्र बल लगातार और हर स्तर पर तकनीक में बदलाव लाने की कोशिश करते हैं. भैरव बटालियन, रुद्र ब्रिगेड और शक्तिवान बटालियन के गठन के जरिये भी सेना ने युद्ध में बदलती तकनीकों पर निर्भरता बढ़ायी है. ड्रोन के इस्तेमाल में पारंगत ये नयी सैन्य इकाइयां नियमित सैन्य टुकड़ी के साथ संतुलन बनाते हुए ऑपरेशन को अंजाम देंगी, जिससे हमारी सैन्य मारक क्षमता बढ़ेगी. ऐसी रिपोर्ट है कि सेना ने एक लाख ड्रोन ऑपरेटरों का पूल तैयार किया है. ताजा रक्षा खरीद को मिली मंजूरी में रूटीन रक्षा उत्पादों के अलावा अपग्रेड टी-90 टैंक, सटीक निशाने तक पहुंचने वाले हथियार, लंबी दूरी वाले रॉकेट और एंटी ड्रोन प्रणाली हैं. रक्षा बल की सैन्य क्षमता बढ़ाने के लिए तो इनकी आवश्यकता है ही, इनके जरिये दुश्मनों के ड्रोन हमलों से भी सुरक्षा सुनिश्चित होगी. ड्रोन, एंटी ड्रोन प्रणाली और लंबी दूरी तक मार करने वाले पिनाक मिसाइलों का उत्पादन स्थानीय स्तर पर होता है. जबकि युद्धक्षेत्र की बढ़ती चुनौतियों के मद्देनजर टैंकों को अपग्रेड करना पड़ता है. यूक्रेन युद्ध का भी सबक यही है कि रक्षा उत्पादों का आधुनिकीकरण और उन्हें नियमित तौर पर अपग्रेड करना जरूरी है.

नौसेना के लिए जिन रक्षा उत्पादों को मंजूरी मिली है, उनमें वार शिप और संचार प्रणाली तो हैं ही, अपनी निगरानी क्षमता मजबूत करने के लिए अमेरिका से दो एयरक्राफ्ट सिस्टम लीज पर लेने का प्रस्ताव भी शामिल है. जबकि वायुसेना के लिए मिसाइल, उन्नत सिमुलेटर्स और स्वचालित टेक ऑफ तथा लैंडिंग रिकॉर्डिंग सिस्टम की खरीद को मंजूरी मिली है. जिन मिसाइलों की खरीद होनी है, उनमें भारत-इस्राइल द्वारा मिलकर बनायी जाने वाली बराक मिसाइलें भी हैं. इन रक्षा उपकरणों की खरीद से सैन्य आधुनिकीकरण का लक्ष्य पूरा होगा. हमारे सशस्त्र बल आसन्न चुनौतियों के मद्देनजर धीरे-धीरे अपनी रक्षा क्षमता बढ़ा रहे हैं, क्योंकि उन्हें अंदेशा है कि ऑपरेशन सिंदूर 2.0 कभी भी शुरू हो सकता है और वैसी स्थिति में चीन पाकिस्तान की मदद करेगा. इसलिए सेना चाहती है कि रक्षा जरूरतों के लिए न सिर्फ पर्याप्त बजट हो, उपकरणों की उपलब्धता में भी अधिक समय न लगे. इस संदर्भ में रक्षा उत्पादन करनेवाली देश की सार्वजनिक कंपनियों को भी समय पर रक्षा उत्पादों की आपूर्ति करनी होगी. **(ये लेखक के निजी विचार हैं.)**

फंसे कर्ज की वसूली में तेजी के कारण मजबूत हो रहे बैंक

सतीश सिंह
आर्थिक मामलों के जानकार
satish5249@gmail.com

आरबीआइ द्वारा जारी छमाही वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के अनुसार, बैंकों का सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (जीएनपीए) अनुपात सितंबर, 2025 तक कम होकर 2.1 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गया है. इसके प्रमुख कारण बड़े उधारकर्ताओं के पोर्टफोलियो की गुणवत्ता में लगातार सुधार, फंसे कर्ज की वसूली में तेजी, एनपीए खातों का राइट ऑफ करना, ऋण की मांग का स्थिर रहना आदि हैं.

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 31 दिसंबर, 2025 को जारी छमाही वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के अनुसार, बैंकों का सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (जीएनपीए) अनुपात सितंबर, 2025 तक कम होकर 2.1 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गया है. रिजर्व बैंक का अनुमान है कि मौजूदा स्थिति के अगले महीनों में भी कायम रहने पर 46 बैंकों का जीएनपीए मार्च, 2027 तक घट कर 1.9 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच सकता है. यदि देश की आर्थिक स्थिति प्रतिकूल रहती है, तब भी यह अनुपात 3.2 से 4.2 प्रतिशत के बीच रहेगा. इससे पहले की स्थिरता रिपोर्ट में कहा गया था कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का जीएनपीए मार्च, 2018 में 14.58 प्रतिशत के उच्चतम स्तर पर था, वह सितंबर, 2024 में घटकर 3.12 प्रतिशत स्तर पर पहुंचा था.

परिसंपत्ति की गुणवत्ता में सुधार के प्रमुख कारण बड़े उधारकर्ताओं के पोर्टफोलियो की गुणवत्ता में लगातार सुधार, फंसे कर्ज की वसूली में तेजी, एनपीए खातों का राइट ऑफ करना, ऋण की मांग का स्थिर रहना आदि हैं. इसके साथ-साथ, परिसंपत्ति पर प्रतिफल (आरओए) और इक्विटी पर प्रतिफल (आरओइ) में भी हाल के वर्षों में वृद्धि हुई है और यह 10 वर्षों के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है, जिससे जीएनपीए अनुपात में निरंतर कमी देखी जा रही है. ताजा स्थिरता रिपोर्ट में कहा गया है कि बैंकों का पूंजी जोखिम भारित परिसंपत्तियों का अनुपात (सीआरएआर) सुधरा है. सितंबर, 2025 तक यह सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में 16 प्रतिशत था, जबकि निजी क्षेत्र के बैंकों में 18.1 प्रतिशत था. मार्च, 2015 में यह अनुपात 11.45 प्रतिशत था, जो सितंबर 2024 में बढ़कर 15.43 प्रतिशत हो गया. अधिक प्रतिशत का मतलब है कि बैंकों के पास पर्याप्त पूंजी है, जिससे वे जोखिम का सामना कर सकते हैं. रिपोर्ट में कहा गया है कि 46 प्रमुख अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का कुल सीआरआर सितंबर, 2025 में 17.1 प्रतिशत से घटकर मार्च, 2027 तक 16.8 प्रतिशत हो सकता है. चूंकि इस अनुपात में मामूली कमी आने की संभावना है, इसलिए बहुत अधिक चिंता करने की आवश्यकता नहीं है. रिपोर्ट की मानें, तो अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की बड़े कर्जदारों पर निर्भरता कम हो गयी है, जो अच्छा संकेत है.

वर्तमान में, 12 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का कारोबार बैंकिंग क्षेत्र के कुल कारोबार का लगभग 60 प्रतिशत है. वित्त वर्ष 2025-26 के पहले छह महीनों में इन्हें 93,675 करोड़ रुपये का लाभ हुआ, जो पिछले वर्ष अप्रैल से सितंबर तक के 85,520 करोड़ रुपये से लगभग 10 प्रतिशत अधिक है. ऐतिहासिक आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2026 के अंत तक यह मुनाफा दो लाख करोड़ रुपये के स्तर को पार कर सकता है. पिछले वित्त वर्ष में, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने रिकॉर्ड 1.78 लाख करोड़ रुपये का लाभ कमाया, जबकि 2023-24 के दौरान, 1.41 लाख करोड़ रुपये का सबसे अधिक कुल शुद्ध लाभ दर्ज किया था. अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग व्यवस्था के अनुरूप, भारतीय रिजर्व बैंक ने 2015 में परिसंपत्ति की गुणवत्ता के पुनरीक्षण (एक्यूआर) की व्यवस्था शुरू की थी, ताकि पारदर्शी तरीके से दबावग्रस्त ऋणों को एनपीए में वर्गीकृत किया जा सके. इस कारण 2018 तक एनपीए में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिसके चलते बैंकों की ऋण देने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और अर्थव्यवस्था की वृद्धि भी बाधित हुई. हालांकि, जल्द ही सरकार और केंद्रीय बैंक की समीचीन नीतियों की वजह से बैंकों ने एनपीए के स्तर को कम करने और लाभ को बढ़ाने में सफलता प्राप्त की. बैंकों ने देश में वित्तीय समावेशन की संकल्पना को साकार करने के लिए प्रधानमंत्री जनधन योजना के तहत 54 करोड़ से अधिक जनधन खाते खोले और विभिन्न प्रमुख वित्तीय समावेशन योजनाओं के तहत 52 करोड़ से अधिक बिना गारंटी के ऋण स्वीकृत किये.

बैंक महिलाओं को सशक्त भी बना रहे हैं. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के लाभार्थियों में महिलाएं लगभग 68 प्रतिशत हैं, जबकि प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के लाभार्थियों में महिलाएं लगभग 44 प्रतिशत हैं. इन पहलों के कारण मार्च, 2024 तक कुल सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम का अग्रिम स्तर 28.04 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया है, जो दर्शाता है कि छोटे कारोबारियों को मजबूती मिल रही है. बैंक लगातार किसानों और कृषि क्षेत्र को समर्थ बनाने का प्रयास भी कर रहे हैं. सितंबर, 2024 तक कुल किसान क्रेडिट कार्ड खातों की संख्या 7.71 करोड़ थी, और उनमें कुल बकाया राशि 9.88 लाख करोड़ रुपये थी. अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का सकल अग्रिम वित्त वर्ष 2004 से 2014 के दौरान 8.5 लाख करोड़ से बढ़कर 61 लाख करोड़ रुपये हो गया, और यह मार्च, 2024 तक 175 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया. कहा जा सकता है कि 2015 के बाद सरकार, बैंक और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा उठाये गये समीचीन कदमों से एनपीए की वसूली और उसके समाधान, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पुनर्पूंजीकरण और उनके समक्ष आने वाली अन्य चुनौतियों का सामना करने में मदद मिली है, जिससे बैंकों के कारोबार और लाभ में तेजी और एनपीए के स्तर में निरंतर कमी आ रही है. इससे बैंकिंग क्षेत्र और भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत हो रही है.

(ये लेखक के निजी विचार हैं.)

देश दुनिया

जन भावनाओं को समझें नेपाल के राजनेता

वर्ष 1990 में लोकतंत्र की बहाली के बाद, राजनेताओं ने अक्सर यह वादा किया कि वे नेपाल को एशिया का स्विट्जरलैंड बना देंगे. इस क्रम में दीवारों पर रंग-बिरंगे चुनावी नारे लिखे गये. ओली सरकार के पतन तक, मुख्यधारा के राजनेता करदाताओं के पैसे को अलग-अलग योजनाओं के नाम पर अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने में लगा रहे थे, पर अंततः इनसे लोगों के जीवन स्तर में कोई सुधार नहीं हुआ. आकर्षक नारे शुरुआत में मतदाताओं को लुभा सकते हैं, पर वास्तविक नीतिगत प्रतिबद्धता के बिना वे मतदाताओं में अविश्वास और जनता में हताशा ही पैदा करते हैं. कुछ समय पूर्व हुआ जेन जी का विद्रोह इस घटना का जीता-जागता प्रमाण है. इतिहास गवाह है कि राजनीतिक आंदोलन में भारी बलिदान की आवश्यकता होती है, पर इसकी अंतिम सफलता इसके जन्मदाताओं पर निर्भर करती है. अमेरिकी गृहयुद्ध में एक बड़ी जीत के बाद, और भारी जानमाल के नुकसान के बावजूद अब्राहम लिंकन ने अपने भाषण में संघ के सदस्यों को याद दिलाया था कि अभी भी कई अधूरे काम बाकी हैं. उन्होंने 'जनता की सरकार, जनता द्वारा, जनता के लिए' सुनिश्चित कर के स्वतंत्रता और समानता के प्रति राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को फिर से मजबूत करने का आह्वान किया था. नेपाल की राजनीतिक संस्कृति ने लंबे समय से, सरकार को लेकर लिंकन के जो दृष्टिकोण थे, उसे कमजोर कर दिया है. वास्तविक अर्थों में गरीबी से लड़ने, वंचित लोगों की सहायता करने और निर्धन समुदायों के उत्थान की जगह कई बड़े नेताओं ने कई मोर्चों पर बिचौलियों के साथ साठगांठ की है. हमारे राजनेताओं को समझना होगा कि स्विट्जरलैंड की समृद्धि को दुहराना केवल सुंदर पहाड़ों या दर्शनीय स्थलों तक सीमित नहीं है. इसने चुनौतीपूर्ण समय में तटस्थता को राष्ट्रीय रणनीति के रूप में अपनाया, न कि केवल बयानबाजी के लिए. स्विट्जरलैंड की समृद्धि धरती खोदने से नहीं आयी, यह विश्वास पर टिकी है और पड़ोसी देशों के साथ घनिष्ठ संबंधों से पोषित हुई है.

THE KATHMANDU POST

-दुर्गा गौतम

बोधि वृक्ष

सामंजस्य से होती है प्रगति

यह सर्वविदित है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति संघर्ष और सामंजस्य के माध्यम से ही संभव हो पाती है. जहां संघर्ष नहीं है, वहां गति नहीं है. और जहां सामंजस्य नहीं है, वहां स्थायित्व नहीं है. ऐसी प्रगति में स्वयं आंदोलन ही एकमात्र लक्ष्य बन जाता है. जीवन ठहराव को स्वीकार नहीं करता है, वह निरंतर रूपांतरण चाहता है. रूपांतरण की इस प्रक्रिया को एक सूक्ष्म दार्शनिक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है. जब किसी कला या क्षमता के विकास की संभावनाएं क्रमशः सिमटने लगती हैं और वह अपने चरम बिंदु पर पहुंच जाती है, तब उसे 'पराकाष्ठा' कहा जाता है. उस अवस्था में आगे कोई परिवर्तन संभव नहीं रहता और गति एक सीधी रेखा में चलने लगती है. एक महान पापी के संदर्भ में इसे पाप की पराकाष्ठा कहा जायेगा, जबकि आध्यात्मिक साधक के जीवन में यह लक्ष्य की ओर अंतिम गहन गति का संकेत है. मनुष्य स्वभावतः लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला प्राणी है. लक्ष्य के अभाव में किया गया सारा श्रम व्यर्थ हो जाता है. इसे समझाने के लिए नाव का उदाहरण अत्यंत सारगर्भित है. यदि कोई नाव चला रहा हो, पर उसे यह ज्ञात न हो कि उसे नाव को किस ओर ले जाना है, तो उसका समस्त प्रयास निष्फल सिद्ध होगा. जब नाव को धारा के सहारे नीचे की ओर छोड़ दिया जाता है, तो वह गहरे समुद्र की ओर बह जाती है और किनारे की दृष्टि खो देती है. इसमें श्रम नहीं लगता, पर दिशा का अभाव होता है. इसके विपरीत, यदि नाव को बिना उपयुक्त साधनों के ऊपर की ओर खींचा जाये, तो यह केवल मांसपेशियों का अनावश्यक खिंचाव बन जाता है, जिसका दीर्घकालिक कोई लाभ नहीं मिलता है. सर्वोत्तम स्थिति वह है, जब पाल ठीक से लगाया जाये और हवा के साथ सामंजस्य बिठा कर नाव को आगे बढ़ाया जाये. इस अवस्था में नाव सहज रूप से चलती है और आगे बढ़ती है. इसी सहज प्रवाह में जो गीत गाये जाते हैं, उन्हें 'भटियाली' कहा जाता है. इसमें श्रम नहीं, अवकाश और लय होती है. नाविक के पास स्वर को लंबा खींचने, भाव में डूबने और गीत को विस्तार देने का समय होता है.

-श्री श्री आनंदमूर्ति

कुछ अलग

मुश्किलें बढ़ा रहा है ट्रैफिक जाम

रितुप्रिया शर्मा
टिप्पणीकार
ritup2382@gmail.com

आज हमारा देश, दुनिया के तेजी से आगे बढ़ने वाले देशों में शामिल हैं, पर एक समस्या, जिसने पूरे देश को परेशान कर रखा है, वह है सड़कों पर वाहनों की बढ़ती संख्या. इससे ट्रैफिक जाम की समस्या खड़ी हो गयी है. महानगरों से लेकर छोटे शहरों तक, हर जगह जाम लगा रहता है. सुबह और शाम के वक्त जब लोगों के काम का समय होता है, जाम इतना ज्यादा बढ़ जाता है कि कम दूरी तय करने में भी घंटों लग जाते हैं और वे अपने गंतव्य पर समय से पहुंच नहीं पाते.

भारत में हर वर्ष लाखों की संख्या में नये वाहन सड़क पर उतरते हैं, परंतु सड़कें उस अनुपात में नहीं हैं, इससे ओवरलोडिंग की स्थिति बन जाती है. बहुत से शहरों में बस, लोकल ट्रेन या अन्य सार्वजनिक परिवहन की सुविधाएं समय से संचालित नहीं हो पाती हैं या अपर्याप्त हैं, जिससे लोगों का निजी वाहनों पर भरोसा बढ़ा है और सड़कें वाहनों के भार से दबी जा रही हैं. इन सबका परिणाम है कि लोग ट्रैफिक नियमों की अनदेखी करने लगे हैं. वे गलत तरीके से गाड़ी चलाते हैं और सड़कों पर जाम को बढ़ाते हैं. सड़कों पर अवैध पार्किंग, खुदाई का काम या सामाजिक कार्यक्रम आदि भी ट्रैफिक की समस्या बढ़ाते हैं. इससे न केवल लोगों का समय नष्ट होता है, बल्कि प्रदूषण बढ़ता है ओर व्यापार-उद्योग की उत्पादकता प्रभावित होती है. मानसिक तनाव, सड़क दुर्घटनाएं आदि ट्रैफिक का परिणाम हैं. समस्या अत्यंत गंभीर है, पर इसका उपचार भी हमारे ही हाथों में हैं. विशेषकर बड़े शहरों के लिए, जहां जाम लगने पर वाहन केवल सरकते रहते है, वहां सार्वजनिक परिवहन जैसे बस, मेट्रो, लोकल ट्रेन आदि के नेटवर्क को बढ़ाने और समयबद्ध करने की आवश्यकता है, जिससे निजी वाहनों पर निर्भरता कम की जा सके. नये फ्लाईओवर, चौड़ी सड़कें, पार्किंग जोन, स्मार्ट ट्रैफिक सिग्नल और पैदल मार्गों का विकास ज्यादा उपयोगी साबित हो सकता है.

ट्रैफिक नियमों का कड़ाई से पालन करना भी जरूरी है. हमें अपने स्तर पर साझा यात्रा को बढ़ावा देना चाहिए. जैसे एक ही स्थान पर जाने वाले लोग कैब शेयर करें. सीसीटीवी, जीपीएस आधारित बस ट्रैकिंग, ट्रैफिक सेंसर और ट्रैफिक मैनेजमेंट जैसी तकनीकों को अपनाये जाने की जरूरत है. ट्रैफिक नियम को लेकर लोगों को जागरूक करना भी एक उपाय हो सकता है. यह न केवल प्रशासनिक मुद्दा है, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी है कि हम जाम को रोकें. यह नागरिकों की भी जिम्मेदारी है कि वे ट्रैफिक नियम का पालन करें, तभी ट्रैफिक व्यवस्था में सुधार संभव है. देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह ट्रैफिक जाम को समय, ऊर्जा तथा शक्ति की बर्बादी के साथ ही दुर्घटनाओं का निमंत्रण समझे और इसे कम करने के उपायों को जाने और उसे अपनाये.

आपके पत्र

अस्पताल में क्षेत्रीय बोली की दरकार

देवघर एम्स में इलाज के लिए अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों से मरीज आते हैं. पर यहां के अधिकतर कर्मचारी उनके साथ ऐसी भाषा में बातचीत करते हैं, जो उन्हें ठीक से समझ नहीं आती, इससे वे सहम जाते हैं. चिकित्सा विज्ञान भी मानता है कि आधी बीमारी डॉक्टर के व्यवहार एवं सांत्वना से ठीक होती है. सरकार से आग्रह है कि एम्स जैसे संस्थान में कर्मचारियों की नियुक्ति एवं प्रशिक्षण में भाषाई संवेदनशीलता को अनिवार्य बनाया जाये. यदि एम्स के कर्मचारी स्थानीय भाषा में बोलेंगे, तो ग्रामीणों को सुविधा होगी.

संदीप भोक्ता, सारठ

सिक्के के आकार को लेकर परेशानी

एक रुपये का नया सिक्का, जो आकार में पहले के सिक्के की तुलना में छोटा है, उसे कोई भी खुदरा विक्रेता, चाहे वह सब्जीवाला हो, दूधवाला हो या बस या ऑटो रिक्शावाले, लेने से इनकार करता है और फिर बहस छिड़ जाती है. जब तक बाजार में एक रुपये का पुराना और आकार में बड़ा सिक्का तथा नया छोटे आकार का सिक्का, दोनों रहेंगे, तब तक यह समस्या बनी रहेगी. सरकार और बैंक को इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने की जरूरत है, ताकि आम जन को इस परेशानी से छुटकारा मिले.

श्रीमय घोष, जमशेदपुर

नवभारत टाइम्स • विचार

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली । बुधवार, 7 जनवरी 2026

> जटिल नियम बेईमानों की मदद करते हैं, जबकि सरल नियम लोकतंत्र को मजबूत बनाते हैं।
> *– टी एन शेषन, पूर्व चुनाव आयुक्त*

पूरा मौक़ा मिले

कई राजनीतिक विवाद और तारीखें बढ़ने के बाद आखिरकार यूपी में Special Intensive Revision का ड्राफ्ट रोल जारी हो गया। चुनाव आयोग ने बताया है कि पहले चरण के बाद 2.89 करोड़ नाम काटे गए हैं - इसका अंदाजा पहले से ही था। अभी तक जिन 11 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की ड्राफ्ट लिस्ट आई है, वहां कुल मिलाकर 3.69 करोड़ नाम कटे हैं। ड्राफ्ट लिस्ट फाइनल नहीं होती। लोगों के पास दावे और आपत्तियों के लिए अब भी मौका है, लेकिन यह प्रक्रिया सरल और आम नागरिकों की सुविधा का ख्याल रखने वाली होनी चाहिए।

AI Image

2.89 करोड़ नाम कटे

बिहार का उदाहरण । पहले चरण में बिहार में SIR को अंजाम दिया गया था। वहां जारी शुरुआती लिस्ट में 65 लाख नाम कटे थे, जिसे लेकर काफी हंगामा मचा था। जब लिस्ट रिवाइज की गई, तो 17.9 लाख वोटर्स और बढ़ गए। ऐसा ही बदलाव यूपी और उन राज्यों में भी देखने को मिल सकता है, जहां आपत्तियां ली जा रही हैं या अब ली जाएंगी।

बंगाल में विवाद । चुनाव से जुड़ी जरूरी प्रक्रिया होने के बावजूद SIR को लेकर कई विवाद चलते रहे हैं। दुर्भाग्य से दूसरे चरण में जिन राज्यों में ड्राफ्ट रोल आ चुका है, वहां भी विवाद थमने का नाम नहीं ले रहे। खासकर बंगाल में सबसे ज्यादा असंतोष है। राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अब SIR में इस्तेमाल होने वाले सॉफ्टवेयर पर सवाल उठाए हैं। उनकी पार्टी TMC उन वोटर्स की मैपिंग में भी गड़बड़ी बता रही है, जिनके नाम लिस्ट में नहीं हैं।

लोगों की मदद । चुनाव आयोग ने डेटा जारी कर बताया है कि इन नामों को किन-किन वजहों से काटा गया। यह स्पष्टीकरण अच्छी बात है, लेकिन जिनके नाम नहीं हैं, उन्हें उनके मताधिकार को हासिल करने के लिए हरसंभव मदद की जानी चाहिए। इसमें राजनीतिक दलों की भी जिम्मेदारी बनती है कि वे दावे-आपत्तियां दाखिल कराने, नाम चेक करने में आम लोगों की मदद करें। बिहार SIR से जुड़े मुद्दों पर सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने राजनीतिक दलों की निष्क्रियता पर हैरानी जताई थी और पूछा था कि पार्टी के स्थानीय कार्यकर्ताओं व जनता के बीच इतनी दूरी क्यों है।

साझा जिम्मेदारी । लगभग 21 साल पहले हुए SIR की यादें भी अब धुंधली हैं, क्योंकि तब इतना शोर नहीं मचा था। शायद इसकी वजह बदली राजनीतिक परिस्थितियां हैं। अब यह शोर चुनावी उत्सव पर भारी न पड़े, जनता का सिस्टम पर से भरोसा न कम हो - इसकी जिम्मेदारी चुनाव आयोग पर है।

नाभि में तीर

मिसेज शर्मा की शपथ

हफ्तेभर से शर्मा जी नियमित दिख रहे हैं- कभी जॉगिंग करते हुए, तो कभी तेज कदम चलते हुए। आगे-आगे शर्मा जी, पीछे-पीछे मिसेज शर्मा। नए साल में एक के साथ एक फ्री की तर्ज पर इन दो नए सदस्यों की आमद हुई है गार्डन में। शर्मा जी थुलथुल हैं, तो मिसेज शर्मा सुपर फिट। दोनों एक-दूसरे के एकदम अपोजिट हैं स्वभाव में-शारीरिक बनावट में। नए साल में मिसेज शर्मा ने संकल्प लिया है कि वह शर्मा जी के शरीर का शेप अपने जैसा करवा कर ही दम लेंगी। परंतु सच यह है कि मिसेज शर्मा ने जितना आसान समझ रखा है यह काम, उतना आसान है नहीं। यह बात धीरे-धीरे उनकी समझ में आ रही है।

हरि मृदुल

सुबह-सुबह दोनों की यह जोड़ी लोगों के लिए मनोरंजन के क्षण भी मुहैया करा रही है। होता यह है कि शर्मा जी गार्डन का एक राउंड तो पूरे जोशो-खरोश के साथ मारते हैं, लेकिन दूसरा राउंड मारने की बारी आती है, तो फौरन हाथ खड़े कर देते हैं। मिसेज शर्मा को यह बात नागवार गुजरती है। पहले वह प्यार से मनाती हैं। फिर घुड़कती हैं। फिर भी शर्मा जी पर कोई असर नहीं पड़ता, तो उनकी आवाज लगातार ऊंची होती चली जाती है। अब सीन यह होता है कि आगे-आगे मिसेज शर्मा दिखती हैं और पीछे-पीछे खुद को किसी तरह घसीटते हुए शर्मा जी। यही वक्त होता है, जब गार्डन में कसरत कर रहे दूसरे लोगों के लिए मुफ्त का मनोरंजन उपलब्ध हो जाता है।

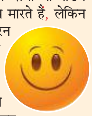

दरअसल, पिछले कई वर्षों से शर्मा जी नए साल में जमकर कसरत करने की कसम खाते रहे हैं और तोड़ते रहे हैं। पहले वह मौखिक कसम खाते थे, बाद में मिसेज शर्मा ने उनसे लिखवाकर लेना शुरू किया। लेकिन इससे उनके कसम तोड़ने की प्रवृत्ति पर कोई असर नहीं पड़ा। नया साल आता, तो वह पहले दिन बड़े जोश के साथ कसम खाते और फिर अगले दिन चुपके से तोड़ देते। लेकिन इस बार नए साल के पहले ही दिन मिसेज शर्मा ने भी शपथ ली है कि शर्मा जी की जॉगिंग अब कभी अकेले नहीं होगी, वह साये की तरह उनके साथ रहा करेंगी...।

एकदा

संकलन : **रेनू सैनी**

साराभाई का सपना

विक्रम साराभाई का सपना था कि भारत भी अंतरिक्ष की दुनिया में अपनी पहचान बनाए और अपना उपग्रह आकाश में परिक्रमा करे। यह सपना उस दौर का था, जब संसाधन सीमित थे, तकनीक नई थी। सोवियत संघ से यह समझौता हुआ कि भारत के पहले उपग्रह को निःशुल्क लॉन्च किया जाएगा। इसके बाद वैज्ञानिकों की एक छोटी-सी टीम ब्लू प्रिंट तैयार करने में जुट गई। आधुनिक प्रयोगशालाओं के अभाव में बेंगलुरु के पीन्या इलाके में पुराने टीन के शेड किराए पर लिए गए। उन्हीं शेड्स को साफ कर वैज्ञानिकों ने अपने हाथों से क्लीन रूम तैयार किया। रॉकेट लॉन्च के समय डेटा प्राप्त करने के लिए एक ग्राउंड स्टेशन चाहिए था, लेकिन जगह की तंगी थी। एक पुराने टॉयलेट को साफ कर मुख्य डेटा रिसीविंग सेंटर बनाया गया, जहां कंप्यूटर और एंटीना लगाए गए। उपग्रह के संवेदनशील हिस्सों को परीक्षण के लिए ले जाना था। विशेष सस्पेंशन वाले ट्रक उपलब्ध नहीं थे, इसलिए बैलगाड़ी का सहारा लिया गया। 30 दिसंबर 1971 को विक्रम साराभाई का निधन हो गया, लेकिन उनके सपने को उडुपी रामचंद्र राव ने आगे बढ़ाया। अंततः 19 अप्रैल 1975 को भारत का पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' अंतरिक्ष में पहुंचा और इतिहास बन गया।

Subrata Dhar

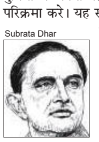

अधिकतर अमेरिकी सैन्य दखल के ख़िलाफ़, कम हुई राष्ट्रपति की लोकप्रियता

वेनेज़ुएला में घुसकर फंस गए ट्रंप

अमेरिका की जनता को कभी-कभार होने वाली छोटी जंगों से फर्क नहीं पड़ता। अमेरिका का आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक प्रभुत्व कमजोर पड़ रहा है। ऐसे में सैन्य ताकत के प्रदर्शन से जनता को गर्व होता है, खासकर अगर वह किसी कमजोर दुश्मन के खिलाफ किया जाए। छोटे युद्ध जनता का ध्यान भटकाने के लिए भी अच्छे होते हैं। माना जाता है कि अगर कोई राष्ट्रपति घरेलू और आर्थिक मोर्चे पर फंसा हुआ है, तो एक छोटी लड़ाई से जनता का ध्यान बंट जाएगा।

डैन कैसिनो
न्यू जर्सी से

निराशा मिलेगी । आमतौर पर युद्ध शुरू होने के बाद जनता अपने राष्ट्रपति के साथ खड़ी हो जाती है। 9/11 के बाद तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश की अप्रूवल रेटिंग 90% से भी ऊपर पहुंच गई थी। लेकिन अगर डॉनल्ड ट्रंप को लग रहा है कि वेनेजुएला में सैन्य हस्तक्षेप का भी वैसा ही असर होगा, तो उन्हें भारी निराशा हाथ लगने वाली है।

युद्ध का हासिल । वेनेजुएला पर हमले के पहले जब अमेरिका ने ड्रग्स ले जाने के आरोप में उसकी नावों को निशाना बनाया था, तब भी केवल 40% अमेरिकी ही इससे सहमत थे। वेनेजुएला पर बमबारी, वहां जबरन सत्ता परिवर्तन या सेना उतारने को लेकर तो जनता का समर्थन और भी कम था। ऐसा इसलिए नहीं कि ट्रंप की लोकप्रियता लगातार गिर रही है, बल्कि इसलिए कि पूरा मामला इराक और अफगानिस्तान जैसे लगता है, जहां लंबे युद्ध के बाद भी हासिल कुछ नहीं रहा।

AI Image

> **ट्रंप प्रशासन की मुश्किल**
> - सैन्य अभियान को व्यापक समर्थन नहीं मिल रहा
> - जनता को अफगानिस्तान जैसा लग रहा मामला
> - सरकार नहीं बता पा रही कि आगे क्या करना है

जनता का नजरिया । विदेशी युद्धों को अमेरिकी जनता दो ही नजरिये से देखती है - एक तो दूसरे विश्व युद्ध की तरह, जो नैतिक रूप से सही था और निर्णायक जीत के साथ खत्म हुआ। दूसरा नजरिया है वियतनाम, जहां की लड़ाई से अमेरिका को कुछ नहीं मिला। इराक में घुसने से पहले बुश प्रशासन ने जनता को यह समझाने में काफी मेहनत की थी कि यह युद्ध दूसरे विश्व युद्ध जैसा होगा। जैसे-जैसे इराक की लड़ाई वियतनाम जैसी लगने लगी, जनता खिलाफ हो गई।

इराक से समानता । वेनेजुएला में सैन्य हस्तक्षेप को लेकर बहस उसकी मेरिट पर नहीं, बल्कि इस पर है कि इस अभियान को कैसे पेश किया जाता है। वेनेजुएला में ऑपरेशन और इराक में घुसपैठ में कई समानताएं हैं। अमेरिका एक विदेशी नेता पर हमला कर रहा है, जिसकी वैधानिकता पर विवाद है और जिसके आतंकियों से कनेक्शन हैं। लेकिन, इसकी वजह से स्थिति और बिगड़ सकती है, जिसे अमेरिकी जनता पसंद नहीं करेगी।

कंट्रोल का मतलब। एक दूसरा विकल्प भी है, 1989 में अमेरिका ने पनामा के नेता Manuel Noriega को ड्रग्स तस्करी के आरोप में पद से हटा दिया था। वेनेजुएला में भी अगर ऐसा ही किया जाए, तो जनता को अच्छा लगेगा। तब सरकार कह सकती है कि हम केवल बुरे लोगों को हटाकर वापस लौट रहे हैं, लेकिन ट्रंप ने इस नैरेटिव को पहले ही खत्म कर दिया है। उन्होंने कहा कि अब वेनेजुएला का कंट्रोल अमेरिका के पास है।

मेहनत नहीं की । असल में ट्रंप प्रशासन ने वेनेजुएला पर हमले को इस तरह पेश करने का प्रयास ही नहीं किया, जिससे समर्थन जुटाने जा सके। इसके उलट, बुश प्रशासन ने इराक युद्ध को सही ठहराने के लिए महीनों मेहनत की थी। एक वक्त 70% अमेरिकी इस बात के पक्ष में थे कि इराक पर हमला करना चाहिए। दूसरी ओर, ट्रंप के ऑपरेशन को अधिकतम 45% समर्थन मिलता दिख रहा है। और अभी तो सैन्य सफलता का उत्साह है, जब सवाल उठेगा कि 'अब आगे क्या' तब समर्थन गिरेगा।

आर्थिक संकट । ट्रंप अगले कुछ हफ्तों में एक बजट पास कराना चाहेंगे, वरना फिर गवर्नमेंट शटडाउन का सामना करना पड़ेगा। ट्रंप कह चुके हैं कि वह टैक्स में और ज्यादा कटौती, स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार और ऐसी कई चीजें चाहते हैं, जिसके लिए कांग्रेस का सहयोग चाहिए। लेकिन उनकी लोकप्रियता जितनी कम होगी, उनके लिए रिपब्लिकन्स के वोट जुटाना उतना ही मुश्किल होगा।

दोहरा घाटा । टीवी स्क्रीन पर बम गिरते हुए देखना और फिर जोरदार धमाका होना भीड़ को पसंद आता है। इससे पता चलता है कि सेना पर हर साल जो ट्रिलियन डॉलर खर्च किए जा रहे हैं, उसका असर हो रहा है। लेकिन, जनता को कोई वाजिब कारण और यह बताए बिना कि आगे क्या होने वाला है, युद्ध में उतरना ट्रंप और वेनेजुएला - दोनों के लिए ही घातक हो सकता है।

(लेखक अमेरिका की Fairleigh Dickinson University में पढ़ाते हैं)

प्रदूषण घटाने में कार्बन क्रेडिट से मिलेगी मदद

राजधानी दिल्ली कई वर्षों से लगातार दुनिया के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में से एक बनी हुई है। यह आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर रहे देश के लिए ठीक नहीं है। इस मामले में तमाम दावों के बावजूद हर साल प्रदूषण की स्थिति बदतर हो रही है।

अविनाश चंद्र

बढ़ रहे खतरनाक दिन । सर्दियों में 'बहुत खतरनाक' दिनों की संख्या बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में स्कूल-दफ्तर बंद कर दिए जाते हैं। निर्माण कार्य रोक दिए जाते हैं। देश के अन्य शहरों की हालत भी यही है। अनुमान है कि प्रदूषण से भारत की अर्थव्यवस्था को सालाना करीब 100 अरब डॉलर का नुकसान हो रहा है। प्रदूषण से होने वाली बीमारियों और इससे श्रमबल पर पड़ने वाले असर से आंकड़ा और बढ़ सकता है।

कारण जानना जरूरी । सवाल उठता है कि क्या प्रदूषण का कोई समाधान नहीं या सरकार के प्रयासों में कमी है? हमें पहले सही कारण तलाशने होंगे। भौगोलिक स्थिति, जनसंख्या, पराली जलाने, शहरीकरण और वाहनों-कारखानों से निकलने वाले धुएं को मुख्य कारण माना जाता है। दुनिया के लगभग सभी विकसित देशों को विकास की प्रक्रिया के दौरान इन चुनौतियों से गुजरना पड़ा। आज अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन को विश्व का सबसे स्वच्छ देश कहा जाता है। 1980 के दशक में अमेरिका और कनाडा में तेजाब की बारिश होने लगी थी। पेड़-पौधों, वनस्पतियों और जीव-जंतुओं के विलुप्त होने का खतरा मंडराने लगा। लंदन की टेम्स नदी मृत घोषित कर दी गई।

दुनिया में बने नजीर । इन देशों ने न सिर्फ आर्थिक और विकास गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाए, बल्कि संरक्षण के काम में लगे लोगों को प्रोत्साहित भी किया। ट्रेडेबल कार्बन क्रेडिट की व्यवस्था की। तय किया कि प्रदूषक गैसों का उत्सर्जन हर साल एक लाख टन से अधिक नहीं होना चाहिए। अगर देश में एक हजार फैक्ट्रियां हैं तो फैक्ट्रियों को उनके आकार (छोटे, मझोले और बड़े) के आधार पर 10 से 100 टन कार्बन उत्सर्जन की छूट दे दी जाती है। सीमा से अधिक उत्सर्जन पर भारी कीमत वसूली जाने लगी। फैक्ट्रियों को अपने उत्सर्जन कोटे को बचाने और दूसरों को हस्तांतरित करने की आजादी दी गई। आम लोगों को पेड़ लगाकर उत्सर्जन क्रेडिट बेचने का मौका दिया गया।

कॉमन रूम

भावना पर चोट । दिल्ली में प्रदूषण कम करने के लिए तंदूर, कोयले वाले प्रेस आदि पर प्रतिबंध से गरीबों की भावना आहत होती है। उन्हें लगता है कि प्रदूषण का मुख्य कारण निर्माणाधीन इमारतें हैं - दिन-रात चलने वाली फैक्ट्रियां और गाड़ियां हैं। लेकिन, कार्रवाई हमारी कमाई पर की जाती है। कार्बन क्रेडिट जैसी व्यवस्था अगर यहां शुरू की जाए, तो बगैर शोर के समस्या सुलझाई जा सकती है।

(लेखक पब्लिक पॉलिसी मामलों के जानकार हैं)

पत्थर पर हर दिन पानी क्यों डालता था वह भिक्षु

THE SPEAKING TREE
और पढ़ने के लिए देखें
www.speakingtree.nbt.in

देवेन्द्रराज सुथार

जीवन में अक्सर हम बड़े परिणाम और तात्कालिक सफलता के पीछे भागते हैं और इस प्रक्रिया में छोटे प्रयासों के महत्व को भूल जाते हैं। हमारी साधना, हमारी रोजमर्रा की सजगता, हमारे छोटे काम भी धीरे-धीरे प्रभाव डालते हैं। आध्यात्मिक जीवन केवल उच्च विचार या ज्ञान का संग्रह नहीं, बल्कि आत्मा का निरंतर प्रशिक्षण है। यह प्रशिक्षण किसी महान घटना या असाधारण कार्य की प्रतीक्षा नहीं करता, बल्कि हर दिन किए जाने वाले छोटे, लगातार प्रयासों में छिपा होता है। यही प्रक्रिया मनुष्य को भीतर से बदलती है और उसे स्थिर, सहनशील और सजग बनाती है। जब हम धैर्य और लगन से लगातार प्रयास करते हैं, तो कठिन से कठिन परिस्थितियां में भी धीरे-धीरे परिणाम दिखने लगते हैं।

जापान के दार्शनिक कूकाई एक दिन पहाड़ों में एक छोटे मठ में रुके। वहां एक वृद्ध भिक्षु हर दिन घंटों पत्थर पर पानी डालता था। कूकाई ने हैरानी से पूछा कि ऐसा करने का क्या फायदा, क्योंकि पत्थर तो कभी नहीं पिघलेगा। भिक्षु ने शांत स्वर में उत्तर दिया, 'हां, यह जानता हूं, लेकिन ऐसा करने से अपनी छाप जरूर छोड़ेगा।' कुछ दिन ठहरने के बाद जब कूकाई वहां से जाने लगे, उन्होंने देखा कि पत्थर पर पानी की धार से एक हल्की रेखा बन गई थी। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'अब समझ आया कि धैर्य पूर्वक नियमित प्रयास करो, तो असर अवश्य होता है।'

AI Image

मनुष्य अक्सर तुरंत संतुष्टि के लिए प्रयास करता है और छोटी-छोटी निरंतर क्रियाओं को महत्व नहीं देता। लेकिन स्थिरता और सहनशीलता जीवन में असली शक्ति का आधार बनती है। यह शक्ति दिखावा नहीं करती, वह तुरंत मान्यता नहीं पाती, लेकिन समय और धैर्य के साथ उसका असर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

महानता केवल बड़ी उपलब्धियों में नहीं है, बल्कि निरंतर, शांत और सुसंगत प्रयास में निहित है। जीवन में धैर्य और लगन की यही शक्ति हमें कठिनाइयों के सामने टिकने, असफलताओं से सीखने और समय के साथ स्थायी परिवर्तन लाने में सक्षम बनाती है।

कांटे की बात

> ड्राइवरलेस कारों के लिए Nvidia का नया AI आधारित प्लैटफॉर्म ऐसी गाड़ियों की समझ बेहतर करेगा। इससे बेहद चुनौतीपूर्ण माहौल में ये सेफ ड्राइविंग एक्सपीरिएंस देंगी। हम मर्सिडीज के साथ मिलकर इसके लिए काम कर रहे हैं।

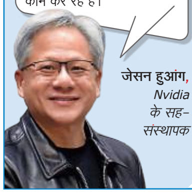

जेसन हुआंग, *Nvidia के सह-संस्थापक*

छोटी बात, बड़ा फ़र्क़

नींद के घंटे नहीं, सही समय पर सोना ज़रूरी

***नींद को** अक्सर घंटों से जोड़ा जाता है। इस बारे में कई रिसर्च हुईं और कई अब भी जारी हैं। अब एक्सपर्ट्स कह रहे हैं कि नींद का नियमित होना ज्यादा जरूरी है। हर दिन एक निश्चित समय पर सोना और जागना सेहत के लिए सही है।*

बीमारियों का खतरा

वैज्ञानिकों ने पाया है कि अनियमित नींद वालों पर बीमारियों का खतरा ज्यादा होता है। जो सही समय पर सोते और जागते नहीं, उनमें डायबिटीज, हृदय रोग और डिमेंशिया की आशंका बढ़ जाती है। नींद, भूख, मूड, हार्मोन को नियंत्रित करने वाली शरीर की घड़ी – Circadian Rhythm बिगड़ने लगती है। आपको किसी भी समय भूख लग सकती है। इससे खाना पचने में परेशानी होती है और मोटापे का शिकार हो सकते हैं।

Adobe Stock

नींद लाने के उपाय

रोजाना 20 से 30 मिनट धूप में बैठना चाहिए, ठंडी हवा लेनी चाहिए। सुबह जब रोशनी आंखों को लगती है, तब शरीर को शाम का इंतजार रहता है। रोशनी से सर्केडियन रिदम नियंत्रित होता है। इसके अलावा, हर रात सोने से एक घंटा पहले अलार्म लगाने से दिमाग को लगने लगता है कि अब सोने का वक्त होने वाला है। सोने से पहले किताब पढ़ें, ध्यान करें ताकि आसानी से नींद आ जाए।

जनता जंक्शन इरफ़ान

मनरेगा आंदोलन से कांग्रेस को दिख रही उम्मीद

हेमंत राजौरा

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के स्वरूप में बदलाव कर इसे नए नाम VB-G RAM G (विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन ग्रामीण) के तहत आगे बढ़ाने की कोशिश ने सियासी बहस को तेज कर दिया है। कांग्रेस ने इसे मनरेगा की आत्मा पर हमला बताते हुए इसके खिलाफ देशव्यापी आंदोलन छेड़ने का ऐलान किया है। यह आंदोलन ग्रामीण भारत में राजनीतिक पकड़ दोबारा मजबूत करने की कांग्रेसी रणनीति का अहम हिस्सा है।

कानूनी गारंटी पर खतरा

कांग्रेस का आरोप है कि सरकार मनरेगा का नाम और ढांचा बदलकर उसकी कानूनी गारंटी को कमजोर करना चाहती है। पार्टी का कहना है कि मनरेगा सिर्फ एक रोजगार योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण गरीबों, खासतौर पर अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़े वर्गों के लिए जीवन रेखा रही है। VB-G RAM G जैसे नए ढांचे में रोजगार की कानूनी गारंटी, मजदूरी भुगतान की समयबद्धता और जरूरतों के अनुरूप काम देने की प्रतिबद्धता खत्म होने का खतरा है।

इसे राजनीतिक रूप से भुनाने के लिए कांग्रेस ने पंचायत से संसद तक डेढ़ महीने का व्यापक कार्यक्रम तैयार किया है। इसके तहत कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के पत्र व्यक्तिगत रूप से ग्राम प्रधानों, पूर्व ग्राम प्रधानों, रोजगार सेवकों और मनरेगा मजदूरों तक पहुंचाए जाएंगे।

हाल के वर्षों में कांग्रेस ने वोट चोरी, SIR जैसे मुद्दों पर देशव्यापी अभियान चलाने की कोशिश की। लेकिन बिहार विधानसभा चुनावों में हार के बाद पार्टी के भीतर भावना बनी कि ऐसे मुद्दों का जमीनी असर सीमित रहा। इसलिए उसे एक ऐसे विषय की तलाश थी, जो सीधे जनता की रोजी-रोटी से जुड़ा हो। मनरेगा इस कसौटी पर खरा उतरता है।

विशुद्ध राजनीति

कसौटी

इतिहास भी कांग्रेस के पक्ष में है। माना जाता है कि 2009 में केंद्र की सत्ता में उसकी वापसी के पीछे मनरेगा की निर्णायक भूमिका थी। अब पार्टी उसी सामाजिक आधार को सक्रिय करना चाहती है। खास तौर पर उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में जहां कांग्रेस लंबे समय से कमजोर रही है, मनरेगा के जरिए नए सिरे से राजनीतिक जमीन तैयार करने की उम्मीद की जा रही है।

कांग्रेस सरकार पर दबाव बनाना चाहती है कि वह योजना की मूल भावना से छेड़छाड़ न करे। पार्टी नेताओं का कहना है कि अगर इस मुद्दे पर विभिन्न वर्गों को एकजुट किया गया तो यह आंदोलन बड़ा रूप ले सकता है।

अवसर ही नहीं, परीक्षा भी

सवाल है कि क्या यह रणनीति उतनी कारगर साबित होगी जितनी कांग्रेस उम्मीद कर रही है। आज के राजनीतिक हालात 2009 से काफी अलग हैं। केंद्र सरकार विकसित भारत के नैरेटिव के साथ योजनाओं को नए नाम और ढांचे में पेश कर रही है जिसे एक बड़ा वर्ग सकारात्मक रूप में भी देखता है। ऐसे में कांग्रेस को यह साबित करना होगा कि VB-G RAM G वास्तव में मनरेगा को कमजोर करता है न कि उसे और प्रभावी बनाता है।

कुल मिलाकर, मनरेगा बनाम VB-G RAM G कानून का मुद्दा कांग्रेस के लिए एक अवसर भी है और परीक्षा भी। अगर वह सचमुच मजदूरों के बीच जाकर उनके अनुभवों, समस्याओं और आशंकाओं को आंदोलन का केंद्र बनाती है तो यह अभियान उसे ग्रामीण भारत में फिर से प्रासंगिक बना सकता है।

रीडर्स मेल
www.edit.nbt.in

प्रियंका की परीक्षा

यह पत्र 5 जनवरी के संपादकीय 'बड़ी जिम्मेदारी' से संबंधित है। कांग्रेस कार्यकर्ता पिछले कई सालों से प्रियंका गांधी को बड़ी जिम्मेदारी देने की मांग कर रहे थे। इस साल असम, पश्चिम बंगाल सहित कई राज्यों में विधान सभा चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में पार्टी द्वारा उन्हें असम चुनाव के लिए स्क्रीनिंग कमिटी का चेयरपर्सन बनाने का फैसला इन कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाएगा। भले ही वह संसद पहली बार पहुंची हों, लेकिन राजनीति में उनका अच्छा खासा तजुर्बा है। स्क्रीनिंग कमिटी चेयरपर्सन के तौर पर सही उम्मीदवारों का चयन करना जिम्मेदारी भरा काम होगा। असम में पार्टी दस साल से सत्ता से बाहर है, ऐसे में इस बार प्रियंका की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है।

पैंथर तोमर, दिल्ली

आर.एन.आई. नं. 510/57© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद** और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्सः 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु. ; रविवार : नेपाली 6 रु.।
संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

सम्पादकीय

एक राष्ट्रपति अमरीकी बंधक

अमरीका का राष्ट्रपति कोई भी हो, वह किसी भी देश पर हमला करा सकता है, किसी भी संप्रभु एवं स्वतंत्र देश के राष्ट्रपति को अगवा करा अमरीकी जेल में डाल सकता है अथवा फांसी पर लटका सकता है। अमरीकी राष्ट्रपति किसी भी देश के बेशकीमती संसाधनों, तेल एवं खनिज और सत्ता पर कब्जा कर सकता है। कोई भी देश, रूस और चीन भी, अमरीकी राष्ट्रपति को कोसते रहें अथवा चेतावनियां जारी करते रहें, लेकिन अमरीका ही दुनिया का सबसे 'खूंख्वार डॉन' है। उसके सामने संयुक्त राष्ट्र आम सभा और सुरक्षा परिषद बिल्कुल नपुंसक और बेमानी हैं। अमरीकी राष्ट्रपति का आदेश ही 'वैश्विक कानून' है। अमरीकी राष्ट्रपति को वहां की संसद (कांग्रेस) और अदालत की भी परवाह नहीं है। वह ही 'वैश्विक साम्राज्यवादी शासक' है। मौजूदा राष्ट्रपति ट्रंप ने वेनेजुएला पर गहरी रात में, करीब 2 बजे, चौतरफा हमले करा और वहां के राष्ट्रपति मादुरो और उनकी पत्नी को उनके बेडरूम में ही बंधक बना कर साबित कर दिया है कि दुनिया अमरीका के मुताबिक ही चलेगी। अमरीकी सत्ता को कोई चुनौती नहीं दे सकता। राष्ट्रपति ट्रंप ने बार-बार दोहराया कि जो मादुरो के साथ हुआ है, वह किसी के भी साथ हो सकता है! लिहाजा डर, खौफ और खतरा भांपते हुए ईरान के सुप्रीम लीडर खामेनेई ने सेनाओं को अलर्ट कर दिया है और सीमाओं पर तैनाती के आदेश दिए हैं। क्या अगली बारी ईरान के सुप्रीम लीडर की है? बहरहाल राष्ट्रपति ट्रंप ने कथित तानाशाह मादुरो को हटाने और नार्को आतंकवाद के अपराध में दंडित करने के लिए ही वेनेजुएला के रक्षा मंत्री के आवास, हवाई अड्डे, एयरबेस, वायुसेना मुख्यालय, सैन्य रणनीतिक कार्यालय आदि पर बम-वर्षा के आदेश दिए हों, दरअसल ऐसा नहीं है।अमरीका की नजरें वेनेजुएला के करीब 305 अरब बैरल तेल के भंडारों और 1.36 ट्रिलियन डॉलर से अधिक मूल्य के बेशकीमती खनिजों पर थी। दुनिया के 20-22 फीसदी से अधिक तेल के भंडार वेनेजुएला में हैं। मादुरो को बंधक बनाने के बाद राष्ट्रपति ट्रंप ने जो प्रेस कॉन्फ्रेंस की, उसमें उन्होंने साफ ऐलान कर दिया कि अब वेनेजुएला पर अमरीका का कब्जा है। जो ऑपरेशन किया गया, वह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे बड़ा ऑपरेशन था। अब वेनेजुएला के तेल कारोबार को अमरीकी कंपनियां देखेंगी। अमरीका खूब पैसा कमाएगा। मादुरो के शासन में अमरीकी तेल की चोरी की गई। अब मादुरो और उनकी पत्नी पर अमरीका में ही मुकदमा चलाया जाएगा। हम मादुरो को कड़ी सजा दिलवाएंगे। अमरीका ने पनामा के तानाशाह राष्ट्रपति मैनुअल नोरिएगा, ग्रेनेडा के शासक, इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन, लीबिया के तानाशाह मुअम्मर गद्दाफी आदि को गिरफ्त में लेकर जो बर्ताव किया था, संभवतः वही नियति मादुरो की लगती है। अमरीकी विशेष कमांडोज ने ही अलकायदा के सरगना लादेन और आईएसआईएस के खलीफा सरगना बगदादी को भी खत्म किया था।

जानलेवा चाइनीज मांझे का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा

अशोक भाटिया

राजस्थान के बांसवाडा में भी कुछ ऐसा ही हुआ। रविवार को मोहन कॉलोनी से निकलते हुए एक बुजुर्ग का पैर चाइनीज मांझे में उलझ गया, जिसकी वजह से वो लड़खड़ाते हुए जमीन पर गिर गए।चाइनीज मांझे की चपेट में आने की वजह से उन्हें गहरी चोट आई। राहगीरों ने उन्हें गंभीर हालत में अस्पताल पहुंचाया। डॉक्टर ने बताया कि पैर की एड़ी में मांझा अंदर तक चला गया जिसकी वजह से घाव ज्यादा गहरा है। वहीं उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में भी चाइनीज मांझे ने एक बाइक सवार को अपना शिकार बनाया। रविवार को बाइक से घर लौट रहे युवक की चाइनीज मांझे की वजह से गर्दन कट गई।

जानलेवा चाइनीज मांझे का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान समेत कई इलाकों में पिछले 24 घंटे में मांझे की वजह से कई हादसे हुए हैं। सबसे पहले बात महाराष्ट्र के वाशिम जिले की। जहां चाइनीज मांझे की वजह से 57 साल के एक व्यक्ति का गला कट गया। दरअसल वो बाइक से अपने घर लौट रहे थे। इसी दौरान खंडोबा मंदिर के पास सड़क पर लटक रहे मांझे की चपेट में आने से उनके गले पर गंभीर चोट आई हैं। जैसे ही शख्स को चोट लगी, उन्होंने तुरंत बाइक रोक दी। उनकी इसी समझदारी की वजह से जान बच गई और एक बड़ी दुर्घटना टल गई।

राजस्थान के बांसवाडा में भी कुछ ऐसा ही हुआ। रविवार को मोहन कॉलोनी से निकलते हुए एक बुजुर्ग का पैर चाइनीज मांझे में उलझ गया, जिसकी वजह से वो लड़खड़ाते हुए जमीन पर गिर गए।चाइनीज मांझे की चपेट में आने की वजह से उन्हें गहरी चोट आई। राहगीरों ने उन्हें गंभीर हालत में अस्पताल पहुंचाया। डॉक्टर ने बताया कि पैर की एड़ी में मांझा अंदर तक चला गया जिसकी वजह से घाव ज्यादा गहरा है। वहीं उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में भी चाइनीज मांझे ने एक बाइक सवार को अपना शिकार बनाया। रविवार को बाइक से घर लौट रहे युवक की चाइनीज मांझे की वजह से गर्दन कट गई। गनीमत ये रही कि बाइक की स्पीड कम थी, जिससे युवक ज्यादा जख्मी नहीं हुआ। हादसे के तुरंत बाद उसने तुरंत अस्पताल जाकर इलाज करवाया। पुलिस खुद इन हादसों से बची हुई नहीं है । पिछले साल ही घर आने-जाने के दौरान महाराष्ट्र के मुंबई के डिंडोशी पुलिस में तैनात एक पुलिसकर्मी का गला मांझे से कट गया, जिससे उसकी मौत हो गई इन शिकायतो के बाद ही पिछले दिनों में शहर के कम से कम

पांच पुलिस स्टेशनों ने चीनी मांझा बेचते, स्टॉक करते या उपयोग करते हुए पकड़े गए व्यक्तियों के खिलाफ मामले दर्ज किए हैं। गौरतलब हो कि इसके पहले को खेरवाड़ी पुलिस के अधिकार क्षेत्र में कांस्टेबल समीर जाधव की जान भी चली गई थी जब वकोला फ्लाईओवर से लटके चीनी मांझे से उनका गला कट गया। तब खेरवाड़ी पुलिस ने आईपीसी की धारा 304-ए के तहत एक अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ स्वतः संज्ञान लेते हुए मामला दर्ज किया। इस दुखद घटना के बाद पुलिस ने चीनी मांझा की बिक्री और खरीद में शामिल लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के अपने प्रयास तेज कर दिए हैं। ऐसा नहीं है इस तरह की ये पहली घटनाए है। कई सालों से इस तरह की कई दर्दनाक घटनाएं हो चुकी है। पिछले वर्ष भी बाइक पर सवार एक व्यक्ति चीनी मांझा से उस समय घायल हो गया जब वह फ्लाईओवर से गुजर रहा था। बाइक चलाते समय मांझा उसके गले में लिपट गया। मांझा की चपेट में आने से उसके गले में करीब 2 इंच गहरा घाव हो गया। इस मामले में गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज किया गया। चाइनीज मांझा से हुआ यह पहला हादसा नहीं था । चाइनीज मांझा न सिर्फ इंसानों के लिए बल्कि पशु-पक्षियों के लिए भी बहुत खतरनाक है और हर साल सैकड़ों पक्षी इसमें फंसकर अपनी जान गंवा देते हैं। दरअसल पतंगबाजी का मजा लेने वाले बच्चे व बड़े आपस में पतंग को लड़ाकर उसका मजा लेते हैं। पतंग लड़ाने के लिए लोग डोर को कटने से बचाने के लिए मजबूत धागे के लिए चाइनीज मांझे का इस्तेमाल करते हैं। यह मांझा सादे धागे के मुकाबले सस्ता और मजबूत होता है। इस कारण इसकी मांग ज्यादा रहती है। डिमांड के कारण दुकानदार प्रतिबंध के बावजूद भी चोरी छिपे बेचते हैं।

आज भारत समेत दुनिया के कई देशों में पतंगबाजी की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, लेकिन पतंगबाजी का सबसे पुराना प्रमाण चीन में मिलता है। हान राजवंश के शासनकाल में पतंगों का सैन्य उपयोग भी होता था। वहां के सैन्य कमांडरों ने दुश्मन सेना की स्थिति और दूरी का पता लगाने के लिए पतंगों का भी इस्तेमाल किया। कहा जाता है कि पतंगबाजी भी चीन के रास्ते भारत पहुंची है। अब आपके मन में भी यह सवाल उठ रहा होगा कि आखिर यह मांझा इतना खतरनाक क्यों है और एक पतला धागा लोगों की जान कैसे ले सकता है? इसका कारण यह है कि पतंगबाजी के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सामान्य मांझा कपास का बना होता है, लेकिन चीनी मांझा नायलॉन और अन्य सिंथेटिक सामग्री से बना होता है। यह मांजा कांच, लोहे के पाउडर और कई अन्य रसायनों के साथ लेपित है। इस वजह से मांझा और भी तीखा और जानलेवा हो जाता है। चाइनीज मांझा साधारण मांझा की जगह स्ट्रेचेबल होता है यानी टूटने की बजाय खिंचता रहता है। इतना ही नहीं चीनी मांझा में धातु के चूर्ण के प्रयोग से यह विद्युत का सुचालक होता है, अर्थात इसमें से करंट प्रवाहित हो सकता है और इसलिए बिजली के झटके का खतरा रहता है, लेकिन इसके खतरों से वाकिफ होने के बावजूद आज बाजार में इसकी काफी मांग है, क्योंकि जब लोग पतंग उड़ाते हैं तो चाहते हैं कि उनकी पतंग न कट जाए और वे दूसरों की ज्यादा से ज्यादा पतंगें काट सकें।

साल 2017 में NGT यानी नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने इस मांझा पर पूरी तरह से रोक लगा दी थी। पर्यावरण विभाग के तहत 10 जनवरी 2017 को एक अधिसूचना जारी की गई थी, जिसके अनुसार पतंगबाजी के लिए नायलॉन, प्लास्टिक और किसी भी तरह की सिंथेटिक सामग्री पर पूर्ण प्रतिबंध है। इसके अलावा कांच, धातु या अन्य नुकीली चीजों से बने धागों पर भी पतंग उड़ाने पर रोक लगा दी गई है। नियम के मुताबिक, सूती धागे से बने धागों से पतंग उड़ाई जा सकती है, लेकिन इनमें भी किसी न किसी तरह का धागा होता है, तेज वस्तुओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इन नियमों का उल्लंघन कड़ी सजा के साथ दंडनीय है। अगर कोई ऐसा करते पाया जाता है तो उसे 5 साल तक की कैद और एक लाख रुपये तक के जुर्माने से भी दंडित किया जा सकता है। इतने सख्त नियम होने के बावजूद आज देश भर में में चीनी मांझा का कारोबार फलफूल रहा है। व्यवसायी कानून की धज्जियां उड़ा रहे हैं और इन घातक मांझा को लोगों को बेच रहे हैं, और खरीदने वालों की कोई कमी नहीं है।

उद्देश्यहीन संयुक्त राष्ट्र संघ को भंग क्यों नही करते?

अशोक मधुप

हाल ही में अमेरिका ने वेनेजुएला पर कब्जाकर लिया। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी को बंदी बना लिया गया। उन्हें न्यूयॉर्क ले जाया गया है। वहां ड्रग्स तस्करी के आरोपों में उन पर मुकदमा चलाया जा रहा है। अमेरिका इस पर भी वे चुप नही बैठा। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वेनेजुएला में सैन्य अभियान के बाद कई देशों को धमकी दी है। उन्होंने इशारा किया है कि कोलंबिया में कभी भी सैन्य कार्रवाई हो सकती है। उन्होंने मेक्सिको को भी चेतावनी दी है। ट्रंप ने कहा कि वह वेनेजुएला के बेपटरी हो चुके तेल उद्योग को उबारने के लिए अमेरिकी कंपनियों पर भरोसा कर रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ (यूनाइटेड नेशनस) का मुख्य औचित्य अंतर्राष्टीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना, मानव अधिकारों की रक्षा करना, और विभिन्न राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना है। इसका गठन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1945 में 51 देशों द्वारा किया गया था। इसका उद्देश्य था कि भावी युद्धों को रोका वैश्विक सहयोग को बढ़ावा दिया जा सके। आज 193 देश इसके सदस्य हैं। इतने बड़े संगठन का लगता है कि आज कोई देश कहना मानने को तैयार नहीं। सबकी अपनी ढपली अपना राग है। संयुक्त राष्ट्र संघ तमाशबीन बन कर रह गया है।

हाल ही में अमेरिका ने वेनेजुएला पर कब्जाकर लिया। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी को बंदी बना लिया गया। उन्हें न्यूयॉर्क ले जाया गया है । वहां ड्रग्स तस्करी के आरोपों में उन पर मुकदमा चलाया जा रहा है। अमेरिका इस पर भी वे चुप नही बैठा। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वेनेजुएला में सैन्य अभियान के बाद कई देशों को धमकी दी है। उन्होंने इशारा किया है कि कोलंबिया में कभी भी सैन्य कार्रवाई हो सकती है। उन्होंने मेक्सिको को भी चेतावनी दी है। ट्रंप ने कहा कि वह वेनेजुएला के बेपटरी हो चुके तेल उद्योग को उबारने के लिए अमेरिकी कंपनियों पर भरोसा कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इशारा किया कि वह कोलंबिया में सैन्य कार्रवाई कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मेक्सिको को ड्रग्स के मामले में ठीक से काम करना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका को ग्रीनलैंड की जरूरत है। उधर वेनेजुएला की मौजूदा स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की इमरजेंसी बैठक में महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के बयान में कहा गया कि

वेनेजुएला में अमेरिका की कार्रवाई के मामले में अंतरराष्ट्रीय कानून के नियमों का पालन नहीं किया गया है, इस बात से वे बहुत चिंतित हैं। रोज़मेरी डिकार्लो ने गुटेरेस का बयान पढ़ते हुए इस बात पर चिंता जताई कि अमेरिकी सैन्य कार्रवाई अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए क्या मिसाल कायम कर सकती है।उन्होंने कहा कि वेनेजुएला में हालात नाज़ुक हैं, लेकिन अभी भी एक बड़े टकराव को रोका जा सकता है। वहीं रूस के प्रतिनिधि ने निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया

फ़्लोरेस को तुरंत रिहा करने की मांग की।

ईरान के भी हालात ठीक नही है। वहां भी कभी भी तख्ता पल्ट हो सकता है। ईरान में बढ़ती महंगाई और देश की बिगड़ती आर्थिक हालत को लेकर सरकार के ख़िलाफ़ लगभग एक हफ़्ते से प्रदर्शन जारी है।ये पिछले तीन साल में देश में सबसे बड़ा विरोध प्रदर्शन है। इस बीच, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान की सरकार को चेतावनी दी है। उन्होंने सोशल पर पोस्ट में ईरान में प्रदर्शन कर रहे लोगों को मदद का भरोसा भी दिया है। उन्होंने लिखा, अगर ईरान शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाता है और उन्हें बेरहमी से मारता है, जो कि उनकी आदत है, तो अमेरिका उनको (प्रदर्शनकारियों को) बचाने के लिए आएगा.अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका ईरान के %शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों की मदद के लिए %पूरी तरह तैयार है। पिछले साल जून में अमेरिक ने ईरान पर हमले किए। दावा किया गया कि उसने इरान के परमाणु ठिकानों पर हमले किए है। इस्राइल भी हमले कर चुका है। इस्राइल और अमेरिका की नजर में बहुत समय ये इरान खटक रहा है।

एक ओर अमेरिक की दादागिरी का ये हाल है। उधर चीन ताइवान पर कब्जा करने को तैयार बैठा है। वह समय- समय पर अपनी वायु और जल सेना भेजकर ताइवान को धमकाता रहता है। कभी भी चीन सैनिक कार्रवाई कर ताइवान पर कब्जा कर सकता है। इज़रायल और हमास के बीच सात अक्टूबर 2023 को शुरू हुए युद्ध को चलते हुए दो साल और तीन महीने हो चुके हैं। अक्टूबर 2025 में एक संघर्ष विराम समझौता हुआ था। इसके बाद बड़े पैमाने पर बमबारी में कमी आई है, लेकिन तनाव और छिटपुट सैन्य कार्रवाई अभी भी जारी है।गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय और संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, अब तक इस युद्ध में 70,000 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। इसमें हमास के लड़ाके और बड़ी संख्या में नागरिक (महिलाएं और बच्चे) शामिल हैं। 1,71,000 से अधिक लोग घायल हुए हैं। इज़रायल पक्ष की ओर से सात अक्टूबर 2023 के हमले में लगभग 1,200 लोग मारे गए थे। इसके बाद सैन्य अभियान के दौरान लगभग 1,000+ इज़रायली सैनिक मारे गए हैं। इस युद्ध में गाजा पट्टी की लगभग 80 प्रतिशत इमारतें और बुनियादी ढांचा (अस्पताल, स्कूल, सड़कें) पूरी तरह या आंशिक रूप से नष्ट हो चुके हैं। युद्ध के कारण इज़रायल को अरबों डॉलर का आर्थिक नुकसान हुआ है तो गाजा की अर्थव्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई है। इस्राइल से ईरान पर भी हमला किया। इसमें बैलिस्टिक मिजाइल प्रयोग हुआ। इतना ही नही इस्राइल ने कतर पर भी पिछले दिनों हमला किया। 24 फरवरी 2022 को शुरू हुए रूस-यूक्रेन युद्ध को तीन साल 10 माह बीत गए। युद्ध निरंतर जारी है। यूक्रेन के जनरल स्टाफ और पश्चिमी खुफिया रिपोर्टों के अनुसार, रूस के 12 लाख से अधिक सैनिक या तो मारे गए हैं या घायल हुए हैं। स्वतंत्र रूसी मीडिया समूहों ने ओपन-सोर्स डेटा के आधार पर कम से कम 1,53,000+ रूसी सैनिकों की मौत की होना माना है। विभिन्न पश्चिमी अनुमानों (जैसे दिसंबर 2024-25 की रिपोर्ट) के अनुसार, यूक्रेन के लगभग 4,00,000 से 5,00,000 सैनिक मारे गए या घायल हुए हैं। इतना सब हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ मानव जीवन की बरबादी देख रहा है। यह असहाय बना बैठा है।

डबल इंजन के वेग से उखड़ा आरपीएससी का भ्रष्ट तंत्र, तकनीक और पारदर्शिता बनी राजस्थान की नई पहचान

डॉ. नयन प्रकाश गांधी

राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी), जिसे संविधान ने योग्यता और प्रतिभा के चयन का पवित्र मंदिर बनाया था, बीते कुछ वर्षों में 'सिफारिश' और 'सौदागरी' का अड्डा बनकर रह गया था। बाबूलाल कटारा जैसे प्रकरण और इंटरव्यू में नंबरों की बंदरबांट ने न केवल आयोग की साख को बट्टा लगाया, बल्कि राज्य के लाखों मेहनतकश युवाओं के सपनों को भी छलनी किया। लेकिन, वर्तमान परिदृश्य में सुधार की जो बयार बह रही है, वह उम्मीद की एक नई किरण है। भजनलाल सरकार द्वारा पेपर लीक पर अपनाई गई 'शून्य सहनशीलता' जीरो टॉलरेंस की नीति और एसओजी की ताबड़तोड़ कार्रवाई ने यह संदेश स्पष्ट कर दिया है कि अब रसूखदार 'सिस्टम' को नहीं चलाएंगे, बल्कि 'सिस्टम' रसूखदारों पर भारी पड़ेगा। हालांकि, गिरफ्तारियां केवल फौरी राहत हैं। समस्या की जड़ गहरी है और इसका स्थायी समाधान केवल दंड में नहीं, बल्कि 'प्रक्रियात्मक सुधारों' में निहित है। हमें एक ऐसा अभेद्य पारदर्शी तंत्र सुविकसित करना, जहां मानवीय बेईमानी की गुंजाइश ही न बचे।

तकनीकी समाधान: डिजिटल इंटिग्रेशन मॉनिटरिंग सिस्टम

भविष्य में आरपीएससी को 'पोस्टिंग-प्लेसमेंट एजेंसी' बनने से रोकने के लिए सबसे प्रभावी हथियार तकनीक है। हमें 'डिजिटल इंटिग्रेशन मॉनिटरिंग सिस्टम' को अपनाना होगा। यह महज एक सॉफ्टवेयर नहीं, बल्कि पारदर्शिता का एक पूरा इकोसिस्टम है। वर्तमान में पेपर सेटिंग से लेकर प्रिंटिंग और सेंटर तक पहुंचने की प्रक्रिया में कई मानवीय कड़ियां हैं, जो लीकेज का कारण बनती हैं। डीआईएमएस के तहत प्रश्नपत्रों को 'ब्लॉक चेन तकनीक' या एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन के साथ डिजिटल वॉल्ट में रखा जाना चाहिए। पेपर की प्रिंटिंग परीक्षा से चंद मिनट पहले 'साइलेंट प्रिंटिंग' या सीधे स्क्रीन पर डिस्प्ले के माध्यम से हो, ताकि पेपर किसी इंसान के हाथ में आने से पहले सीधे अभ्यर्थी की टेबल तक पहुंचे। इस सिस्टम में हर एक्सेस का 'डिजिटल ट्रेल' बनेगा, यानी किसने, कब और कहां सिस्टम को लॉग-इन किया, इसका पूरा रिकॉर्ड रहेगा। यदि कोई छेड़छाड़ की कोशिश करेगा, तो सिस्टम रीयल-टाइम में 'रेड फ्लैग' अलर्ट जारी कर देगा।

ट्रांसपेरेंट कैंडिडेट और बायोमेट्रिक कवच

दूसरी बड़ी चुनौती 'डमी कैंडिडेट्स' मुन्नाभाई की है। इसका तोड़ आई-बेस्ड फिजिकल वेरिफिकेशन में है। केवल आधार कार्ड या फोटो मिलान काफी नहीं है। हमें अभ्यर्थी की पहचान को उसकी आईरिस (आंख की पुतली) और फेस रिकग्निशन से जोड़ना होगा।जब एक अभ्यर्थी फॉर्म भरता है, तभी उसका यूनिक बायोमेट्रिक प्रोफाइल लॉक हो जाना चाहिए। परीक्षा केंद्र के गेट पर,परीक्षा कक्ष के भीतर और चयन के बाद ज्वाइनिंग के समय तीनों स्तरों पर इसी प्रोफाइल का मिलान हो।ट्रिपल लेयर मॉनिटरिंग से यह सुनिश्चित होगा कि जिस व्यक्ति ने फॉर्म भरा, वही परीक्षा दे रहा है और वही नौकरी ज्वाइन कर रहा है। यह व्यवस्था %ट्रांसपेरेंट कैंडिडेट% की अवधारणा को साकार करेगी।

आयोग का ढांचागत शुद्धिकरण

तकनीक के साथ-साथ आयोग की संरचना में नैतिक सुधार अनिवार्य हैं। हरियाणा पब्लिक सर्विस कमीशन या यूपीएससी की तर्ज पर आरपीएससी में सदस्यों की नियुक्ति राजनीतिक वफादारी के बजाय मेरिट पर होनी चाहिए। आयोग की गोपनीय शाखाओं को राजनीतिक हस्तक्षेप से पूरी तरह मुक्त रखा जाना चाहिए। साक्षात्कार प्रक्रिया में पारदर्शिता लाने के लिए बोर्ड सदस्यों को भी अंतिम समय तक यह पता नहीं होना चाहिए कि वे किस अभ्यर्थी का साक्षात्कार लेने वाले हैं। दो वर्षों में 92,000 से अधिक नौकरियां और 1.5 लाख से अधिक प्रक्रियाओं का जारी रहना यह दर्शाता है कि सरकार की मंशा साफ है। 296 परीक्षाओं का निर्विघ्न संपन्न होना इस बात का प्रमाण है कि धुंध छंट रही है। एक पब्लिक पॉलिसी एक्सपर्ट के रूप में मेरा मानना है कि यह समय युवाओं के लिए अवसाद का नहीं, बल्कि आक्रामक रूप से तैयारी करने का है,मेहनत और जुनून के हथियार से ,निरंतर अध्ययन एवं धैर्य ,आत्मविश्वास के साथ सफलता पाने का। सरकार अपना काम कर रही है, सिस्टम सुधर रहा है।

शादी विकल्प, जीवन मिशनः आज की लड़कियों की सोच

कृति आरके जैन

सपनों की उड़ान अब किसी परंपरा की कैद में नहीं रुकती। आज की लड़कियां अपने भविष्य को खुद आकार दे रही हैं, और यह तय कर रही हैं कि जीवन का असली मानदंड केवल विवाह नहीं, बल्कि स्वायत्तता, तकनीक, विज्ञान, शिक्षा, उद्यमिता और नेतृत्व में अपनी पहचान बनाना है। हर कदम पर वे पुरानी सीमाओं को चुनौती देती हैं और नए अवसरों की खोज में समाज की रूढ़ियों को पीछे छोड़ रही हैं। यह केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि एक नई पीढ़ी की शक्ति, साहस और समाजिक बदलाव का प्रतीक है।

नई पीढ़ी की लड़कियों का दृष्टिकोण

आज की लड़कियां शादी को जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं मानतीं। वे अपने सपनों, करियर और आत्म-विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देती हैं। यह बदलाव केवल एक क्षणिक प्रवृत्ति नहीं, बल्कि समाज में गहरी और स्थायी क्रांति का संकेत है। भारतीय परंपरा में वर्षों से चली आ रही धारणा कि लड़की की सफलता केवल घर, विवाह और गृहस्थी में मापी जाती थी, अब पूरी तरह टूट चुकी है। नई पीढ़ी स्पष्ट रूप से कहती है जीवन मेरा है, फैसले मेरे हैं, और समय मेरे हाथ में है। यह आजादी उन्हें आत्मविश्वास, सम्मान और सामाजिक मान्यता देती है। हर लड़की के लिए यह परिवर्तन प्रेरणा और दिशा का स्त्रोत बन चुका है।

बंधनों से मुक्ति का सफर

इतिहास में लड़कियों को अक्सर परिवार और समाज की सीमाओं में रखा गया। बाल विवाह, कम शिक्षा और घरेलू जिम्मेदारियों ने उनकी प्रतिभा और संभावनाओं को रोका। स्वतंत्रता के बाद भी यह सोच धीरे-धीरे बदल रही थी। लेकिन पिछले तीन दशकों में शिक्षा के प्रसार, कानूनी सुरक्षा और वैश्विक दृष्टिकोण ने यह परिदृश्य पूरी तरह बदल दिया।

सावित्रीबाई फुले से लेकर आज की युवा उद्यमियों तक, महिलाओं ने हर मोड़ पर संघर्ष किया। अब लड़कियां आईएएस, वैज्ञानिक, पायलट और सीईओ बन रही हैं। वे समझ चुकी हैं कि शादी जीवन का हिस्सा है, लेकिन उसका अंतिम लक्ष्य नहीं। यह बदलाव केवल व्यक्तिगत चुनाव नहीं, बल्कि समाज में गहन क्रांति का प्रतीक बन चुका है।

आंकड़े जो बदलाव दिखाते हैं

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार भारत में महिलाओं की औसत विवाह आयु अब 22.5 वर्ष से अधिक हो चुकी है। शहरी क्षेत्रों में यह 25-28 वर्ष तक पहुँच चुकी है। उच्च शिक्षा प्राप्त 70 प्रतिशत से अधिक लड़कियां शादी को 25 वर्ष के बाद स्थगित करना चाहती हैं। कॉर्पोरेट क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है, और स्टार्टअप्स में महिला संस्थापकों की संख्या तेजी से बढ़ी है। लाखों लड़कियां अब सोशल मीडिया पर अपनी करियर और शादी में देरी की पसंद को खुलकर व्यक्त कर रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भी जागरूकता फैल रही है। समाज का दबाव अभी भी मौजूद है, लेकिन लड़कियां जवाब दे रही हैं - पहले करियर, पहले स्थिरता, पहले अपनी पहचान।

व्यक्तिगत और सामाजिक सशक्तिकरण

जब लड़कियां शादी से पहले अपने जीवन की योजना बनाती हैं, तो वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनती हैं। इससे उनके निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है, आत्मविश्वास मजबूत होता है और मानसिक स्वास्थ्य बेहतर रहता है। वैश्विक आर्थिक मंच की रिपोर्ट के अनुसार, लिंग समानता बढ़ने से भारत की जीडीपी में 27त्न तक का इजाफा संभव है। देर से विवाह मातृत्व स्वास्थ्य सुधारता है और बच्चों की शिक्षा पर निवेश बढ़ता है।

ग्रामीण भारत को सशक्त बनाने की दिशा में VB-G RAM G अधिनियम एक ऐतिहासिक पहल है। प्रधानमंत्री के विकसित भारत के संकल्प को धरातल पर उतारने की दिशा में यह अधिनियम ग्रामीण रोजगार नीति की संरचनात्मक पुनर्रचना है। इसके माध्यम से किसानों को सुरक्षा, श्रमिकों को अधिक अवसर, महिलाओं को सम्मान और गांवों को विकास की नई दिशा मिलेगी।

-पुष्कर सिंह धामी

अब रोजगार केवल राहत का माध्यम नहीं अपितु यह विकास और आत्मनिर्भरता का भी आधार बनेगा...

-योगी आदित्यनाथ

संपादकीय

यूरोपीय संघ से बढ़ती निकटता

वेनेजुएला में चौकाने वाली बड़ी सैन्य कार्रवाई कर राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी की गिरफ्तारी के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अचानक से दादागीरी पर उतारू हो गए हैं। उन्होंने कोलंबिया,मैक्सिको,क्यूबा और ईरान को चेतावनी दी है कि अगर ये देश नहीं सुधरे तो उन पर भी वेनेजुएला जैसी ही कार्रवाई की जा सकती है। यही नहीं ट्रंप ने भारत के लिए भी कहा है कि उसने रूस से अपनी तेल खरीद जरूर कम दी है,लेकिन अगर उसने इसे पूरी तरह बंद नहीं की तो जल्द ही उस पर अमेरिकी टेरिफ और बढ़ा दी जाएगी। यानी अमेरिका की अब सीधी शर्त है कि भारत को उसका पिछलग्गू बनकर रहना पड़ेगा। जिसे भारत कभी स्वीकार नहीं कर सकता है। इसलिए भविष्य में भारत-अमेरिका संबंधों में और तनाव आए और टेरिफ की दर बढ़ा दी जाए तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। भारत भी इस हालात को समझ चुका है। इसलिए वह तेजी से वैकल्पिक बाजार की तलाश कर रहा है। इसके अलावा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भाषा बता रही है कि द्विपक्षीय व्यापार समझौते भी भारत के पक्ष में नहीं होने जा रहे हैं। इसलिए भी भारत ने यूरोपीयन युनियन (ईयु) का रुख किया है। और अब यूरोपीय संघ के देशों के साथ पारस्परिक संबंध प्रगाढ़ करने में जुट गया है। अगर इसमें उसे कामयाबी मिलती है तो अमेरिकी टेरिफ चलते भारत के निर्यातकों पर जो संकट आया था,वह टल सकता है। इसी कड़ी में भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर फिलहाल फ्रांस की आधिकारिक यात्रा पर हैं। वे 10 जनवरी तक देश वापसी करेंगे। उनकी इस यात्रा के ठीक बाद जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज भारत आ रहे हैं। इसके बाद यूरोपीय संघ के दिग्गज नेता उर्सुलावान डेर लेथेन और एंटोनिया कोस्टा 26 जनवरी को आयोजित होने वाले भारत के गणतंत्र दिवस समारोह के राजकीय अतिथि होंगे। गणतंत्र दिवस समारोह के ठीक 15 दिन बाद फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएन मैक्रों भी मुंबई और दिल्ली की यात्रा पर होंगे। इन तीनों मौकों पर भारत का यूरोपीय संघ के देशो के साथ कारोबारी संबंधों एवं सुरक्षा,रक्षा और ऊर्जा के क्षेत्र में परस्पर सहयोग को लेकर बातचीत की जाएगी। इसमें परस्पर सहयोग के साथ नए कारोबारी संभावनाएं भी तलाशी जा सकती हैं। माना जा रहा है कि अमेरिका के साथ चल रहे संबंधों के उतार-चढ़ाव को देखते हुए भारत ने यह दूरगामी कदम उठाया है। कूटनीतिक जानकार इसे हाल के वर्षों में भारत की तरफ से दुनिया की कई शक्तियों के साथ अलग-अलग तालमेल बनाने की कोशिश को और गति देने के तौर पर देखा जा रहा है। जनवरी के तीसरे सप्ताह में जर्मनी के नए चांसलर फ्रेडरिक मर्ज भारत आ रहे हैं। सत्ता संभालने के बाद यह उनकी एशिया के किसी देश की पहली महत्वपूर्ण यात्रा होने जा रही है। इसमें रक्षा सहयोग,पनडुब्बी सौदे,व्यापार और हिंद-प्रशांत रणनीति जैसे मुद्दों पर बातचीत की जा सकती है। वैसे जर्मनी के साथ भारत के संबंध पहले से ही काफी अच्छे हैं। मर्ज की इस यात्रा के बाद इसमें और मजबूती आने के आसार हैं। इसके बाद 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के मुख्य अतिथि के रूप में यूरोपीय संघ के शीर्ष नेता- यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष उर्सलावान डेर लेथेन और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा भारत की राजधानी में होंगे और गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य राजकीय अतिथि बनने जा रहे हैं। उनकी इसी यात्रा के दौरान भारत-यूरोपीय युनियन समिट का भी आयोजन होगा। जिसमें पहले से लंबित मुक्त व्यापार समझौते(एफटीए) पर निर्णायात्मक बातचीत की उम्मीदी की जा रही है। ईयू के साथ यह बातचीत अपने अंतिम दौर में है। भारत के वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल जल्द ही इस वार्ता में हिस्सा लेने के लिए ब्रुसेल्स जा रहे हैं। ये लगातार हो रही उच्च स्तरीय वार्ताएं महज संयोग नहीं हैं,बल्कि अमेरिका से हटकर भारत की दुनिया के अन्य समृद्ध कारोबारी देशों के साथ संबंधों को ज्यादा पेशेवर व मजबूत करने की सोची-समझी रणनीति है। वैसे भी यूरोपीय संघ भारत का सबसे बड़ा कारोबारी साझेदार है। अगर एफटीए पर सहमति बन गई तो इस कारोबार का दायरा और बड़ा हो जाएगा। भारत को इससे अमेरिका बाजार से मिले झटके से उबरने में भी मदद मिल जाएगी। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि नए साल में भारत पुराने कारोबारी गतिरोधों से उबर कर नई दुनिया में प्रवेश करेगा और अमेरिका जैसे देशों से मिल रही टेरिफ बढ़ाने की धमकी से स्थायी तौर पर राहत भी मिल सकेगी।

उद्देश्यहीन संयुक्त राष्ट्र संघ को भंग क्यों नही करते?

अशोक मधुप

इतना सब हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ मानव जीवन की बरबादी देख रहा है। यह असहाय बना बैठा है। मानव जीवन का विनाश रोकने के लिए वह कुछ नहीं कर पा रहा। उसकी भूमिका शून्य होकर रह गई है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि जब संयुक्त राष्ट्र संघ कुछ नहीं कर सकता। कोई देश उसकी मानने को तैयार नही। युद्ध रोकने की उसकी शक्ति नहीं तो उसका औचित्य क्या है? दुनिया के देश क्यों इस सफेद हाथी को पाले हैं। क्यों इसका खर्च वहन कर रह हैं। इसे भंग क्यों नही कर दिया जाता।

संयुक्त राष्ट्र संघ (यूनाइटेड नेशनस) का मुख्य औचित्य अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना, मानव अधिकारों की रक्षा करना, और विभिन्न राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना है। इसका गठन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1945 में 51 देशों द्वारा किया गया था। इसका उद्देश्य था कि भावी युद्धों को रोका वैश्विक सहयोग को बढ़ावा दिया जा सके। आज 193 देश इसके सदस्य हैं। इतने बड़े संगठन का लगता है कि आज कोई देश कहना मानने को तैयार नहीं। सबकी अपनी ढपली अपना राग है। संयुक्त राष्ट्र संघ तमाशबीन बन कर रह गया है।हाल ही में अमेरिका ने वेनेजुएला पर कब्जाकर लिया। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी को बंदी बना लिया गया। उन्हें न्यूयॉर्क ले जाया गया है । वहां ड्रग्स तस्करी के आरोपों में उन पर मुक़दमा चलाया जा रहा है। अमेरिका इस पर भी वे चुप नही बैठा। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वेनेजुएला में सैन्य अभियान के बाद कई देशों को धमकी दी है। उन्होंने इशारा किया है कि कोलंबिया में कभी भी सैन्य कार्रवाई हो सकती है। उन्होंने मेक्सिको को भी चेतावनी दी है। ट्रंप ने कहा कि वह वेनेजुएला के बेपटरी हो चुके तेल उद्योग को उबारने के लिए अमेरिकी कंपनियों पर भरोसा कर रहे हैं।मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इशारा किया कि वह कोलंबिया में सैन्य कार्रवाई कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मेक्सिको को ड्रग्स के मामले में ठीक से काम करना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका को ग्रीनलैंड की जरूरत है।

उधर वेनेजुएला की मौजूदा स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की इमरजेंसी बैठक में महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के बयान में कहा गया किवेनेजुएला में अमेरिका की कार्रवाई के मामले में अंतरराष्ट्रीय कानून के नियमों का पालन नहीं किया गया है, इस बात से वे ₹बहुत चिंतित₹ हैं। रोज़मेरी डिकार्लो ने गुटेरेस का बयान पढ़ते हुए इस बात पर चिंता जताई कि अमेरिकी सैन्य कार्रवाई अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए क्या मिसाल कायम कर सकती है।उन्होंने कहा कि वेनेजुएला में हालात नाजुक हैं, लेकिन अभी भी एक बड़े टकराव को रोका जा सकता है। वहीं रूस के प्रतिनिधि ने निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया फ़्लोरेस को तुरंत रिहा करने की मांग की। ईरान के भी हालात ठीक नही है। वहां भी कभी भी तख्ता पल्ट हो सकता है। ईरान में बढ़ती महंगाई और देश की बिगड़ती आर्थिक हालत को लेकर सरकार के ख़िलाफ़ लगभग एक हफ़्ते से प्रदर्शन जारी है। ये पिछले तीन साल में देश में सबसे बड़ा विरोध प्रदर्शन है। इस बीच, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान की सरकार को चेतावनी दी है। उन्होंने सोशल पर पोस्ट में ईरान में प्रदर्शन कर रहे लोगों को मदद का भरोसा भी दिया है। उन्होंने लिखा, 'अगर ईरान शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाता है और उन्हें बेरहमी से मारता है, जो कि उनकी आदत है, तो अमेरिका उनको (प्रदर्शनकारियों को) बचाने के लिए आएगा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका ईरान के शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों की मदद के लिए पूरी तरह तैयार है। पिछले साल जून में अमेरिक ने ईरान पर हमले किए। दावा किया गया कि उसने इरान के परमाणु ठिकानों पर हमले किए है। इस्राइल भी हमले कर चुका है। इस्राइल और अमेरिका की नजर में बहुत समय ये इरान खटक रहा है। एक ओर अमेरिका की दादागिरी का ये हाल है। उधर चीन ताइवान पर कब्जा करने को तैयार बैठा है। वह समय समय पर अपनी वायु और जल सेना भेजकर ताइवान को धमकाता रहता है। कभी भी चीन सैनिक कार्रवाई कर ताइवान पर कब्जा कर सकता है।इज़रायल और हमास के बीच सात अक्टूबर 2023 को शुरू हुए युद्ध को चलते हुए दो साल और तीन महीने हो चुके हैं। अक्टूबर 2025 में एक संघर्ष विराम समझौता हुआ था। इसके बाद बड़े पैमाने पर बमबारी में कमी आई है, लेकिन तनाव और छिटपुट सैन्य कार्रवाई अभी भी जारी है।गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय और संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, अब तक इस युद्ध में 70,000 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। इसमें हमास के लड़ाके और बड़ी संख्या में नागरिक (महिलाएं और बच्चे) शामिल हैं। 1,71,000 से अधिक लोग घायल हुए हैं। इज़रायल पक्ष की ओर से सात अक्टूबर 2023 के हमले में लगभग 1,200 लोग मारे गए थे। इसके बाद सैन्य अभियान के दौरान लगभग 1,000+ इज़रायली सैनिक मारे गए हैं। इस युद्ध में गाजा पट्टी की लगभग 80 प्रतिशत इमारतें और बुनियादी ढांचा (अस्पताल, स्कूल, सड़कें) पूरी तरह या आंशिक रूप से नष्ट हो चुके हैं। युद्ध के कारण इज़रायल को अरबों डॉलर का आर्थिक नुकसान हुआ है तो गाजा की अर्थव्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई है। इस्राइल से ईरान पर भी हमला किया। इसमें बैलिस्टिक मिजाइल प्रयोग हुआ। इतना ही नही इस्राइल ने कतर पर भी पिछले दिनों हमला किया। 24 फरवरी 2022 को शुरू हुए रूस-यूक्रेन युद्ध को तीन साल 10 माह बीत गए। युद्ध निरंतर जारी है। यूक्रेन के जनरल स्टाफ और पश्चिमी खुफिया रिपोर्टों के अनुसार, रूस के 12 लाख से अधिक सैनिक या तो मारे गए हैं या घायल हुए हैं। स्वतंत्र रूसी मीडिया समूहों ने ओपन-सोर्स डेटा के आधार पर कम से कम 1,53,000+ रूसी सैनिकों की मौत की होना माना है। विभिन्न पश्चिमी अनुमानों (जैसे दिसंबर 2024-25 की रिपोर्ट) के अनुसार, यूक्रेन के लगभग 4,00,000 से 5,00,000 सैनिक मारे गए या घायल हुए हैं।इतना सब हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ मानव जीवन की बरबादी देख रहा है। यह असहाय बना बैठा है। मानव जीवन का विनाश रोकने के लिए वह कुछ नहीं कर पा रहा। उसकी भूमिका शून्य होकर रह गई है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि जब संयुक्त राष्ट्र संघ कुछ नहीं कर सकता। कोई देश उसकी मानने को तैयार नही। युद्ध रोकने की उसकी शक्ति नहीं तो उसका औचित्य क्या है? दुनिया के देश क्यों इस सफेद हाथी को पाले हैं। क्यों इसका खर्च वहन कर रह हैं। इसे भंग क्यों नही कर दिया जाता।लगभग दो साल पूर्व हमास-इस्राइल युद्ध को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र में प्रयास हुए। कई बार प्रस्ताव के प्रयास हुए पर वीटो पावर वाले देशों के अडंगे के कारण कुछ नहीं हो सका। बाद में संयुक्त राष्ट्र महासभा में इस युद्ध को रोकने के लिए सर्वसम्मत प्रस्ताव स्वीकार किया, किंतु इस्राइल ने इसे स्वीकार करने से मना कर इतना सब होने के बाद भी संयुक्त राष्ट्र इस युद्ध को नहीं रोक पाया। न रोक पा रहा है। इस युद्ध से युद्धरत देशों के विकास तो रुका ही, मानव कल्याण के लिए भवन, पुल, स्कूल और उद्योग खंडहर बन गए।

जंक फूड ने छीना बचपन हमारा

बाल मुकुन्द ओझा

दुनियाभर में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स यानि जंक फूड्स के विरोध में आवाज मुखरित होने लगी है। ब्रिटेन ने अपनी आने वाली पीढ़ी की सेहत को ध्यान में रखते हुए जंक फूड्स के विज्ञापनों को लेकर कड़ा कदम उठाने का फैसला किया है। एक ताज़ा मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ब्रिटेन ने 5 जनवरी से दिन में टीवी और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर जंक फ़ूड के विज्ञापनों पर पूरी तरह रोक लगा दी है। यह प्रतिबंद उन जंक उत्पादों पर लागु होगा जिनमें फैट, नमक और चीनी की मात्रा अधिक होंगी। अंग्रेज सरकार ने अपने इस निर्णय को मोटापे के खिलाफ निर्णायक कदम बताया है। हमारे देश की बात करे तो जंक फ़ूड पर यहां किसी तरह की रोक नहीं है। विज्ञापनों की भरमार देखी जा सकती है।

जंक फूड ने देश के नौनिहालों से लेकर किशोर, युवा और बुजुर्ग तक को अपने आगोश में ले लिया है। तीव्र गति से बढ़ते शहरीकरण, व्यस्त जीवन-शैली और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे बदलाव ने भारत में लोगों के जीवन-यापन के तरीके को बदल कर रख दिया है। इन बदलावों के फलस्वरूप लोगों ने घर पर खाना पकाने और खाने की आदत में भी बदलाव किया है। महानगरों में में रहने वाले परिवारों की तैयार भोजन, फास्ट फूड और जंक फूड पर निर्भरता ज्यादा ही बढ़ गई है। अब तो इनकी पहुँच घर घर में हो गई है। यह बच्चों के प्रिय नाश्ते में शुमार हो गया है। देखा तो यह गया है पूरा परिवार अल्पाहार में फास्ट फूड का उपयोग करने लगा है। अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स को शुगरी ड्रिंक्स, जंक फूड, पैकेज्ड फूड्स आदि विभिन्न नामों से भी जाना जाता है जिसमें खाने के नेचुरल तत्व हटा कर उसे कृत्रिम तत्वों में बदल दिया जाता है।

यह देखा जाता है इस प्रकार के खाध पदार्थों ने घर घर में अपने पांव पसार लिए है। विशेषकर महानगरों के स्कूल, कालेजों और नौकरी करने वाले अधिकतर युवा अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स अथवा फास्ट फूड पर चलते हैं, बल्कि यह कहना ज्यादा उचित होगा कि उन्हें इनका चस्का लगा हुआ है। नतीजा बड़ा ही खौफनाक है। इस फूड खाने के आदी युवा ऐसी बीमारियों के शिकार हो रहे हैं जो बुढ़ापे की बीमारियाँ समझी जाती हैं। बाजार में फूड के नाम पर जो चीजें सहज उपलब्ध हैं, उनमें शर्करा और चर्बी तो होती है, लेकिन प्रोटीन लगभग नदारद होती है। यही नहीं, उनमें पड़ने वाले कृत्रिम नमक और प्रिजर्वेटिव्स स्वास्थ्य के लिए जहर जैसे होते हैं। प्रोटीन की कमी उनमें कितनी ही स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा करती हैं। इसमें पोषण की कमी होती है और शरीर के तंत्र के लिए हानिकारक होता है। ज्यादातर अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड उच्च स्तर पर वसा, शुगर, लवणता, और बुरे कोलेस्ट्रॉल से परिपूर्ण होते हैं, जो स्वास्थ के लिए जहर होते हैं। इनमें पोषक तत्वों की कमी होती है इसलिए आसानी से कब्ज और अन्य पाचन संबंधी बीमारियों का कारण बनते हैं।

इसके अलावा देश और दुनिया में जंक या फ़ास्ट फ़ूड फूड का उपभोग दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है, जो भविष्य के लिए अच्छा नहीं है। सभी आयु वर्ग के लोग जंक फूड खाना पसंद करते हैं और आमतौर पर, जब वे अपने परिवार के साथ कुछ विशेष समय, जैसे- जन्मदिन, शादी की सालगिरह, आदि का आनंद लेने के दौरान वे इन्हें ही चुनते हैं। वे बाजार में उपलब्ध जंक फूड की विभिन्न किस्मों जैसेय कोल्ड ड्रिंक, वेफर्स, चिप्स, नूडल्स, बर्गर, पिज्जा, फ्रेंच फ्राईस, चाइनीज खाना आदि का प्रयोग करते हैं।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के खाद्य उत्पादों ने एक दशक में ही भारतीय बाजारों पर अपना कब्जा जमा लिया है। बड़े होटलों, रेस्ट्रां से लेकर जनरल स्टोर, किराने की दुकानों, थड़ियों और चायपान की दुकानों पर ये उत्पाद आपको आसानी से उपलब्ध हो जायेंगे। इनमें फास्ट फूड ऐसा उत्पाद है जो कुछ ही मिनटों में तैयार हो जाता है। मैगी इसका जीवन्त उदाहरण है। मैगी का उपयोग घर-घर में हो रहा है और बच्चे विशेष रूप से इसे बड़े चाव से खा रहे हैं। जंक फूड आमतौर पर चिप्स, कैंडी, बर्गर, पिज्जा, फ्रेंकी, चाऊमीन, चाकलेट, पेटीज जैसे तले-भुने फास्ट फूड को कहा जाता है।

कविता

तस्सवुर हवा में बिखरा देना तुम

हाले दिल न सुना सको ज़माने के बीच
चलती राहों में पलकें झुखा देना तुम।।

हमसे न मिल सको ना मिलो सरे राह,
अपना दुपटटा हवाओं में लहरा देना तुम ।।

गर तेरा दीदार नहीं वक्त से पहले,
तस्सवुर हवाओं में बिखरा देना तुम।।

याद है पूरा चाँद और चाँदनी के ख्वाब,
दूब का बिछौना, चांदनी ओढ लेना तुम।

राह में मिल जाएँ कहीं काँटे,पत्थर,
नर्म साँसों से मखमल बना देना तुम।

बहती हवाएँ कर जाती है तेरा जिक्र,
इश्किया नगमें बादलों में लहरा देना तुम।।

सँवरने में वक्त जाया न किया करो,
चेहरे से अपना दुपट्टा हटा देना तुम्।।

होश खोता कोई तुम्हे देखने के बाद.,
मनचलों को आँखें दिखा देना तुम।।

चले आओ सितारों में खो जाये कही हम,
रूह को मेरी अपनी रूह में मिला लेना तुम।।

आशिकी में गर खता हुई हमसे संजीव,
बातों को मेरी हवा में लहरा देना तुम।

-संजीव ठाकुर

आपका मत

दीप्ति उपलब्धि पर देश को गर्व है

हाल ही में श्रीलंका के साथ पांच मैचों की टी20 सीरीज भारत ने अपने नाम कर ली हे लेकिन इस सीरीज में भारत की ऑलराउंडर खिलाडी दीप्ति शर्मा ने अंतरराष्ट्रीय महिला टी20 क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट लेने का कीर्तिमान अपने नाम करके देश को एक और उपलब्धि से गौरवान्वित किया हे ! दीप्ति शर्मा का अंतरराष्ट्रीय महिला टी20 क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट लेने का यह कीर्तिमान देश की लाखो युवा लड़कियों के लिए प्रेरणास्पद उपलब्धि मानी जाएगी ! उत्तर प्रदेश के आगरा के एक बेहद ही साधारण परिवार से नाता रखने वाली दीप्ति शर्मा ने 2025 के महिला विश्वकप में भारत को वर्ल्ड चैंपियन बनाने में महती भूमिका थी और विश्व कप में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुनी गई थी ! दीप्ति भारतीय टीम की मध्यम क्रम की एक ऐसी सशक्त खिलाडी हे जो गेंद और बल्ले से दोनों विधाओं में टीम को मजबूती प्रदान करती हे ! दीप्ति शर्मा को उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने डीएसपी के पद से नवाज कर उन्हें सम्मानित किया हे ! बकोल बेहद साधारण सी पृष्ठभूमि से पली बड़ी दीप्ति की अंतरराष्ट्रीय महिला टी20 क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट लेने वाली उपलब्धी हासिल करना समूचे देश के लिए गर्व का विषय हे !

-अरविंद रावल

लोकसत्य

आप अपना मत व लेख हमें इस ई-मेल भेज सकते है।

loksatyaedit01@gmail.com

Blogger

सड़क दुर्घटना मुआवज़ा और संविधान : मानवीय गरिमा की तलाश

डॉ प्रियंका सौरभ

सड़क दुर्घटना मुआवज़े की तकनीकी व्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय संविधान के मूल दर्शन—समता, गरिमा और कल्याणकारी राज्य—से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारत में हर वर्ष लाखों सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं और इनमें हज़ारों लोग अपनी जान गंवाते हैं या स्थायी रूप से अपंग हो जाते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में मुआवज़ा केवल आर्थिक राहत नहीं होता, बल्कि यह राज्य द्वारा पीड़ित के जीवन-मूल्य को स्वीकार करने और उसकी गरिमा को पुनर्स्थापित करने का प्रयास भी होता है। मोटर वाहन अधिनियम के अंतर्गत वर्तमान मुआवज़ा प्रणाली मुख्यतः आय-आधारित है, जो पहली दृष्टि में तर्कसंगत लग सकती है, लेकिन गहराई से देखने पर यह संवैधानिक मूल्यों के साथ कई गंभीर प्रश्न खड़े करती है। मोटर वाहन अधिनियम में अपनाई गई 'मल्टीप्लायर पद्धति' पीड़ित की आय, आयु और आश्रितों की संख्या के आधार पर मुआवज़ा निर्धारित करती है। इसका उद्देश्य यह माना गया कि दुर्घटना से पूर्व जिस आर्थिक स्थिति में परिवार था, उसे यथासंभव पुनर्स्थापित किया जा सके। किंतु इस पद्धति की सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह मनुष्य के जीवन को उसकी बाज़ार-योग्यता से जोड़ देती है। एक उच्च वेतन पाने वाले व्यक्ति की मृत्यु या अपंगता पर लाखों या करोड़ों रुपये का मुआवज़ा तय होता है, जबकि एक दिहाड़ी मज़दूर, रिक्शा चालक या असंगठित क्षेत्र के श्रमिक के लिए यह राशि बहुत कम होती है। इस प्रकार कानून अनजाने में यह संदेश देता है कि किसी व्यक्ति का जीवन उसकी आय के अनुपात

में अधिक या कम मूल्यवान है।

यह दृष्टिकोण सीधे-सीधे संविधान के अनुच्छेद 14 में निहित 'कानून के समक्ष समानता' के सिद्धांत को चुनौती देता है। अनुच्छेद 14 केवल समान व्यवहार की बात नहीं करता, बल्कि यह मनमाने और असंगत वर्गीकरण पर रोक भी लगाता है। जब दो नागरिक समान परिस्थितियों में सड़क दुर्घटना के शिकार होते हैं, लेकिन केवल आय के आधार पर उनके जीवन का मूल्य अलग-अलग तय किया जाता है, तो यह एक प्रकार का संवैधानिक विरोधाभास उत्पन्न करता है। राज्य एक ओर सभी नागरिकों को समान मानता है, दूसरी ओर मुआवज़े के स्तर पर उनके बीच आर्थिक हैसियत के आधार पर भेद करता है।

इस व्यवस्था का सबसे गंभीर प्रभाव उन वर्गों पर पड़ता है जिनकी आय औपचारिक रूप से दर्ज नहीं होती या जिन्हें 'अर्जक' ही नहीं माना जाता। गृहिणियाँ, बच्चे, वृद्ध और छात्र अक्सर 'काल्पनिक आय' के आधार पर मुआवज़ा प्राप्त करते हैं। यह काल्पनिक आय वास्तविक सामाजिक योगदान को प्रतिबिंबित नहीं करती। एक गृहिणी का श्रम घर के भीतर अदृश्य रहता है, लेकिन वह परिवार और समाज की आर्थिक संरचना को संभालने में केंद्रीय भूमिका निभाती है। सर्वोच्च न्यायालय ने किर्ति बनाम ओरिएंटल इंश्योरेंस (2021) जैसे मामलों में यह स्पष्ट किया है कि गृहिणी का कार्य केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि आर्थिक मूल्य भी रखता है। इसके बावजूद, व्यवहार में मुआवज़े की गणना में यह योगदान अभी भी पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं होता।

आय-आधारित मुआवज़ा प्रणाली का एक और संवैधानिक आयाम अनुच्छेद 21 से जुड़ा है, जो 'जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार' की गारंटी देता है। सर्वोच्च न्यायालय ने समय-समय पर यह स्पष्ट किया है कि जीवन का अर्थ केवल शारीरिक अस्तित्व नहीं, बल्कि गरिमापूर्ण जीवन है। जब किसी व्यक्ति की मृत्यु या अपंगता के बाद उसका जीवन-मूल्य केवल गणितीय सूत्रों और आय-स्लैब तक सीमित कर दिया जाता है, तो यह उसकी अंतर्निहित गरिमा को कमतर आँकने जैसा प्रतीत होता है। जीवन को केवल आर्थिक हानि के चश्मे से देखना उस संवेदनशील पीड़ा, मानसिक आघात और सामाजिक असुरक्षा को नज़रअंदाज़ करता है, जिसका सामना पीड़ित परिवार को करना पड़ता है।

इस संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि 'न्यायसंगत मुआवज़ा' की अवधारणा स्वयं सर्वोच्च न्यायालय द्वारा व्यापक अर्थों में व्याख्यायित की गई है। न्यायालय ने माना है कि मुआवज़ा केवल आय-हानि की भरपाई नहीं, बल्कि भावनात्मक क्षति, मानसिक वेदना और भविष्य की अनिश्चितता के लिए भी होना चाहिए। फिर भी, मौजूदा कानूनी ढांचा इन अमूर्त पहलुओं को पर्याप्त स्थान नहीं देता। परिणामस्वरूप, मुआवज़ा प्रक्रिया अक्सर एक यांत्रिक गणना बनकर रह जाती है, जिसमें मानवीय संवेदना का अभाव दिखाई देता है।

यदि हम अन्य परिवहन कानूनों से तुलना करें, तो यह असमानता और भी स्पष्ट हो जाती है। रेलवे अधिनियम और विमानन से जुड़े कानूनों में दुर्घटना की स्थिति में एक समान, निश्चित मुआवज़ा निर्धारित है, जो पीड़ित की आय या सामाजिक स्थिति से स्वतंत्र होता है।

दैनिक सवेरा टाइम्स
नई दिल्ली, बुधवार, 7 जनवरी 2026

जो व्यक्ति कहता है कि फलां काम नहीं हो सकता, उसे उस काम को कर रहे व्यक्ति को टोकना नहीं चाहिए। -चीनी कहावत

बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार

भारत की मदद से जब पाकिस्तान के दो टुकड़े करके बांग्लादेश अलग वजूद में आया था तो समझा गया था कि भारत अपने पड़ोस में एक और धर्मनिरपेक्ष देश खड़ा कर रहा है। लेकिन आज कट्टरपंथियों की धर्मांधता का शिकार हो चुका बांग्लादेश हिन्दू समुदाय के लिए उत्पीड़क बन गया है। बांग्लादेश में हिन्दू शुरू से ही वहां रहते हैं, चाहे वे वहां अल्पसंख्यक है। बांग्लादेश में जब शेख हसीना के खिलाफ बगावत हुई तो उन्हें भागकर भारत में शरण लेनी पड़ी।

बांग्लादेश की सत्ता कार्यकारी तौर पर मोहम्मद यूनुस के हाथ में आ गई। तब से बांग्लादेश में हिन्दुओं के प्रति अत्याचार का अंत नहीं है। पिछले 19 दिनों में बांग्लादेश में 6 हिंदुओं की हत्या हो चुकी है। 18 दिसम्बर 2025 को दीपू चंद्र दास की हत्या, 24 दिसम्बर 2025 को अमृत मंडल की हत्या, 30 दिसम्बर 2025 को विजेन्द्र बिस्वास की हत्या, 31 दिसम्बर 2025 को खोकोन चंद्र दास पर हमला और बाद में उनकी मौत के बाद 5 जनवरी को जैसोर जिले में राणा प्रताप और 5 जनवरी को ही नरसिंदी में शरत चक्रवर्ती मणि नामक हिन्दु युवक की हत्या कर दी गई। इसके अलावा एक हिन्दु विधवा महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया गया। वैमनस्य खेलों तक फैल गया है। बांग्लादेशी क्रिकेटर मुस्तफिजुर रहमान को आईपीएल से निकालने के बाद बांग्लादेश ने अगले आईपीएल क्रिकेट के प्रसारण पर प्रतिबंध लगा दिया है और उनकी टीम ने टी-20 विश्व कप में भारत में खेलने से मना कर दिया है। बांग्लादेश में हिन्दुओं की संख्या 7-8 प्रतिशत है। हिन्दु समुदाय भीड़ की हिंसा का शिकार हो रहा है।

कारण है राजनीतिक संकट, सरकार का बदलाव, विरोधी हिंसक प्रदर्शन और कमजोर कानून व्यवस्था पर कट्टरपंथियों का हावी होना। मदांध भीड़ हिन्दुओं पर ईशनिंदा के झूठे आरोप लगाती है और फिर हिंसा भड़क जाती है। पुलिस प्रशासन ढुलमुल रवैया अपनाता है इसलिए हत्याओं पर नियंत्रण नहीं किया जा रहा। पहले भी बांग्लादेश में हिन्दु समुदाय बहुसंख्यकों की हिंसा का शिकार होता रहा है लेकिन अब साम्प्रदायिक जहर शायद इसलिए फैल चुका है क्योंकि मोहम्मद यूनुस की मंशा चुनाव करवाने की नहीं लगती। जब-जब गद्दी की राजनीति होने लगती है, तो असामाजिक तत्व हिंसा फैलाना शुरू कर देते हैं। इधर पश्चिम बंगाल में भी बांग्लादेश के हिंदुओं के प्रवेश पर राजनीति हो रही है।

चुनाव करीब होने के कारण इन हिन्दुओं के वोट बनाने के आरोप लग रहे हैं। संक्षेप यह है कि हालात वहां बद से बदतर होते जा रहे हैं। भारत सरकार से मांग की जा रही है कि अपने व्यापार की ताकत से या सैन्य ताकत से बांग्लादेश को रोका जाए। सरकार का कहना है कि हम यथासंभव प्रयास कर रहे हैं लेकिन यह इशारा भी है कि शायद पश्चिम बंगाल में सत्ता की राजनीति इसमें रुकावट बन रही है। हमारा विचार है कि राजनीति से परे हटकर मानवीय मूल्यों को तरजीह देनी चाहिए। मासूमों की हत्या का यह बवाल खत्म होना चाहिए।

इसके लिए भारत सरकार को अगर सख्त कदम भी उठाने पड़ें तो कोई हर्ज नहीं। बांग्लादेश आर्थिक तौर पर भारत पर बहुत निर्भर करता है। यहां तक कि बांग्लादेश को अधिकतर विद्युत आपूर्ति भी भारत से होती है। जैसे हमने पाकिस्तान के साथ सिंधु जल संधि स्थगित करके उसके होश ठिकाने लगाए हैं, उसी तरह यह विद्युत आपूर्ति भी बंद की जा सकती है। इसके अतिरिक्त भारत बांग्लादेश को निर्यात रोक कर सबक सिखा सकता है परन्तु ऐसे सख्त कदमों से पहले अगर संवाद से मामला सुलझाया जा सके तो यह अधिक बेहतर होगा क्योंकि सरहद पर एक और दुश्मन खड़ा कर लेने की बजाय साझी बांग्ला संस्कृति की धरातल पर अगर स्थिति को संभाल लिया जाए तो यह अधिक माकूल रहेगा। **-शीतल विज**

जलापूर्ति के जहरीला होते जाने का संकट

पिछले दिनों मध्य प्रदेश की राजधानी इंदौर, जिसे देश का सबसे स्वच्छ और सुंदर शहर कहा जाता है, में दूषित पानी की आपूर्ति ने हाहाकार मचा दिया। 21 लोग अब तक दूषित जल के कारण उत्पन्न महामारी की भेंट चढ़ चुके हैं। अधिकांश अस्पतालों में उपचाराधीन हैं। कुछ इसी तरह पंजाब में भी पानी में जहरीले तत्वों के मिश्रित होने का खतरा मुंह बाए है। अगर इस संकट की रोकथाम न की गई तो इंदौर में जिस प्रकार मृत्यु तांडव मचा था, यहां भी स्थिति न बिगड़ जाए। पंजाब में एक तो कम जलापूर्ति का संकट है, दूसरा जहरीले तत्वों के मिश्रित होने का खतरा है। इसका कारण है अवैध कालोनियां और ऊबड़-खाबड़ उद्योग विकास। सतलुज, ब्यास नदियों का पानी दूषित हो रहा है।

अवैध कालोनियों का कचरा और औद्योगिक कूड़ा भी उचित निस्तारण न होने के कारण पानी में मिक्स होकर पानी को जहरीला कर रहा है। एक ओर काली बेईं जिसे संत बलबीर सिंह सींचेवाल के सद्प्रयासों से साफ किया गया, लेकिन दूसरी ओर लुधियाना के अनियंत्रित विकास ने बुड्ढा नाला को गंदा नाला बनाकर रख दिया है। फैक्ट्रियों का कैमिकलयुक्त प्रवाह सतलुज और ब्यास में धड़ल्ले से घुल रहा है। इन जहरीले तत्वों से पंजाबियों की सेहत के लिए बीमारियों की सौगात मिल सकती है। संत सींचेवाल और अन्य पर्यावरण सुधारक बुड्ढा नाला की सफाई के लिए आगे आए हैं लेकिन जरूरत इसके लिए विस्तृत अभियान की है। सबसे पहले तो अवैध बस्तियों और उद्योगों के ऊबड़-खाबड़ विकास को नियंत्रित करना होगा लेकिन उससे भी बड़ी जरूरत यह है कि कूड़ा-कर्कट का उचित निस्तारण किया जाना चाहिए।

शहरों और गांवों में कूड़े का सही निस्तारण न होने से ही समस्या गहराती जा रही है। यहां-वहां कूड़े के डम्प बन रहे हैं जो माहौल को विषाक्त बना रहे हैं। जलापूर्ति भी इसके चलते प्रदूषण की चपेट में आ जाती है। दुर्भाग्य यह है कि अभी तक जन साधारण इस समस्या की गंभीरता को समझ नहीं पाया है। महानगरों में कूड़े का सही निपटारा करने के लिए बनाई गई योजनाएं अधर में हैं। किसी न किसी तरह कचरा जल में पहुंच जाता है।

पंजाब में भगवंत मान की सरकार इस समस्या के प्रति जागरूक है। जनता का हर दर्द सरकार की नजर में है और हर पुरानी समस्या का हल करने के लिए उचित कदम उठाए जा रहे हैं। इसी के अंतर्गत जलापूर्ति के विषाक्त होने की समस्या से भी गंभीर स्तर पर निपटा जाना चाहिए। जैसे पंजाब में नशे के विरुद्ध एक सफल अभियान चलाया गया है और सार्थक नतीजे प्राप्त हुए हैं, उसी प्रकार जल की स्वच्छता के प्रति भी अभियान चलाया जाना चाहिए। **-शीतल विज**

Email: letter2editor@dainiksaveratimes.net

परनीत सचदेव

चीन के अंधेरे कारखाने: 24/7 स्वचालित विनिर्माण का उदय

'अंधेरे कारखाने' शब्द एक ऐसी प्रोडक्शन लाइन को अभिव्यक्त करते हैं जिसे न तो श्रमिकों की जरूरत है, न ही रोशनी की और जो अंधेरे में चौबीसों घंटे सातों दिन कार्यरत रहती है

चीन की औद्योगिक रूपरेखा गहन तरीकों से बदल रही है। देशभर में जो विनिर्माण इकाइयां कभी मानव श्रम, चमकती रोशनी और एक के बाद एक पालियों से भरी होती थीं, उनकी जगह अब डार्क फैक्ट्री यानी 'अंधेरे कारखाने' ले रहे हैं; ये ऐसे पूर्ण-स्वचालित प्रतिष्ठान है जो बिना मानव उपस्थिति और परंपरागत रोशनी के चलते हैं। चीन के कुछ औद्योगिक क्षेत्रों के आगंतुक बताते हैं कि कैसे वे एक-एक किलोमीटर लंबी कन्वेयर बैल्ट के बगल से पैदल गुजरकर देख चुके हैं, वहां अकेली हलचल सिर्फ मशीनों की होती है और अंत में एक ट्रक अंतिम उत्पादों को लेकर चला जाता है। यह अति-यथार्थवादी नजारा कोई विज्ञान गल्प नहीं है। साल 2024 में चीन में औद्योगिक रोबोटों की तैनाती 1.89 लाख से बढ़कर 20 लाख तक पहुंच चुकी है (बिजनेस टुडे, 11 नवंबर 2025)। *'अंधेरे कारखाने' शब्द एक ऐसी प्रोडक्शन लाइन को अभिव्यक्त करते हैं जिसे न तो श्रमिकों की जरूरत है, न ही रोशनी की और जो अंधेरे में चौबीसों घंटे सातों दिन कार्यरत रहती है (एफटी, 2 सितंबर 2025)।*

ये कारखाने कई तकनीकी प्रगतियों के संगम पर निर्मित हैं। इनके केंद्र में रोबोटिक भुजाएं हैं जो वैल्डिंग, पेंटिंग, असैंबली, निरीक्षण और पॉलिशिंग करती हैं। इन्हें सहारा देते हैं ऐसे स्वायत्त निर्देशित वाहन (एजीवी) जो संयंत्र में पुर्जों को इधर-उधर ले जाते हैं, ऐसे सैंसर जो निरंतर स्थिति और दोषों की निगरानी करते हैं और ऐसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियां जो प्रवाह को अनुकूलित करती हैं तथा पूर्वानुमानित रखरखाव सुनिश्चित करती हैं (आईईएन, 27 अगस्त 2025)। *मानव पाली की संरचना को समाप्त कर देने का अर्थ है कि कारखाना चौबीसों घंटे, सातों दिन चल सकता है—इसमें न तो भोजनावकाश की आवश्यकता पड़ती है, न मशीनों को प्रोग्राम करने के बाद रोशनी चाहिए और न ही वेतन की लागत वाली श्रमिक पालियों की चिंता करनी पड़ती है।*

मॉडल कैसे काम करता है: डार्क फैक्ट्री की मैकेनिक्स और इकोनॉमिक्स

इनपुट पक्ष: सबसे पहले कच्चा माल आता है, जो प्रायः स्वचालित लॉजिस्टिक्स के माध्यम से आपूर्ति किया जाता है। कन्वेयर बैल्ट पुर्जों को रोबोटिक स्टेशनों तक पहुंचाती हैं, जहां रोबोटिक भुजाएं वैल्डिंग, बोल्ट लगाना, पेंट करना, निरीक्षण और पैकेजिंग जैसे कार्य करती हैं। इसी बीच स्वायत्त वाहन (एजीवी) पुर्जों को एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक, कभी-कभी एक इमारत से दूसरी इमारत तक ले जाते हैं। ये वाहन लेजर-नेविगेशन, स्लैम (साइमल्टेनियस लोकलाइजेशन एंड मैपिंग) या विजन-आधारित मार्गदर्शन से चलते हैं। चूंकि मशीनों को इंसानों की तरह देखने की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए रोशनी की जरूरत बहुत कम होती है; गुणवत्ता की जांच सैंसर और कैमरे करते हैं।

संयोजक परत: यहां इंटरनैट ऑफ थिंग्स (आईओटी) सैंसर, एज-कम्प्यूटिंग नोड्स और केंद्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियां वास्तविक समय में कार्य प्रदर्शन की निगरानी करती हैं। किसी भी विचलन पर तुरंत सुधारात्मक कार्रवाई होती है—रोबोट पुनः समायोजित किए जाते हैं और पूर्वानुमानित रख-रखाव किया जाता है। 'ऑटोनॉमी 2.0' का अर्थ है कि मशीनें केवल इंजीनियर जोड़ने से नहीं, बल्कि डेटा और कम्प्यूट शक्ति से विस्तार करती हैं, जिससे बड़े पैमाने पर लागत बचती है।

लागत संरचना: यूं तो शुरुआती पूंजी निवेश बहुत अधिक होता है (रोबोट, एजीवी, सैंसर, सॉफ्टवेयर, ढांचा), लेकिन उत्पादन की प्रति इकाई लागत तेजी से घट जाती है। श्रम लागत लगभग शून्य हो जाती है और सटीकता के कारण दोष, दोबारा काम और बेकार माल में कमी आती है। चीन के घरेलू रोबोट निर्माता अब लगभग आधी मांग पूरी करते हैं और वैश्विक प्रतिस्पर्धियों से सस्ते हैं। स्वचालन से 20-30 फीसदी तक उत्पादन क्षमता में सुधार सामान्य है। उदाहरण के लिए, सिचुआन में एक इलैक्ट्रिक-वाहन चेसिस बनाने वाले कारखाने ने बताया कि स्वचालन के कारण वह अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया से अनुबंध जीत सका, क्योंकि लागत कम और गुणवत्ता अधिक स्थिर थी।

वैश्विक दृष्टिकोण : पहले बहुत सी कंपनियां

उच्च वेतन वाले क्षेत्रों (यूरोप, जापान, कोरिया) से चीन और फिर वियतनाम, बांग्लादेश या भारत जैसे कम लागत वाले देशों में जाती थीं। लेकिन यदि चीन उच्च गुणवत्ता और लगभग कम लागत पर उत्पादन कर सकता है, तो कहीं और जाने की प्रेरणा कम हो जाती है। *इस प्रकार 'अंधेरा कारखाना' एक नया प्रतिस्पर्धी मोर्चा बन जाता है।*

पैमाना: हाल के वर्षों में चीन ने लगभग 2.80 लाख रोबोट स्थापित किए हैं—जो वैश्विक सकल का आधे से अधिक है। केवल 2024 में ही चीन ने 2.95 लाख रोबोट लगाए, जबकि अमेरिका ने मात्र 34,200 लगाए। इतनी क्षमता के साथ चीन का विनिर्माण उत्पादन तेजी से और कम लागत पर बढ़ सकता है।

भारत के लिए बराबरी करने की जरूरत: क्यों 'चीन प्लस' पर फिर से सोचने की जरूरत हो सकती है

भारत के लिए चीन के अंधेरे कारखानों का उभरना जरूरी रणनीतिक सवाल खड़े करता है। भारत का मैन्युफैक्चरिंग हब बनने का लक्ष्य; जिसे अक्सर 'चीन प्लस' रणनीति (यानी, कंपनियां चीन के अलावा या उसके बजाय भारत में मैन्युफैक्चरिंग शुरू करें) के रूप में बताया जाता है, उसे पहले के अनुमान से ज्यादा मुश्किल मुकाबले वाले माहौल का सामना करना पड़ सकता है।

भारत की जीडीपी में मैन्युफैक्चरिंग का हिस्सा असल में 2010 की शुरुआत में लगभग 17.5% से घटकर आज लगभग 12-13% हो गया है (बिजनेस टुडे, 11 नवंबर 2025)। अगर चीन खुद श्रम लागत के फायदों को ऑटोमेशन से खत्म कर देता है, तो चीन से श्रम-खपाऊ ऑपरेशंस को दूसरी जगह ले जाने की दलील कमजोर पड़ जाती है।

भारत को सिर्फ सस्ती श्रम लागत की नहीं, बल्कि ऑटोमेशन इकोसिस्टम, रोबोटिक्स सप्लाई चेन, सेंसर, एआई सॉफ्टवेयर, लॉजिस्टिक्स नैटवर्क और ऊर्जा की भरोसेमंद आपूर्ति की जरूरत है। इनके बिना, भारत को हाई-क्वालिटी मैन्युफैक्चरिंग का हब बनने के बजाय कम उत्पादकता, कम फायदे वाली जगह बनने का खतरा है (डीटीनेक्स्ट, 10 नवंबर 2025)।

भारत को गुणवत्ता, भरोसेमंद और तेजी से काम करने की क्षमता देनी होगी। भारत के सेवा क्षेत्र की ताकत उसे एक फायदा देती है: डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग को इंटीग्रेट करना, ऑटोमेशन टूल्स सप्लाई करना और स्मार्ट टैक्नोलॉजी से श्रम-खपाऊ ऑपरेशंस को बेहतर बनाना। लेकिन समय तेजी से बीत रहा है।

भारत के लिए रणनीतिक आर्थिक और नीतिगत कदम

चीन का फायदा यह है कि घरेलू रोबोट बनाने वाली कंपनियां विदेशी प्रतिद्वंद्वियों से कम कीमत पर सामान बेचती हैं और लागत कम करती हैं (एफटी, 2 सितंबर 2025)। भारत को भी रोबोटिक्स स्टार्ट-अप, कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग (एक्चुएटर्स, ड्राइव्स, सैंसर), लोकल सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म को सहारा देना चाहिए और स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग को अपने 'मेक इन इंडिया' विजन में शामिल करना चाहिए। लक्ष्य पूरी तरह से श्रम को बदलना नहीं है, बल्कि प्रति श्रमिक अधिक उत्पादकता की ओर बढ़ना है। स्नातक बेरोजगारी की समस्या (जो अभी बहुत ज्यादा है, शायद ~29%) नए रास्ते देने की जरूरत को दिखाती है।

अंधेरे कारखानों के लिए भरोसेमंद 24×7 बिजली, अनुमानित लॉजिस्टिक्स, कम से कम डाउनटाइम की जरूरत होती है। भारत को ऊर्जा ढांचा, टिकाऊ ग्रिड आपूर्ति, स्मार्ट फैक्ट्रियों की कनैक्टिविटी और लॉजिस्टिक्स कॉरिडोर में निवेश करना चाहिए। इनके बिना, ऑटोमेशन का फायदा नहीं उठाया जा सकता है।

वैश्विक उत्पादन और चीन-प्लस नैक्सस

आगे देखें तो, वैश्विक उत्पादन अभी भी बहु-ध्रुवीय रहेगा। सभी तरह के सामान के लिए अंधेरे कारखाने बनाने की जरूरत नहीं है। भारत अभी भी अपनी भूमिका बना सकता है, खासकर अगर वह ऑटोमेशन को फ्लेक्सिबिलिटी, छोटे-बैच कस्टमाइजेशन, क्षेत्रीय आपूर्ति शृंखला पहुंच (अफ्रीका, मध्य पूर्व, दक्षिण एशिया तक) और सेवा-आधारित मैन्युफैक्चरिंग इकोसिस्टम के साथ मिलाता है।

चीन के अंधेरे कारखानों का उदय सिर्फ एक तकनीकी मील का पत्थर नहीं है। मैन्युफैक्चरिंग विस्तार की अगली लहर पर कब्जा करने का मौका कम होता जा रहा है क्योंकि चीन अपने पैरों के नीचे खेल के मैदान को बदल रहा है।

इसका मतलब यह नहीं है कि भारत दूसरे दर्जे का देश बनकर रह जाएगा। अगर भारत स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग को तेजी से अपनाता है, अपने रोबोट इकोसिस्टम में निवेश करता है, 24×7 उत्पादन के लिए जरूरी ढांचा और कौशल तैयार करता है, तो चीन प्लस रणनीति अभी भी सफल हो सकती है।

पिछले कुछ सालों में, चीन की औद्योगिक मशीन ने प्रतिबंधों के बावजूद ***रूस के रक्षा-औद्योगिक आधार*** को मजबूत करने में एक आश्चर्यजनक भूमिका निभाई है। *कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनैशनल पीस* का एक विस्तृत अध्ययन बताता है कि 2023 तक चीन रूस के लगभग 90% माइक्रोइलैक्ट्रॉनिक्स आयात और मिसाइलों और बख्तरबंद वाहनों के लिए जरूरी ज्यादातर उच्च-प्राथमिकता वाले मशीन-टूल का आपूर्तिकर्ता बन गया है (यूएस-चीन रिव्यू कमीशन)। इस बदलाव ने उन क्षेत्रों में पश्चिमी मशीन-टूल आपूर्तिकर्ता और चिप-वैंडर की मोलभाव करने की शक्ति और मार्कीट शेयर को कम कर दिया है।

इस बीच, ***संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप*** में, तथाकथित *'चीन शॉक'* प्रभाव को बड़े पैमाने पर दर्ज किया गया है: उदाहरण के लिए, अध्ययनों का अनुमान है कि 2000 से 2007 तक, चीनी आयात से सबसे ज्यादा प्रभावित अमेरिकी क्षेत्रों में लगभग 5.50 लाख से 24 लाख मैन्युफैक्चरिंग नौकरियां चली गईं।

हाल ही में ***यूरोपीय सैंट्रल बैंक*** ने बताया कि चीनी निर्माताओं से बढ़ती स्पर्धा के कारण यूरो-क्षेत्र के ऑटोमोबाइल और कैमिकल इंडस्ट्री में नौकरियां गई हैं और 2019 और 2024 के बीच कुछ सैक्टरों में यूरोप को चीनी निर्यात में 150% तक की बढ़ौतरी हुई है (द वॉल स्ट्रीट जर्नल)।

ऐसी दुनिया में जहां कारखानों को अब शायद रोशनी की जरूरत नहीं होगी और इंसानी पालियां खत्म हो जाएंगी, नई सीमा गति, सटीकता, लागत और पैमाने की है। तो सवाल यह है: क्या भारत अपने अंधेरे कारखाने बनाएगा या उन्हें अपने आसपास बनते हुए देखेगा?

(आलेख में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं।)

परनीत सचदेव (आई.आर.एस.) रीयल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी (रेरा) के चेयरमैन एवं प्रख्यात लेखक हैं।
parneetsachdev@gmail.com

कर्नाटक में कांग्रेस सरकार के सर्वेक्षण ने राहुल गांधी के 'वोट चोरी' नैरेटिव को झुठलाया

योगेश्वर दत्त

1. कर्नाटक में कांग्रेस सरकार द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण ने ईवीएम, वीवीपैट और भारत की चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता में जनता के विश्वास की निर्णायक रूप से पुष्टि की है, जिससे विपक्ष द्वारा गढ़े गए नैरेटिव को झटका लगा है।

2. लोकसभा चुनाव 2024-नागरिकों के ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार (केएपी) के एंडलाइन सर्वेक्षण का मूल्यांकन' अध्ययन, जिसका उद्देश्य मुख्य निर्वाचन अधिकारी के कार्यालय द्वारा लागू किए गए व्यवस्थित मतदाता शिक्षा और निर्वाचन सहभागिता (एसवीईईपी) कार्यक्रम के परिणामों का आकलन करना है।

3. कर्नाटक के सभी चार संभागों-बेंगलुरु, मैसूरु, बेलगावी और कलबुर्गी-में 5,001 व्यक्तियों का एक प्रतिनिधि नमूना लिया गया, जिसमें ग्रामीण, शहरी और आरक्षित निर्वाचन क्षेत्रों को शामिल किया गया तथा आयु, लिंग और सामाजिक वर्ग के आधार पर सावधानीपूर्वक स्तरीकरण किया गया।

4. हालांकि, सर्वेक्षण के परिणाम ईवीएम से छेड़छाड़, वोट चोरी और उस कथित 'हाइड्रोजन बम' की पूरी कहानी को खारिज करते हैं।

5. सभी क्षेत्रों में ईवीएम की सटीकता पर विश्वास अत्यधिक और एक समान है; 83.61% उत्तरदाताओं ने दृढ़ता से सहमति जताई कि ईवीएम सटीक परिणाम देती हैं। कलबुर्गी क्षेत्र में सबसे अधिक भरोसा देखा गया, जहां 94.48% की सहमति दर्ज की गई।

6. भारतीय चुनावों की निष्पक्षता में जनता का विश्वास व्यापक, गहरा और सभी क्षेत्रों में एकसमान है। कुल मिलाकर 84.55% उत्तरदाताओं का मानना है कि भारत में चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष रूप से कराए जाते हैं। कलबुर्गी में सबसे मजबूत विश्वास देखने को मिला, जहां 94.86% सहमति दर्ज की गई, जो सभी क्षेत्रों में सबसे अधिक है।

7. वीवीपैट के प्रति जागरूकता व्यापक और अनुभवजन्य है, जो भारत की चुनावी प्रक्रिया की विश्वसनीयता को और मजबूत करती है। 85.39% उत्तरदाता वीवीपैट के बारे में जागरूक हैं।

8. मतदान करते समय लगभग दो-तिहाई (65.39%) उत्तरदाताओं ने व्यक्तिगत रूप से वीवीपैट देखा है। कलबुर्गी में मतदान के दौरान 82.48% लोगों ने वीवीपैट देखा।

9. ईवीएम की सटीकता पर विश्वास पर किए गए सर्वे में पूरी तरह सहमत, सहमत, न ही सहमत और असहमत, सहमत नहीं, पूरी तरह सहमत नहीं मतदाताओं का प्रतिशत आकलन किया गया तो बेलगावी, बंगलुरु, कलबुर्गी और मैसूरु में कुल मिलाकर औसतन 83.61 प्रतिशत लोगों ने सहमति प्रकट की।

10. भारत में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों पर राय ली गई तो बेलगावी, बंगलुरु, कलबुर्गी और मैसूरु में किए गए सर्वे के दौरान कुल 84.55 प्रतिशत लोगों ने सहमति प्रकट की।

11. वीवीपैट पर राय देते हुए बेलगावी, बंगलुरु, कलबुर्गी और मैसूरु रीजन के लोगों में से 85.39 प्रतिशत लोगों ने सहमति प्रकट की जिनमें सबसे अधिक प्रतिशत 91.91 प्रतिशत कलबुर्गी से रहा।

12. कर्नाटक की महादेवपुरा और आलंद विधानसभा सीटों का हवाला देते हुए राहुल गांधी ने भारतीय लोकतंत्र और निर्वाचन आयोग की प्रामाणिकता पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने इसे यहां तक कि 'हाइड्रोजन बम' भी करार दिया था। लेकिन कर्नाटक में कराया गया यह सर्वेक्षण उनके आरोपों के सामने आईना दिखा रहा है।

13. कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का गृहक्षेत्र कलबुर्गी और कर्नाटक के कैबिनेट मंत्री प्रियंक खड़गे, जो भाजपा और आरएसएस के खिलाफ बेहद मुखर रहे हैं, पिता-पुत्र की इस जोड़ी के लिए यह सर्वेक्षण एक बुरे सपने जैसा साबित हुआ है, क्योंकि कलबुर्गी की जनता ने ईवीएम और चुनावी प्रक्रिया पर कहीं अधिक भरोसा जताया है।

14. चाहे ईवीएम की सटीकता पर भरोसा हो, चुनावों के स्वतंत्र और निष्पक्ष होने में विश्वास हो, या वीवीपैट सत्यापन की प्रत्यक्ष जागरूकता-कलबुर्गी हर पैमाने पर चुनावी निष्पक्षता के पक्ष में लगभग सर्वसम्मति दर्ज करता है।

15. कांग्रेस-शासित कर्नाटक से प्राप्त आंकड़े एक ऐसी वास्तविकता प्रस्तुत करते हैं जो कांग्रेस के नैरेटिव को पूरी तरह ध्वस्त कर देती है और इसे लोकतांत्रिक चिंता के बजाय एक राजनीतिक बहाना उजागर करती है। कांग्रेस नेता संस्थागत पतन की बात करते हैं। नागरिक इसके उलट राय देते हैं। यह कोई डरी हुई या मजबूर मतदाता जनता नहीं है। यह एक आत्मविश्वासी, सुव्यवस्थित और सहभागी लोकतंत्र की निशानी हैं।

16. जब जमीनी स्तर की जांच में भरोसा कायम रहता है, तो आरोप शोर में बदलकर ढह जाते हैं। और इस मामले में, सबसे तेज आरोप को कांग्रेस-शासित राज्य के मतदाताओं ने ही खारिज कर दिया है।

17. जब 91.31% नागरिक मानते हैं कि चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से कराए जाते हैं, तब 'लोकतंत्र खतरे में है' संबंधी कांग्रेस के आरोप अपनी प्रासंगिकता खो देते हैं। 83.61% नागरिकों ने ईवीएम के आरोप को भी नकारा हैं।

18. 90.16% मतदाताओं ने मतदान अनुभव को 'सुविधाजनक' बताया। यह परिणाम दर्शाता है कि मतदाता सुविधा चाहते हैं, न कि हारने वालों की साजिशी थ्योरियां।

19. तकनीक ने पारदर्शिता लाई है, और मतदाता इसे जानता है। 2018 से अब तक 67% से अधिक नागरिक वीवीपैट के सत्यापन तंत्र से परिचित हैं।

20. कांग्रेस के अनुसार, चुनावों के दौरान ग्रामीण, दलित और पिछड़े समुदायों को गुमराह किया जा रहा है। वास्तविकता यह है कि यही मतदाता प्रणाली पर सबसे अधिक विश्वास दिखाते हैं, जहां 81.39% का मानना है कि हर वोट की गिनती होती है।

21. कांग्रेस ने मतदान अधिकारियों की निष्पक्षता पर भी सवाल उठाए, लेकिन 95% मतदाताओं ने इस दावे को स्पष्ट रूप से खारिज करते हुए कहा कि मतदान कर्मचारी सहयोगी या अत्यंत सहयोगी थे और किसी भी राजनीतिक दबाव में काम नहीं कर रहे थे।

22. कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने स्वयं इस संपूर्ण अध्ययन को करवाया। इस सर्वेक्षण के परिणाम बेहद स्पष्ट हैं। मतदाताओं को निर्वाचन आयोग पर पूरा भरोसा है क्योंकि वह पारदर्शी तरीके से चुनाव कराता है। मतदाता स्वयं वोट चोरी, ईवीएम से छेड़छाड़ और ऐसे अन्य आरोपों को सिरे से खारिज करते हैं।

रोजगार गारंटी में सुधार: भावनाएं बनाम तथ्य

शैलेश कुमार सिंह
सचिव ग्रामीण विकास विभाग, भारत

लोकतंत्र में लोकनीति पर सार्वजनिक बहस स्वाभाविक ही नहीं, बल्कि जरूरी भी है। आजीविकाओं (खास तौर से ग्रामीण परिवारों के लिए) को आकार देने वाले कानूनों की कड़ाई से समीक्षा की ही जानी चाहिए। लेकिन इस तरह की समीक्षा नए कानून के प्रावधानों के सावधानीपूर्वक अध्ययन पर आधारित होनी चाहिए। यह पिछले फ्रेमवर्क से निकाले गए अनुमानों या नुकसान के भय पर आधारित नहीं होनी चाहिए। मगर विकसित भारत-गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण) कानून 2025 की ज्यादातर आलोचनाएं इस जाल में फंस जाती हैं। इनमें जल्दबाजी में पिछली नाकामियों का विश्लेषण कर उनका ठीकरा सुधार पर ही फोड़ दिया जाता है। दो दशक पहले बनाए गए रोजगार गारंटी कानून ने ग्रामीण आय को स्थिर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और संकट के वक्त सुरक्षा प्रदान की। कोविड की वैश्विक महामारी जैसे संकट के समय में इसके योगदान को स्वीकार किया गया है। लेकिन समय के साथ अनुभव से इसकी दीर्घकालिक ढांचागत कमियां भी उजागर हुई हैं। मजदूरी के भुगतान में बार-बार देरी हो रही थी।

प्रक्रियात्मक अवरोधों ने बेरोजगारी भत्ते को अप्रभावी बना दिया था। विभिन्न राज्यों में इस योजना तक पहुंच में काफी अंतर था। प्रशासनिक क्षमता असमान थी तथा फर्जी जॉब कार्ड, उपस्थिति के रजिस्टर में हेरफेर और खराब गुणवत्ता वाली संपदाओं के सृजन से बड़े पैमाने पर धन की बबार्दी हुई। ये छोटी नहीं, बल्कि प्रक्रियात्मक खामियां थीं। इसलिए मुख्य मुद्दा यह नहीं है कि क्या सुधार की जरूरत थी। मुद्दा यह है कि क्या नए फ्रेमवर्क में इन खामियों को सार्थक ढंग से दूर किया गया है। आम दावा है कि नए कानून में बुनियादी कमियां तो बनीं रहीं और समूची बहस को संक्षिप्ताक्षरों की होड़ में समेट दिया गया। लेकिन हकीकत में इसका उलट ही सच के ज्यादा करीब है। नया कानून डिलीवरी की उन कमियों को दूर करने पर केंद्रित है जिनकी वजह से पिछले फ्रेमवर्क की विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचा था। कमजोर परंपरागत प्रणालियों की जगह सत्यापित कामगार पंजीकरण ने ले ली है। देरी के लिए स्वतः मुआवजे के प्रावधान के साथ मजदूरी भुगतान की वैधानिक समय सीमाएं तय की गई हैं। अयोग्यता के उन प्रक्रियात्मक प्रावधानों को खत्म कर दिया गया है जिनकी वजह से बेरोजगारी भत्ता अप्रभावी बन गया था। स्पष्ट समयसीमा और जवाबदेही के साथ शिकायत निवारण को मजबूत किया गया है। ये दिखावटी बदलाव नहीं हैं। ये उन खामियों को दूर करते हैं जिनसे कामगारों का विश्वास टूटता था। एक अन्य आलोचना यह है कि रोजगार गारंटी को खत्म कर दिया गया है। इनके अनुसार नई योजना में पुरानी कमजोरियां बनी हुई हैं। इस तरह की आलोचना सही नहीं है। वेतन रोजगार के कानूनी अधिकार को बरकरार और न्यायसंगत रखा गया है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह कि रोजगार की वैधानिक पात्रता को 100 दिनों से बढ़ाते हुए 125 दिन कर दिया गया है।

बदलाव क्रियान्वयन की संरचना में किया गया है। पुराने कानून का मॉडल टुकड़ों में बंटा हुआ और प्रतिक्रियात्मक था। यह अक्सर संकट शुरू हो जाने के बाद ही हरकत में आता था। नए कानून का फ्रेमवर्क योजनाबद्ध और लागू करने योग्य है। इसे पूर्वानुमान के आधार पर कार्य सौंपे जाने के लिए डिजाइन किया गया है। वैधानिक सुधार के जरिए क्रियान्वयन की नाकामियों को दूर किए जाने को दोहराव नहीं, बल्कि संशोधन माना जाना चाहिए। नया फ्रेमवर्क सीधे तौर पर इस असंतुलन को दूर करता है, यह रोजगार पैदा करने के काम को 'विकसित ग्राम पंचायत योजनाओं' से जोड़ता है, जहां स्थानीय मांग और कामों की पहले से मंजूरी को सुनिश्चित फंडिंग के साथ मिलाया जाता है। असमान वितरण ही सुधार की जरूरत की असली वजह थी; पुरानी व्यवस्था को बनाए रखने का मतलब केवल मौजूदा असमानताओं को और बढ़ाना होता। इसके अलावा, निष्पक्ष मानकों पर आधारित आवंटन से राज्यों के बीच संसाधनों के बंटवारे में अधिक पारदर्शिता और निष्पक्षता आएगी।

योजना को कुछ समय के लिए रोकने को लेकर जो चिंताएं हैं, उन्हें सही संदर्भ में देखा जाना चाहिए। यह श्रम-बाजार के लिए एक सुरक्षा कवच है जिसे इसलिए बनाया गया है ताकि खेती के सबसे व्यस्त सीजन के दौरान श्रमिकों की कमी न हो और बाजार का संतुलन न बिगड़े। यह प्रावधान 125 दिनों के कानूनी अधिकार को कम नहीं करता है। यह प्रावधान सोची-समझी आर्थिक समझदारी को दिखाता है और उत्पादक कृषि रोजगार को कमजोर किए बिना मजदूरों की आय की रक्षा करता है। विकसित भारत-रोजगार और आजीविका मिशन (ग्रामीण) अधिनियम रोजगार गारंटी को खत्म नहीं करता है बल्कि यह इसे और मजबूत और व्यापक बनाता है। खासकर उन कमजोरियों पर ध्यान देता है जहां ज्यादा जरूरत वाले इलाकों और कमजोर मजदूरों के बीच योजना के प्रभाव को सीमित कर दिया था। यहां सुधार का अर्थ सामाजिक सुरक्षा से पीछे हटना नहीं है; बल्कि यह काम के वादे को वास्तविक, भरोसेमंद और गरिमापूर्ण बनाने का एक प्रयास है।

कार्टून कोना

विश्वा मित्र

सपना देखने का हठ

सुरेश सेठ

बीते कल जैसा रहा आज का दिन,
आने वाले दिन के दम तोड़ने का
एहसास देता हुआ।
सब एक सा है कोई नया सपना न
देखने सकने का सच बताता है।
सपने देखने की हरकत बचकाना
लगती है, कब तक देखते रहें?
काले बाजार से नीलामी की एक
दो तीन की आवाज
कभी पल्ले नहीं पड़ती,
उन फैसलों की फाइलों की तरह
जो बरसों एक मेज से दूसरी मेज
का विंध्याचल लांघ नहीं पाती।
महावतों ने सिफारिशों के
हाथी हूल दिए
अधूरे आदेशों की रजिस्टर्ड
चिट्ठियां निकलीं,
फिर मिलने की जगह
रास्ता भूलने की नियति झेलने लगी।
मंजिल पाने की नाउम्मीदी
अब किसी को नहीं हिलाती।
वहां बैठे खुदा इस बारे
कभी परेशान नहीं होते,
परेशान क्या इसका आभास होना
भी उन्हें तौहीन लगता है।
यह तौहीन भूल भुलैयां की
भटकन बनती है।
ऊंचे चौबारों के आगे सदियों से
झुके लोगों का शून्य बनती है
उनके सपनों के हौसलों के बदले
मिलती है एक गुरबत से दूसरी
गुरबत तक जाती एक पगडंडी।
नहीं अंधेपन की बात न करो,
आजकल इसके साथ अपने आईने
में जबड़ा टेढ़ा नजर आता है।
ये अंधी आंखें कुछ देख नहीं
सकतीं, न बंद गलियों में
खोते हुए भूखे आदमी,
न पैदा हो रहे नौनिहालों का
सहमा सा जीने का बहाना।
उत्तेजित भाषणों की सनसनी
उस क्रांति का संदेश दे जाती है
कि जिसके पैदा होने से पहले
उसकी भ्रूण हत्या हो गयी
अपने नाम एक सुसंवाद निकला था
पोस्ट हुआ, कभी पहुंचा ही नहीं,
इसके बावजूद एक और सांस
एक नया सपना देखने की
हिमाकत कर रही है, करने दो बंधु।
(सपने टूटते रहे, लेकिन फिर भी सपने देखते रहना, और सुसंवादों के पहुंचने के इंतजार की हिमाकत तो जिंदा रहेगी ही। कहती है सुरेश सेठ की नई कविता)

जंक फूड के हवाले मासूम बचपन

नौनिहाल/ बाबू लाल नागा

हाल में उत्तर प्रदेश के अमरोहा में 11वीं की एक छात्रा की कथित तौर पर लगातार जंक फूड खाने से मौत हो गई। अहाना नाम की छात्रा के पेट में इन्फैक्शन हो गया था। लोकल अस्पताल में इलाज के बाद उसे दिल्ली एम्स रेफर किया गया था। वहां उसने दम तोड़ दिया। अहाना की मौत कोई साधारण हादसा नहीं है बल्कि यह उस खामोश महामारी का प्रतीक है जो आज हमारे घरों, स्कूलों और बाजारों में खुलेआम पल रही है—जंक फूड। चमकदार पैकेटों, आकर्षक विज्ञापनों और 'टेस्टी' के नाम पर परोसे जा रहे जहर ने एक मासूम जिंदगी छीन ली। यह घटना केवल एक परिवार का निजी दुख नहीं बल्कि पूरे समाज, नीति-निर्माताओं और व्यवस्था के मुंह पर करारा तमाचा है।

आज जंक फूड सिर्फ खान-पान की आदत नहीं बल्कि एक सुनियोजित उद्योग बन चुका है, जो बच्चों को सबसे आसान शिकार मानता है। रंगीन विज्ञापन, कार्टून कैरेक्टर, मुफ्त खिलौने और स्कूलों के आसपास खुले स्टॉल—यह सब बच्चों को लुभाने की रणनीति है। स्वाद के नाम पर सेहत को गिरवी रखने की यह संस्कृति बच्चों के शरीर को खोखला कर रही है। मोटापा, डायबिटीज, हृदय रोग, लीवर की समस्या—ये सब बीमारियां अब केवल वयस्कों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि बच्चों के हिस्से में भी आ चुकी हैं।

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि जंक फूड का खतरा केवल लंबे समय में नहीं बल्कि तुरंत भी जानलेवा साबित हो सकता है। अत्यधिक नमक, चीनी, ट्रांस फैट और कैमिकल्स से भरे खाद्य पदार्थ बच्चों के नाजुक शरीर पर सीधा हमला करते हैं। दिल की धड़कन से लेकर पाचन तंत्र तक, हर अंग पर इसका असर पड़ता है। अहाना की मौत ने यह कड़वा सच उजागर कर दिया है कि यह 'धीमा जहर' कभी-कभी अचानक भी जान ले सकता है। यह सवाल उठना लाजमी है कि आखिर जिम्मेदार कौन है? क्या सिर्फ माता-पिता? या स्कूल? या फिर सरकार और खाद्य उद्योग? सच्चाई यह है कि यह सामूहिक विफलता है। माता-पिता की मजबूरी और अनभिज्ञता, स्कूलों की लापरवाही, सरकार की ढीली नीतियां और मुनाफे के पीछे भागता उद्योग—सब इस त्रासदी के जिम्मेदार हैं।

जब स्कूल कैंटीनों में पिज्जा, बर्गर और कोल्ड ड्रिंक्स आसानी से उपलब्ध हों तो बच्चों को सेहतमंद विकल्प चुनने की सीख कैसे मिले? सरकार ने भले ही खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण के माध्यम से कुछ दिशा-निर्देश जारी किए हों लेकिन जमीनी हकीकत अलग है। स्कूलों के आसपास जंक फूड की बिक्री पर रोक कागजों तक सीमित है। विज्ञापनों पर नियंत्रण की बातें भी खोखली साबित होती हैं, जब बच्चों के टीवी कार्यक्रमों और मोबाइल एप्स पर जंक फूड के प्रचार की बाढ़ आती है। क्या बच्चों की जान से बड़ा कोई मुनाफा हो सकता है? यह भी विडंबना है कि जिस देश में कुपोषण एक गंभीर समस्या है, वहीं दूसरी ओर जंक फूड से उपजा मोटापा और बीमारियां नई चुनौती बन चुकी हैं। यह दोहरी मार है—एक तरफ भूख, दूसरी तरफ गलत भोजन।

सबसे पहले, जंक फूड को लेकर कड़े कानून लागू करने होंगे। स्कूलों और उनके आसपास जंक फूड की बिक्री पर सख्त और वास्तविक प्रतिबंध लगे। बच्चों को लक्षित विज्ञापनों पर पूर्ण रोक हो। पैकेटों पर बड़े और स्पष्ट चेतावनी संदेश अनिवार्य किए जाएं, जैसे तंबाकू उत्पादों पर होते हैं। यह संदेश सिर्फ लिखित नहीं, बल्कि चित्रात्मक और प्रभावी हों। जंक फूड के खिलाफ निर्णायक कदम उठाए जाएं वरना सेहत के साथ खिलवाड़ मासूम जिंदगियां निगलता रहेगा।

दैनिक सवेरा टाइम्स
सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक शीतल कुमार विज के स्वामित्व में, दैनिक सवेरा न्यूज एंड मीडिया नैटवर्क, एस.-9, इंडस्ट्रियल एरिया जालंधर से मुद्रित एवं डी.-55, प्रीत विहार, नई दिल्ली से प्रकाशित किया।
DELHIN/2013/53563
पोस्टल रजि. नं. PB-JL-058/25-27
फोन 0181-2370100, 4625005, 4626006, 4629009
समाचार (फैक्स) 0181-2224455

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा उनसे उत्पन्न समस्त विवाद जालंधर न्यायालय के अधीन होंगे।

देशभक्ति मूल रूप से यह विश्वास है कि एक विशेष देश, दुनिया का सबसे अच्छा देश है, क्योंकि आप उसमें पैदा हुए हैं।
–जॉर्ज बर्नार्ड शॉ, आइरिश विचारक

यह हिंसा कैसे रुकेगी

बीते 19 दिनों में बांग्लादेश में छह हिंदुओं की हत्या, व्यापक हिंसक दुर्व्यवहार और संगठित अपराध की घटनाएं भारत के लिए सीमापार में मानवीय संकट तो है ही, उसके लिए यह सीधी चुनौती है। इससे सीमा पार अप्रवासन, सांप्रदायिक तनाव और कूटनीतिक दबाव बढ़ सकता है। धर्म निरपेक्ष कहलवाने वाले बांग्लादेश के लिए भी यह उसकी लोकतांत्रिक, अंतर्राष्ट्रीय बहुलतावादी साख की गंभीर परीक्षा है। अल्पसंख्यकों की सुरक्षा किसी भी आधुनिक राज्य की बुनियादी जिम्मेदारी होती है। इसमें चूक पड़ोसियों की सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता और अंतर्राष्ट्रीय भरोसे को डगमगाती है। चुनावी मौसम में हिंदुओं के विरुद्ध हिंसा की तेज़ी के पीछे कई वजहें हैं, जैसे चुनावी ध्रुवीकरण, कट्टरपंथी नेटवर्कों का उभार, दंडहीनता की संस्कृति और प्रशासनिक शिथिलता। स्थानीय नेता, कारोबारी, अधिकारी, पत्रकार, छात्र और महिलाएं, हर वर्ग के हिंदुओं का हिंसा की चपेट में आना बताता है कि समस्या केवल धार्मिक नहीं, गहरे राजनीतिक उपयोग से भी जुड़ी है।

पहचान को 'वोट-ब्लॉक' या 'विरोधी खेमे' के रूप में चिन्हित कर भय का वातावरण बनाना आसान हो जाता है। हिंदुओं पर हिंसा की तेजी से वृद्धि के पीछे राजनीतिक अस्थिरता प्रमुख है। यह घृणा धार्मिक दिखती है, मगर जड़ें राजनीतिक हैं। नफरत का बीज जेहादी संगठनों और कट्टर राजनीति ने बोया है, जिसे सरकारें अनदेखा करती रहीं। अल्पसंख्यकों को वोट बैंक के रूप में कुचलना और हिंदुओं को राजनीति की मुख्यधारा से बाहर रखना, उनकी आवाज को मंच न देकर दबा देना प्रच्छन्न नीति रही है। चुनावों में सुरक्षा बढ़ती है, ऐसी घटनाएं बताती हैं कि या तो व्यवस्था की इच्छाशक्ति कमजोर है या चरमपंथी दबावों के आगे वह झुक रहा है। यह इशारा करता है कि हिंसा राज्य प्रायोजित हिंसा है। यहां पहले भी ऐसी हिंसा होती रही है। 2001 के चुनाव बाद हिंदुओं पर व्यापक अत्याचार हुए, तब भारत सरकार ने कड़ा रुख अपनाया था। उसने राजनयिक दबाव बनाया, आर्थिक सहायता रोकी। 2024 में शेख हसीना के इस्तीफे के बाद 4 से 20 अगस्त तक 2010 से अधिक हमले हुए। मंदिर जलाए गए, घर लूटे गए। पर कूटनीतिक दबाव, सार्वजनिक-निजी संवाद और सीमा-स्तरीय सहयोग के जरिए मात्र चिंता जताई गई। उतनी कड़ाई नहीं बरती गई, जितना बरतना चाहिए था। सरकार के कदम अपर्याप्त प्रयासों के चलते त्वरित अभियोजन और संरचनात्मक सुधार नहीं हो सके।

कुछ हफ्ते पहले संघ प्रमुख ने कहा था, एकमात्र हिंदू बहुल देश भारत को सीमाओं में रहकर बांग्लादेश के हिंदुओं की अधिकतम मदद करनी चाहिए, जिसका आशय था बांग्लादेश पर दबाव, बहुपक्षीय मंचों पर मुद्दा उठाना, मानवीय सहायता और शरण-संबंधी संवेदनशीलता, लेकिन इस आह्वान के बाद फिलहाल इस ओर कोई ठोस कदम नहीं दिखा। न आश्रय, न वैश्विक मंच पर मुखरता। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद जो पहली घटना के बाद वैश्विक अभियान चलाने की बात कह रहे थी, उनकी भूमिका जनमत-संगठन, राहत और अंतर्राष्ट्रीय जागरूकता तक ही सीमित रह सकती है। वे विदेश नीति का स्थानापन्न नहीं बन सकते।

प्रसंगवश

आवाजें बहुत हैं लेकिन सुनने वाले बहुत कम

हमारे समय की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि हमारे चारों ओर आवाज़ें बहुत हैं, मगर सुनने वाले बहुत कम लोग है। ये शोर हर जगह है- परिवारों में, दफ्तरों में, सड़कों पर, सोशल मीडिया आदि। हम लगातार कुछ न कुछ कह रहे होते हैं, लेकिन आपाधापी में किसी और की बात सच में सुनने का धैर्य खो चुके होते हैं। यानी हम सबके पास समय का अभाव है।

हाल के वर्षों में हुए कुछ मनोवैज्ञानिक और सामाजिक अध्ययनों ने इस चिंता को वैज्ञानिक रूप से भी रेखांकित किया है। येल विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने बताया कि मानव मस्तिष्क में 'सुनने' की प्रक्रिया केवल ध्वनि ग्रहण करने की क्रिया नहीं है, बल्कि इसमें जटिल मानसिक और भावनात्मक प्रक्रियाएं शामिल होती हैं। ध्यान, सहानुभूति और अर्थ-निर्माण। यह दर्शाता है कि जब हमारा ध्यान बंटा हुआ हो या मन थका हुआ हो, तो हम भले ही आवाज़ सुन लें, अर्थ नहीं पकड़ पाते हैं।

कुमार सिद्धार्थ
वरिष्ठ पत्रकार

वहीं एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि सक्रिय सुनने का अभ्यास यानी जब कोई व्यक्ति सचेत रूप से सामने वाले के भावों, शब्दों और मौन को ग्रहण करता है, संवाद की गुणवत्ता को गहराई से प्रभावित करता है। दिलचस्प बात यह है कि यह 'सुनने की क्षमता' कोई जन्मजात गुण नहीं, एक सीखी जाने वाली दक्षता है। यानी अगर हम चाहें, तो सुनने का कौशल दोबारा सीख सकते हैं।

आपने शायद गौर किया होगा, जब कोई बच्चा गुस्से में खिलौना फेंक देता है, कोई दोस्त अचानक चुप हो जाता है, या कोई सहकर्मी मीटिंग में बेरुखा बैठा रहता है, तो हम अक्सर जल्दबाज़ी में निष्कर्ष निकाल लेते हैं: 'वह गुस्सैल है', 'वह अभिमानी है', या 'उससे बात करना ही बेकार है', लेकिन क्या हमने कभी ठहरकर यह सोचा कि उसके भीतर उस क्षण क्या चल रहा था? शायद उसने अपनी बात कई बार कहने की कोशिश की होगी, पर कोई सच में सुनने वाला नहीं था। जब हम किसी को ध्यान से सुनते हैं, तो हम उसके लिए भीतर जगह बनाते हैं उसकी तकलीफ़, उलझन या अनुभव के लिए। यही जगह आगे चलकर भरोसे में बदलती है। एक हालिया अध्ययन में यह भी पाया गया कि जब लोगों को 'गुणवत्तापूर्ण रूप से सुना जाता है, तो न केवल बोलने वाला बल्कि श्रोता भी भावनात्मक रूप से संतुलित महसूस करता है। यानी सुनना सिर्फ़ सामने वाले के लिए नहीं, अपने भीतर शांति पैदा करने की क्रिया भी है। घर में जब बच्चे की बात सुनी जाती है, तो वह खुलकर अपनी राय रखता है। दफ्तर में किसी सहयोगी की राय को ध्यान से सुना जाए, तो वह अपने काम के प्रति ज़िम्मेदारी महसूस करता है।

अपने समाज में संवाद अक्सर 'बोलने' के इर्द-गिर्द घूमता है। वक्ता की काबिलियत को सराहा जाता है, श्रोता की सजगता को नहीं। पर असल में समाज में समझ और परिवर्तन की शुरुआत सुनने से होती है। 2024 के एक शोध में यह पाया गया कि 'सुनने का अभिनय' जैसे सिर हिलाना, बीच में हां-हां करना संवाद को ऊपर-ऊपर जोड़ता है, लेकिन भीतर से अलगाव बढ़ाता है। असली सुनना तब होता है जब हम बिना निर्णय के, पूरे ध्यान से, सामने वाले की स्थिति को समझने की कोशिश करते हैं।

हम ऐसे समाज में बड़े हुए हैं, जहां गलती को शर्म या दंड से जोड़ा जाता है। कोई व्यक्ति देर से पहुंचा और हमने झुंझलाकर कहा 'तुम हमेशा ऐसे ही करते हो!' जबकि वह कह सकता था 'आज रास्ते में किसी को मदद करनी पड़ी।' हमारी अधीरता ने उस संवाद का दरवाज़ा बंद कर दिया।

तेल के खेल में मादुरो महज बहाना

प्रो. आरके जैन
शिक्षाविद्

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी अमेरिकी हिरासत में हैं। ट्रंप ने स्पष्ट किया है कि वेनेजुएला अब अमेरिका के नियंत्रण में होगा। यह कदम मात्र सैन्य हस्तक्षेप नहीं, बल्कि ऐसा भू-राजनीतिक विस्फोट है, जो तेल कीमतों को हिला सकता है और वैश्विक संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करेगा। दुनिया के सबसे बड़े तेल भंडार वाले देश में अमेरिकी प्रभाव की यह सीधी स्थापना रूस, चीन और ईरान के लिए खुला संकेत है। यह संकट केवल ऊर्जा बाजारों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की नींव को भी चुनौती देगा, जहां पेट्रो डॉलर की शक्ति और ब्रिक्स की आकांक्षाएं आमने-सामने खड़ी हैं।

वेनेजुएला का संकट अचानक नहीं, बल्कि वर्षों की विफल नीतियों का परिणाम है। इसकी नींव ह्यूगो शावेज के दौर में पड़ी, जब तेल आधारित समाजवादी मॉडल को समृद्धि का आधार बनाया गया। समय के साथ भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अक्षमता और आर्थिक कुप्रबंधन ने इस व्यवस्था को खोखला कर दिया। 2014 में वैश्विक तेल कीमतों में गिरावट ने संकट को उजागर किया और देश अतिमुद्रास्फीति, खाद्य कमी व स्वास्थ्य आपदा में डूब गया। परिणामस्वरूप लाखों नागरिकों को पलायन करना पड़ा। सत्ता बचाने के लिए निकोलस मादुरो ने रूस, चीन और क्यूबा का सहारा लिया तथा अमेरिकी प्रतिबंधों को चुनौती दी।

इसके जवाब में ट्रंप प्रशासन ने दबाव बढ़ाया। सितंबर 2025 से कैरिबियन क्षेत्र में तस्करी से जुड़े जहाजों पर हमलों ने तनाव तेज कर दिया। अंततः डेल्टा फोर्स और सीआईए के संयुक्त अभियान में मादुरो गिरफ्तार हुए। ट्रंप ने इसे 'नार्को-आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई' बताते हुए वेनेजुएला को 'सुरक्षित संक्रमण' तक ले जाने की बात कही। आलोचकों के अनुसार वास्तविक लक्ष्य विशाल तेल भंडारों पर नियंत्रण है, जो लैटिन अमेरिका में अमेरिकी प्रभुत्व की वापसी और क्षेत्रीय अस्थिरता का संकेत देता है। इस संकट का सबसे तात्कालिक प्रभाव वैश्विक तेल बाजार पर पड़ा है। वेनेजुएला फिलहाल वैश्विक आपूर्ति का लगभग एक प्रतिशत, यानी करीब दस लाख बैरल प्रतिदिन तेल उत्पादन करता है, लेकिन उसके भंडार दुनिया में सबसे बड़े हैं। हमले के बाद ब्रेंट कच्चे तेल की कीमतें साठ से इकसठ डॉलर प्रति बैरल के आसपास रहीं, पर भू-राजनीतिक जोखिम के कारण पांच से दस डॉलर की बढ़ोतरी की आशंका है।

यदि उत्पादन या निर्यात बाधित हुआ, जैसे- बंदरगाहों की नाकेबंदी या बीमा अड़चनें तो भारी कच्चे तेल की कमी से डीजल और परिष्कृत ईंधन महंगे हो सकते हैं। अभी बाजार में आपूर्ति की अधिकता है। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार लगभग अड़तीस लाख बैरल प्रतिदिन का सरप्लस मौजूद है, इसलिए तत्काल असर सीमित रहा, लेकिन संघर्ष लंबा चला तो तेल अस्सी से सौ डॉलर प्रति बैरल तक जा सकता है, जिससे वैश्विक मुद्रास्फीति तेज होगी। विशेषज्ञ इसे अल्पकालिक झटका और दीर्घकालिक संतुलन परिवर्तन मानते हैं।

दीर्घकाल में यह संकट तेल कीमतों पर दबाव भी बना सकता है। यदि अमेरिकी प्रतिबंध हटते हैं और शेवरॉन जैसी कंपनियां निवेश करती हैं, तो वेनेजुएला का उत्पादन दो से तीन मिलियन बैरल प्रतिदिन तक पहुंच सकता है। इससे भारी कच्चे तेल की अधिकता होगी और कीमतें पचास से साठ डॉलर के दायरे में सिमट सकती हैं। ट्रंप का कहना है कि अमेरिकी कंपनियां वेनेजुएला के तेल उद्योग को अत्यधिक लाभकारी बनाएंगी, जिससे पेट्रो डॉलर की पकड़ मजबूत होगी, लेकिन यदि गुरिल्ला प्रतिरोध, आंतरिक विद्रोह या रूस-चीन का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप हुआ, तो उत्पादन में दस लाख बैरल की गिरावट कीमतों को तीस से चालीस डॉलर तक उछाल सकती है। इससे रूस और ईरान जैसी तेल-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं को गहरा झटका लगेगा। साथ ही यह ब्रिक्स की डी-डॉलराइजेशन रणनीति को कमजोर कर सकता है, जबकि क्षेत्रीय अस्थिरता शिपिंग लागत बढ़ाकर नई चुनौतियां खड़ी करेगी।

वेनेजुएला संकट ने वैश्विक कूटनीति में तनाव की नई सीमाएं खींच दी हैं। रूस और चीन इसे प्रत्यक्ष अमेरिकी हस्तक्षेप मानते हैं। रूस पहले ही सैन्य सहायता दे चुका है, जबकि चीन वेनेजुएला के लगभग अस्सी प्रतिशत तेल निर्यात का आयात करता है। यदि अमेरिका पूर्ण नियंत्रण स्थापित करता है, तो रूस की यूक्रेन युद्ध फंडिंग पर सीधा प्रभाव पड़ेगा, वहीं ईरान को भी भारी कच्चे तेल के बाजार में नुकसान झेलना पड़ेगा। कुछ विश्लेषक इसे 'रिवर्स क्यूबन मिसाइल क्राइसिस' बता रहे हैं, जहां रूस या चीन लैटिन अमेरिका में सैन्य ठिकाने बनाने का प्रयास कर सकते हैं। क्षेत्रीय स्तर पर कोलंबिया, ब्राजील और निकारागुआ जैसे देशों में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ने की आशंका है। यह कदम संयुक्त राष्ट्र चार्टर की भावना के विरुद्ध माना जा रहा है, जिससे वैश्विक कूटनीति कमजोर हो सकती है। इसके बावजूद ट्रंप प्रशासन इसे 'नार्को-टेररिज्म विरोधी कार्रवाई' बताकर वैध ठहराने का प्रयास कर रहा है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव गहरा और बहुपक्षीय होगा। तेल कीमतों में उछाल से मुद्रास्फीति बढ़ेगी, जिसका सीधा असर भारत और चीन जैसे आयात-निर्भर देशों पर पड़ेगा। भारी कच्चे तेल के बड़े आयातक भारत को विशेष लागत दबाव झेलना पड़ सकता है। इसके विपरीत, कीमतों में गिरावट अमेरिकी उपभोक्ताओं को राहत दे सकती है और शेयर बाजारों में जोखिम लेने की प्रवृत्ति बढ़ा सकती है। सुरक्षा दृष्टि से अमेरिका पश्चिमी गोलार्ध में अपनी पकड़ मजबूत करेगा, लेकिन लैटिन अमेरिका में विरोध और असंतोष भी तेज होगा। कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि इससे पेट्रो डॉलर को अस्थायी संबल मिलेगा, जबकि ब्रिक्स देश वैकल्पिक भुगतान प्रणालियों की ओर और तेजी से बढ़ेंगे। यदि संघर्ष पनामा नहर तक पहुंचा, तो वैश्विक व्यापार को गहरा झटका लगेगा।

वेनेजुएला का शासन अब अमेरिका के नियंत्रण में होगा। यह कदम मात्र सैन्य हस्तक्षेप नहीं, बल्कि ऐसा भू–राजनीतिक विस्फोट है, जो वैश्विक संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करेगा।

आमने सामने

भरतपुर की संजना जाटव, चूरू के राहुल कस्वां और झुंझुनूं के बृजेंद्र सिंह ओला ने राजस्थान की जनता का पैसा हरियाणा के कैथल में विकास कार्यों के लिए भेजा है। नियमों के अनुसार सांसद अपने क्षेत्र में प्राथमिकता दें, ये सांसद राजनीतिक हित के लिए निधि का दुरुपयोग कर रहे हैं।
–जवाहर सिंह बेढ़म
गृह राज्य मंत्री, राजस्थान

नियमों के तहत सांसद निधि की 10 प्रतिशत राशि को किसी भी स्थान पर खर्च करने का अधिकार है। अनुशंसा सही है या नहीं इसका सत्यापन प्रशासनिक अधिकारी ही करते हैं। भुगतान और जांच की जिम्मेदारी जिला कलेक्टर तथा संबंधित अधिकारियों की होती है।
–राहुल कसवां
कांग्रेस सांसद

मानव विकास सूचकांक में सुधार भी जरूरी

प्रो. एचसी पुरोहित
दून विश्वविद्यालय

रिज़र्व बैंक के वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्याप्त अनिश्चितताओं के बावजूद भारत की वित्तीय स्थिति काफ़ी मज़बूत और सुदृढ़ है। भारतीय रिजर्व बैंक ने 2025-26 के लिए जीडीपी वृद्धि अनुमान को 6.8 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.3 प्रतिशत कर दिया। विश्व बैंक, आईएमएफ, मूडीज, आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी), फिच और एसएंडपी जैसी अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों ने भी इस आशावादी रुख की पुष्टि की है। आज वैश्विक परिदृश्य पर नज़र डालें तो कई विकसित और उभरती अर्थव्यवस्थाएं बैंकिंग संकट, बढ़ते कर्ज़ के बोझ, मुद्रा अस्थिरता और वित्तीय बाज़ारों में उतार-चढ़ाव से जूझ रही हैं। ऐसे माहौल में भारत की वित्तीय प्रणाली का संतुलित और लचीला बने रहना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

रिज़र्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय बैंकों की पूंजी पर्याप्तता, संपत्ति गुणवत्ता और लाभप्रदता में निरंतर सुधार, गैर-निष्पादित आस्तियों (एनपीए) का स्तर ऐतिहासिक रूप से निचले पायदान पर है, जिससे बैंकिंग तंत्र की मज़बूत सेहत का अनुमान लगाया जा सकता है। सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के बैंकों ने जोखिम प्रबंधन, ऋण मूल्यांकन और तकनीकी नवाचारों पर विशेष ध्यान दिया है। परिणामस्वरूप, ऋण विस्तार संतुलित ढंग से हो रहा है और वित्तीय प्रणाली किसी एक क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भर नहीं है। साथ ही, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफ़सी) की स्थिति भी पहले की तुलना में अधिक सुदृढ़ दिखाई देती है, जो नियामकीय सुधारों और संस्थानों की कड़ी निगरानी का प्रतिफल है। भारत की वित्तीय स्थिरता के पीछे रिज़र्व बैंक की सतर्क मौद्रिक नीति और नियामकीय दृष्टिकोण की अहम भूमिका रही है।

समय-समय पर किए गए स्ट्रेस टेस्ट, पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार और प्रभावी तरलता प्रबंधन ने बाहरी झटकों से अर्थव्यवस्था को बचाने में मदद की है। रेटिंग एजेंसी अर्न्स्ट एंड यंग (EY) की रिपोर्ट के अनुसार, इस आर्थिक विस्तार के साथ भारत की प्रति व्यक्ति आय 2.5 लाख रुपये से बढ़कर लगभग 13.5 लाख रुपये हो सकती है। EY का मानना है कि भारत अमेरिका और चीन के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है।

वैश्विक शक्ति बनना केवल उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि बहुआयामी चुनौतियों का सामना करने की निरंतर प्रक्रिया भी है। इस क्रम में पहली चुनौती, आर्थिक समावेशन और सतत विकास की है। उच्च विकास दर के बावजूद क्षेत्रीय असमानताएं, रोजगार सृजन की गति, गुणवत्तायुक्त शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार, अनौपचारिक क्षेत्र की समस्याएं अब भी चिंता का विषय हैं। वैश्विक शक्ति बनने के लिए केवल जीडीपी वृद्धि पर्याप्त नहीं है। इसके साथ-साथ मानव विकास सूचकांक और प्रसन्नता/खुशहाली सूचकांक में भी सुधार आवश्यक है।

दूसरी, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत को रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए विभिन्न शक्ति केंद्रों— अमेरिका, चीन, रूस और यूरोपीय संघ के साथ संतुलित संबंध रखने होंगे। किसी एक ध्रुव के अत्यधिक प्रभाव में आना भारत के दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों के विपरीत हो सकता है, इसलिए भू-राजनीतिक संतुलन जैसा कि रूस-यूक्रेन संघर्ष के दौरान देखा गया आगे भी जारी रखना होगा।

तीसरी, तकनीकी आत्मनिर्भरता और साइबर सुरक्षा आज बड़ी चुनौती है। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर, क्वांटम कंप्यूटिंग और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर में आत्मनिर्भरता के बिना वैश्विक शक्ति का दर्जा अधूरा रहेगा। इसके लिए प्रभावी उपाय करने होंगे और डिजिटली प्रशिक्षित समाज का निर्माण ही इसका समाधान है।

भारत के पास युवा आबादी, डिजिटल ताकत, मज़बूत स्टार्टअप इकोसिस्टम, मैन्युफैक्चरिंग क्षमता और ग्रीन एनर्जी की व्यापक संभावनाएं हैं। इन्हीं कारकों के बल पर देश की अर्थव्यवस्था वर्ष 2047 तक लगभग 26 ट्रिलियन डॉलर (2,314 लाख करोड़ रुपये) तक पहुंच सकती है, जो वर्तमान में लगभग 4.18 ट्रिलियन डॉलर (376 लाख करोड़ रुपये) है। पिछले वर्षों के सुधारों के कारण वैश्विक नवाचार सूचकांक में लगातार सुधार हो रहा है। साथ ही, बढ़ते साइबर हमले और डेटा सुरक्षा के ख़तरे राष्ट्रीय सुरक्षा के नए आयाम प्रस्तुत कर रहे हैं, इनके लिए तकनीकी रूप से प्रशिक्षण आवश्यक है।

चौथी, सामाजिक एकजुटता और आंतरिक स्थिरता की है। विविधताओं से भरे समाज में सामाजिक सद्भाव, संस्थागत विश्वास और कानून के शासन को मज़बूत बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। पांचवीं चुनौती, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षेत्र की है। वैश्विक नेतृत्व की आकांक्षा रखने वाले देश से यह अपेक्षा की जाती है कि वह कार्बन उत्सर्जन, नवीकरणीय ऊर्जा और जलवायु न्याय के मुद्दों पर ज़िम्मेदार और अग्रणी भूमिका निभाए।

वैश्विक शक्ति बनना केवल उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि बहुआयामी चुनौतियों का सामना करने की निरंतर प्रक्रिया भी है।

सोशल फोरम

मौसम विज्ञानी है नन्हा पंछी

एक बिल्कुल छोटी सी चिड़िया है, गौरैया जैसी, नाम है 'वीरे' या 'वीरी' (Veery)। ये उत्तरी अमेरिका में पाई जाती है। पक्षी वैज्ञानिक जब इस चिड़िया का अध्ययन कर रहे थे, तो उन्होंने इसके माइग्रेशन यानी मौसम या प्रजनन के समय दूसरे इलाके में जाने के नियम को थोड़ा अटपटा पाया। वैसे दैनिक जीवन में ज़्यादातर पक्षी जो मौसम और प्रजनन के लिए सैकड़ों हज़ारों मील की दूरी तय करके दूसरे देश जाते हैं, उनका समय निश्चित होता है। यानी कोई पक्षी जो अक्टूबर में माइग्रेट करते है, वो ज़्यादातर समय उसी महीने में जाते हैं। मगर वैज्ञानिकों ने पाया कि ये छोटी सी चिड़िया 'वीरी' बड़े ही अनिश्चित समय में कभी भी अपना प्रवास बदल लेती है और अटलांटिक या अंध महासागर को पार करके ये बहुत दूर जाती है प्रजनन के लिए।

सिद्धार्थ ताबिश
ब्लॉगर

वैज्ञानिकों ने इनके प्रवास बदलने में कभी-कभी कई-कई हफ्तों और कई महीनों का भी अनिश्चित फासला देखा। वैज्ञानिक सालों इस गुत्थी में उलझे रहे मगर फिर अचानक एक वैज्ञानिक का ध्यान अंध महासागर के मौसम पर गया और उसने सागर में उठने वाले तूफ़ान और वीरी के माइग्रेशन के रिश्ते पर ध्यान दिया। उस वैज्ञानिक ने अंध महासागर के ख़राब मौसम का सालों का आंकड़ा इकट्ठा किया और फिर उसे इस छोटी सी चिड़िया के प्रवास बदलने के समय से मिलाया और फिर वैज्ञानिकों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वैज्ञानिकों ने पाया कि ये चिड़िया कई हफ्तों और कई महीनों बाद आने वाले समुद्री तूफ़ान का अंदाज़ा लगा कर समुद्र को पार करने की अपनी तारीख़ निर्धारित कर लेती है। चूंकि यात्रा बहुत लंबी होती है, इसलिए ये कई हफ़्तों और कभी महीनों पहले ही अपने प्रवास बदलने की तिथि तय कर लेती है और ये वो आंकड़े थे, जिनका अनुमान मौसम विभाग तक को नहीं था।

ये बिल्कुल छोटी सी चिड़िया और सिर्फ़ इस प्रकृति के साथ एकरूप होने के कारण, मौसम का पूरा और सटीक अनुमान लगा लेती है। लगभग सारे जीव जंतु, जिन्हें हम जानवर कहकर मुंह बनाते हैं, लगभग उन सभी के पास प्रकृति को समझने की कोई न कोई ऐसी शक्ति ज़रूर होती है और सोचिए थोड़ा कि इस छोटी से चिड़िया को जो समझ है, उतनी समझ के लिए इंसानों ने बरसों भौतिक और वाह्य चीजों पर काम करके सेटेलाइट बनाए और जाने कितने यंत्र बनाए, तब वो अब मौसम जानने लगे हैं और उसका अनुमान जानने लगें हैं।

–फेसबुक वॉल से

सामयिकी

एसिड अटैक, न्याय और राज्य की जवाबदेही

सोलह साल तक एक लड़की ने अपना चेहरा नहीं छिपाया। सोलह साल तक उसने अस्पतालों, अदालतों और समाज तीनों का सामना किया। 2009 में हरियाणा के पानीपत में उस पर तेज़ाब फेंका गया था। उस दिन उसका चेहरा झुलसा, लेकिन जीवन ख़त्म नहीं हुआ। उसने सर्जरियां झेलीं, सार्वजनिक नज़रों को सहा, रोज़गार और रिश्तों की असहज चुप्पियां झेलीं और हर कुछ महीनों में अदालत की तारीख़ पर पहुंची। इस उम्मीद के साथ कि एक दिन न्याय मिलेगा। उसका संघर्ष सिर्फ़ इलाज का नहीं था। वह रोज़-रोज़ अपने अस्तित्व को साबित करने का संघर्ष था। 2025 में, दिल्ली की रोहिणी अदालत ने वर्ष 2009 के पानीपत एसिड अटैक मामले में व्यस्क आरोपियों को बरी कर दिया। कारण यह नहीं था कि अपराध नहीं हुआ। कारण यह था कि राज्य उस अपराध को अदालत में सिद्ध नहीं कर सका।

जय प्रकाश पांडेय
लेखक

पीड़िता शाहीन मलिक थीं। सोलह वर्षों की लंबी सुनवाई के बाद अदालत का निष्कर्ष था। अपराध की भयावहता निर्विवाद है, पर अभियोजन वह साक्ष्य-शृंखला प्रस्तुत नहीं कर सका, जो 'संदेह से परे' दोष सिद्ध करने के लिए आवश्यक होती है। कॉल डिटेल रिकॉर्ड समय पर नहीं जुटे, डिजिटल साक्ष्य कमज़ोर रहे और एसिड की खरीद-आपूर्ति से जुड़ी कड़ियां अदालत तक मज़बूती से नहीं पहुंचीं। कानूनी दृष्टि से यह फ़ैसला तर्कसंगत हो सकता है, लेकिन सामाजिक दृष्टि से यह एक असहज प्रश्न छोड़ जाता है— क्या हमारे यहां एसिड अटैक जैसे अपराधों में न्याय, समय के साथ टिक पाता है?

एसिड अटैक साधारण हिंसा नहीं है। यह शरीर से पहले पहचान पर हमला करता है। चेहरा झुलसता है, तो रोज़गार, रिश्ते, सार्वजनिक उपस्थिति सब कुछ बदल जाता है। पीड़िता के लिए यह एक दिन की घटना नहीं, जीवन भर की अवस्था बन जाती है। न्याय-प्रणाली इसे अक्सर एक लंबी कानूनी फ़ाइल में बदल देती है, जहां तारीख़ें बढ़ती जाती हैं और समय साक्ष्यों का सबसे बड़ा शत्रु बन जाता है।

यहां यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि क़ानूनी ढांचा अपने आप में कमज़ोर नहीं है। भारत में एसिड अटैक को लेकर कानून पिछले एक दशक में सख़्त हुआ है। पहले भारतीय दंड संहिता की धारा 326A (एसिड से गंभीर क्षति) और धारा 326B (एसिड अटैक का प्रयास) ने इस अपराध को विशिष्ट श्रेणी में रखा। अब नए आपराधिक कानून भारतीय न्याय संहिता (BNS)में भी यही दृष्टि जारी है। कानून स्पष्ट कहता है कि तेज़ाब या किसी संक्षारक पदार्थ से स्थायी या आंशिक क्षति, जलन, विकृति या विकलांगता उत्पन्न करना अत्यंत गंभीर अपराध है, जिसके लिए न्यूनतम दस वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक की सज़ा दी जा सकती है। जुर्माना मात्र दंड नहीं, बल्कि पीड़िता के इलाज और पुनर्वास से जोड़ा गया है।

कानून इलाज के स्तर पर भी स्पष्ट है। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) के तहत यह दायित्व तय किया गया है कि एसिड अटैक पीड़िता को तत्काल और निःशुल्क चिकित्सा मिले। सरकारी हो या निजी, कोई भी अस्पताल इलाज से इनकार नहीं कर सकता। इलाज से इनकार करना दंडनीय है। इसके साथ-साथ पीड़ित प्रतिकर योजना के अंतर्गत मुआवज़े का प्रावधान है, जो अंतिम फ़ैसले तक सीमित नहीं, बल्कि अंतरिम राहत के रूप में भी दिया जाना चाहिए।

एसिड अटैक में चेहरा एक क्षण में झुलसता है। न्याय में देरी से भरोसा धीरे-धीरे जलता है और जब भरोसा जलता है, तो कानून की सबसे सख़्त धाराएं भी खोखली लगने लगती हैं। न्याय का अर्थ केवल सज़ा नहीं है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

जागरूक संपादकीय

जागरूक टाइम्स। मुंबई | बुधवार, 7 जनवरी 2026

श्रीरामचरितमानस

नाम कामतरु काल कराला।
सुमिरत समन सकल जग जाला॥
राम नाम कलि अभिमत दाता।
हित परलोक लोक पितु माता॥3॥

भावार्थ : ऐसे कराल (कलियुग के) काल में तो नाम ही कल्पवृक्ष है, जो स्मरण करते ही संसार के सब जंजालों को नाश कर देने वाला है। कलियुग में यह राम नाम मनोवांछित फल देने वाला है, परलोक का परम हितैषी और इस लोक का माता-पिता है (अर्थात परलोक में भगवान का परमधाम देता है और इस लोक में माता-पिता के समान सब प्रकार से पालन और रक्षण करता है।)॥

नेपाल में बवाल, बिहार में कर्फ्यू

नेपाल में फिर एक बार सांप्रदायिक तनाव की गर्मी झुलसा रही है। यहां पारसा के बीरगंज में हिंसक झड़प का मामला सामने आया है। मस्जिद में तोड़फोड़ के आरोपों के बाद दो समुदायों के बीच तनाव पैदा हो गया है। प्रशासन ने फिलहाल बीरगंज में कर्फ्यू लगा दिया है। मस्जिद में तोड़फोड़ का वीडियो सोशल मीडिया पर आने के बाद नेपाल के मुस्लिम समुदाय के लोगों ने रविवार को बीरगंज में विरोध प्रदर्शन किया और नारे लगाए। इस दौरान लोगों ने सड़कों पर टायर जलाए। पुलिस ने बताया कि पूरा विवाद टिकटॉक वीडियो से शुरू हुआ, जिसमें दो मुस्लिम युवक हिंदुओं के बारे में

गलत बातें करते दिखे। इस बात से नाराज लोगों ने धनुषा में मस्जिद में तोड़फोड़ की और आग लगा दी। बीरगंज शहर के कुछ इलाकों में सोमवार को किसी भी तरह के मेले, पब्लिक मीटिंग, जुलूस या विरोध प्रदर्शन पर रोक लगा दी गई। सोमवार दोपहर 1 बजे से लागू किया गया यह आदेश अगली सूचना तक जारी रहेगा। आदेश के मुताबिक शहर के पूर्व में बस पार्क, पश्चिम में सिरसिया ब्रिज, उत्तर में पावर हाउस चौक और दक्षिण में शंकराचार्य गेट तक फैले इलाके में ऐसी गतिविधियों पर रोक लगा दी गई है। जो कोई भी नियमों का उल्लंघन करता हुआ पाया जाएगा, उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो में एक ग्रुप को धनुषा के सखुवा मारन में एक मस्जिद में तोड़फोड़ करते और कुरान की एक कॉपी जलाते हुए दिखाया गया। दक्षिणी नेपाल के कई इलाकों में हालात तेजी से बिगड़े, सड़कों पर तोड़फोड़, आगजनी और झड़पों की खबरें सामने आने लगीं। खबर के मुताबिक धनुषा के जिला पुलिस ऑफिस के चीफ और सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस बिश्व राज खड़का ने बताया कि हमने टिकटॉक वीडियो बनाने वाले दो मस्लिम युवकों और मस्जिद में तोड़फोड़ करने वाले एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। धनुषा जिला कोर्ट ने उन्हें 5 दिनों की ज्यूडिशियल कस्टडी में भेज दिया है। बढ़ते तनाव के बीच वहां काम कर रहे भारतीय मजदूरों में डर का माहौल है, जिस वजह से कई लोग अपनी जान की सुरक्षा को लेकर काम-धंधा छोड़ भारत लौटने को मजबूर हो गए हैं। हालात इतने संवेदनशील हैं कि प्रशासन को कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात करने पड़े हैं। नेपाल में फैली हिंसा को देखते हुए रक्सौल बॉर्डर (भारत-नेपाल सीमा) पूरी तरह सील कर दिया गया। मैत्री पुल सहित सभी बॉर्डर पॉइंट्स पर आवाजाही रोक दी गई है। भारत की ओर से सीमा सुरक्षा बल ने अतिरिक्त जवान तैनात कर दिए हैं।

चुनावों के बाद भारत से रिश्ता

दूसरा पाकिस्तान बना रहेगा बांग्लादेश

संजय श्रीवास्तव

> चुन-चुनकर हिंदुओं की हत्या, हिंदू महिलाओं के साथ बलात्कार और पाकिस्तान के नक़्शे कदम पर चलते हुए अपनी क्रिकेट टीम को भारत में टी-20 विश्व कप के लिए न भेजने का फैसला। बांग्लादेश भारत के लिए पूरी तरह से दूसरा पाकिस्तान बन गया है और जिस तरह की हवा बह रही है, उससे लगता यही है कि आगामी चुनावों के बाद भी स्थिति कोई ख़ास बदलने वाली नहीं है। जरुरी है कि नई दिल्ली बांग्लादेश को लेकर अपने पारम्परिक रवैये को बदले।

उम्मीद है बांग्लादेश में 20 फरवरी 2026 तक एक चुनी हुई सरकार सत्ता संभाल ले। ये चुनाव बहुत पहले होने चाहिए थे, 2024 को छात्रों के आंदोलन के बाद हसीना जब इस्तीफा दे भारत भाग आईं और 8 अगस्त 2024 को मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार का गठन हुआ तो उसने 6 महीने के भीतर चुनाव कराने का वादा किया था। खैर, शायद इस देरी ने भी बांग्लादेश को कुछ सियासी सबक सिखाएं हों और आगामी चुनावों में वह इस सबक का इस्तेमाल भी करे, लेकिन शायद ही देर आयद दुरुस्त आयद हो। जाहिर है इन चुनावों के नतीजों का सबसे ज्यादा असर बांग्लादेश और बांग्लादेशियों पर होगा लेकिन चीन और पाकिस्तान की नजरें भी इस ओर हैं तो हमारी भी। सभी चाहते हैं कि बांग्लादेश में लोकतंत्र बहाल हो और वहां हिंसा रुके। हमारी चाहत है कि वहां हिंदुओं को सुरक्षा देने वाली स्थिर सरकार बने जिससे सीमा सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी सहयोग और पूर्वोत्तर की स्थिरता को प्राथमिकता मिले, कपास आयात जैसे मसले और तीस्ता जल बंटवारे पर ठोस बातचीत हो सके। हम इस चुनाव को महज सत्ता परिवर्तन के रूप में नहीं देख रहे बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता, सुरक्षा और भू-राजनीतिक संतुलन के एक निर्णायक मोड़ के बतौर ले रहे हैं। उधर चीन की मंशा है कि उसकी आर्थिक घुसपैठ निरंतर रहे और उसके बेल्ट एंड रोड प्रोजेक्ट्स निर्बाध रहें। पाकिस्तान 'एंटी-इंडिया' भावना को मजबूत बनाने वाली और 1971 के मुद्दों पर नरम रुख रखने वाली सरकार चाहता है। अमेरिका-यूरोप की निगाह ऐसी सरकार पर है जो यूनुस के सुधारों का समर्थन करती हो। सबसे ज्यादा अपेक्षाएं बांग्लादेशियों की हैं। वे नई सरकार से आर्थिक सुधार, भ्रष्टाचार पर रोक, महंगाई पर नियंत्रण, बेरोजगारी दूर करना, बिजली की बेहतर आपूर्ति, संविधान में सुधार, कानून व्यवस्था की बहाली तथा आवामी लीग के अत्याचारों पर जवाबदेही चाहते हैं। धार्मिक कट्टरता या वैचारिक बहसें यहां आम मतदाता के लिए दोयम दर्जे के मुद्दे हैं। बेशक यह चुनाव राजनीतिक रूप से अंतरिम सरकार के

इमेज

सुधारों को परखेगा और कूटनीतिक तौर पर भारत-चीन-पाकिस्तान की क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा को प्रभावित करेगा लेकिन जो पार्टियां चुनावी मैदान में हैं उनके इतिहास, प्रवृत्ति, तौर तरीके तथा मौजूदा सियासी समीकरणों और देश के हालात को देखते हुए भारत- और बांग्लादेशियों की इच्छाएं, अपेक्षाएं पूरी होती नहीं दिखती हैं। बांग्लादेश में चालीस से अधिक पंजीकृत पार्टियां चुनाव मैदान में होने के बावजूद मुकाबला 10 दलों वाले बांग्लादेश जमाते इस्लामी गठबंधन और बांग्लादेश नेशलिस्ट पार्टी यानी बीएनपी में ही है। शेख हसीन की आवामी लीग चुनाव से बाहर है तो मामला द्विदलीय हो गया है। जमाते इस्लामी का मुख्य मुद्दा है इस्लामी कानून लागू करवा कर धार्मिक न्याय व शासन स्थापित करना, सेकुलर और समाजवाद को हटाना और पश्चिमी प्रभाव का विरोध। पहली नजर में ही यह बांग्लादेश के कुछ कट्टरपंथियों और पाकिस्तान के अलावा किसी और की अपेक्षा पूरी करेगी इसमें संदेह है। एनसीपी यानी नेशलिस्ट सिटिजन पार्टी जो पिछले साल ही युवा विद्रोह के दौरान बनी है फिलहाल भारी खटपट के बावजूद जमाते इस्लामी के साथ है और खुद को "तीसरी ताकत के रूप में पेश कर रही है जबकि बीएनपी उसे महज वोट-कटवा मानती है। उसका लक्ष्य है, प्रखर राष्ट्रवाद, आर्थिक सुधार, भ्रष्टाचार विरोध, संस्थागत सुधार और युवा राजनीति को बढ़ावा देना। बीएनपी का भी वादा राष्ट्रवाद, आर्थिक सुधार, सत्ता विकेंद्रीकरण है। एनसीपी अपेक्षाकृत नया और सीमित प्रभाव वाला अनुभवहीन उत्साही भारत विरोधी दल है इसलिए उससे कोई अपेक्षा पालना बेकार ही है। वैसे भी बांग्लादेश में वैकल्पिक राजनीति की बात करने वाली एनसीपी को जमात-ए इस्लामी की बी टीम भी कहा जा रहा है और वह जमाते इस्लामी की छोड़ी हुई 19 सीटों पर ही लड़ रही है। अजब यह है कि जमाते इस्लामी पिछले दिनों बीएनपी के साथ आने की मंशा जाहिर कर चुकी है, बीएनपी इसके लिए उत्सुक नहीं है फिर भी ऐसे में गठबंधनों का चेहरा चुनाव या उसके बाद बदल सकता है। सरकार की सूरत कुछ यूं बनती है, या तो बीएनपी अकेले सरकार बनाए या फिर वह जमाते इस्लामी से सरकार बनाने में सहायता ले पर इसे औपचारिक गठबंधन का नाम न दे। अगर बीएनपी ज्यादा सीटें लाती है तो एनसीपी जमाते इस्लामी का साथ छोड़कर उससे हाथ मिला ले, वैसे इसके इमकान कम हैं, हालांकि राजनीति में क्या नहीं हो सकता। चुनाव में सबसे अहम है चुनाव से दूर आवामी लीग के मतदाता किधर जाते हैं। आवामी लीग के वोटरों की विचारधारा जमाते इस्लामी के खिलाफ तो है पर उसके वोटरों का छोटा हिस्सा धार्मिक रूझान को समर्थन देते हुए ग्रामीण इलाकों में उसकी ओर जाएगा ही लेकिन वोट बैंक का बड़ा हिस्सा अगर जमाते इस्लामी हथियाने में कामयाब रहता है तो वह बहुमत के आसपास नजर आ सकती है। लंबे समय से सत्ता से बाहर रहने के बीएनपी को सत्ता-विरोधी माहौल का फायदा मिल सकता है। 17 साल बाद स्वदेश लौटे खालिदा जिया के बेटे तारिक रहमान को जिया की मौत के बाद भावनात्मक लाभ मिल सकता है, उन्हें परिणाम को प्रभावित कर सकने वाला जनसमर्थन भी है और उन्हें प्रधानमंत्री के बतौर पेश भी किया जा रहा है। हालांकि अनुपस्थिति और विवादित छवि उन्हें "गेम-चेंजर" से ज़्यादा "पोलराइज़िंग फ़ैक्टर" बनाती है। अगर सर्वे सही है कि बीएनपी 33 फीसद तो जमात 29 प्रतिशत और एनसीपी 16 फीसद मतदाताओं की पसंद हैं। युवाओं में भी पहली पसंद बीएनपी और दूसरी जमाते इस्लामी है।

गीता सार

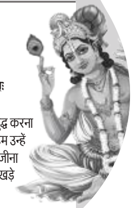

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा
जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम स्तेऽवस्थिताः
प्रमुखे धार्तराष्ट्राः॥२-६॥

भावार्थ : हम यह भी नहीं जानते कि हमारे लिए युद्ध करना श्रेष्ठ है या न करना और यह भी नहीं जानते कि हम उन्हें जीतेंगे या वे हमको जीतेंगे। जिनको मारकर हम जीना नहीं चाहते, वे धृतराष्ट्र के पुत्र ही हमारे सम्मुख खड़े हैं ॥6॥

समुद्री मोथ मछली

इससे बनती अमूल्य कलात्मक वस्तुएं

के. पी. सिंह

समुद्री मोथ भारत में पाई जाने वाली एक सुंदर मछली है। इसे अंग्रेजी में सी मोथ कहते हैं। समुद्री मोथ की छाती के मीनपंख बहुत बड़े होते हैं तथा पंख जैसे लगते हैं। इसे दूर से देखने पर मोथ का भ्रम होता है। इसीलिए इसे समुद्री मोथ कहा जाता है। समुद्री मोथ एक लंबे समय से जीव वैज्ञानिकों के लिए पहेली बनी हुई है। इसकी शारीरिक संरचना देखने में समुद्री घोड़े के समान लगती है, अतः पहले जीव वैज्ञानिक समुद्री मोथ को समुद्री घोड़े का निकट संबंधी मानते थे, किंतु आधुनिक जीव-वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि समुद्री मोथ, समुद्री घोड़े की निकट तो क्या दूर की भी संबंधी नहीं है। समुद्री मोथ हिंद प्रशांत और इसके आसपास के क्षेत्रों में बहुतायत से मिलती है। इसके साथ ही इसे दक्षिणी अफ्रीका से लेकर जापान तक के सागरों और महासागरों में भी देखा जा सकता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समुद्री मोथ दक्षिणी अफ्रीका के सागर तटों से लेकर हिंद महासागर के तटों के चारों ओर होती हुई पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया और हिंद प्रशांत क्षेत्र तक पायी जाती है। उत्तर में इसे चीन और जापान तक देखा जा सकता है। समुद्री मोथ दक्षिण अफ्रीका, सोमालिया, सऊदी अरब, भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, मलेशिया, वियतनाम, ताईवान, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया और न्यूगिनी आदि के सागर तटों पर बहुत बड़ी संख्या में देखी जा सकती है। समुद्री मोथ के संबंध में पहले यह कहा जाता था कि यह अपनी छाती के मीनपंखों को पंख की तरह

फहराकर उड़ती है अथवा ग्लाइडिंग करती है। लेकिन समुद्री मोथ का शरीर भारी होता है तथा इसके शरीर की मांसपेशियां बहुत कमजोर होती हैं अतः यह चाहकर भी न तो उड़ सकती है और न ग्लाइडिंग कर सकती है। समुद्री मोथ अपनी छाती के मीनपंखों को फैलाकर अपने शत्रु को डराने का कार्य करती है। समुद्री मोथ का कोई भी शत्रु जैसे ही इसके सामने आता है, वैसे ही यह अपनी छाती के मीनपंख फैला लेती है, इससे यह अपने वास्तविक आकार से बड़ी दिखाई देने लगती है। इससे इसका शत्रु डरकर भाग जाता है और यह बच जाती है। समुद्री मोथ वास्तव में एक छोटी समुद्री मछली है, किंतु इसकी शारीरिक संरचना सागर की सामान्य छोटी मछलियों से पूरी तरह भिन्न होती है। समुद्री मोथ के शरीर की लंबाई 12 सेंटीमीटर से लेकर 15 सेंटीमीटर तक होती है, किंतु कभी-कभी 25 सेंटीमीटर लंबी समुद्री मोथ देखने को मिल जाती है।

तिथि विशेष

शांता सिन्हा

शांता सिन्हा अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बालश्रम विरोधी भारतीय कार्यकर्ता हैं। शहरों तथा गांवों में ग़रीबी का जो परिणाम ग़रीबी को स्थायी बनाए रखने की बुनियाद बनता है, वह है बाल मजदूरी। जिन

ग़रीब परिवारों के बच्चे ग़रीबी के बावजूद उनके माता-पिता की सोच के चलते स्कूल तक पहुंचते हैं, वहा ग़रीबी के दिन थोड़े रह जाते हैं। शांता सिन्हा ने इस निष्कर्ष को पूरे आन्ध्र प्रदेश में व्यापक रूप से फैलाने का काम किया। उन्होंने लोगों की इस धारणा को तोड़ा कि ग़रीबों के बच्चों के काम किए बिना परिवार का गुजारा नहीं हो सकता। इस तरह उन्होंने अपनी संस्था "मामिडिपुडी वैंकटारंगैया फाउंडेशन" (एमवीएफ़) की सेक्रेटरी के नाते बाल मजदूरी पर अकुंश लगाया और बच्चों को स्कूल की राह पर डालने की व्यवस्था की। उन्होंने इस कार्य को तमाम विरोध के बावजूद संकल्पपूर्वक निभाया, इसके लिए उन्हें वर्ष 2003 'रेमन मैग्सेसे पुरस्कार' प्रदान किया। शांता सिन्हा का जन्म 7 जनवरी, 1950 को आन्ध्र प्रदेश के नेल्लोर में हुआ था। उन्होंने पोलेटिकल साइंस में उस्मानिया यूनिवर्सिटी से 1972 में एम.ए. की परीक्षा पास की तथा 1976 में उन्होंने जवाहरलाल यूनिवर्सिटी से डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त की। शांता सिन्हा बहुत शुरू से ही बाल मजदूरी की स्थिति को देखकर बेचैन रहती थीं और उनके मन में इसके लिए कुछ ठोस कार्य करने का विचार बार-बार आता था। 1987 में वह हैदराबाद यूनिवर्सिटी में थीं। तभी यूनिवर्सिटी के विस्तार कार्यक्रम में प्रमुख के नाते उन्हें मौका मिला और उन्होंने तीन महीने चलने वाले एक कैंप का आयोजन किया, जिसमें बन्धुआ मजदूरी से मुक्त कराए गए बच्चों को स्कूल भेजने की तैयारी कराई गई। उनका यह अनुभव उत्साहजनक रहा। एमवीएफ़ के बुनियादी स्कूलों तथा उसके अन्य कार्यक्रमों का आन्ध्रप्रदेश भर में भरपूर विस्तार एवं विकास हुआ है।

काशी के महाश्मशान वन

भारतीय सभ्यता के मौन ग्रंथ

वीना गौतम

> काशी के महाश्मशान वन महज वन नहीं बल्कि भारतीय सभ्यता के मौन ग्रंथ हैं, जो बिना शब्दों के सबसे बड़ा उपदेश देते हैं- मृत्यु से मत डरो, उसे समझो, जीवन को थामे रखो, आशक्ति छोड़ो। काशी के महाश्मशान वनों में श्मशान का अंत नहीं, आरंभ है। इसलिए यह वन पलायन को आश्रय देने वाले नहीं बल्कि आत्म प्राप्ति के आश्रय स्थल हैं। इसलिए काशी के महाश्मशान वन हमारी धार्मिक आस्था, आध्यात्मिक साधना और रहस्यात्मक आख्यान इन तीनों के केंद्र हैं और तब तक रहेंगे, जब तक सत्य की खोज मनुष्य की जिज्ञासा के केंद्र में रहेगी। भारतीय सभ्यता, जिन सत्यों को शब्दों में नहीं बांध पायी, उसे स्थानों में रच दिया है और ऐसा ही सबसे गहन अनिर्वचनीय स्थान काशी यानी वाराणसी है। काशी को आमतौर पर मंदिरों, घाटों और आरती की रोशनी में देखा जाता है, पर उसकी आत्मा वहां बसती है, जहां दीप नहीं चिता जलती है। जहां शंख नहीं अग्नि की चटखें सुनाई देती है। यही है काशी के महाश्मशान वन, जो खुद से बिना एक शब्द बोले मनुष्य को समूचा जीवन पाठ पढ़ाते हैं।

इमेज

प्राचीन भारतीय दृष्टि में वन या अरण्य वह स्थान होता है, जहां समाज से विरक्ति और सत्य की खोज संभव होती है। काशी में यह अरण्य श्मशान के रूप में प्रकट होता है, जहां देह का अंत और आत्मा का प्रश्न परेशान करता है। इसलिए काशी के श्मशान 'स्थान' नहीं 'संस्कार' हैं। ऐसे संस्कार जहां भय टूटता है और वैराग्य जन्मता है। पुराणों में काशी को महादेव की नगरी कहा गया है। मान्यता है कि जो काशी में मरता है, स्वयं शिव उसके कान में तारक मंत्र फूंकते हैं। इसी विश्वास ने काशी को मोक्ष की भूमि बना दिया है। यहां चिता की अग्नि केवल देह नहीं जलाती, वह अंहकार, आशक्ति और अज्ञान को भी भस्म करती है। काशी में मणिकर्णिका एक ऐसा घाट है जहां सदियों से हर पल चिता जलती रहती है। यहां जलती हुई चिता अविनाशी अग्नि का प्रतीक है। आख्यान कहते हैं देवी पार्वती का मणि यहां गिरा था और शिव ने काल को भी यहीं जीता था। काशी का दूसरा ऐसा ही आध्यात्मिक घाट है- हरिश्चंद्र घाट। यहां सत्य, त्याग और धर्म की पराकाष्ठा का स्मारक है। राजा हरिश्चंद्र की कथा इस श्मशान को नैतिक साहस का प्रतीक बनाती है। इन श्मशानों के आसपास का परिवेश पीपल, गूलर, अक्षय वट आदि कई पारंपरिक धार्मिक पेड़ों से आच्छादित है। साथ ही इस पूरे परिवेश में मंत्र, मौन और धुआं उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं। ये सब चीजें मिलकर ही यहां 'वन चेतना' रचती हैं। भले ही आज यहां वृक्ष आवरण कम हो गया हो, पर माना जाता

है, एक समय ऐसा था, जब यहां बड़ी संख्या में आम के भी पेड़ थे और उन्हीं पेड़ों से चिता के लिए लकड़ी काटी जाती थी। हालांकि अब यहां बड़ी तादाद में वन परिवेश नहीं बचा, सिर्फ प्रतीक के तौरपर ही बचा है। पर अब सरकार द्वारा नए सिरे से इस परिक्षेत्र को इसका पुराना रूप लौटाने के लिए 51 तरह के पारंपरिक हिंदू धर्म के प्रतीक स्वरूप वृक्षों को यहां रोंपा गया है और उम्मीद है कि आने वाले एक दशक के बाद मणिकर्णिका और हरिश्चंद्र घाट के बीच जो उजड़ा हुआ पुराना महाश्मशान वन है, वह एक बार फिर लहलहाएगा। काशी के महाश्मशान वन लोकगीतों, कहावतों और कथाओं में सदियों से जीवित हैं। काशी में मरें, मोक्ष पायें ये पंक्ति केवल आस्था नहीं एक जातीय स्मृति है। पीढ़ियों ने यहां मृत्यु देखा है, स्वीकारा है और उससे ऊपर उठना सीखा है। इसलिए यहां का श्मशान जीवन विरोधी नहीं, जीवन समर्थक है। क्योंकि वह जीवन को सार्थक करता है। काशी के महाश्मशान वन जितने भौतिक रूप में हैं, उससे ज्यादा विहंगम चेतना में निहित में हैं। लेकिन ये डराने के लिए नहीं बल्कि जगाने के लिए हैं। यहां रहस्य का अर्थ है सत्य को शब्दों से परे तक जानना। इसलिए मणिकर्णिका और हरिश्चंद्र घाट के बीच में जो श्मशान वन है, वह वहां धुएं के गुबार के बीच चिताएं, मंत्रोच्चार और मौन सब कुछ मिलकर हमें वैसे ही अंतर्मुखी और आध्यात्मिकता के प्रति उन्मुख बनाते हैं जैसे वनों का जीवन ऋषि-मुनियों में धर्म और आध्यात्म जगाता था। आज की काशी में श्मशान वन सिर्फ प्राचीन परंपरा के प्रतीक भर नहीं हैं बल्कि आधुनिक पर्यटन के भी आकर्षण हैं। पर्यटन और भीड़ के बीच भी काशी के श्मशान वनों में आत्मा जीवित है। मगर चुनौती यही है कि इस पवित्रता को संवेदनशीलता के हाथों सुरक्षित किया जाए, ताकि न तो भय का बाजार बने और न ही श्रद्धा का निपट कारोबार चले। दरअसल यहां श्मशान कोई भयावह किनारा नहीं बल्कि सत्य का एक ऐसा प्रांगण है, जहां मृत्यु छुपायी जाती है। इसलिए मणिकर्णिका घाट और हरिश्चंद्र घाट के श्मशान वन केवल अंतिम संस्कार के स्थल नहीं, ये दार्शनिक स्थल भी हैं, जहां अंहकार जलता है और वैराग्य जन्मता है। वैसे इन महाश्मशान वनों में न तो उपदेश लिखे हैं, न गुणसूत्र गढ़े हैं और न ही कोई गाइड आपको इन वनों की आध्यात्मिकता और रहस्यात्मकता की कमेंट्री करेगा। बस यहां का वातावरण ही ऐसा है, जो जाता है, वह महसूस करता है कि मौन, मंत्र और धुआं का समवेत आभामंडल महसूस करता है।

वायरल

कोक में दूध मिला कर पीने से डॉक्टर्स को काटने पड़े शख्स के दोनों पैर!

मलेशिया में रहने वाले एक शख्स को दूध के साथ कोक मिलाकर पीना महंगा पड़ गया। एक मध्यम आयु वर्ग के व्यक्ति ने टिकटॉक पर वायरल हुए वीडियो में खुलासा किया कि उसकी रोजाना की आदत ने उसे दोनों पैर गंवाने पर मजबूर कर दिया। वह हर रात दोस्तों के साथ 'लेपक'

(हैंगआउट) करते समय कोका-कोला या पेप्सी में कंडेंस्ड मिल्क (सघन दूध) मिलाकर पीता था। लेकिन वो इस बात से अंजान था कि इसका अंजाम खौफनाक होने वाला है। शख्स ने बताया कि उसे इस स्वाद की लत लग गई थी। लगभग हर दिन ही वो इसे पीता था। उसके शरीर में शुगर की मात्रा लगातार बढ़ती गई। एक सामान्य 355 मिलीलीटर की कोक की बोतल में करीब 39 ग्राम शुगर होता है, जो लगभग 10 चम्मच के बराबर है। यानी एक स्वस्थ व्यक्ति की रोजाना की अनुशंसित शुगर मात्रा का 80% से ज्यादा। कंडेंस्ड मिल्क से यह मात्रा और भी कई गुना बढ़ जाती है। इसका नतीजा हुआ कि शख्स टाइप-2 डायबिटीज का शिकार हो गया और और फिर गंभीर जटिलताएं शुरू हो गई।

पंचांग

7 जनवरी 2026

- विक्रम संवत् - 2082
- शक संवत् - 1947
- रवि - उत्तरायण
- ऋतु - शिशिर
- मास - माघ
- पक्ष - कृष्ण
- तिथि - पंचमी 30.34 तक
- वार - बुधवार
- नक्षत्र - मघा 11.57 तक
- योग - आयुष्मान 18.34 तक
- करण - कौलव 18.37 तक
- सूर्योदय - 07.15 प्रातः (मुंबई)
- सूर्यास्त - 06.14 शाम (मुंबई)
- सूर्योदय - 07.27 प्रातः (भीनमाल)
- सूर्यास्त - 06.06 शाम (भीनमाल)
- चंद्र राशि - सिंह
- अभिजीत नहीं
- राहु काल - 12.44 से 14.07
- दिशा शूल - उत्तर
- व्रत - त्यौहार
- कुमारयोग - 11.57 तक

• **शास्त्री प्रवीण त्रिवेदी, भीनमाल**

X का एक्सरे

एआई रोजमर्रा की जिंदगी का एक अभिन्न अंग बन गई है, ठीक उसी तरह जैसे कंप्यूटर, सेमीकंडक्टर, इंटरनेट और मोबाइल फोन द्वारा संचालित पिछली तकनीकी क्रांतियां थीं। एआई एक समान पैमाने के परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है, जैसे बिजली ने एक समय में हर घर और व्यक्ति तक पहुंचकर समाजों को नया रूप दिया था।

अश्विनी वैष्णव

हिंदुओं के खिलाफ हिंसा और हिंदुओं की हत्याएं सिर्फ छोटी-मोटी घटनाएं हैं। हिंसा की घटनाएं किसी एक समुदाय तक सीमित नहीं हैं। मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार में मुस्लिम भी सुरक्षित नहीं हैं। मुसलमानों को भी मारा जा रहा है और उनके साथ भी रेप की घटनाएं हो रही हैं। यह सब मीडिया का पैदा किया है।

फखरुल इस्लाम

असम में जिहादी हैं और पिछले 10 वर्षों में हमें इसका प्रमाण बार-बार मिलता रहा है। हो सकता है कि अभी भी कुछ छिपे हुए हों, जो स्लीपर सेल्स में काम कर रहे हों। इसलिए ये सभी चीजें चिंता का कारण हैं। असम की सुरक्षा हमेशा से चिंता का विषय रही है और रहेगी, जब तक कि पूरी भू-राजनीतिक स्थिति सुधार न जाए।'

हिमंत बिस्वा सरमा

50 प्रतिशत टैरिफ के साथ व्यापार बिल्कुल भी संभव नहीं है। असल में, यह भारत-अमेरिका व्यापार, विशेष रूप से भारत से अमेरिका को होने वाले निर्यात को रोकने के बराबर है। चूंकि प्रत्यक्ष प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता, इसलिए व्यापार रोकने के लिए टैरिफ का इस्तेमाल किया गया है। भारत को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

पृथ्वीराज चव्हाण

नारायण पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक-प्रकाशक-हेमल पुरोहित द्वारा एआईएस प्रिंटिंग सोल्यूशंस, प्लॉट नं. ए-544, टीटीसी इंडस्ट्रीयल एरिया, ठाणे-बेलापुर रोड, महापे, नवी मुंबई 400709 से मुद्रित एवं प्रिमाइसेस नं. 1303/चेंबर्स, 13वां माला, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे मेट्रो स्टेशन के पास, अंधेरी-कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई 400 099 से प्रकाशित, पोस्टल रजि. MCN/325/2023-24, (चकाला MIDC पी.ओ.) रजि. नं. MAHHIN/2004/13755, संपादक-हेमल पुरोहित, स्थानीय संपादक-नीरज दवे, फोन : 022-46024646, ईमेल : jagruktimes@gmail.com

राष्ट्रीय सहारा
गोरखपुर । मंगलवार • 6 जनवरी • 2026
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

सकारात्मक रहना और आभारी रवैया रखना तय करेगा कि आप जिंदगी कैसे जीने जा रहे हैं।
-जोएल ऑस्टिन

अवसरों की उड़ान चुनौतियों की कसौटी

नया वर्ष भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक साथ शुभ समाचार और गंभीर चेतावनी लेकर आया है। वर्ष 2025 के अंत में केंद्र सरकार के उस ऐलान ने देश का आत्मविश्वास बढ़ाया, जिसमें कहा गया कि भारत ने जापान को पीछे छोड़ते हुए दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का दर्जा हासिल कर लिया है। यह उपलब्धि केवल एक आर्थिक आंकड़ा नहीं, बल्कि बदलते वैश्विक शक्ति-संतुलन में भारत की बढ़ती भूमिका का संकेत है। आने वाले ढाई-तीन वर्षों में जर्मनी को पछाड़कर तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान भारत को नई ऊंचाइयों की ओर ले जाता दिख रहा है। हालांकि, इन दावों की औपचारिक पुष्टि वर्ष 2026 में अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा जारी किए जाने वाले जीडीपी के आधिकारिक आंकड़ों से होगी। सरकारी बयान के अनुसार, भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार अब 4.18 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच चुका है, जबकि

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) का अनुमान है कि 2026 तक भारत की जीडीपी 4.51 ट्रिलियन डॉलर होगी और जापान 4.46 ट्रिलियन डॉलर पर सिमट जाएगा। इससे यह लगभग तय माना जा रहा है कि वैश्विक आर्थिक मंच पर भारत की स्थिति और मजबूत होगी। इस प्रगति के पीछे कई कारक है। सबसे बड़ा आधार भारत की विशाल घरेलू मांग, युवा आबादी और अपेक्षाकृत स्थिर लोकतांत्रिक व्यवस्था है। बीते एक दशक में बुनियादी ढांचे पर भारी निवेश-एक्सप्रेसवे, रेलवे आधुनिकीकरण, बंदरगाह, हवाई अड्डे और डिजिटल नेटवर्क-ने अर्थव्यवस्था की गति को तेज किया है। मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसी योजनाओं ने उत्पादन, नवाचार और रोजगार के नए अवसर सृजित किए है। सेवा क्षेत्र के साथ-साथ विनिर्माण में भी भारत धीरे-धीरे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का अहम हिस्सा बनता जा रहा है।

आर्थिक आकार बढ़ना ही समृद्धि का अंतिम पैमाना नहीं होता। सबसे बड़ी चुनौती यह सुनिश्चित करने की है कि इस विकास का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचे। आज भी बेरोजगारी, खासकर शिक्षित युवाओं में, एक गंभीर समस्या बनी हुई है। असंगठित क्षेत्र में काम करने वाली बड़ी आबादी के लिए आय सुरक्षा और सामाजिक संरक्षण अब भी कमजोर कड़ी है। यदि भारत को वास्तव में आर्थिक महाशक्ति बनना है, तो रोजगार-सृजन को विकास के केंद्र में लाना होगा। दूसरी बड़ी चुनौती महंगाई और आय असमानता की है। तेज आर्थिक वृद्धि के बावजूद यदि आम आदमी की क्रय शक्ति कमजोर रहती है, तो विकास की चमक फीकी पड़ सकती है। कृषि क्षेत्र, जो अभी भी बड़ी आबादी को रोजगार देता है, वहां उत्पादकता और आय बढ़ाने के लिए संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव ने भी नीति-निर्माताओं के सामने नई मुश्किलें खड़ी कर दी है। वैश्विक परिदृश्य भी पूरी तरह अनुकूल नहीं है। भू-राजनीतिक तनाव, युद्ध, वैश्विक मंदी की आशंका और संरक्षणवादी नीतियां भारत की निर्यात संभावनाओं को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसे में भारत को संतुलित विदेश नीति और आर्थिक कूटनीति के जरिए अपने हितों की रक्षा करनी होगी। 2030 तक 7.3 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य महत्वाकांक्षी है, लेकिन असंभव नहीं। इसके लिए जरूरी है कि सुधारों की रफ्तार बनी रहे, शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश बढ़े और शासन प्रणाली पारदर्शी व जवाबदेह हो। चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना गर्व का विषय है, पर तीसरी बनने की राह तभी सार्थक होगी, जब विकास के साथ समावेश और स्थायित्व भी सुनिश्चित किया जाए। यही नए साल में भारत के सामने सबसे बड़ी कसौटी और सबसे बड़ा अवसर है।

तीन शुभ योग के साथ सकट

सकट चौथ व्रत का विशेष महत्व माना जाता है। ये व्रत महिलाओं द्वारा संतान सुख, संतान की लंबी आयु और परिवार की खुशहाली के लिए रखा जाता है। इस चौथ को तिलकुटा चौथ, संकष्टी चौथ और माघ कृष्ण चतुर्थी भी कहा जाता है। ज्योतिषचार्य एसएस नागपाल के अनुसार माघ कृष्ण चतुर्थी तिथि 6 जनवरी, मंगलवार को सुबह 8:01 बजे से प्रारम्भ होकर 7 जनवरी , बुधवार को प्रातः 6:52 बजे तक रहेगी। आम तौर पर व्रत उदया

तिथि के अनुसार रखा जाता है, लेकिन सकट चौथ में चंद्रमा की पूजा का विशेष महत्व होता है। 6 जनवरी को चंद्रोदय चतुर्थी तिथि में हो रहा है। अतः सकट चौथ का व्रत 6 जनवरी, मंगलवार को ही रखा जाएगा। इसी दिन गणेश जी की पूजा और चंद्रमा को अर्घ्य देकर व्रत पूरा किया जाएगा। 6 जनवरी को चन्द्रोदय समय रात 08:54 बजे होगा। श्री अध्यात्म ज्योतिष शोध संस्थान के ज्योतिषाचार्य पंडित अखिलेश चन्द्र शास्त्री ने बताया कि सकट चौथ पर तीन शुभ योग बन रहे हैं। जिससे व्रत के महत्व को और बढ़ा देते है। सर्वार्थ सिद्धि योग- सुबह 7:15 बजे से दोपहर 12:17 बजे तक, प्रीति योग- सुबह से लेकर रात 8:21 बजे तक। इसके बाद आयुष्मान योग का आरंभ होगा। इस दिन अश्लेषा नक्षत्र सुबह से दोपहर 12:17 बजे तक रहेगा, उसके बाद मघा नक्षत्र शुरू होगा। कही कही गुड़ और तिल का बकरा बना कर उसको चाँदी के सिक्के से काटने की परम्परा भी हैं इस व्रत में भगवान गणेश और चंद्र देव की पूजा का विशेष महत्व माना जाता है। इस दिन भगवान को तिल, गुड़ और तिल से बने लड्डू का भोग जरूर लगाना चाहिए। भगवान गणेश की पूजा के बाद चंद्र देव की पूजा होती है। इस व्रत का पारण चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद किया जाता है। चंद्र देव को अर्घ्य जल में दूध और तिल मिलाकर अर्पित करते है।

ईरान संकट: इतिहास व भविष्य

विदेश नीति

अमित सोमवंशी

28 दिसम्बर 2025 को राजधानी तेहरान में दुकानदारों और व्यापारियों की हडताल के रूप में शुरू हुआ, विरोध प्रदर्शन आज ईरान के 20 से अधिक प्रांतों में फैल चुका है। अब तक इस प्रदर्शन में कई मौतें हो चुकी है। इस असंतोष के तात्कालिक कारण रियाल मुद्रा का अवमुल्यन, मुद्रास्फीति की उच्चदर, अर्थव्यवस्था की बदहाल अवस्था, युवाओं की बेरोजगारी, अभिव्यक्ति की आजादी और महिलाओं के अधिकारों की मांग, अतंतः सर्वोच्च नेता अतातुल्लाह अली थामनेई के शासन की अंत की मांग है। ईरान में हो रहे वर्तमान संकट की नीवं वर्ष 2018 से अमरीका द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों द्वारा ही रख दी गई थी। इस समस्या को समझने के लिए ईरान के इतिहास से होते हुए वर्तमान परिस्थितियों तक का विश्लेषण निम्नवत है । प्राचीन ईरान को फारस कहा जाता था जो एक शक्तिशाली साम्राज्य था । इन साम्राज्यों में राजा (शाह) शासन करते थे, जो बडे भू-भाग पर नियंत्रण रखते थे । 7वीं सदी में अरबों के आक्रमण के बाद ईरान में इस्लाम का प्रसार हुआ जिसमें शिया इस्लाम की प्रमुखता रही। 20 वीं सदी में मोहम्मद रेजा पदल्लवी के नेतृत्व में ईरान में राजशाही स्थापित हुई जिसनें पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण की नीतियों को बढावा दिया। शाह की नीतियों के खिलाफ जनता में असंतोष फैला और पश्चिमी नीतियों का विरोध शुरू हुआ। राजशाही के विरोध का परिणाम 1979 की इस्लामिक कांति के रूप में परिणीत हुआ और राजशाही का अंत करके ईरान एक इस्लामिक गणराज्य बन गया जहाँ इस्लामी कानून एवं सिंद्वातों का पालन किया गया। ईरान का संविधान धार्मिक और लोकतांत्रिक तत्वों का मिश्रण बना जिसमें सर्वोच्च शक्ति दी गई सर्वोच्च नेता को, जिसे रहबर कहते है ।

राष्ट्रपति और संसद (मजलिस) के लिए चुनाव होते है । लेकिन ये सर्वोच्च नेता ' रहबर' के अधीन होते है । 1979 की इस्लामिक कांति ने न सिर्फ ईरान बल्कि मध्य पूर्व के अन्य देशों को प्रभावित किया जिसके परिणामस्वरूप मध्य पूर्व के देशों में कटटरवादी व तानाशाही नेता सत्तासीन हुए । ईरान के पडोसी देश इराक जिसकी बहुसंख्यक आबादी शिया थी किन्तु शासक सद्दाम हुसैन सुन्नी । सद्दाम हुसैन को डर था कि शिया बाहुल्य आबादी इराक में विद्रोह कर सकती है। 22 सितम्बर 1980 को इराक ने ईरान पर हवाई हमला कर ईरान-इराक युद्ध प्रारम्भ किया जो कि 1980 से 1988 तक चला। इस युद्ध में अमरीका व अन्य पश्चिमी देश, सोवियत संघ ने ईरान का साथ दिया। जबकि सीरिया ने इराक का । 20 अगस्त 1988 को संयुक्त राष्ट्र सरक्षा परिषद ने इस अनिर्णायक युद्ध का युद्धविराम कराया। 08 वर्षो तक ईरान-इराक युद्ध ने ईरान की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया। लाखों लोगों की मौत, शिया चरमपंथी समुदायों का उदय मध्य-पूर्व में अस्थिरता का दौर इसके परिणाम रहे । वर्ष 2002 में ईरान के एक विपक्षी समूह ने दुनिया के सामने नंताज (Natan) और अराक (तां) में दो गुप्त परमाणु सुविधाओं का खुलासा किया। इस खुलासे ने मध्य पूर्व में खलबली मचा दी । इजराइल, सउदी अरब जैसे देशों ने वैश्विक स्तर पर दबाव बनाकर अमरीकी, फांस, जर्मनी, यूके आदि देशों को ईरान के परमाणु कार्यक्रम के खिलाफ लामबंद कर दिया। अंतराष्ट्रीय परमाणु उर्जा एंजेसी (IASA) स्थानों का निरीक्षण करके युरेनियम संवर्धन गतिविधियों की निगरानी करने का दबाव बना डाला । वर्ष 2006 में ईरान ने अधिकारिक तौर पर नंताज संयंत्र में युरेनियम संवर्धन शुरू करने की पुष्टि की। 2010 मे नंताज संयंत्र पर 'स्टक्सनेट' नामक कम्प्युटर वायरस से हमला हुआ जिसने युरेनियम सवंर्धन के लिए इस्तेमाल सेन्ट्रीफयुज मशीन को क्षतिग्रस्त कर दिया। इसी दौरान ईरान के कई परमाणु वैज्ञानिको की हत्या की गई । वर्ष 2015 में एक ऐतिहासिक समझोता हुआ जिसे संयुक्त व्यापक कार्ययोजना (JCPOA) कहा जाता है। जिसे आमतौर पर ईरान परमाणु समझौता भी कहते है । इसके अन्तर्गत ईरान अपने परमाणु कार्यक्रमों को सीमित करने, युरेनियम संवर्धन के स्तर और भंडार को कम करने और IAEA को व्यापक निरीक्षण की अनुमति देने पर सहमति व्यक्त की । इसके एवज में ईरान पर लगे अधिकांश अंतराष्ट्रीय प्रतिबंधो को हटाया गया । परन्तु 2018 में अमरीकी राष्ट्रपति द्वारा ईरान पर इस समझौते के उल्लंघन का आरोप लगाते हुए अमेरिका को इस समझौते से बाहर निकाल लिया तथा ईरान पर प्रतिबंधों को फिर से लागू कर दिया । और इस प्रकार से ईरान पर पुनः अंतराष्ट्रीय प्रतिबंधों का दौर शुरू हुआ। वर्ष 2022 में ईरान ने अपने आपकोपा लिया है। जो कि परमाणु हथियार बनाने के आवश्यक 90 प्रतिशत के स्तर के काफी करीब है । वर्ष 2018 के अमरीकी प्रतिबंधों के ईरान की अर्थव्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई। ईरान की अर्थव्यवस्था मख्यत प्राकृतिक तेल पर ही निर्भर है। जिसे अंग्रेजी में डच डिसीस सिंड्रोम कहते है।

अमेरिकी प्रतिबंध ने ईरानी अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया। डॉलर की कमी ने दुसरे देशों से आवश्यकता के सामान के आयात को प्रभावित किया जिससे बढती मंहगाई, मुद्रा का अवमुल्यन से परेशान जनता विरोध प्रदर्शन की तरफ प्रेरित हुई । ईरानी सरकार द्वारा कटटरपंथी इस्लामी रीति-रिवाजों का थोपना, महिला अधिकारों का हनन, आजादी पर पांबदी आदि कारणों ने 2022 में ' महसा अमीनी प्रदर्शन' का रूप लिया जो कि 2023 तक अनवरत रूप से चला। इस प्रकार आंदोलनो में ईरान सरकार के खिलाफ युवाओं (Gen>) ने बडी संख्या में भागीदारी की । सोशल मीडिया का इस्तेमाल करके आंदोलनों को संगठित किया गया । वर्तमान विरोध प्रदर्शन में रियाल का एतिहासिक नीचले स्तर पर गिरना, जनता की कय शक्ति कम होना, अनियंत्रित मंहगाई, बेरोजगारी, रोजमर्रा की कठिनाईया आदि प्रमुख कारक है, हालांकि ईरान सरकार इसमें विदेशी शक्तियों यथा अमरीका, इजराइल आदि देशों का हाथ बताती है। व्यापारियों एवं बाजारों से प्रारंभ हुआ यह आंदोलन छात्रों, श्रमिकों एवं युवा वर्ग से फैलती हुई सरकारी नीतियों के खिलाफ व्यापक विद्रोह का रूप ले चुका है। जिसकी मांग केवल आर्थिक सुधार तक सीमित नही बल्कि राजनीतिक और सामजिक संरचना में परिवर्तन भी है । ईरान संकट का असर ईरान की सरकार के भविष्य के साथ क्षेत्रीय संतुलन पर एवं व्यापक अंतराष्ट्रीय प्रभावों के साथ देखा जा सकता है। ईरान में चीन द्वारा वर्ष 2021 में 25 वर्षीय आर्थिक सहयोग के अन्तर्गत उर्जा अवसंरचना एंव व्यापार के क्षेत्र में 400 अरब डॉलर का निवेश करने की संधि भी वर्तमान परिस्थितियों से प्रभावित होगी।

■ लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं।

मन — ओशो

कुछ कभी-कभी निर्लिप्त सा मालूम देता है, लेकिन क्षण भर। और उस क्षण आनंद और प्रसन्नता का अनुभव होता है। थोड़ी कृपा और करो, ताकि मैं निर्लिप्त हो जाऊं; क्योंकि क्षण भर की निर्लिप्तता स्वप्नवत है। पहल बात, लोभ से न भरो। ध्यान में लोभ को मत लाओ, नहीं तो ध्यान खो जाएगा; जो क्षणभर मिल रहा है, वह भी खो जाएगा। अगर क्षण भर में मिल रहा है जो, उसे भी गंवाना हो, तो लोभ को ले आना। यह मैं यहां रोज देखता हूं। जब ध्यान की घटना शुरू होती है, स्वभावतः लोभ जगता है। लोभ तो पड़ा है भीतर। लोभ कोई धन का ही थोड़े होता है, ध्यान का भी होता है। लोभ तो लोभ है; किस चीज का इससे कोई संबंध नहीं है। लोभ का मतलब हैः और ज्यादा। धन हो, तो और ज्यादा। पद हो, तो और ज्यादा। प्रतिष्ठा हो, तो और ज्यादा। जो भी हो, वह और ज्यादा। यही लोभ पड़ा है तुम्हारी मटकी में। इस लोभ को बाहर विदा करो। अन्यथा जब ध्यान आएगा, यह लोभ कहेगा और ज्यादा। क्षणभर में क्या होगा! शाश्वत चाहिए। अब थोड़ा समझो। एक बार में एक ही क्षण तो मिलता है। दो क्षण तो साथ कभी मिलते नहीं। अगर एक क्षण में भी शांत होना आ गया, तो और क्या चाहिए! सारा जीवन शांत हो जाएगा। एक क्षण में शांत होना आ गया, तो तुम्हारे हाथ में कला आ गई। मगर यह लोभ कहेगा कि एक क्षण की शांति से क्या होता है! एक-एक कदम चल कर आदमी हजार मील की यात्रा पूरी कर लेता है। कोई हजारों कदम एक साथ तो चल भी नहीं सकता। दो कदम भी एक साथ नहीं चल सकते। चलते तो तब हो, जब एक कदम चलते हो। एक क्षण मिलता है एक बार में। तुम्हें एक क्षण को ध्यान में रंगने की कला आ गई, धन्यभागी हो। अब लोभ को मत जगाओ, नहीं तो इस क्षण को भी नष्ट कर देगा। अब तुम कहते होः क्षण भर की निर्लिप्तता स्वप्नवत है। यह तुम्हारा लोभ कह रहा है। तुम्हारी मांग पैदा होने लगी। जब ध्यान की घटनी शुरू होती है, तो पहले तो क्षण में ही घटेगी; क्षण का ही द्वार खुलेगा। अब जब क्षण का झरोखा खुले, तो दो बातें संभव हैं। एक तो यह कि तुम धन्यवाद दो परमात्मा को कि हे प्रभु, मैं इतना भी योग्य न था, तूने क्षण भर को खिड़की खोली, इतना भी बहुत है। यह तेरे प्रसाद से ही हुआ होगा; यह तेरी अनुकंपा से हुआ होगा, क्योंकि तू रहीम है, रहमान है, इसलिए हुआ होगा।

जराकुश के जरिये दूर भगाएं रोग

■ **दर्द और सूजन में राहत**
इसमें प्राकृतिक एनाल्जेसिक (दर्द कम करने वाले) गुण पाए जाते हैं।
जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और सूजन में लाभकारी।

■ **पाचन तंत्र को मजबूत करना**
गैस, अपच और कब्ज में राहत देती है।
भूख बढ़ाने और पाचन क्रिया को संतुलित करने में मदद करती है।

■ **रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए**
शरीर में इंफेक्शन से लड़ने की शक्ति बढ़ाती है।
सर्दी-जुकाम में उपयोगी मानी जाती है।

■ **त्वचा के लिए फायदेमंद**
त्वचा की एलर्जी, खुजली और जलन में राहत देती है।
शरीर की अंदरूनी गर्मी को संतुलित करती है।

स्रोत : मीडिया इनपुट्स

'हमारे मेहुल भाई', नीरव मोदी, ललित मोदी और विजय मालया, सभी अरबपति हैं, और सभी पर बैंकों का अरबों रुपया बकाया है, जो भारत के इतिहास में सबसे बड़ी संगठित लूट है, ये सभी देश को छोड़ कर भाग चुके हैं। यह सब 'सरकार की अरबपतियों के भाग निकलने में मददगार सेवा' का हिस्सा है।

स्वाति चतुर्वेदी, पत्रकार
@bainjal

मस्तिष्क की नई समझ व भविष्य की चिकित्सा

विजयकांत मिश्र
वरिष्ठ पत्रकार

इक्कीसवीं सदी को यदि मस्तिष्क की सदी कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिस तरह बीसवीं सदी में भौतिकी और रसायन विज्ञान ने मानव सभ्यता की दिशा बदली, उसी तरह आज तंत्रिका विज्ञान (न्यूरो साइंस) मानव जीवन, स्वास्थ्य और व्यवहार की गुत्थियों को सुलझाने में केंद्रीय भूमिका निभा रहा है। हाल के वर्षो में न्यूरो विज्ञान में हुए शोध यह स्पष्ट करते है कि मस्तिष्क कोई स्थिर संरचना नहीं, बल्कि एक जीवंत, अनुकूलनशील और आजीवन बदलने वाली प्रणाली है। लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि मस्तिष्क का विकास एक निश्चित उम्र के बाद रुक जाता है। लेकिन न्यूरोप्लास्टिसिटी पर हुए नवीनतम शोध इस धारणा को पूरी तरह खारिज करते है। अब यह स्थापित हो चुका है कि मस्तिष्क जीवन भर स्वयं को पुनर्गठित करता रहता है। चोट, स्ट्रोक या किसी न्यूरोलॉजिकल बीमारी के बाद भी मस्तिष्क नए न्यूरोनल कनेक्शन बनाकर कार्यक्षमता को आंशिक या पूर्ण रूप से पुनः प्राप्त कर सकता है।यह खोज चिकित्सा विज्ञान के लिए मील का पत्थर है, क्योंकि इससे यह उम्मीद जगी है कि जिन रोगों को अब तक लाइलाज माना जाता था, उनके उपचार और पुनर्वास की संभावनाएँ कहीं अधिक व्यापक है।

न्यूरो विज्ञान का एक और महत्वपूर्ण मोड़ यह है कि अब मस्तिष्क को अलग-अलग खंडों में बांटकर देखने की प्रवृत्ति कमजोर पड़ रही है। नवीन शोध बताते है कि संज्ञानात्मक कार्य-जैसे स्मृति, निर्णय, भावना और भाषा-किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं होते, बल्कि मस्तिष्क के विभिन्न हिस्सों के आपसी सहयोग से संचालित होते है।

यह समझ न केवल मानसिक रोगों की व्याख्या को बदल रही है, बल्कि शिक्षा, मनोविज्ञान और व्यवहार विज्ञान को भी नई दिशा दे रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उन्नत न्यूरोइमेजिंग तकनीकों ने न्यूरो विज्ञान को अभूतपूर्व गति दी है। आज मस्तिष्क की गतिविधियों को पहले से कहीं अधिक सूक्ष्मता से देखा और समझा जा सकता है। एआई आधारित विश्लेषण से अल्जाइमर और पार्किंसंस जैसे न्यूरोडीजेनेरेटिव रोगों के शुरुआती संकेतों की पहचान संभव हो रही है।

इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि रोग का पता तब चल सकता है, जब लक्षण स्पष्ट रूप से सामने भी नहीं आए होते। यह समय रहते उपचार और जीवनशैली में बदलाव का अवसर देता है। पार्किंसंस, अल्जाइमर और अन्य न्यूरोडीजेनेरेटिव रोग आज वैश्विक स्वास्थ्य चुनौती बन चुके है। बढ़ती उम्र के साथ इन रोगों का खतरा बढ़ता जा रहा है। हालिया शोध यह दर्शाता है कि इन रोगों के पीछे केवल उम्र नहीं, बल्कि आनुवंशिक वेरिएंट्स और पर्यावरणीय कारकों की जटिल अंतःक्रिया काम करती है। विशेष रूप से पार्किंसंस रोग में यह समझ विकसित हो रही है कि किस प्रकार कुछ आनुवंशिक परिवर्तन मस्तिष्क की संरचना और न्यूरोनल क्षरण को प्रभावित करते है। यह ज्ञान भविष्य में अधिक लक्षित और व्यक्तिगत उपचार विकसित करने में सहायक होगा।

नवीन उपचार: परंपरा से आगे: न्यूरो विज्ञान में उपचार की अवधारणा भी तेजी से बदल रही है। ऊर्जा चिकित्सा जैसे माइक्रोकरंट स्टिमुलेशन पर हो रहा शोध संकेत देता है कि न्यूरोनल फायरिंग को नियंत्रित कर मस्तिष्क की अनुकूलन क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इसके साथ ही स्ट्रोक के बाद एंटीकोएग्यूलेशन, मल्टीपल स्केलेरोसिस में प्लाज्मा एक्सचेंज और जिद्दी सिरदर्द में नर्व ब्लॉक जैसी तकनीकें यह दिखाती है कि आधुनिक चिकित्सा अब एक इलाज सभी के लिए की सोच से आगे बढ़ चुकी है। कनकशन यानी सिर की हल्की लेकिन बार-बार होने वाली चोटों के बाद किशोरों और युवाओं में नियंत्रित व्यायाम की भूमिका पर भी महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आए है, जो खेल और स्वास्थ्य नीति दोनों के लिए प्रासंगिक है।

भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में न्यूरोलॉजिकल रोगों की चुनौती और भी जटिल है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान और सेंटर फॉर ब्रेन रिसर्च जैसे संस्थानों द्वारा किए जा रहे अनुदैर्ध्य अध्ययन, विशेषकर ग्रामीण आबादी में उम्र बढ़ने और मस्तिष्क स्वास्थ्य के संबंध को समझने में ऐतिहासिक भूमिका निभा रहे है। यह शोध न केवल भारत की ज़मीनी हकीकत को सामने लाता है, बल्कि वैश्विक न्यूरो विज्ञान को भी नई दृष्टि प्रदान करता है, जहाँ संसाधन सीमित होने के बावजूद वैज्ञानिक समाधान खोजे जा रहे है। न्यूरो विज्ञान की ये प्रगति केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। नीति-निर्माताओं के लिए यह स्पष्ट संदेश है कि मानसिक और न्यूरोलॉजिकल स्वास्थ्य को सार्वजनिक स्वास्थ्य के केंद्र में रखा जाए। शिक्षा प्रणाली, कार्यस्थल संस्कृति और स्वास्थ्य ढाँचे में मस्तिष्क स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना अब विकल्प नहीं, आवश्यकता है।

आज का न्यूरो विज्ञान हमें यह सिखाता है कि मस्तिष्क केवल रोगों का केंद्र नहीं, बल्कि संभावनाओं का महासागर है। एआई आनुवंशिकी और उन्नत इमेजिंग के मेल से मानव मस्तिष्क को समझने की यात्रा एक निर्णायक मोड़ पर है। यदि विज्ञान, नीति और समाज मिलकर इस दिशा में आगे बढ़ें, तो आने वाला समय न केवल न्यूरोलॉजिकल रोगों के बेहतर उपचार का होगा, बल्कि एक अधिक संवेदनशील, जागरूक और स्वस्थ समाज के निर्माण का भी।

रीडर्स मेल

यात्री शेड न होने से परेशानी

गिरीडीह-धनबाद मुख्य मार्ग एनएच 114 ए पर स्थित धनबाद जिले के टुंडी थाना अंतर्गत लोधरिया मोड़ से रोज बड़ी संख्या में लोग गिरीडीह एवं धनबाद की ओर जाने के लिए बस की प्रतीक्षा करते हैं। लेकिन यहां यात्री शेड नहीं रहने के कारण यात्रियों को तेज धूप, बरसात एवं ठंड में खुले आसमान के नीचे खड़े रहना पड़ता है जिससे बुजुर्गों, महिलाओं एवं बच्चों को विशेष रूप से परेशानी होती है। यात्री शेड केवल एक छत नहीं, बल्कि एक सम्मानजनक प्रतीक्षा का स्थान होता है। इसे एक छोटी सी सुविधा समझ कर टालना लोगों की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ है। झारखंड परिवहन विभाग एवं स्थानीय विधायक को इस दिशा में प्राथमिकता से काम करना चाहिए एवं जल्द ही लोधरिया मोड़ पर यात्री शेड का निर्माण करवाना चाहिए। जनता को ये सारी सुविधाएं मिलनी चाहिए और सरकार का भी ययह फर्ज बनता है कि वह इस मामले में गंभीरतापूर्वक विचार करे।

सुशील कुमार , झारखंड

स्वदेशी से संप्रभुता का मार्ग प्रशस्त

'स्वदेशी आंदोलन' से आर्थिक संप्रभुता का मार्ग प्रशस्त होगा क्योंकि स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता मिलने से घरेलू उद्योगों को बढ़ावा मिलता है। इससे रोजगार सृजन होगा और विदेशी मुद्रा का अपव्यय भी रुकेगा। ब्रिटिश शासन में स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वदेशी अपना कर विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया था, जिससे आयात में गिरावट आई और स्थानीय उद्योगों ने गति पकड़ी। डोनाल्ड ट्रंप द्वारा लगाए गए 25 फीसद टैरिफ शुल्क के घटनाक्रम के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'स्वदेशी' और 'वोकल फोर लोकल' अभियान के माध्यम से घरेलू उत्पादन, एमएसएमई और स्थानीय ब्रांडों को बढ़ावा देने का आह्वान किया है। उनका यह विचार बेहद सराहनीय है। इससे निर्यात आत्मनिर्भर होंगे, व्यापार घाटा घटेगा, रोजगार बढ़ेगा और बाहरी दबाव से देश की संप्रभुता सुरक्षित रहेगी। नवाचार एवं उत्पादन से संप्रभुता सुनिश्चित है जिसमें हर नागरिक की भागीदारी अनिवार्य है।

बालकराम , इंदौर

चुप रहना पीड़ा देता है

दहेज हत्या की घटनाएं केवल अदालतों के केस फाइलों तक सीमित नहीं बल्कि समाज के माथे पर काला धब्बा हैं। कानून किताबों में है, लेकिन बेटियों की चिताएं आज भी जल रही हैं। आंकड़े चीख कर कह रहे हैं कि 6450 केस दर्ज हुए और सजा दर महज 2 फीसद ही है। त्वरित और उचित सजा के अभाव में अदालतों में तारीखों के बढ़ते रहने गुनहगार निर्भिक हो जाते हैं और समाज बेटी को ससुराल की 'मालिकाना संपत्ति' मानकर चुप रह जाता है? मान-सम्मान की लाज में परिवार बेटियों को नरक में सौंप देता है। ऐसे में उनके साथ जो वीभत्स घटनाएं होती है वह पीड़ा देती है। इस बारे में सभी को सोचना होगा।

धीरेन्द्र कुमार, असम

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा — राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा राष्ट्रीय सहारा काम्पलेक्स, पार्क रोड, गोरखपुर में मुद्रित तथा प्रकाशित। । वरिष्ठ स्थानीय संपादक -पीयूष बंका। स्थानीय संपादक-दीप्त भानु डे *।
गोरखपुर कार्यालय- पी.बी.एक्स- 0551-2202362, 63, 64, फैक्स- 0551-2202365
वर्ष-26 , अंक 337
आर.एन.आई.सं.यू.पी.ए.आई.एन./2000/1707
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

आमजन में उम्मीद की लौ जलाने में कामयाब रही मोदी सरकार

मनोज कुमार अग्रवाल

पीएम मोदी का संकल्प है कि स्वतंत्रता के 100वें वर्ष यानी वर्ष 2047 तक भारत को 35 ट्रिलियन डॉलर की पूर्ण विकसित अर्थव्यवस्था बनाना और विश्व की सर्वोच्य शक्ति के रूप में स्थापित करना है। इस संकल्प की पूर्ति में सभी प्रदेश सहभागी बनने के लिये प्रतिबद्ध है।

आजादी के 77 साल में यदि भारत के विकास क्रम की समीक्षा की जाए तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 11 वर्षों का कार्यकाल यकीनन पिछले साढ़े छह दशक पर भारी है। मोदी सरकार ने देश के विकास की एक नयी लकीर खींची है। नरेन्द्र मोदी का कार्यकाल सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के लिये समर्पित रहा है। यह समय अनूठा, अद्भुत और अकल्पनीय है। इस यात्रा में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत को विश्व में मान, सम्मान और श्रेष्ठ स्थान प्राप्त हुआ है। प्रधानमंत्री मोदी की यह यात्रा देश की बहुआयामी प्रगति, समृद्धि और सम्मान की यात्रा है। इसमें एक ओर भारत विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बना है, देश का रक्षा निर्यात 34 गुना बढ़ा है और भारत अब डिफेंस इम्पोर्टर से एक्सपोर्टर बन गया है। वहीं 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आये हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी के सम्मान का मंत्र दिया। उन्होंने इन्हीं चार स्तंभों के समग्र विकास से वर्ष 2047 तक विकसित भारत निर्माण का मार्ग बताया।

प्रधानमंत्री जी की नीतियों और निर्णयों ने नये आत्मनिर्भर भारत निर्माण को गति दी है। 11 वर्ष पूर्व पूर्व पीएम मोदी ने संसद की सीढ़ियों को नमन करके जो संकल्प व्यक्त किये थे, उनमें उनकी भावी यात्रा के साथ नये भारत निर्माण के संकेत भी थे। उन्होंने निरंतर अपने संकल्पों की सिद्धि के साथ देश को आगे बढ़ाया है और राष्ट्र तथा समाज के उत्थान के लिए अभूतपूर्व निर्णय लिये हैं। अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण, भारत में नागरिकता कानून (सीएए) बनाने, तीन तलाक जैसे अमानवीय कानून को समाप्त करने, वक्फ संपत्ति का मुस्लिम समाज के कल्याण में उपयोग के लिए वक्फ संशोधन विधेयक कानून लाने जैसे निर्णय प्रधानमंत्री जी की संकल्प शक्ति से ही संभव हुए हैं। उनका दृढ़ संकल्प सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक में भी दिखाई दिया। बालाकोट के बाद ऑपरेशन सिंदूर से भारत के सामर्थ्य को पूरी दुनिया ने देखा है। पहलगाम में बहनों के सामने आर्तोकियों ने उनका सिंदूर मिटाया था, प्रधानमंत्री जी के आ ान पर भारत ने ऑपरेशन सिंदूर से यह साबित कर दिया कि यह नया भारत है जो राष्ट्र के सम्मान, नागरिकों की सुरक्षा और मानवता के लिए घर में घुसकर भी मारना जानता है। पीएम मोदी के कार्यकाल की यह समृद्ध यात्रा राष्ट्र की उमति, आधारभूत समस्याओं के निराकरण और वैश्विक छवि के उत्थान की रही है। देश के 80 करोड़ से अधिक गरीबों को निःशुल्क अन्न, 4 करोड़ से अधिक परिवारों को पका घर, हर घर में शौचालय, 15.6 करोड़ से अधिक भरों में नल से जल, 10 करोड़ से अधिक मरों में उज्वला योजना से गैस कनेक्शन और गांवों को रोशन किया है। उनके स्वच्छ भारत अभियान के आ ान पर पूरा देश स्वच्छता एवं साफ सफाई में जुट गया। प्रधानमंत्री जी ने सबका साथ, सचका विकास और सबका विश्वास का उद्घोष किया। उनकी नीतियों में अंतिम छोर के अंतिम व्यक्ति के कल्याण की अवधारणा है। सबके स्वस्थ और सुखमय जीवन के लिए आयुष्मान भारत अभियान चलाया। इसमें 9 करोड़ से अधिक लोगों का मुफ्त उपचार हुआ है। सत्तर वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति को भी निःशुल्क उपचार मिला है। 16 हजार से अधिक जन औषधि केन्द्रों से सस्ती और अच्छी दवाएं उपलब्ध करवाई है। कोरोना काल में देशवासियों को आपदा में अवसर का मंत्र देते हुए प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत निर्माण का संकल्प दिया और देशवासियों को स्वदेशी निःशुल्क वैक्सीन उपलब्ध करवाई। इस भारतीय वैक्सीन को दुनिया के कई देशों ने भी स्वीकारा। उन्होंने श्रृंखलाबद्ध लोक एवं जन कल्याण कारी योजनाओं से समाज के हर वर्ग के समग्र विकास की समुचित व्यवस्था की। जनधन योजना से 55 करोड़ से अधिक लोगों को वित्तीय धारा से जोड़ा गया। डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के माध्यम से गरीवों को 44 लाख करोड़ रुपये का लाभ प्राप्त हुआ है। पीएम स्वनिधि और स्ट्रीट वेंडर से रेहड़ी-पटरी के व्यवसायियों को आधार दिया और आत्मनिर्भर भारत की नींव रखी, युवा शक्ति को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए, नई शिक्षा नीति के साथ 1.6 करोड़ से अधिक युवाओं का कौशल विकास और 1.6 लाख से अधिक स्टार्टअप्स शुरू कर युवाओं को विकसित भारत के संकल्प की पूर्ति के लिये भागीदार बनाया है। मध्यप्रदेश ने सबसे पहले नई शिक्षा नीति को अमल में लाया और युवाओं को कौशल विकास का प्रशिक्षण देकर रोजगार तथा स्व-रोजगार के लिये अनंत संभावनाए विकसित की है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, 7.7 करोड़ से अधिक किसान क्रेडिट कार्ड तथा फसल बीमा से अप्रदाताओं को संबल मिला है। महिलाओं की सुरक्षा के उपाय, आर्थिक स्वावलंबन, सामाजिक उत्थान और राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए लोकसभा और विधानसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया है। देशभर में लगभग 3 करोड़ लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा है। देश में 90 लाख से अधिक स्व सहायता समूहों के माध्यम से 10 करोड़ ग्रामीण महिलाएं लाभान्वित हुई हैं। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली है। वर्ष 2014 में भारत की अर्थव्यवस्था 10वें स्थान पर थी। प्रधानमंत्री जी की आर्थिक नीतियों, विशेषकर नोटबंदी जिससे कदाचार पर नियंत्रण हुआ, डिजिटलाइजेशन और यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) से ऑनलाइन लेनदेन का चलन बढ़ा। इन सभी नीतियों ने आर्थिक विकास के निर्णयों को सबल किया और भारत दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया। प्रधानमंत्री जी ने विकास के साथ विरासत का आ ान किया है। विरासत को सहेजने के लिए उन्होंने धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों के विकास और पुनर्प्रतिष्ठा का कार्य आरम्भ किया तथा इसे धार्मिक पर्यटन से जोड़ा। लोगों का अपनी विरासत के प्रति सम्मान बड़ने के साथ पर्यटकों की संख्या भी बड़ी है। नमामि गंगे योजना से पवित्र नदियों की सफाई अभियान के साथ जल संरक्षण की परम्परा विकसित हो रही है। उन्होंने स्वदेशी तकनीक विकसित करने का आ ान किया था जिसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। प्रधानमंत्री जी ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र (इसरो) के वैज्ञानिकों से स्वयं चर्चा की और आवश्यक बजट तथा सुविधाएं उपलब्ध करवाई। इसका परिणाम यह है कि भारत की अंतरिक्ष अनुसंधान तकनीक विश्व में अग्रणी बनी और चंद्रमा के दक्षिणी व पर पहुंचने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया। कनेक्टिविटी से विकास को गति प्रदान करने के लिये प्रधानमंत्री जी ने सड़क और रेल नेटवर्क का विस्तार किया। 23 शहरों में मेट्रो परियोजनाओं की प्रगति, बंदरगाह, हवाई मार्ग, हाई स्पीड कॉरिडोर निर्माण के लक्ष्य को स्वरूप प्रदान किया है। अटल टनल और दुनिया का सबसे ऊंचा आर्च ब्रिज चेनाब आकार ले चुका है। पीएम मोदी का संकल्प है कि स्वतंत्रता के 100वें वर्ष यानी वर्ष 2047 तक भारत को 35 ट्रिलियन डॉलर की पूर्ण विकसित अर्थव्यवस्था बनाना और विश्व की सर्वोच्य शक्ति के रूप में स्थापित करना है। इस संकल्प की पूर्ति में सभी प्रदेश सहभागी बनने के लिये प्रतिबद्ध है। देश तमाम दुनिया के बदलते समीकरणों के बीच भी अधिक स्वायत्तवता और सम्मान के साथ अंतरराष्ट्रीय जगत में अपनी गरिमा को बनाए रखने में कामयाब रहा है ।वहीं आम आदमी में सरकार उम्मीद की एक लौ जगाने में भी कामयाब रही है यह स्वयं मे बड़ी बात है क्योंकि 140 करोड़ भारतीयों की संकल्प शक्ति ही सरकार की ताकत है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

संपादकीय

बिना मुकदमे के कैद, लोकतंत्र कहां है

बिना मुकदमे के लंबी कैद लोकतंत्र के अस्तित्व पर सवाल उठाती है। इस समय भारत इसी सवाल से दो-चार हो रहा है। यूं तो रोजाना ढेरों प्रसंग ऐसे घटित हो रहे हैं, जिनमें लोकतंत्र को लेकर चिंता उपजती है, ऐसे वक्त में न्यायालय से आए कुछ फैसले आस बंधाते हैं कि सत्ता चाहे अपने स्वार्थ के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों और अधिकारों से समझौता कर ले, लेकिन देश की न्याय व्यवस्था हर हाल में लोकतंत्र की रक्षा करेगी। लेकिन सोमवार को उमर खालिद पर आए फैसले ने फिर यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि देश में लोकतंत्र अब किस हाल में पहुंच गया है। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को छात्र नेताओं उमर खालिद और शरजील इमाम को जमानत देने से इनकार कर दिया, जो 2020 के दिल्ली दंगों के मामले में पांच से ज्यादा वर्षों से जेल में बंद हैं। हालांकि कोर्ट ने अन्य पांच सह-आरोपियों-गुलफिशा फातिमा, मीरान हैदर, शिफा उर रहमान, मोहम्मद सलीम खान और शादाब अहमद को सशर्त जमानत दे दी है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस एन.वी. अंजारी की पीठ ने 10 दिसंबर को फैसला सुरक्षित रख लिया था। पूरे देश की नजरें सोमवार के फैसले पर थीं। ज्यादातर लोग उम्मीद कर रहे थे कि सभी सात आरोपियों को 5 जनवरी को जमानत मिल जाएगी। लेकिन अदालत ने उमर और शरजील को छोड़कर बाकी को जमानत दे दी। उमर खालिद और शरजील इमाम पर सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि इस मामले में अन्य आरोपियों की तुलना में वे 'अलग स्थिति' में हैं। कोर्ट ने कहा कि मामले के शुरूआती सुबूतों से लगता है कि उमर खालिद और शरजील दंगों की योजना और रणनीति बनाने में शामिल थे। ध्यान देने वाली बात ये है कि उमर खालिद पर अब तक मुकदमा शुरू नहीं हुआ है। यानी चाहे जितने भी गंभीर आरोप हों और उसके लिए सबूत हों, अब तक उन्हें पुष्ट करने की प्रक्रिया शुरू ही नहीं हुई है। जब मुकदमा चलेगा और फैसला आएगा, तब पता चलेगा कि उमर खालिद दोषी थे या नहीं, लेकिन अभी उन्हें बिना दोषसिद्धि के ही पांच साल से ज्यादा की जेल तो भुगतनी पड़ ही गई है। और ये वो पांच साल हैं, जब व्यक्ति में सबसे अधिक ऊर्जा, रचनात्मकता, सकारात्मकता और सक्रियता होती है। 11 अगस्त 1987 को जन्मे उमर खालिद अभी 38 बरस के ही हैं। पीएचडी करने के बाद वे अपना भविष्य संवार सकते थे। लेकिन पढ़ने के दौरान और उसके बाद भी उन्होंने वंचितों के हक में आवाज उठाना जारी रखा, सरकार को परेशान करने वाले सवाल पूछे, नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ अपनी दलीलें पेश कीं, इस कानून के विरोध में हो रहे प्रदर्शनों में हिस्सा लिया। और इसके बाद से वो सलाखों में कैद हैं। 2020 से कैद उमर खालिद को एक मामले में अप्रैल 2021 में जमानत मिल गई थी, दूसरे मामले में उनके खिलाफ अनलॉफुल एंड एक्टिविटिज प्रिवेंशन एक्ट यानी यूएपीए के तहत आरोप लगाए गए हैं। इस मामले में अब तक दो अदालतें उनकी जमानत याचिका खारिज कर चुकी हैं। सुप्रीम कोर्ट में उनकी जमानत याचिका अप्रैल 2023 से लंबित थी, जो अब खारिज कर दी गई है। अदालत ने कहा कि इस आदेश के एक साल बाद या गवाहों की छानबीन पूरी होने के बाद उमर खालिद और शरजील इमाम जमानत के

चिंतन-मनन

क्यों कहते हैं विष्णु भगवान को नारायण

भगवान विष्णु के हजारों नाम हैं। इनमें एक प्रमुख नाम है नारायण। फिल्मों, टीवी सीरियल या रामलीला में आपने देखा होगा कि नारद मुनि भगवान विष्णु को नारायण नाम से पुकारते हैं। इस नाम का धार्मिक रूप से बड़ा महत्व है। इस एक नाम में सृष्टि का संपूर्ण सार छिपा हुआ है। इसलिए शास्त्रों में अधिकांश स्थानों पर विष्णु भगवान को नारायण नाम से संबोधित किया गया है। हिन्दू धर्म में अठारह पुराणों का वर्णन मिलता है। इन अठारह पुराणों में विष्णु पुराण एक है। इस पुराण में सृष्टि की रचना का वर्णन किया गया है। इसी प्रम में बताया गया है किस प्रकार विष्णु भगवान ने वाराह रूप धारण करके पृथ्वी को रसातल यानी पाताल लोक से उठाकर जल के मध्य में स्थित किया। इसके बाद ब्र ा जी ने सत्व, रज और तम गुणों से असुर, देव, राक्षस, यक्ष, मनुष्य, सर्प एवं अन्य जीव-जन्तुओं की रचना की।

विष्णु पुराण में बताया गया है कि सृष्टि के समाप्ति के समय सब कुछ जल में समा जाता है और संपूर्ण ब्र ाण्ड अंधकारमय हो जाता है। भगवान विष्णु चिर निद्रा में जल में शयन करते हैं। देवताओं का दिन आरंभ होने पर भगवान विष्णु फिर से सृष्टि की रचना करते हैं और ब्र ा एवं शिव की उत्पत्ति उन्हीं से होती है। भगवान विष्णु प्रथम नर रूप में व्यक्त होते हैं। इसलिए शास्त्रों में इन्हें आदिपुरूष कहा गया है। आदि पुरूष विष्णु का निवास यानी आयन नार यानी जल है इसलिए भगवान विष्णु को नारायण नाम से संबोधित किया जाता हैं।

प्रदूषित जल से जन-जीवन पर संकटः इंदौर की चेतावनी कहानी

सुनील कुमार महला

कहां गया है कि जल ही जीवन है। लेकिन जल किसी की जान ले लें तो यह बहुत दुखद ही कहा जाएगा। हाल ही में देश के सबसे साफ शहर माने जाने वाले इंदौर के भागीरथपुरा इलाके में गंदा पानी पीने की वजह से उल्टी-दस्त होने से कम से कम छह लोगों की मौत की हो चुकी है तथा मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार फिलहाल शहर के 41 अस्पतालों में कुल 203 मरीजों का इलाज चल रहा हैं और इनमें से 34 लोगों को आईसीयू में रखा गया है और उनकी हालत को देखते हुए इलाज पर खास ध्यान दिया जा रहा है। अच्छी बात यह है कि गंदे पानी पीने से उल्टी-दस्त फैलने के बाद प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग लगातार हालात पर नजर बनाए हुए है और मरीजों को जरूरी मेडिकल सुविधा दी जा रही है। हालांकि, लोकल लोगों का दावा है कि गंदे पानी से छह महीने के एक बच्चे समेत कुल 16 लोगों की जान गई है। मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह घटना मुख्यतः शहर के कुछ इलाकों में हुई, जहाँ सीवर लाइन और जलापूर्ति पाइपलाइन में लीकेज/क्रॉस-कनेक्शन के कारण दूषित पानी घरों तक पहुंचा। इस पानी के सेवन से लोगों को तेज दस्त, उल्टी, बुखार और डिहाइड्रेशन जैसी गंभीर समस्याएं हुईं तथा जांच में पानी में हानिकारक बैक्टीरिया (जैसे ई-कोलाई) पाए गए, जो मानव मल से फैलते हैं।भारत ही नहीं, आज विश्व स्तर पर दूषित जल एक गंभीर मानव-स्वास्थ्य और विकास समस्या बना हुआ है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि विश्व तथा भारत-दोनों स्तरों पर दूषित जल (वाटर पोल्यूशन) के कारण लगभग समान हैं, हालांकि जनसंख्या घनत्व, औद्योगिकीकरण और प्रबंधन की कमी के कारण भारत में इनका प्रभाव अधिक गंभीर रूप में दिखाई देता है। प्रमुख कारणों में प्रमुख रूप से औद्योगिक अपशिष्टों,घरेलू सीवेज और मलजल,कृषि रसायनों का अत्यधिक उपयोग,ठोस कचरा और प्लास्टिक प्रदूषण,धार्मिक और सामाजिक गतिविधियाँ,खनन और निर्माण गतिविधियाँ तथा भूजल का प्राकृतिक व मानवजनित प्रदूषण आदि को शामिल किया जा सकता है। यह बहुत ही दुखद है कि आज विभिन्न कल-कारखानों से निकलने वाला रासायनिक कचरा, भारी धातुएँ (सीसा, पारा, आर्सेनिक), रंग, एसिड और विषैले तत्व बिना पर्याप्त शोधन के नदियों, झीलों और भूजल में छोड़ दिए जाते हैं। इससे जल न केवल पीने योग्य नहीं रहता, बल्कि जलीय जीवन भी नष्ट होता है। हमारे यहां सीवेज सिस्टम भी ठीक नहीं है और आज यह देखने में आता है कि बड़े बड़े शहरों और कस्बों में उत्पन्न होने वाला सीवेज अक्सर बिना उपचार के नदियों में बिना किसी रोक-टोक के धड़ल्ले से प्रवाहित कर दिया जाता है। कहना गलत नहीं होगा कि आज भारत में सीवेज ट्रीटमेंट क्षमता की कमी के कारण यह दूषित जल का सबसे बड़ा स्रोत बन चुका है। आज खेतों में अधिक उत्पादन लेने के लिए विभिन्न कीटनाशकों, उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है। वास्तव में,खेतों में प्रयुक्त रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक और खरपतवारनाशी वर्षा के पानी के साथ बहकर जलस्त्रोतों में पहुँच जाते हैं। इससे नाइट्रेट और फॉस्फेट की मात्रा बढ़ती है, जो जल को विषैला बनाती है।प्लास्टिक, पॉलीथिन, घरेलू कचरा और मेडिकल वेस्ट का अनुचित निस्तारण नदियों और तालाबों को प्रदूषित करता है। आज के समय में तो जल प्रदूषण का एक सबसे बड़ा और गंभीर कारण प्लास्टिक माना जा रहा है। आधुनिक जीवनशैली में प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है जैसे पॉलीथिन बैग, बोतलें, पैकेजिंग सामग्री और डिस्पोजेबल वस्तुएँ आदि। जिसके परिणामस्वरूप आज हमारी नदियों, झीलों और समुद्रों में बड़ी मात्रा में प्लास्टिक पहुँच रहा है।पाठक जानते हैं कि प्लास्टिक जैव-अपघटित नहीं होता, बल्कि सैकड़ों वर्षों तक जल में बना रहता है और धीरे-धीरे माइक्रोप्लास्टिक में बदल जाता है। ये सूक्ष्म कण जलीय जीवों द्वारा निगल लिए जाते हैं, जिससे उनकी मृत्यु होती है और अंततः यही विषैले कण खाद्य श्रृंखला के माध्यम से मानव शरीर तक पहुँचते हैं। इसके अलावा प्लास्टिक जल प्रवाह को बाधित करता है, नालों को जाम करता है और जल स्त्रोतों की प्राकृतिक शुद्धता को नष्ट करता है। इसलिए प्लास्टिक प्रदूषण न केवल पर्यावरण बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी एक गंभीर खतरा बन चुका है। आज दूषित जल की समस्या वैश्विक है, लेकिन भारत में कचरा प्रबंधन की कमजोरी इसे और गंभीर बनाती है।हमारा देश एक धार्मिक देश है और हमारे यहां नदियों, झीलों, पानी के विभिन्न स्त्रोतों आदि में मूर्तियों का विसर्जन, पूजा सामग्री, अस्थि विसर्जन और सामूहिक स्नान जैसी गतिविधियाँ जल में रसायन, रंग और जैविक कचरा बढ़ाती हैं, जिससे जल की गुणवत्ता प्रभावित होती है। आज विकास के नाम पर अंधाधुंध खनन गतिविधियां की जा रहीं हैं और खनन से निकला मलबा, विभिन्न रसायन और निर्माण कार्यों से बहकर आने वाली मि ी नदियों में गाद और विषैले तत्व बढ़ाती है, जिससे जल प्रदूषित होता है। इसके अलावा, कुछ क्षेत्रों में आर्सेनिक, फ्लोराइड और लवणता जैसी समस्याएँ प्राकृतिक हैं, लेकिन अंधाधुंध दोहन और प्रदूषित जल का रिसाव इन्हें और गंभीर बना देता है।निष्कर्षतः, हम यहां यह बात कही सकते हैं कि आज विश्व और भारत दोनों में दूषित जल की समस्या मानव गतिविधियों का ही परिणाम है। यदि समय रहते प्रभावी जल प्रबंधन, अपशिष्ट शोधन और जन-जागरूकता नहीं बढ़ाई गई, तो यह समस्या भविष्य में और भी भयावह रूप ले सकती है। यदि हम यहां जल से संबंधित आंकड़ों की बात करें तो विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और यूनिसेफ के अनुसार आज भी दुनिया में लगभग 2.2 अरब लोग सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल सेवा से वंचित हैं, यानी उन्हें ऐसा पानी नहीं मिल पाता जो घर पर उपलब्ध, निरंतर और दूषण-मुक्त हो। इनमें से करीब 1.7 अरब लोग ऐसे जल स्त्रोतों का उपयोग करते हैं, जिनमें मल-जनित प्रदूषण का जोखिम रहता है, जबकि लगभग 115 मिलियन लोग सीधे नदियों, तालाबों और झीलों जैसे सतही जल पर निर्भर हैं। आंकड़े बताते हैं कि दूषित पानी के सेवन से हर वर्ष लगभग 5 लाख से अधिक लोगों की मौत होती है, जिनमें बड़ी संख्या छोटे बच्चों की होती है। इसके साथ-साथ दुनिया में करीब 3.5 अरब लोग सुरक्षित स्वच्छता सुविधाओं से भी वंचित हैं, जिससे जल स्त्रोतों का प्रदूषण और बढ़ जाता है। ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि दूषित जल वैश्विक स्वास्थ्य, गरीबी और असमानता से गहराई से जुड़ी समस्या है।भारत में यदि दूषित जल की बात करें तो हमारे देश में दूषित जल की समस्या एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बन चुकी है। सरकारी व अंतरराष्ट्रीय आकलनों के अनुसार देश की लगभग 62% आबादी पेयजल के लिए भूजल पर निर्भर है, जबकि 250 से अधिक जिलों में भूजल फ्लोराइड, आर्सेनिक, नाइट्रेट, आयरन और भारी धातुओं से प्रदूषित पाया गया है । संसद में प्रस्तुत एक जानकारी के अनुसार 26,000 से अधिक ग्रामीण बस्तियों में लोगों को आज भी दूषित पानी पीने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।शहरी क्षेत्रों में भी स्थिति चिंताजनक है।एक आकलन के मुताबिक बहुत कम शहरी परिवारों को सीधे नल से सुरक्षित पेयजल उपलब्ध है, जबकि अधिकांश लोग फिल्टर/आरओ पर निर्भर हैं, जिसकी गुणवत्ता हर जगह सुनि त नहीं है । विश्व स्तर पर उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार भारत में असुरक्षित पानी से जुड़ी मौतों की दर लगभग 35 प्रति एक लाख जनसंख्या है, जो वैश्विक औसत से अधिक है ।

तेल की राजनीति और सत्ता का खेल : वेनेजुएला, अमरीका और 'अमेरिका फर्स्ट' की असहज सच्चाई

दिलीप कुमार पाठक

वेनेजुएला को लेकर एक बार फिर दुनिया की भू-राजनीति उबाल पर है। जिस देश के पास दुनिया का सबसे बड़ा प्रमाणित तेल भंडार है, वही देश आज राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक बदहाली और अंतरराष्ट्रीय दबावों के चक्रव्यूह में फंसा है। अमरीका द्वारा राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को पकड़ने, तेल उद्योग में सीधे दखल और सत्ता परिवर्तन की मंशा से जुड़ी खबरों ने यह सवाल फिर खड़ा कर दिया है कि क्या यह सब लोकतंत्र की रक्षा के लिए है या फिर संसाधनों पर नियंत्रण की वही पुरानी कहानी, जो इराक से लेकर पनामा तक दोहराई जाती रही है। अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के कथित बयान कि वेनेजुएला का तेल अब अमरीका की भागीदारी से चलेगा। केवल एक राजनीतिक टिप्पणी नहीं, बल्कि दशकों पुरानी रणनीति की गूंज हैं। वेनेजुएला का तेल साधारण नहीं है। यह भारी, गाढ़ा क्रूड है, जिसे रिफाइन करने की क्षमता अमरीका की बड़ी रिफाइनरियों के पास है। कभी एक समय था जब अमरीका प्रतिदिन लाखों बैरल तेल वेनेजुएला से आयात करता था। बाद में प्रतिबंधों, राजनीतिक टकराव और आंतरिक संकट के चलते यह सिलसिला टूट गया। आज वही तेल, वही जरूरत और वही भूख एक बार फिर वैश्विक राजनीति को दिशा दे रही है।

मादुरो को लेकर अमरीका का आरोप रहा है कि उनका शासन तानाशाही, भ्रष्ट और लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है। इसमें संदेह नहीं कि वेनेजुएला के भीतर आर्थिक संकट गहरा है, जनता महंगाई, बेरोजगारी और जरूरी वस्तुओं की कमी से जूझ रही है। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि क्या किसी देश के आंतरिक संकट का समाधान बाहरी सैन्य या राजनीतिक हस्तक्षेप है। क्या लोकतंत्र की स्थापना बमों, गिरफ्तारियों और तेल समझौतों के जरिए की जा सकती है।

इतिहास इस सवाल का जवाब देता है, लेकिन वह जवाब अमरीका के पक्ष में कम ही जाता है। इराक में सद्दाम हुसैन को हटाने के पीछे भी हथियारों और लोकतंत्र की दुहाई दी गई थी। नतीजा क्या हुआ, यह दुनिया ने देखा। लीबिया में गद्दाफी के पतन के बाद स्थिरता आई या अराजकता, यह भी किसी से छिपा नहीं। पनामा में मैनुअल नौरिएगा की गिरफ्तारी, हैती और आइवरी कोस्ट में सत्ता परिवर्तन, चेकोस्लोवाकिया में बाहरी दबाव हर जगह एक ही पैटर्न दिखता है। पहले नैतिकता की भाषा, फिर रणनीतिक हित और अंत में संसाधनों पर नियंत्रण।

वेनेजुएला के मामले में यह पैटर्न और भी साफ दिखता है। एक ओर रूस, चीन और ईरान जैसे देश खुलकर अमरीकी हस्तक्षेप की निंदा कर रहे हैं और कह रहे हैं कि वेनेजुएला को अपना भविष्य खुद तय करने का अधिकार है। दूसरी ओर अमरीका इसे लोकतंत्र की बहाली के रूप में पेश कर रहा है। लेकिन जब किसी हमले के तुरंत बाद तेल उद्योग में बड़े पैमाने पर अमरीकी भागीदारी की घोषणा होती है, तो संदेह स्वाभाविक है।

डॉनल्ड ट्रंप की अमेरिका फर्स्ट नीति इसी संदेह को और गहरा करती है। यह नीति मूल रूप से अमरीकी हितों को सर्वोपरि रखने की बात करती है, चाहे इसके लिए अंतरराष्ट्रीय नियमों, संप्रभुता और कूटनीतिक मयार्दाओं को क्यों न ताक पर रखना पड़े। सवाल यह नहीं है कि कोई देश अपने हितों की रक्षा करे या नहीं, सवाल यह है कि क्या किसी दूसरे देश की कीमत पर ऐसा करना जायज है।

मादुरो को पकड़ना सही था या गलत, इसका उत्तर एकतरफा नहीं हो सकता। यदि मादुरो ने अपने देश के संविधान, लोकतांत्रिक संस्थाओं और मानवाधिकारों का उल्लंघन किया है, तो इसका निर्णय वेनेजुएला की जनता और वहां की न्यायिक व्यवस्था को करना चाहिए। बाहरी ताकतों द्वारा किसी राष्ट्रपति को हटाना या पकड़ना अंतरराष्ट्रीय कानून की आत्मा के खिलाफ जाता है। यह न केवल उस देश की संप्रभुता को चोट पहुंचाता है, बल्कि भविष्य में और अधिक अस्थिरता को जन्म देता है।

यह भी ध्यान रखना होगा कि वेनेजुएला की सड़कों पर मादुरो के समर्थन में उतरे लोग सिर्फ किसी नेता के समर्थक नहीं हैं, बल्कि वे उस डर की अभिव्यक्ति हैं कि कहीं उनका देश एक बार फिर किसी वैश्विक शक्ति के प्रयोगशाला में न बदल जाए। लैटिन अमरीका का इतिहास ऐसे प्रयोगों से भरा पड़ा है, जहां बाहरी हस्तक्षेप ने दशकों तक घाव दिए हैं।

अमरीका के भीतर भी इस तरह की कार्रवाइयों पर सवाल उठते रहे हैं। क्या सचमुच लोकतंत्र बंदूक की नली से निर्यात किया जा सकता है। क्या किसी देश की जनता की तकलीफों का समाधान उसके प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण से होगा। वेनेजुएला का संकट जटिल है। यह सिर्फ मादुरो बनाम विपक्ष का मामला नहीं, बल्कि वैश्विक प्रतिबंधों, तेल कीमतों, आंतरिक नीतियों और अंतरराष्ट्रीय दबावों का मिश्रण है। इसे एक व्यक्ति की गिरफ्तारी से हल करना सरलीकरण होगा।

ट्रंप सही थे या गलत, यह सवाल भी इसी जटिलता से जुड़ा है। उनके समर्थक कहेंगे कि अमरीका ने अपने रणनीतिक और ऊर्जा हितों की रक्षा की। आलोचक कहेंगे कि यह साम्राज्यवादी सोच का नया संस्करण है। सच्चाई शायद इन दोनों के बीच कहीं है। लेकिन इतना तय है कि जिस क्षण लोकतंत्र की भाषा तेल के सौदों से जुड़ जाती है, उस क्षण नैतिकता कमजोर पड़ने लगती है।

दुनिया आज बहुध्रुवीय हो रही है। रूस, चीन और अन्य ताकतें अब हर मामले में अमरीका की अगुवाई स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। वेनेजुएला का मुद्दा इसी बदलती वैश्विक व्यवस्था का प्रतीक है। यह सिर्फ एक देश या एक राष्ट्रपति की कहानी नहीं, बल्कि उस संघर्ष की कहानी है, जिसमें संसाधन, सत्ता और सिद्धांत आमने-सामने खड़े हैं।

अंततः सवाल यह होना चाहिए कि वेनेजुएला की जनता क्या चाहती है। शांति, स्थिरता और सम्मानजनक जीवन। यह लक्ष्य बाहरी दखल से नहीं, बल्कि संवाद, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और आंतरिक सुधारों से हासिल हो सकता है। यदि अमरीका सचमुच लोकतंत्र और मानवाधिकारों के पक्ष में है, तो उसे तेल से पहले इंसान को प्राथमिकता देनी होगी। वरना इतिहास एक बार फिर यही लिखेगा कि सत्ता के खेल में आदर्श हार गए और तेल जीत गया।

(वरिष्ठ पत्रकार, सहित्यकार,स्तम्भकार)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

प्रेरणा

आप सच्चाई से मुंह मोड़ सकते हैं, लेकिन इसके नतीजों से मुंह नहीं मोड़ सकते। - **आयन रैंड**

संपादकीय

हेल्थ का सवाल सरकारों की प्राथमिकता में हो

अच्छी गुणवत्ता वाली हेल्थकेयर संस्थाएं हर राज्य में हों, यह वर्तमान सरकार का संकल्प है। ऐसी संस्थाओं में कुछ क्षेत्रीय पीजी संस्थाओं या रोग-विशेष इंस्टिट्यूट्स के अलावा अभी तक एम्स ही सर्वोपरि रही है। इस समय देश में 26 एम्स हैं, जिनमें 20 काम कर रही हैं। लेकिन क्या राज्यों में बनी एम्स वास्तव में उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं दे पा रही हैं? ताजा रिपोर्ट्स बताती हैं कि इन एम्स में शिक्षकों (डॉक्टर-लेक्चरर) की हर पांच में से दो सीटें खाली हैं। फंड की कमी और रखरखाव में कोताही के कारण मेडिकल उपकरण या तो खरीदे ही नहीं गए या पॉलिथीन में पैक पड़े हैं या अन्य सम्बंधित सह-उपकरण के न होने से या खराब हो रहे हैं। नई स्वास्थ्य नीति का ऐलान करते हुए स्वास्थ्य मंत्री ने 2017 में कहा था कि स्वास्थ्य व्यय को जीडीपी के 2.5% तक बढ़ाएंगे, लेकिन पिछले आठ वर्षों में यह 1.6% तक ही पहुंचा है और हाल में इसे बढ़ा बताने के लिए इसमें जल मिशन और सफाई पर होने वाले खर्च को शामिल कर कुल खर्च 2.1% बताया जा रहा है। एम्स की गुणवता बाधित होने का दूसरा कारण है टीचिंग स्टाफ की कमी। यह इसलिए है कि टीचर्स राज्यों में अच्छे वातावरण के न होने से आना नहीं चाहते। कई राज्यों में अच्छे स्कूल-कॉलेज नहीं हैं और राजनीतिक दबंगई के कारण माहौल रिसर्च के लिए उपयुक्त नहीं होता जबकि एम्स की परिकल्पना ही रिसर्च के लिए की गई थी। केरल में स्वास्थ्य पर प्रति-व्यक्ति सार्वजनिक व्यय 4438 रु. है, जबकि यूपी में मात्र 1457 रु.।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

भगवान के भरोसे की नींव हो तो कभी डगमगाएंगे नहीं

जिसमें नींव न हो, ऐसे भवन को हवा महल कहेंगे। कुछ लोग जीवन भर हवा महल ही बनाते हैं। अगर बचपन की नींव कमजोर हो तो जवानी हवा महल ही होगी। लेकिन ऐसा भी कहते हैं कि भक्त लोग हवा महल बनाते हैं, क्योंकि उनकी नींव भगवान बनाते हैं। इसे भगवान के प्रति भरोसा कहते हैं। हमारे यहां शास्त्रों में सत्य की गरिमा को स्थापित करने के लिए उसके साथ नारायण को जोड़ दिया है। यानी ईश्वर और सत्य- लगभग एक स्वरूप हैं। कलियुग में लोगों ने इसी फॉर्मूले को उलटा कर दिया। पुराने लोगों ने सत्य की ताकत बढ़ाने के लिए नारायण को जोड़ा तो नए लोगों ने नारायण को असत्य के साथ जोड़ दिया। किंतु यदि आप भक्त हैं तो इस कलियुग में नींव भगवान के भरोसे की रखना, भवन कभी हवा महल नहीं बनेगा। आज केवल कर्मकांड ही भक्ति नहीं है। किताब पढ़ना, डायरी लिखना, मन को रोकना यानी मेडिटेशन और तन को ठोकना यानी योगासन, यह सब करते हुए भक्तिभाव बनाए रखिए, तो इस कठिन समय में भी हमारा हवा महल ईश्वर के भरोसे की नींव के कारण हवा में डगमगाएगा नहीं। • Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

पाठकों के पत्र

जनता की नैतिकता से मिटेगा भ्रष्टाचार

जनता यदि भ्रष्ट व्यक्तियों को संसद-विधानसभा में चुनकर भेजती है, तो बेदाग जनप्रतिनिधि की आशा व्यर्थ है। कोई भी दल मतदाताओं को किसी भी गलत तरीके से आकर्षित करना चाहे, लेकिन जनता सहयोगी न बने तो उसे सफलता नहीं मिलती। भ्रष्टाचार तभी मिट सकता है, जब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र में नैतिकता का विकास हो। लोग जागरूक होकर नैतिक मूल्यों को अपनाएं, ताकि भ्रष्ट आचरण करने वालों को सजा मिल सके।
-सुभाष सिद्ध बाना, बीकानेर, राजस्थान

देश में आम हुई 'माफीनामा संस्कृति'

भारतीय लोकतंत्र में एक नया सांस्कृतिक प्रतिमान उभरा है- 'माफीनामा संस्कृति'। सार्वजनिक जीवन से जुड़े लोग पहले विवादास्पद बयान देते हैं, फिर सोशल मीडिया पर हंगामा मचने या कानूनी कार्रवाई के डर से औपचारिक माफी जारी करते हैं। यह इतनी तेजी से दोहराया जा रहा है कि 'बोलो-माफी मांगो-भूल जाओ' अब एक स्वीकार्य सामाजिक व्यवहार बन गया है। राजनेता, अभिनेता, खिलाड़ी, धार्मिक नेता- सभी इस माफी संस्कृति के भागीदार हैं।
-जयदेव राठी, भराण, हरियाणा

अधिकारियों पर ही कार्रवाई क्यों?

जब इंदौर को स्वच्छता का ताज मिला तो श्रेय लेने वालों की कमी नहीं थी। होर्डिंग लगे, विज्ञापन चले और जनप्रतिनिधियों ने इसे अपनी उपलब्धि बताया। तब अधिकारी काबिल थे, सिस्टम बेहतरीन था। लेकिन आज जब दूषित जल से मौतें हो रही हैं तो दोष सिर्फ अधिकारियों का ही क्यों? निलंबन और कार्रवाई उन्हीं पर क्यों? जवाबदेही से जनप्रतिनिधि मुक्त क्यों? सवाल साफ है- श्रेय सबका तो सजा कुछ ही क्यों भोगें?
-प्रो. आरके जैन 'अरिजीत', बड़वानी, मध्य प्रदेश

प्रदूषण पर ठोस समाधान जरूरी

दिल्ली के प्रदूषण में सांस लेना संघर्ष बन गया है। बच्चे मास्क पहनकर स्कूल जाने को मजबूर हैं और बुजुर्ग घरों में कैद हो चुके हैं। अगर अब भी इस संकट को गंभीरता से नहीं लिया गया तो आने वाली पीढ़ियां हमें कभी माफ नहीं करेंगी। दिल्ली की जहरीली हवा साफ संदेश दे रही है कि अब आधे-अधूरे उपाय नहीं, बल्कि ठोस और साझा समाधानों का समय आ चुका है।
-कांतिलाल मांडोत, सूरत, गुजरात

आप अपने पत्र editpage@dbcorp.in पर भेज सकते हैं

क्या आप जानते हैं

रात में चुम्बकीय गुण से छत्ते तक पहुंचती हैं मधुमक्खियां

दिन में तो मधुमक्खियां सूर्य की स्थिति देखकर अपना छत्ता खोज लेती हैं। लेकिन बादल छाने या रात में पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र के आधार पर छत्ते तक पहुंचने की अनोखी क्षमता भी उनमें होती है। मधुमक्खियों में तंत्रिका तंत्र के आसपास मैग्नेटाइट कण होते हैं। यह लौह खनिज कण पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र के प्रति संवेदनशील होते हैं। छत्ते से निकलते वक्त मधुमक्खी ओरिएंटेशन फ्लाइट लेकर पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र के सापेक्ष अपनी दिशा तय करती है। लौटते हुए मैग्नेटाइट कण उसी दिशा में संरेखित होकर सटीकता से उसे छत्ते तक पहुंचा देते हैं।

10 किलोमीटर तक छत्ते से दूर उड़ान भर सकती हैं मधुमक्खियां। हालांकि खाने की तलाश में आम तौर पर औसतन 3 किमी दूर तक ही जाती हैं।

बामुलाहिजा • 1985 से 1995 के दशक ने जो असर छोड़ा है, वह लम्बे समय तक कायम रहेगा...

देश की दिशा बदलने वाला दशक

अतीतराग

शेखर गुप्ता
एडिटर-इन-चीफ, 'द प्रिन्ट'
X @ShekharGupta

एक युवा और विकासशील गणतंत्र का हर दशक सबसे महत्वपूर्ण होने का दावा कर सकता है। लेकिन एक दशक ऐसा था, जिसमें शायद ऐसी सबसे ज्यादा खबरें बनीं, जो आज भी हमारे लोकतंत्र और सार्वजनिक विमर्शों पर हावी हैं। यह 1985-95 का दशक था।

देश के लिए और करीब के पड़ोस के लिए महत्वपूर्ण रहीं इन खबरों को याद कीजिए : शिखर पर पहुंचने के बाद कांग्रेस पार्टी का पतन, गठबंधनों की शुरुआत, बोफोर्स घोटाला, मंडल बनाम मंदिर की टक्कर, पंजाब और कश्मीर में अलगाववाद, श्रीलंका और मालदीव में भारत के सैन्य हस्तक्षेप, पाकिस्तान के साथ युद्ध के कगार पर पहुंचना (ब्रासटैक्स 1987 और 1990 में पाकिस्तान का 'परमाणु ब्लैकमेल'), सुमदोरोंग चू में चीन से आमना-सामना (1986-87) और इसके बाद तांग श्याओपिंग से सुलह, जिया-उल-हक और राजीव गांधी की हत्या, इस्लामवादी जिहाद का वैश्वीकरण और उसका कश्मीर में विस्तार और भारतीय अर्थव्यवस्था का उदारीकरण। हालांकि यह दशक लोकसभा में कांग्रेस को मिली 414 सीटों की चट्टानी स्थिरता के साथ शुरू हुआ था, इसके बावजूद इसने चार प्रधानमंत्री देखे। मात्र 10 सालों के लिए यह संख्या क्या ज्यादा नहीं है?

खबरें और भी हैं। आर्थिक सुधारों के कारण विश्वभर में पैर फैला रहे भारत का दर्जा ऊंचा हुआ, अफगान युद्ध और तियानआनमेन चौक से लेकर सोवियत संघ के विघटन और कुवैत पर सद्दाम हुसैन के कब्जे के कारण हुए प्रथम खाड़ी युद्ध तक। शीतयुद्ध खत्म हुआ और रंगभेद भी। भारत और इजराइल दोस्त बने।

अच्छी खबर हो या बुरी, पीढ़ीगत बदलाव हों या शाश्वत विमर्श, सभी मामलों में दूसरे दशकों को इस दशक की बराबरी करने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।

सिक्के का एक पहलू यह है कि आजादी के बाद से भारत की जो-जो आशंकाएं थीं, वे सब इस दशक में सच साबित हुईं- चाहे वह राजनीतिक अस्थिरता को लेकर हो या साम्प्रदायिक और जातीय विभाजनों, स्थिरता देने वाले एक परिवार के कमजोर पड़ने, एटमी और आतंकवादी खतरों, सामाजिक उथलपुथल आदि को लेकर हो, या भरोसेमंद मित्र-देश (सोवियत संघ) को खोने को लेकर ही क्यों न हो। सिक्के के दूसरे पहलू का ताल्लुक इस बात से है कि भारत ने इन सबका सामना कैसे किया- गठबंधनों पर भरोसा करना सीखकर, अपनी अर्थव्यवस्था को सुधारकर, खुद को नए रणनीतिक संदर्भ के साथ पेश करके और अपने मानव संसाधन को अपनी ताकत बनाकर। भारत इस दशक में पहले की तुलना में ज्यादा ताकतवर, आत्मविश्वासी बना और दुनिया में उसने अपनी धाक बढ़ाई।

उस दौर का पहला टिकाऊ बदलाव था- कम्प्यूटरों को राजीव गांधी के द्वारा बढ़ावा देना। भारतीय न्यूजरूमों में पहला कंप्यूटर एपल का बॉक्सनुमा डेस्कटॉप था, जो 1985 में आया। जगह की कमी से जूझते न्यूजरूम में इन्हें अलग कमरा देना पड़ता था। उंगलियों में दर्द पैदा करने वाले टाइपराइटरों से मुक्ति और फ्लॉपी डिस्क के भरोसे ने की-बोर्ड के लिए आकर्षण बढ़ाया। चूंकि हम अपने जीवन में आए अहम मोड़ों को याद रखते हैं, इसलिए इन डेस्कटॉपों में से एक पर मैंने अपनी पहली जो रिपोर्ट टाइप की, वह 1985 में मंडल रिपोर्ट पर उठे विवाद को लेकर थी। वह विवाद आज भी जारी है।

लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा और उसके बाद दिसंबर 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस के कारण कई राज्यों में साम्प्रदायिक दंगे हुए। सबसे खूनी दंगे तत्कालीन बम्बई और उसके आसपास के भीड़ भरे स्लमनुमा छोटे शहरों में हुए। इसके बाद प्रमुख व्यापारिक इमारतों और पड़ोसों को निशाना बनाकर सीरियल बम विस्फोट किए गए। भारत को सीरियल बम विस्फोटों का यह पहला अनुभव नहीं था, देश की राजधानी पंजाब संकट और सिखों के संहार के बाद ऐसे कुछ विस्फोटों से गुजर चुकी थी। लेकिन बॉम्बे में जिस

इस दशक ने राष्ट्रीय राजनीति को परिभाषित किया...

1985-95 के इस दशक ने राष्ट्रीय राजनीति को जैसे परिभाषित किया है, वह सबसे टिकाऊ रहा है। यह बात राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर भी लागू होती है। हालांकि आर्थिक सुधारों के 35 साल बाद अर्थव्यवस्था को और खोलने के सवाल पर आशंकाएं कायम हैं।

बड़े पैमाने पर विस्फोट हुए, वैसे पहले कभी नहीं हुए थे, और उनके तार जितने स्पष्ट रूप से पाकिस्तान से जुड़े नजर आए थे, वैसा भी इससे पहले नहीं हुआ था। तीन शब्दों के संक्षिप्त नाम वाले आतंक- आईएसआई ने अपनी मौजूदगी जताई, और तभी से यह हमें परेशान करता आ रहा है। माफिया सरगना दाऊद इब्राहिम शारजाह के क्रिकेट स्टेडियम में नाटकीय रूप से प्रकट होकर भारत के लिए 'विलेन नंबर वन' बन गया, और बना हुआ है।

राजीव गांधी ने 1985 में मंडल रिपोर्ट को सहजता से अमान्य करके पिछड़ों के उभार की चिनगारी सुलगा दी थी। इसके बाद कई ऐसी गलतियां की गईं, जिन्होंने साम्प्रदायिकता को उभार दिया, मसलन शाहबानो मामले में अदालत के फैसले को पलटना, सलमान रूश्दी की किताब 'द सैटेनिक वर्सेस' पर प्रतिबंध लगाना, अयोध्या में मंदिर के ताले खुलवाना। इसके बाद से हमारी राजनीति दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं के बीच टकराव में बदल गई है। आप धर्म से बनी एकता को जाति की तलवार से कैसे बांट सकते हैं या जाति ने जिसे बांट रखा है उसे धर्म के नाम पर कैसे जोड़ सकते हैं- इसी का खेल आज तक भारत की राजनीति में चल रहा है। इस खेल में जो भी जीतता है, भारत पर वही राज करता है।

मंडल खेमे को 1989 से 2014 तक 25 साल राज करने का मौका मिला, जब तक कि नरेंद्र मोदी ने 2014 में आकर इस समीकरण को उलट नहीं दिया। अब यह मंदिर (हिन्दुत्व) वालों का दौर है, और ऐसा नहीं लगता कि इसकी उम्र भी 25 साल से कम होगी। हमारी सियासत का अहम मसला अभी भी मंदिर बनाम मंडल का ही है। अभी-अभी यह बिहार में जाहिर हो चुका है, और 2027 में उत्तर प्रदेश में भी यही रहने वाला है।

1985-95 के इस दशक ने राष्ट्रीय राजनीति को जिस तरह परिभाषित किया है, वह अब तक के इतिहास में सबसे टिकाऊ रहा है। यह बात राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर भी लागू होती है। आर्थिक सुधारों से आए उछाल के 35 साल बाद जबकि हम अपनी सफलताओं का जश्न मना रहे हैं, तब भी अर्थव्यवस्था को और खोलने के सवाल पर आशंकाएं और संदेह कायम हैं। इस लेख के शुरू में मैंने इतिहास को परिभाषित करने वाली जिन करीब दर्जनभर खबरों का जिक्र किया, उनमें से आर्थिक सुधार को छोड़ बाकी सबको मैंने एक पत्रकार के रूप में कवर किया है। मैं तो यही कहूंगा कि उस दशक में जिंदगी अच्छी गुजरी थी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

इस लेख को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

नजरिया • जरूरी है कि हम भी हार्ड पावर बढ़ाएं

दुनिया ताकत और दमखम के युग में प्रवेश कर चुकी है

देश-दुनिया

चेतन भगत
अंग्रेजी के उपन्यासकार
chetan.bhagat@gmail.com

देखते ही देखते अमेरिका वेनेजुएला के राष्ट्रपति मादुरो को उठाकर ले आया और अब उन पर नार्को-टेररिज्म समेत दूसरे कथित अपराधों के लिए मुकदमे चलाए जाएंगे। मादुरो कोई संत नहीं हैं। उन पर चुनावों में धांधली, मानवाधिकारों का उल्लंघन और बल प्रयोग के जरिए अनुचित रूप से सत्ता में बने रहने के आरोप लगते रहे हैं। जब कोई नेता खुलेआम ताकत का इस्तेमाल करने को जायज मानता है, तो क्या उसे किसी और बड़ी ताकत के द्वारा बल प्रयोग करके सत्ता से हटाया जाना गलत है? इसका उत्तर देना आसान नहीं।

अभी कुछ सालों पहले तक सम्प्रभु देश यूं ही किसी पर हमला नहीं कर बैठते थे। महज पांच साल पहले तक हमें लगता था कि हम शांति के एक अभूतपूर्व दौर में हैं। मानवता विकसित हो चुकी है और दुनिया के देशों ने 'जियो और जीने दो' का पाठ सीख लिया है। यह समझ बन चुकी थी कि युद्धों से कोई हल नहीं निकलता। हम कितनी बड़ी गलतफहमी में थे! शायद मनुष्य लंबे समय तक सामंजस्य से रह ही नहीं सकते। इतिहास पर नजर डालने पर भी यही लगता है कि हम हमेशा ही युद्ध और शांति के बीच झूलते रहे हैं। हिंसा, टकराव, स्वार्थ, लालच और सत्ता की भूख- ये सब हमारे डीएनए में गहरे पैठे हैं और बार-बार सामने आते रहते हैं।

आज की दुनिया में एक सच्चाई निर्विवाद है। हम अल्ट्रा-हार्ड पावर के दौर में जी रहे हैं। यदि आपके पास वास्तविक शक्ति है- इतनी कि आप किसी पर जो चाहें थोप सकें और दूसरा पक्ष पलटकर लड़ भी न सके- तो आप कुछ भी कर सकते हैं। यूक्रेन पर रूस का धावा, इजराइल द्वारा गाजा का विध्वंस और अब वेनेजुएला में अमेरिकी कार्रवाई- ये सब साबित करते हैं कि ताकत का युग कभी बीता ही नहीं था। नैतिकता, सहमति-निर्माण, बातचीत, संवाद और सॉफ्ट पावर जैसे शब्द आज अप्रासंगिक मालूम हो रहे हैं। आखिर कौन-सा बड़ा वैश्विक संघर्ष हाल के सालों में बातचीत से सुलझा है? यूएन ने आखिरी बार कब कुछ किया था?

भारत के लिए इसके मायने स्पष्ट हैं : हार्ड पावर का निर्माण एक राष्ट्रीय प्राथमिकता होना चाहिए। हार्ड पावर मूलतः दो-तीन स्रोतों से आती है, जो अकसर आपस में जुड़े होते हैं। पहला है, विशाल आर्थिक शक्ति। इससे न केवल बड़ा बाजार बनता है, बल्कि सरकार के लिए भी इतना राजस्व पैदा होता है कि वह दूसरे स्रोत यानी प्रतिरक्षा को साकार कर सके। आज सैन्य शक्ति का अर्थ केवल पर्याप्त सैनिक और उपकरण ही नहीं, सबसे उन्नत सैन्य तकनीक भी है। टैंक भले प्रभावशाली दिखते हों, लेकिन आज की लड़ाइयां उन्नत ड्रोन और जीपीएस-निर्देशित हथियारों से लड़ी जाती हैं। पश्चिम से विमान और हथियार खरीद लेने भर से भी आप सैन्य-ताकत नहीं बन सकते। तीसरा स्रोत है, प्रमुख गठबंधन और साझेदारियां। इजराइल और ब्रिटेन जैसे देश वैश्विक भू-राजनीति में अपने आकार से कहीं अधिक प्रभाव इसलिए रखते हैं, क्योंकि उन्हें अमेरिका का ठोस समर्थन प्राप्त है। बदले में, अमेरिका के प्रति

नैतिकता, सहमति-निर्माण, बातचीत, संवाद और सॉफ्ट पावर जैसे शब्द आज अप्रासंगिक मालूम हो रहे हैं। आखिर कौन-सा बड़ा वैश्विक संघर्ष हाल के सालों में बातचीत से सुलझा है? यूएन ने आखिरी बार कब कुछ किया था?

उनकी निष्ठाएं भी अडिग रहती हैं। कागज पर गुटनिरपेक्ष रहना भले ही आकर्षक और स्वतंत्र लगे, लेकिन वास्तविक दुनिया में यह आपको अधिक असुरक्षित बना देता है।

इकोनॉमी, साइंस और आधुनिकता के स्तम्भों पर निर्मित राष्ट्र के पास हार्ड पावर होने की संभावना अधिक होती है। इसका क्लासिक उदाहरण अमेरिका है, जिसकी बराबरी आज भी कोई नहीं कर सकता। अगर विदेशों में लोग चिकन टिक्का मसाला खाते हैं, किसी यूरोपीय क्लब में बॉलीवुड के हिट गानों पर नाचते हैं या कोल्हापुरी चप्पल पहनते हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि वैश्विक मंच पर हमारा प्रभाव बढ़ गया है। हमें आर्थिक विकास और सैन्य निवेश के जरिए अपनी हार्ड पावर क्षमताएं विकसित करनी होंगी। संभव है कि हमारे पड़ोस में चल रहे संघर्षों को सुलझाने के लिए भी वही कारगर हो। **(ये लेखक के निजी विचार हैं)**

मुद्दा • देश के सारे शहरों में अनेक भागीरथपुरा हैं

हमारे हर साफ शहर में छुपा होता है एक और गंदा शहर

सरोकार

प्रियदर्शन
लेखक और पत्रकार
priyadarshan.parag@gmail.com

इंदौर में दूषित पेयजल की आपूर्ति से कई लोगों की मौत की खबर हमारी नगर-योजना ही नहीं, हमारी व्यवस्था की विषमता पर भी एक त्रासद टिप्पणी की तरह आई है। इंदौर पिछले कई वर्षों से हिंदुस्तान में स्वच्छता के शिखर की तरह पेश किया जाता रहा है। इतने स्वच्छ शहर में ऐसा गंदा पानी कहां से चला आया, जिसे पीकर लोग बीमार पड़ गए और चल बसे? क्या स्वच्छता सर्वेक्षण में गड़बड़ी हुई है?

निश्चय ही यह कहना इंदौर के साथ अन्याय होगा। इंदौर अगर शिखर पर है तो अपने साफ-सुथरे होने की वजह से ही है। लेकिन अगर इंदौर में जानलेवा पेयजल की आपूर्ति को व्यवस्था की चूक का इकलौता मामला मान लेंगे तो उस बड़ी सच्चाई को अनदेखा करेंगे, जो हमारे शहरों और हमारी पूरी नगर-योजना पर भारी पड़ती है। बीते दस साल से हिंदुस्तान में स्मार्ट सिटी मिशन जारी है। देश के सौ शहरों को इस मिशन के तहत चुना गया है। वहां अरबों रुपए खर्च हो चुके हैं। लेकिन इन तमाम शहरों में अब तक खुदी हुई सड़कें, अधूरी पड़ी सीवर लाइनें, अधबने पुल ही दिखाई पड़ते हैं। यह पता चलता है कि स्मार्ट सिटी के नाम पर हमने अधकचरे ढंग से अपने शहरों को एक बेडौल कोलाज में बदल डाला है, जिसके कुछ हिस्से बेहद चमकते हुए हैं और कुछ बेहद अंधेरे और गंदगी में डूबे हुए।

दरअसल हमारे शहरों को नगर-योजना नहीं, हमारी सामाजिक-आर्थिक विषमता बरबाद कर रही है। ध्यान से देखें तो इन शहरों को हमारे सबसे गरीब लोग संभाले रखते हैं, साफ-सुथरा बनाते हैं। गांव-देहातों और दूरस्थ कस्बों से आए ये लोग इन शहरों के सबसे जरूरी काम सबसे सस्ती दरों पर निबटाते हैं। वे हमारी गाड़ियां साफ करते हैं, हमारा कचरा उठाते हैं, हमारे कपड़ों में इस्त्री करते हैं, उनकी पत्नियां हमारे घरों में बाइयों की तरह काम करती हैं- वे न हों तो ये शहर रहने लायक न बचें। और ये लोग रहते कहां हैं? इन्हीं खाते-पीते मोहल्लों, सोसायटियों के पीछे की किन्हीं गंदी-अंधेरी गलियों में।

बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं, जो शहर के ही बाशिंदे होते हैं, लेकिन तरक्की की रफ्तार में पीछे छूट जाते हैं। वे पुराने मोहल्लों की तंग गलियों में अपने पुश्तैनी घरों में ठुंसे होते हैं और किराने की छोटी दुकानें चलाने से लेकर तमाम भव्य दुकानों में कर्मचारियों की तरह काम करते हैं। इनके साथ भी शहर सौतेला व्यवहार करता है।

तो हर शहर में कम से कम दो शहर होते हैं- एक वह जो स्वच्छता सर्वेक्षण में शामिल होता है और दूसरा वह जो इस साफ-सुथरे शहर को कुछ और चमकाने के काम में जुता रहता है- भले ही किसी संकट में- मसलन कोविड में- उसे उन्हीं शहरों को छोड़कर जाना पड़े, जिन्हें उसने अपने खून और पसीने से बसाया है।

इस विषयांतर को छोड़ें। असली बात यह है कि इंदौर में ही नहीं, हिंदुस्तान के सारे शहरों में ऐसे अनेक भागीरथपुरा हैं, जिनकी कोई परवाह नहीं करता- उनके लोगों की शिकायतों की ओर ध्यान नहीं देता- जब तक वे अस्पताल नहीं पहुंच जाते। शहरों के भीतर छुपे ये

हर शहर में दो शहर होते हैं- एक वह जो स्वच्छता सर्वेक्षण में शामिल होता है और दूसरा वह जो इस साफ-सुथरे शहर को कुछ और चमकाने के काम में जुता रहता है- भले ही किसी संकट में उसे उन्हीं शहरों को छोड़कर जाना पड़े।

शहर भारत के भीतर छुपा एक भारत बनाते हैं- अंधेरे में डूबा और गंदगी में बजबजाता भारत। इस भारत की ओर देखने की फुरसत किसी को नहीं है।

फिर इस भारत में वे गांव भी चले आते हैं, जो उपेक्षा का अलग तरह का आईना हैं। फिर दो शहरों या दो मुल्कों का यह फासला सिर्फ आर्थिक नहीं रह जाता- इसके सामाजिक आयाम भी होते हैं। देश के दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक और बहुत सारे पिछड़े माने जाने वाले समुदाय इस दूसरे भारत में बसते हैं। क्या यह एक तरह का नस्ली परायापन नहीं है, जिसके शिकार लोग एक दिन अपने पानी से बदबू आने की शिकायत करते हैं और फिर कुछ दिन बाद मर जाते हैं? इनको लेकर सवाल करने पर मंत्री अपशब्द कहने लगते हैं। यह नजरिया भी बताता है कि हम किसकी कितनी परवाह करते हैं।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

डिफ्रेंट एंगल • पैसे, परिवार और स्वास्थ्य के सुख की ओर कुछ नन्हे कदम बढ़ाएं, जिनसे जीवन में आनंद हो

इस साल कुछ ऐसे रिजॉल्यूशंस लें- जो छोटे हैं, पर खोटे नहीं...

सेल्फ हेल्प

रश्मि बंसल
लेखिका और स्पीकर
mail@rashmibansal.in

छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी। नए साल में लिखेंगे, मिल कर नई कहानी... हर साल ऐसे ही खयाल आते हैं। दस दिन बाद चले जाते हैं। वो इसलिए कि आप पहाड़ चढ़ने की सोचते हैं, जबकि आज की तारीख में चार सीढ़ी चलने में सांस फूल जाती है। तो इस साल ऐसे रिजॉल्यूशन लें- जो छोटे हैं, पर खोटे नहीं। हर इंसान तीन तरह के सुख चाहता है- पैसे का सुख, परिवार का सुख और स्वास्थ्य का सुख। तो आइए, कुछ नन्हे कदम बढ़ाएं, जिनसे जीवन का सफर थोड़ा और आनंदमय हो।

पैसा : 1. नो ईएमआई : इस साल प्रण लें कि किश्तों पर कुछ नहीं लेना है। घर की ईएमआई चल रही है- ठीक है। मगर लेटेस्ट मॉडल का फोन लेना जरूरी नहीं। किसी ब्रांड के जोर पर जो अपनी शख्सियत बनाता है, वो खोखली शख्सियत होती है। इस ढकोसले में न पड़िए।

2. असली बचत : दुनिया में एक ही चीज है जो आपके और अम्बानी के पास एक ही मात्रा में है- और वो है समय। अकसर हम थोड़ा पैसा बचाने के चक्कर में अपना समय बर्बाद कर देते हैं। पैसा आप और कमा सकते हो, समय वापस नहीं आएगा।

3. समस्या है तो समाधान भी : मान लो घर में पैसों की तंगी है- क्यों न हर मेंबर थोड़ा कॉन्ट्रिब्यूट करे? दसवीं का बच्चा भी शाम को छोटों की ट्यूशन लेकर कुछ कमा सकता है। गृहिणी अपने मोहल्ले में स्वादिष्ट खाना सप्लाई कर सकती है। हर किसी में क्षमता है, चांस तो दीजिए।

स्वास्थ्य : 1. रोज का रिचार्ज : आपकी दिनचर्या में एक कोई ऐसी एक्टिविटी होनी चाहिए, जो सिर्फ आपके आनंद के लिए हो। योग-व्यायाम, मेडिटेशन, नृत्य और संगीत, शायरी- अपने मन को लुभाने वाली कोई एक चीज पकड़ लो। जैसे हम मोबाइल का रिचार्ज करते हैं, वैसे ही मन का रिचार्ज भी जरूरी है।

2. सोने से पहले : पुराने जमाने में जब कारवां चलता था, रात को सराय में विश्राम लेता था। अपनी चिंताओं के कारवां को भी रात में विश्राम दीजिए। लुईस हे की किताब 'यू कैन हील योर लाइफ' पढ़िए, आप समझ जाएंगे कि निगेटिव इमोशंस का शरीर पर कितना असर पड़ता है।

3. डिनर जल्दी करो : सात बजे खाना, नो बहाना। यह आज के ऑफिस रूटीन में थोड़ा मुश्किल है पर नामुमकिन नहीं। 12-14 घंटे खाने पर संयम रखना 'इंटरमिटेंट फास्टिंग' के नाम से पॉपुलर हुआ है। वैसे हमारी दादी भी ऐसा ही करती थीं। हफ्ते में तीन दिन करके देखिए, फर्क महसूस होगा।

परिवार : 1. चुप रहो : झगड़े में जब कड़वे शब्दों का तीर इस्तेमाल करने को दिल मचले, तो गहरी सांस लो। अपने अंदर का गुस्सा कागज पर लिख डालिए। अगर दो दिन बाद भी कहने का मन हो, तो शांत और शालीन तरह से बातचीत करें। आप मैच्योरिटी से पेश आएंगे तो रिस्पेक्ट बढ़ेगा। असर पड़ेगा।

2. जो दिखता है, वो बिकता है : समय से उठना, बड़ों का आदर करना, मोबाइल कम इस्तेमाल करना- आप चाहते हैं कि बच्चे ऐसी अच्छी आदतें अपनाएं। तो पहले आपको उनके सामने यह सब करना पड़ेगा। समझो बाय वन-गेट वन फ्री ऑफर अवेल कर रहे हैं- बच्चे का उद्धार, अपना भी सुधार।

3. मिलना-जुलना जरूरी है : जिंदगी की भाग-दौड़ में दोस्त, भाई, बहन, चाचा-बुआ : सारे रिश्ते हम वॉट्सएप पर निभाते हैं। लेकिन यह काफी नहीं। फेस-टु-फेस मिलना जरूरी है। दिल की बात शेयर करना जरूरी है। अब यह न सोचें कि वो पहले फोन करेंगे या आप। नहीं तो मिलेगा अकेलेपन का श्राप।

कहना आसान, करना मुश्किल। कोशिश कर, ना बन बुजदिल। नया साल है, नई उमंगें- लिख ले नई कहानी।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

शाह टाइम्स

सम्पादकीय

बुधवार, 7 जनवरी 2026

ड्राफ्ट मतदाता सूची

मंगलवार को अपनी तय तारीख 6 जनवरी के अनुसार चुनाव आयोग ने विशेष गहन पुनरीक्षण एसआईआर प्रक्रिया के तहत उत्तर प्रदेश की मतदाता सूची जारी की। सूची से दो करोड़ 89 लाख हटा दिए जाने की बात सामने आई है। इस तरह यूपी में 15 करोड़ 44 लाख से घटकर अब मतदाताओं की संख्या 12 करोड़ 56 लाख रह गई है। लोक भवन में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान मुख्य चुनाव अधिकारी ने कहा कि 27 अक्टूबर 2025 से पहले की दौर की मतदाता सूची को जब फ्रीज किया गया था, उस समय उत्तर प्रदेश में कुल 15 करोड़ 44 लाख 392 मतदाता पंजीकृत थे, इसके बाद ही 4 नवंबर 2025 से गणना शुरू होकर 26.12.25 तक चली और इस दौरान मतदाताओं से 12 करोड़ 55 लाख गणना प्रपत्र प्राप्त हुए, जो कुल मतदाताओं का 81.30 प्रतिशत था। मुख्य चुनाव अधिकारी नवदीप रिणवा ने राजनीतिक दलों की भी इस बात को लेकर प्रशंसा की कि उन्होंने इस प्रक्रिया में अपना पूरा सहयोग दिया और उप्र के तमाम 75 जिलों में राजनीतिक दलों के साथ बैठकें की गई और अब तक 1546 बैठकें आयोजित की जा चुकी हैं। अब 6 जनवरी 2026 से 6 फरवरी 2026 तक दावा/आपत्ति की अवधि निर्धारित की गई है। इस अवधि में पात्र मतदाता फार्म 6, 7 व 8 के माध्यम से नाम जोड़ने, संशोधन कराने या आपत्ति दर्ज करा सकते हैं। जिन मतदाताओं की मैपिंग नहीं हो सकी है उन्हें बीएलओ के माध्यम से नोटिस भेजे जाएंगे और वे माता-पिता का नाम सहित विवरण सही करा सकेंगे। अब तक इस तरह 15 लाख 78 हजार 423 फार्म छह प्राप्त हो चुके हैं। मतदाताओं को असुविधा न हो, बूथों की संख्या बढ़ाने की व्यवस्था भी की गई है अब 1500 से 1200 वोटर्स के हिसाब से पोलिंग बूथों को तर्कसंगत बनाया गया है। इस तरह अब राज्य में 15030 के लगभग नए बूथ जोड़े गए हैं। इस मतदाता सूची में जो मतदाता ट्रेस नहीं हो सके, उसकी बड़ी संख्या है। यह संख्या 79 लाख 52 हजार 190 बताई गई है। जोकि वास्तव में बड़ी संख्या है। यूं तो एसआईआर की प्रक्रिया इस दावे के साथ चलाई गई है कि इसका काम पात्र लोगों को वोट के लिए जोड़ना है और साथ ही मृत व्यक्ति या जो अन्य स्थान पर शिफ्ट हो चुके हैं या जिनके नाम डबल हैं, उनको हटाकर सूची को सही आकार देना है। जोकि अच्छी बात है, लेकिन चुनाव आयोग को यह भी ध्यान रखना होगा कि ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो एसआईआर प्रक्रिया को संदेह की नजर से देखते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि ऐसे लोगों में देश के लगभग तमाम विपक्षी राजनीतिक दल शामिल हैं। उनकी शंकाओं को दूर करना भी चुनाव आयोग का काम होगा, क्योंकि कोई भी प्रक्रिया तभी पूर्णत: सफल मानी जाती है जिसमें असहमति की संभावना कम हो। यूं भी लोकतंत्र में हठधर्मी के लिए कोई जगह नहीं है। संभवत: भारत के इतिहास में पहला अवसर है जब चुनाव प्रक्रिया में नाम जुड़ने के बजाए नाम कटने की बात सामने आई है।

एलिजिबल वोटर्स को मरा बताया जा रहा

चुनाव आयोग पश्चिम बंगाल में चल रही एसआईआर प्रक्रिया में भाजपा की आईटी सेल के बनाए मोबाइल एप्स का इस्तेमाल कर रहा है, चुनाव आयोग एसआईआर करने के लिए हर तरह के गलत कदम उठा रहा है, यह एलिजिबल वोटर्स को मरा हुआ बता रहा है और बुजुर्ग और बीमार लोगों को सुनवाई में आने के लिए मजबूर कर रहा है, चुनाव आयोग वाट्सऐप पर चलाया जा रहा है, लोग एसआईआर में हिस्सा लेते समय सावधान रहें, उन लोगों की मदद करनी चाहिए, जिन्हें मदद की जरूरत है, उन्हें मेरा साथ देने की जरूरत नहीं है, सिर्फ उनका साथ दें, जो इस काम की वजह से मुश्किल में हैं।

-ममता बनजी
सीएम, पश्चिम बंगाल

पीएम ने जाना पिपरहवा का महत्व स्थानीय जनप्रतिनिधि कब जानेंगे

यशोदा श्रीवास्तव

निश्चित ही सिद्धार्थनगर जिले का पिपर. हवा विश्व प्रसिद्ध बौद्ध स्थल है। अस्तित्व में आने के बाद इस स्थल के विकास की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया, लिहाजा यह नेपाल के लुंबिनी जैसा विकास नहीं कर सका। बता दें कि पिपरहवा जिसे शुद्धोधन की राजधानी कपिलवस्तु के रूप में पहचाना गया, उसे गौतम बुद्ध की क्रीड़ा स्थली भी कहते हैं जबकि लुंबिनी गौतम बुद्ध की जन्मस्थली है। आज पिपरहवा की चर्चा इसलिए है क्योंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं इस स्थल के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला है। हाल ही नई दिल्ली स्थित किला राय पिथौरा कल्चर कांप्लेक्स में द लाइट एंड लोटस रेलिक्स आफ द अवेकंड वन प्रदर्शनी के उद्घाटन के मौके पर उन्होंने कहा कि यहां जो बुद्ध अवशेष रखे गए हैं वह 1898 में पिपरहवा में मिले थे। इस अवशेष को अंग्रेज जमींदार अपने साथ ले गए थे। 2025 में हांगकांग में इसकी नीलामी होने जा रही थी जिसे केंद्र सरकार और गोदरेज ग्रुप के हस्तक्षेप से बचाया गया। इसके लिए कई कानूनी नोटिसें दी गई थी। लंबी कानूनी लड़ाई के बाद अभी कुछ महीने पहले इसे भारत लाया जा सका जिसका दर्शन आज सुलभ हो पा रहा है।

पिपरहवा (कपिलवस्तु) दुनिया के दो तिहाई बुद्धिष्ट देशों के आस्था का केंद्र भी है। यहां की पवित्र मिट्टी लंका सहित कई बुद्धिष्ट देशों के राष्ट्राध्यक्ष न केवल अपने माथे पर लगाए, साथ भी ले गए। करीब 40 साल पूर्व जब सिद्धार्थनगर बस्ती जिले के उत्तरी हिस्से में स्थित नौगढ़ नाम का तहसील था, तब यहां बुद्धिष्टों का रेला लगा रहता था। प्रतिदिन यहां रेलवे स्टेशन पर विदेशी बुद्ध तीर्थ यात्रियों का एक बोगी मौजूद रहता था। वे पहले पिपरहवा बुद्ध स्तूप का दर्शन करते थे फिर यहीं से ककरहवा बार्डर से नेपाल में बुद्ध की जन्म स्थली लुंबिनी जाते थे। यह बीते दिनों की बात है। आज इस एतिहासिक स्थल का हाल यह है कि शायद ही कोई भूला भटका विदेशी बुद्धिष्ट यहां आता हो। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिस पवित्र भाव से पिपरहवा का बखान किया, स्थानीय जनप्रतिनिधि इससे नावाकिफ है। भगवान बुद्ध यहां अपने जीवन के 29 साल बिताए। इस नाते इस स्थल को बुद्ध की क्रीड़ा स्थली भी कहा जाता है। काश। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिस पवित्र भाव से पिपरहवा को समझ पाए, यहां के जनप्रतिनिधि भी समझ पाए होते तो आज पिपरहवा भी नेपाल के लुंबिनी जैसा विक. सित होकर भारतीय अर्थव्यवस्था में थोड़ा बहुत हिस्सेदारी जरूर निभा रहा होता। पूर्वी यूपी के जिला सिद्धार्थनगर की शिनाख्त गौतम बुद्ध से है। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। तीन दशक पूर्व बस्ती जिले के उत्तर स्थित नौगढ़ तहसील को अलग कर सिद्धार्थ के नाम से सिद्धार्थनगर जिले का सृजन हुआ है। जिला मुख्यालय से बीस किलोमीटर उत्तर की ओर स्थित पिपरहवा नामक स्थान को गौतम बुद्ध के पिता राजा शुद्धोधन की राजधानी के रूप में चिह्नित किया गया। यहां के स्तूप और अवशेष प्राचीन कालीन इस राजमहल के खंडहर जैसे आज भी विद्यमान है। यहां से 16 किमी आगे उत्तर तरफ नेपाल में लुंबिनी स्थित है। लुंबिनी की शिनाख्त गौतमबुद्ध के जन्म स्थली के रूप में है। सिद्धार्थनगर के गौतम बुद्ध के स्थली के रूप में चिह्नित होने के बाद यहां अपेक्षित विकास नहीं हो पाया। पिपरहवा के खंडहरनुमा स्तूप को संरक्षित कर इसी के समीप सौ एकड़ भूमि का अधिग्रहण कर कपिलवस्तु के विकास की तमाम योजनाएं बनीं जरूर लेकिन राजनीतिक कारणों से यह मूर्त रूप नहीं ले पाई। 1980 में कांग्रेस शासन में केंद्र सरकार ने कपिलवस्तु विकास महायोजना तैयार की थी जिसके तहत जमीनें अधिकृत कर विकास की ढेर सारी योजनाएं बनीं थी। इसके लिए प्रारंभिक बजट में 80 लाख रूपए भी जारी किए गए थे। लेकिन स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने इसमें रुचि ही नहीं दिखाई लिहाजा यह योजना फाइलों में दफन होकर रह गई। आगे चलकर प्रदेश के विभिन्न सरकारों में यहां जरूर कुछ न कुछ निर्माण कार्य हुए लेकिन वे इस लायक नहीं हैं कि बुद्धिषटों और टूरिस्टों को आकर्षित कर सके। मायावती ने अपने शासनकाल में यहां हवाई पट्टी तक बनाने की घोषणा की थी। स्थानीय स्तर पर यदि इसके विकास के बारे में किसी ने सोचा तो वह स्वर्गीय धनराज यादव थे जो भाजपा के कई बार के विधायक और मंत्री रहे हैं। अखिलेश यादव ने अपनी सरकार में यहां सिद्धार्थ विश्व. विद्यालय के रूप में बड़ी सौगात दी। इस विश्व. विद्यालय की स्थापना से यहां जरूर चहल पहल बढ़ गई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पिपरहवा के महत्व को समझने के बाद लोगों को उम्मीद है कि यदि स्थानीय जनप्रतिनिधि जरा भी ध्यान दें तो पिपरहवा का विकास लुंबिनी सरीखे हो सकता है जहां बुद्ध अनुयाई वाले देश भी अपना योगदान देने में रुचि लें।इसके लिए लोगों को स्थानीय सांसद जगदंबिका पाल से काफी उम्मीदें हैं। बुद्ध के अवशेष को हांगकांग से वापस भारत आने के बाद उन्होंने उसे पिपरहवा में वापस लाने की बात कही है।

जिला मुख्यालय से बीस किलोमीटर उत्तर की ओर स्थित पिपरहवा नामक स्थान को गौतम बुद्ध के पिता राजा शुद्धोधन की राजधानी के रूप में चिह्नित किया गया। यहां के स्तूप और अवशेष प्राचीन कालीन इस राजमहल के खंडहर जैसे आज भी विद्यमान है। यहां से १६ किमी आगे उत्तर तरफ नेपाल में लुंबिनी स्थित है। लुंबिनी की शिनाख्त गौतमबुद्ध के जन्म स्थली के रूप में है। सिद्धार्थनगर के गौतम बुद्ध के स्थली के रूप में चिह्नित होने के बाद यहां अपेक्षित विकास नहीं हो पाया।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

सामाजिक बदलाव में मां-बाप की सुध लेना जरूरी

दरअसल, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने बुजुर्गों की देखभाल से जुड़े 2007 के कानून में बदलाव की पहल तब की, जब समाज में बुजुर्गों की अनदेखी व दुर्व्यवहार के मामले तेजी से बढ़े हैं। दरअसल, नए विधेयक में इससे जुड़े कानून की व्यावहारिक दिक्कतों को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। हालांकि, मंत्रालय ने कानून में बदलाव की पहल वर्ष 2019 में कर दी थी। इसी साल लोकसभा में एक विधेयक भी पेश किया गया था। इसके व्यापक पहलुओं की पड़ताल के लिए विधेयक को बाद में संसदीय समिति के पास भेज गया था। संसदीय समिति की सिफारिशों के आधार पर सरकार ने एक बार फिर एक विधेयक को संसद में पेश किया था। लेकिन वह पारित नहीं हो पाया था।

यह विडंबना है कि हमारे सामाजिक ताने-बाने में तेजी से आए बदलाव के बीच वृद्ध माता-पिता की देखभाल की जिम्मेदारी से मुंह मोड़ने की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। अदालतों में गुजारा-भत्ते से जुड़े विवाद बड़ी संख्या में सामने आ रहे हैं। यही वजह है कि केंद्र सरकार वृद्ध माता-पिता की देखभाल के लिए बाध्य करने वाले 2007 के कानून में बदलाव लाकर, इसका दायरा बढ़ाने के मकसद से नए कानून लाने की तैयारी में है। माता-पिता और बुजुर्गों की देखभाल से जुड़े वर्षों पुराने कानून को प्रभावी व व्यावहारिक बनाने की कोशिश है। पहले वृद्ध माता-पिता अपनी संतानों से दस हजार रूपए तक का गुजारा भत्ता पाने के हकदार थे। बताया जा रहा है कि नए विधेयक के अनुसार अब माता-पिता का गुजारा भत्ता बच्चों की आर्थिक हैसियत से तय होगा। वहीं बच्चों के साथ कटुता कम करने के प्रयासों में माता-पिता व बुजुर्गों को त्यागने अथवा दुर्व्यवहार पर बच्चों को दी जाने वाली सजा में कमी करने की तैयारी है। सामाजिक संगठनों से विमर्श में यह बात सामने आई थी कि लंबी सजा से माता-पिता और बच्चों के संबंधों में ज्यादा खटास बढ़ती है। कहा जा रहा है कि सरकार बजट सत्र में इस विधेयक को पेश कर सकती है। दरअसल, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने बुजुर्गों की देखभाल से जुड़े 2007 के कानून में बदलाव की पहल तब की, जब समाज में बुजुर्गों की अनदेखी व दुर्व्यवहार के मामले तेजी से बढ़े हैं। दरअसल, नए विधेयक में इससे जुड़े कानून की व्यावहारिक दिक्कतों को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। हालांकि, मंत्रालय ने कानून में बदलाव की पहल वर्ष 2019 में कर दी थी। इसी साल लोकसभा में एक विधेयक भी

पेश किया गया था। इसके व्यापक पहलुओं की पड़ताल के लिए विधेयक को बाद में संसदीय समिति के पास भेज गया था। संसदीय समिति की सिफारिशों के आधार पर सरकार ने एक बार फिर एक विधेयक को संसद में पेश किया था। लेकिन वह पारित नहीं हो पाया था। कालांतर 17वीं लोकसभा का कार्यकाल खत्म होने के कारण विधेयक निष्प्रभावी हो गया था। जिसके बाद अब सरकार नए सिरे से इस विधेयक को संसद में लाने की तैयारी में है। उल्लेखनीय है कि इस विधेयक में कई नए प्रावधानों को जोड़ा गया है। एक ओर जहां गुजारा भत्ते के सीमित दायरे को खत्म किए जाने का प्रावधान है, वहीं विगत में आए बच्चों की सजा बढ़ाने के प्रस्ताव को टाला गया है। अब इसे सिर्फ प्रतीकात्मक तौर पर ही रखा जाएगा। वहीं गुजारा भत्ता देने की जवाबदेही का विस्तार करते हुए अब पात्र बच्चों के दायरे में दामाद, पुत्रवधु, नाती-पोते, पोती-नातिन व अल्पवयस्क बच्चों के विधिक अभिभावकों को भी शामिल किया गया है। अब तक इस जवाबदेही के दायरे में बेटा-बेटी व दत्तक बेटा-बेटी ही शामिल थे। इसके अलावा विधेयक में प्रत्एक जिले में बुजुर्गों की गणना, मेडिकल सुविधाओं से लैस वृद्ध आश्रम व जिला स्तर पर एक सेल गठित करने जैसे प्रावधान हैं।

...साभार डीटी

जरूरत से ज्यादा ईयरफोन का इस्तेमाल कान व दिमाग के लिए खतरा

ब्ल्यूटुथ डिवाइस ने हमारे काम को आसान बनाया है, लेकिन इससे कनेक्ट होने वाले ईयरफोन, ईयरपोड या हैडफोन के रोजाना देर तक इस्तेमाल करने पर कान के ऑडिटरी हियरिंग मैकेनिज्म पर असर पड़ता हैं और हियरिंग लॉस का कारण बनता है। इसी विषय पर दिल्ली स्थित एक नामी अस्पताल में ईएनटी डिपार्टमेंट में एसोसिएट डायरेक्टर डॉ. नेहा सूद से रजनी अरोड़ा की बातचीत। हाल ही में देश की एक मशहूर प्लेबैक सिंगर की खबर ने सबको चौंका दिया है। वायरल अटैक की वजह से उन्हें सुनाई देना बंद हो गया है। यानी वो सडन रेयर सेंसरीन्यूरल हियरिंग लॉस बीमारी से जूझ रही हैं। डाक्टरों का मानना है कि इसके पीछे एक बड़ा कारण तेज आवाज वाले वातावरण में रहना या कान में हैडफोन या ईयरफोन पर लाउड म्यूजिक सुनना भी है। वायरलेस ब्ल्यूटुथ डिवाइस के बढ़ते क्रेज ने भले ही हमारे काम को आसान बनाया है, लेकिन यह हमारी सेहत को नुकसान भी पहुंचा रहा है। दरअसल ब्ल्यूटुथ से कनेक्ट होने वाले ईयरफोन, ईयरपोड या हैडफोन से इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडियो फीक्वेंसी रेडिएशन निकलती हैं। जो डिवाइस के रोजाना लंबे समय तक इस्तेमाल करने पर कान के ऑडिटरी हियरिंग मैकेनिज्म को प्रभावित करती हैं और हियरिंग लॉस का कारण बनती हैं। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के हिसाब से दुनिया भर में 10 में से 2 लोग सेंसरीन्यूरल हियरिंग लॉस से पीड़ित हैं। हाई इंटेंसिटी साउंड एक्सपोजर होने पर कई बार कान के अंदरूनी और अहम हिस्से कॉक्लिया में मौजूद हेयर-सेल या ऑडिटरी नर्व डैमेज हो जाते हैं जिससे व्यक्ति की सुनने की क्षमता पर असर पडता है। यह एक्सपोजर दो स्थितियों में होता है- पहला जब कान को ब्ल्यूटुथ डिवाइस के माध्यम से हाई इंटेंसिटी साउंड एक्सपोजर कई घंटे लगातार मिलता रहता है जैसे म्यूजिक सुनना, मोबाइल देर तक सुनना, म्यूजिक कंपोजिशन, डीजे शो, माइनिंग या कारखानों में काम करने के दौरान। दूसरी स्थिति कान को हाई इंटेंसिटी साउंड एक्सपोजर एकाएक मिलने पर होती जैसे बमबारी, आतिशबाजी। कई मामलों में व्यक्ति को केवल एक कान में यानी यूनिलेटरल हियरिंग लॉस ही होता है। लगातार ईयरपोड के इस्तेमाल से कई बार केवल डोमिनेट-ईयर ज्यादा डैमेज होता है। आमतौर पर यूनिलेटरल हियरिंग लॉस वाले मरीज डॉक्टर को बहुत देर से कंसल्ट करते हैं। तब तक उसका दूसरा कान भी प्रभावित हो सकता है। व्यक्ति दिन में लगातार 6 घंटे से ज्यादा देर तक लगातार ईयर डिवाइस का उपयोग करता है, तो आगे चलकर उसे भी हियरिंग समस्या हो सकती है। आमतौर पर म्यूजिक का तेज वॉल्यूम 75-80 डेसिबल माना जाता है। लेकिन ब्ल्यूटुथ डिवाइस पर सुनने पर यह वॉल्यूम खुद-ब-खुद बढ़कर करीब 110 डेसिबल हो जाता है। जैसे-जैसे डेसिबल बढ़ते हैं, सेफ लिस्निंग टाइम कम होता जाता है। सीडीसी, अमेरिका के मुता. बिक ईयरफोन डिवाइस पर 40-60 डेसिबल तक की साउंड नॉर्मल है। साउंड एक्सपोजर 85 डेसिबल के ऊपर होने पर हियरिंग लॉस का खतरा बढ़ जाता है। रोजाना ईयरफोन पर 90 डेसिबल का साउंड आधे घंटे और 100 डेसिबल से ज्यादा लेवल का साउंड 15 मिनट सुनने से व्यक्ति 5 साल में सुनने की क्षमता खो सकता है। जबकि हाई इंटेंसिटी साउंड यानी 120 डेसिबल से ज्यादा होने पर कुछ सेकंड में ही हियरिंग लॉस हो सकता है। हाई इंटेंसिटी साउंड से होने वाला हियरिंग लॉस लाइलाज, स्थाई होता है। शुरुआत में टेम्परेरी होता है जो दो-चार दिन में ठीक हो सकता है। कुछ मामलों में मरीज को टिनिटस समस्या होती है यानी कान में लगातार सीटी या बीप साउंड, सांय-सांय जैसी आवाजें आती हैं। लेकिन यह

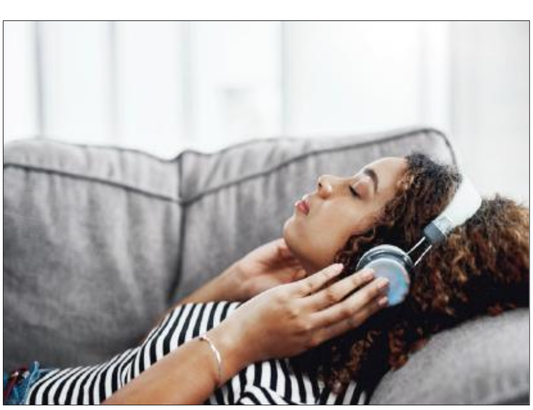

धीरे-धीरे बढ़ता रहता है और कॉक्लिया के हेयर-सेल डैमेज करता रहता है व लाइलाज हियरिंग लॉस हो जाता है। हियरिंग लॉस के शुरुआती लक्षणों से व्यक्ति पहचान सकता है। बिना देरी ईएनटी डॉक्टर को कंसल्ट करना चाहिए। 2 फुट की दूरी की आवाज सुनने में दिक्कत आना। दूसरों की बात समझने में मुश्किल, टीवी देखते हुए वॉल्यूम दूसरों की अपेक्षा ज्यादा करना पड़े। कान में एब्नॉर्मल साउंड आना शुरू हो जैसे- रिंगिंग साउंड, सीटी या बीप साउंड। इनके अलावा ऑडिटरी नर्व डैमेज होने के साथ कई समस्याएं होने लगती हैं- कुछ आवाजें या गाने की कुछ बीट्स सुनाई न देना, कान में खुजली, दर्द, कान बहना, कान के अंदर सीटी की आवाजें या बाहर की आवाजें गूंजना, बॉडी बैलेंस बिगड़ना। डॉक्टर सबसे पहले कान का नॉर्मल एग्जामिन करते हैं। हियरिंग लेवल का पता लगाने के लिए ऑडियोमेट्री टेस्ट किया जाता है-हियरिंग लॉस 10-20 प्रतिशत के बीच में है, तो वह नॉर्मल है। 20-40 प्रतिशत हियरिंग लॉस को माइल्ड , 40-60 प्रतिशत को मॉडरेट हियरिंग लॉस और 60-80 प्रतिशत को सीवियर और 80 प्रतिशत से अधिक को गंभीर हियरिंग लॉस माना जाता है। उपचार हियरिंग लेवल के आधार पर तय किया जाता है- माइल्ड से मॉडरेट हियरिंग लॉस में हियरिंग एड या एम्प्लीफायर डिवाइस सहायक हो सकते हैं। सीवियर लॉस में कॉक्लिया इम्प्लांट सर्जरी की जाती है। एक कान में हियरिंग लॉस पर बोन एंकर्ड हियरिंग एड लगाया जाता है। कुछ बातों का ध्यान रखकर हियरिंग लॉस से बचा जा सकता है- पहली, ब्ल्यूटुथ डिवाइस लगाएं तो 60/60 रूल फॉलो करें। यानी डिवाइस वॉल्यूम 60 डेसिबल से ज्यादा न हो और एकसाथ 60 मिनट से ज्यादा इस्तेमाल न करें। जरूरी हो तो 30 मिनट के बाद 5 मिनट और 60 मिनट के बाद 10 मिनट का ब्रेक जरूर लें। वहीं साउंड मिनिमम इंटेंसिटी पर इस्तेमाल करें। ईयरबड के बजाय कान के ऊपर वाला हेडफोन इस्तेमाल करें। सॉफ्ट टिप वाले ईयरफोन लें। यथासंभव नॉयस-कंसेलेशन वाली डिवाइस लें। ब्ल्यूटुथ डिवाइस पर दिए गए राइट और लेफ्ट मार्क का ध्यान रखें और सही कान में लगाएं। म्यूजिक ऐप डाउनलोड कर उसमें एक्यूलाइजर इस्तेमाल करें। शोरगुल वाले इलाके या कार्यस्थल पर जाने से पहले कान में नॉयस-प्रोटेक्टर जरूर लगाएं। हाई रिस्क कैटेगरी वाले व्यक्ति 6 महीने में ऑडिटरी स्क्रीनिंग-ऑडियोमेट्री टेस्ट कराएं।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

जो अकेले चलते है, वे तेजी से बढ़ते है : नैपोलियन

हम जागे रहें तो वो इसी जीवन में मिलेगा, आज नहीं तो कल अगला स्वर्णकमल भी खिलेगा

हर बार सागर की मिट्टी से उठता स्वर्णकमल सोमनाथ

डॉ. मयंक चतुर्वेदी
वरिष्ठ पत्रकार

सागर की मिट्टी से उठने की यह गाथा हिंदू हित की अमूल्य निधि है। लाखों श्रद्धालु आते हैं, समुद्र गाता है शिव स्तोत्र। यह कथा यहां आनेवाले हर पथिक और श्रद्धालु से यही कहती- आक्रमण कितने भी हों, शिव की शक्ति अपार, अविचल और व्याप्त है।

सागर की लहरें गाती हैं प्राचीन मंत्र, 'हर हर महादेव !' गुजरात के प्रभास पाटन तट पर जहां समुद्र की छाती पर सोमनाथ का स्वर्णकमल बार-बार खिलता है। यह मंदिर पत्थरों में पग-पग हिन्दू आस्था कहता है, इसलिए ये जब-जब ध्वस्त हुआ, फिर खड़ा हुआ। हजारों वर्षों की इस विजय गाथा में सागर की मिट्टी गवाह है जो हर विध्वंस के बाद नया स्वर्णकमल खिला देती है। हिंदू हित की दृष्टि से यह गाथा सिखाती है, संताप में भी धैर्य, संघर्ष में भी श्रद्धा और विजय में भी विनम्रता। आइए, इस भावुक यात्रा पर चलें, जहां इतिहास की धूल में शिव की ज्योति चमकती है।

सोमनाथ का प्रादुर्भाव द्वापर युग से जुड़ा है। महाभारत के अनुसार चंद्रवंशी राजा सोम ने यहां शिवलिंग की स्थापना की, जिसे चंद्रभागा नदी के तट पर स्थापित किया गया। पुराणों में वर्णित है कि यह बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम है, जहां शिव ने स्वयं अवतार लिया। वैदिक काल से यह तीर्थ हिंदू संस्कृति का केंद्र रहा। समुद्र की गोद में बसा यह मंदिर व्यापारियों, तीर्थयात्रियों और राजाओं का आकर्षण रहा। किंतु हिंदू हित की परीक्षा तब शुरू हुई, जब इस पावन धाम पर जिहादी इस्लामिक आक्रमणकारियों की नजर पड़ी।

सन 725 ई. में अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम ने पहला प्रहार किया, पर सोमनाथ अटल रहा। फिर 1024 ई. में महमूद गजनवी आया, वह क्रूर लुटेरा जिसने 50 हजार सैनिकों के साथ सोमनाथ को लूटा। इतिहासकार फरिश्ता और अल-बिरूनी के अनुसार, उसने मंदिर तोड़ा, 20,000 हिंदू योद्धाओं का संहार किया और 20 क्विंटल सोना लूटा। शिवलिंग को तोड़ने की कोशिश की, लेकिन चमत्कार हुआ, लिंग अखंड रहा। गजनवी ने उसे घोड़े पर लादकर ले जाना चाहा पर सागर की मिट्टी ने विद्रोह किया। भावुक हिंदू हृदय आज भी रोता है उस कत्लेआम पर, किंतु सागर की लहरों से स्वर गुंजायमान होता रहा- 'हर हर महादेव !' यह प्रथम स्वर्णकमल मुरझाया अवश्य किंतु जड़ें अटल रहीं।

हजार वर्षों में 17 बार सोमनाथ ध्वस्त हुआ। अलाउद्दीन खिलजी (1299), मुबारक शाह (1311), महमूद खलजी और औरंगजेब जैसे आक्रमणकारियों ने इसे निशाना बनाया, हर बार एक परिपाटी, विध्वंस करने वाले मुसलमान, जिहादी इस्लाम पर जिनका विश्वास रहा। पर सोमनाथ भी कहां विलुप्त होने वाले थे, हर बार खण्डरों से आवाज आई, हर हर महादेव, सागर के किनारे की रेत का हर कण बोल रहा था, ओम नमः शिवाय, ऐसे में चमत्कार स्वभाविक था, हर बार सोमनाथ खण्डरों में से निकलकर उठ खड़ा हुआ, हिंदू राजाओं में प्रेरणा अपार थी, हर विध्वंस के बाद सोमनाथ का स्वर्ण कमल प्रकट हो रहा था, मंदिर पुनर्निर्माण किया जा रहा था।

इसके साथ ही इतिहास हर बार इसमें कुछ नया जोड़ता जा रहा था, 14वीं शताब्दी में चित्तौड़ के रावल ने इसे पुनः स्थापित किया। लेकिन सबसे मार्मिक अध्याय है 1665 का, जब हिन्दू विरोधी, क्रूर जिहादी औरंगजेब का आदेश हुआ, एक बार फिर मुगल सिपाहियों ने मंदिर को मस्जिद में बदल डाला। पर हिंदू आस्था महाप्रवल रही, योद्धा छिपकर पूजा करते रहे, सागर की मिट्टी में शिवतत्व लुका-छिपी खेलता रहा। कहना होगा, अद्भुत है ये कथा, जहां हिंदू संकल्प नहीं डिगा न हारा, ऊपरी मंदिर फिर भले ही गिरे हों, पर वहां हृदय न डरे।

फिर आया स्वर्णकमल का पुनरुत्थान। 1782 में गायकवाड़ राजा ने आंशिक मरम्मत की, किंतु सच्ची विजय 1947 के स्वतंत्र भारत में सामने आई। सरदार वल्लभभाई पटेल ने संकल्प लिया। 11 मई 1951 को राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने पुनर्निर्मित सोमनाथ का शिलान्यास किया। 20,000 श्रद्धालुओं के बीच 'हर हर महादेव' की श्रद्धा गूंज फिर एक बार यहां गूंज उठी। यह मंदिर हिंदू जागरण का स्तम्भ बना। नेहरू ने धर्मनिरपेक्षता का रोना रोया, किंतु पटेल भी बोले- 'यह हिंदू हृदय का मंदिर है !' आज 130 फीट ऊंचा, पांच मंजिला यह स्वर्णकमल चमकता है, जिसमें 212 टन सोने का छत्र है।

सागर की मिट्टी से उठने की यह गाथा हिंदू हित की अमूल्य निधि है। लाखों श्रद्धालु आते हैं, समुद्र गाता है शिव स्तोत्र। यह कथा यहां आने वाले हर पथिक और श्रद्धालु से यही कहती- आक्रमण कितने भी हों, शिव की शक्ति अपार, अविचल और व्याप्त है। आज जब हिंदू समाज चुनौतियों से जूझता है, तब सोमनाथ हर हिन्दू को याद दिलाता है, धैर्य रखो, कल विजय तुम्हारी ही होगी !

हर विध्वंस के बाद पुनर्निर्माण हिंदू धर्म की लचक दिखाता है। गजनवी की लूट के बाद चालुक्य राजा भीमदेव प्रथम ने मंदिर बनवाया। मेवाड़ के राणा सांगा ने रक्षा की। यह गाथा इतिहास से बढ़कर है, ये भावना का सागर है। ये मां भारती की गोद में शिव निवास है। सोमनाथ हिंदू एकता का मान है, जिसके कण-कण से आती ये आवाज है- 'न डरना, न झुकना, न है डराना किसी को, हममें शिव है, शिवत्व है, हर हर महादेव !' सागर की लहरें कहती हैं यदि हम जागे रहें तो वो इसी जीवन में मिलेगा, आज नहीं तो कल अगला स्वर्णकमल भी खिलेगा ।

यह लेखक के निजी विचार है

बांग्लादेश में गहराता मानवीय संकट

बांग्लादेश से आ रहे समाचार न केवल विचलित करने वाले हैं, बल्कि पड़ोसी देश में कानून-व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति और विशेष रूप से हिन्दू अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े करते हैं। बांग्लादेश के जेस्सोर जिले में पत्रकार राणा प्रताप बैरागी की दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या और अगले ही दिन एक हिन्दू दुकानदार शरत चक्रवर्ती मणि की धारदार हथियार से हत्या कर दी गई। 18 दिन में 6 हिन्दुओं की हत्याओं की घटनाएं सामने आई हैं। मारपीट और शोषण के मामले भी सामने आ रहे हैं। ये घटनाएं महज आंकडे नहीं हैं, बल्कि उस भयावह श्रृंखला की पांचवीं कड़ी है, जिसने पिछले कुछ हफ्तों में वहां के हिन्दू समुदाय को दहशत के साये में जीने को मजबूर कर दिया है। घटनाओं की प्रकृति और उनमें अपनाए गए तरीके अत्यंत बर्बर और अमानवीय हैं। एक तरफ जहां राणा प्रताप को सरेआम गोली मारी गई, वहीं शरीयतपुर में व्यापारी खोकन चंद्र दास के साथ जो हुआ, वह इंसानियत को शर्मसार करने वाला है। धारदार हथियारों से हमला करना और फिर पेट्रोल डालकर जिंदा जला देना, अपराधियों के मन में बैठे गहरे सांप्रदायिक जहर को दर्शाता है। इससे भी अधिक वीभत्स घटना झेनाइदह में सामने आई, जहां एक 44 वर्षीय हिन्दू विधवा के साथ न केवल सामूहिक दुष्कर्म किया गया, बल्कि उसे पेड़ से बांधकर पीटा गया और उसके बाल तक काट दिए गए। अपराधियों द्वारा इस कृत्य का वीडियो बनाना यह साबित करता है कि उनमें कानून का रत्ती भर भी भय नहीं बचा है। कहने को बांग्लादेश में नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मोहम्मद युनुस के हाथ में देश की बागडोर है लेकिन जिस प्रकार से इस्लामिक कट्टरपंथी खुलेआम आतंक मचा रहे हैं, वैसा आतंक इससे पहले कभी नहीं देखा गया। मोहम्मद युनुस सांप्रदायिक ताकतों के साथ ही खड़े नजर आ रहे हैं। अन्यथा इतना सबकुछ होने पर कुछ तो बोलते। दीपू चंद्र दास से लेकर राणा प्रताप तक, लगातार हो रही हत्याएं यह बताने के लिए काफी हैं कि वहां सांप्रदायिक तत्व हावी हो चुके हैं। इसे यूँ भी समझ सकते हैं कि बीसीसीआई के कहने पर जब कोलकाता नाइट राइडर्स ने मुस्तफिजुर रहमान को टीम से निकाला तो उसकी प्रतिक्रिया पूरा बांग्लादेश दे रहा है। अपने गिरेबां में झांकने की बजाय बांग्लादेश भारत को ही आँखें दिखा रहा है। दरअसल, बांग्लादेश पूरी तरह से पाकिस्तान और कट्टरपंथी इस्लामिक गिरोहों की गोद में जाकर बैठ गया है। बहरहाल, बांग्लादेश में हो रही ये घटनाएं भारत के लिए भी स्वाभाविक चिंता का विषय हैं। एक पड़ोसी राष्ट्र में, विशेषकर जब वहां सत्ता परिवर्तन और राजनीतिक अस्थिरता का दौर चल रहा हो, हिन्दू अल्पसंख्यकों का इस तरह निशाना बनना एक सुनियोजित षड्यंत्र का संकेत देता है। यह केवल एक देश का आंतरिक मामला नहीं, बल्कि मानवाधिकारों के घोर उल्लंघन का वैश्विक मुद्दा है। बांग्लादेश की वर्तमान अंतरिम सरकार और प्रशासन की यह नैतिक और संवैधानिक जिम्मेदारी है कि वे बहुसंख्यक तुष्टीकरण या राजनीतिक प्रतिशोध की आग में अल्पसंख्यकों को जलने से बचाएं। केवल घटनाओं के बाद कुछ गिरफ्तारियां कर लेना पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता है कि वहां की सरकार अल्पसंख्यकों के मन में सुरक्षा का विश्वास फिर से बहाल करे और ऐसे कड़े कदम उठाए जिससे कोई भी कट्टरपंथी कानून हाथ में लेने से पहले सौ बार सोचे। यदि समय रहते इन हिंसक प्रवृत्तियों पर अंकुश नहीं लगाया गया, तो यह नफरत की आग पूरे क्षेत्र की शांति के लिए खतरा बन सकती है। जैसे पाकिस्तान आतंक की आग में जल रहा है, वह दिन दूर नहीं जब बांग्लादेश भी इस नफरत की आग में खाक हो जाएगा। बांग्लादेश की स्थितियों को देखकर भारत को भी संभलने की जरूरत है। इसके साथ ही भारत को यह विचार करना चाहिए कि बांग्लादेश के हिन्दुओं की रक्षा के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं।

बांग्लादेश से आ रहे समाचार न केवल विचलित करने वाले हैं, बल्कि पड़ोसी देश में कानून-व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति और विशेष रूप से हिन्दू अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े करते हैं। बांग्लादेश के जेस्सोर जिले में पत्रकार राणा प्रताप बैरागी की दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या और अगले ही दिन एक हिन्दू दुकानदार शरत चक्रवर्ती मणि की धारदार हथियार से हत्या कर दी गई।

बोध कथा

दीक्षा से परिवर्तन

एक रानी ने श्रद्धावश सिद्ध संत नागार्जुन को राजमहल में आमंत्रित किया। महल में रानी ने उनसे कहा, 'मुझे आपका भिक्षा पात्र चाहिए।' नागार्जुन ने बिना किसी हिचक के अपना भिक्षा पात्र दे दिया। बदले में रानी ने हीरों से जड़ा स्वर्णिम भिक्षा पात्र उन्हें अर्पित किया और भावुक स्वर में कहा, 'आपका पुराना पात्र मैं पूजूंगी।' नागार्जुन ने दोनों को समान भाव से देखा। महल से निकलते समय एक चोर की दृष्टि उस चमकते पात्र पर पड़ी। नागार्जुन सब देख रहे थे। उन्होंने अचानक वह पात्र उठाया और मंदिर के बाहर फेंक दिया। चोर पात्र उठाकर जाने ही वाला था, पर उसके कदम रुक गए। उसकी आवाज कांप उठी, 'आप अद्भुत हैं। मेरी ज़िंदगी अंधकार में डूब चुकी है। मैं चोर हूं। क्या मैं आपके चरण छू सकता हूं?' चरण छूते ही चोर के भीतर कुछ जाग गया। उसने दिव्यता की एक झलक पाई और पूछा, 'आप जैसा बनने में मुझे कितने जन्म लगेंगे?' नागार्जुन ने कहा, 'यह अभी हो सकता है, यहीं, इसी क्षण।' नागार्जुन बोले, 'यदि किसी पुराने घर में सदियों से अंधेरा हो और एक दीया जलाया जाए, तो क्या अंधेरा यह कहेगा कि मैं नहीं जाऊंगा?' चोर ने पूछा, 'क्या मुझे चोरी छोड़नी होगी?' नागार्जुन ने शांत स्वर में कहा, 'यह तुम्हारा चुनाव है।' कुछ दिन बाद उसकी आंखों में अपराध नहीं, शांति थी। उसने कहा, 'मैं फंस गया हूं। ध्यान के साथ चोरी संभव ही नहीं।' नागार्जुन ने कहा, 'अब चुनाव तुम्हारा है, धन या शांति।' चोर ने सिर झुका दिया, 'मैं अचेतन होकर नहीं जी सकता। मुझे अपना शिष्य बना लीजिए।' नागार्जुन ने प्रेम से कहा, 'मैंने तुम्हें दीक्षा पहले ही दे दी है।'

चित्रकार

प्रभु तुमने ऐसे रंग उकेरे,
मोहित से देखूं रोज सवेरे।

फूलों के रंग से हतप्रभ मैं,
तितली के रंग से चकित में।

डालियों पर खिलते फूल अनंत,
जिनकी खुशबू से महके बसंत।

क्या सूझी तुमको यह जीव जगत,
जग मोह माया में पड़ा समस्त।

अंबर में छाए तारे अनंत,
छू न सके इनको जगत।

अटल दूर पर्वत विशाल,
मानव पहुंच लेकर मशाल।

मानव के हाथों थमा तूलिका,
रंग भर उसने सारे समूह का।

चिड़ियों में भिन्नता की भरमार,
केवल तोतों में रंगों की लंबी कतार।

सारा जगत लगता रहस्यमय,
सृजनशील खो गया कल्पनामय।

चित्रकार सृजन कर गया भूल,
चित्रों में उकेरे थे उसने फूल।

समुद्र में उठती दूर लहरें कमाल,
समुद्र की दुनिया अलग होती विशाल।

मछलियों के रंग रूप की विभिन्नता,
सीप, मानिक, मोतियों की संपन्नता।

जीव जंतु का कराता वो क्षुधापूर्ण,
मानव पेड़ पौधों से पाता अन्नपूर्ण।

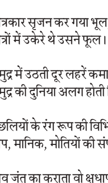

डॉ. सीमा अग्रवाल

बैतूल की जेल में लिखा गया था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का संविधान

बैतूल जेल से संचालित सत्याग्रह से डरकर ही नेहरूजी ने संघ से हटाया था प्रतिबंध

डॉ. प्रवीण दाताराम गुगनानी

सर्वविदित है कि परमपूजनीय श्रीगुरुजी माधव सदाशिवराव गोलवलकर बैतूल के कारागार के बैरक क्र. 1 में रह चुके हैं। वे यहां 1 जनवरी 1949 से 6 जून 1949 तक बंदी रहे थे। बैतूल कारागार के जिस बैरक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय परमपूजनीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी को बंदी बनाकर रखा गया था वह कक्ष आज भी एक लघु स्मारक के रूप में रिक्त रहता है। इस कक्ष में श्री गुरुजी का एक चित्र लगा हुआ है व उनके कारागार प्रवास के संदर्भ में कक्ष की दीवार पर संक्षिप्त लेखन भी है। बैतूल जेल के इस लघु स्मारक को अब एक भव्य, दिव्य स्मारक में परिवर्तित करने की चाह देश भर के स्वयंसेवकों में है।

वर्ष 2017 में परमपूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहनराव जी भागवत ने भी जेल के इस कक्ष में जाकर श्री गुरुजी को श्रद्धासुमन अर्पित किए थे।

गांधी जी की दुखद हत्या के पश्चात नेहरू सरकार ने आरएसएस पर प्रतिबंध लगा दिया था। श्री गुरुजी सहित बीस हजार अग्रणी स्वयंसेवक गिरफ्तार कर लिए गए थे। उस समय के प्रसिद्ध मराठी समाचार पत्र 'केसरी' के संपादक केतकर जी सरकार व संघ के मध्य संवाद करा रहे थे। केतकर जी 12 व 16 जनवरी 1649 को श्री गुरुजी से सिवनी कारागार में मिले थे। उन्होंने श्री गुरुजी से संघ के सत्याग्रह को समाप्त करने का आग्रह किया। श्री गुरुजी ने परिस्थितियों का आकलन किया व आंदोलन स्थगित कर दिया। 22 जनवरी को संघ के सत्याग्रह प्रभारी महावीर जी ने आंदोलन स्थगित करने की घोषणा कर दी। तब जाकर कहीं सरकार ने राहत की सांस ली थी।

यह भी एक स्मरणीय तथ्य है कि नेहरू जी की हठधर्मिता से संघ पर 1948 में लगे प्रतिबंध हटाने की भूमिका भी बैतूल जेल के बैरक क्र. 1 में ही लिखी गई थी। देश के प्रमुख समाचार पत्र 'द ट्रिब्यून' ने 22 जन. 1949 को संघ प्रतिबंध को अनैतिक बताते हुए लिखा - 'अब नेहरू सरकार को संघ से प्रतिबंध हटा लेना चाहिए'। संघ के इस आंदोलन के प्रति देश की जनता में बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए नेहरू सरकार घबरा गई थी। सरकार ने तत्काल ही पांसा फेंका और प. मौलिचन्द्र शर्मा को संघ से चर्चा करने हेतु आगे बढ़ाया।

इस समय तक श्री गुरुजी को सिवनी कारागार से बैतूल कारागार में स्थानांतरित किया जा चुका था। 10 जुलाई को मौलिचन्द्र शर्मा श्री गुरुजी से भेंट करने बैतूल जेल आए थे। बैतूल जेल से ही श्री गुरुजी एवं मौलिचन्द्र शर्मा की चर्चा के आधार पर नेहरू जी ने 12 जुलाई को संघ से प्रतिबंध हटाया था व 13 जुलाई को प्रातः समय में श्री गुरुजी को बैतूल जेल से मुक्त कर दिया गया था। (संदर्भ - श्री गुरुजी समग्र, खंड 2, पृष्ठ 45) बैतूल जेल से निकलने के तत्काल बाद ही श्री गुरुजी जीटी एक्सप्रेस से नागपुर चले गए थे। श्री गुरुजी के बैतूल से प्रस्थान के समय का एक किस्सा संघ क्षेत्रों में बहुधा ही कहा सुना जाता है। कहा जाता है कि, श्री गुरुजी ने बैतूल स्टेशन पर छोड़ने आए स्वयंसेवकों से कहा था - 'जिस दिन बैतूल में संघ का कार्य सुदृढ़ और संपुष्ट हो जाएगा उस दिन समूचे देश में संघ विचार सुदृढ़ हो जाएगा'। बैतूल जेल में श्री गुरुजी के बंदी रहने के समय को दुखद किंतु ऐतिहासिक काल कहा जाता है। श्री गुरुजी ने इस विकट, दुधूर्ष अग्निपरीक्षा के समय में अद्भुत धैर्य का परिचय देते हुए बैतूल जेल से अनेकों पत्रों व संवादों के माध्यम से देश भर के स्वयंसेवकों के मनोबल को बनाए रखा था तथा देश के वातावरण में राष्ट्रीयता का प्रवाह भी बनाए रखा था। समूचे देश के लाखों स्वयंसेवकों व सामान्य जनता श्री गुरुजी के संदेशों हेतु बैतूल जेल की ओर टकटकी लगाए देखते रहती थी। बैतूल देश की धड़कनों के केंद्र में आ गया था। बैतूल जेल में रहते हुए ही श्री गुरुजी ने नेहरू सरकार पर इतना दबाव बना लिया था कि नेहरू सरकार को न चाहते हुए भी श्री गुरुजी को जेल से मुक्त करना पड़ा था। श्री गुरुजी के बैतूल जेल में बंदी रहने के मध्य उन्होंने देश भर में ऐसा वातावरण निर्मित कर दिया था कि गृह मंत्री वल्लभभाई पटेल ने भी नेहरू जी पर अंगुली उठाते हुए 27 फरवरी 1948 को एक पत्र लिखा था - 'बापू की हत्या की जांच में हो रही प्रगति पर मैने प्रायः प्रतिदिन ध्यान दिया है। सभी प्रमुख अपराधियों ने अपनी गतिविधियों के लम्बे और विस्तृत वक्तव्य दिए हैं। उन वक्तव्यों से यह बात भी स्पष्ट रूप से उभर कर आती है कि इस सारे मामले में संघ कहीं भी संलिप्त नहीं है।' (संदर्भ - 1.श्री गुरुजी समग्र दर्शन-2, पृष्ठ 2-10, संदर्भ 2. पहली अग्नि परीक्षा, मामा माणिकचंद्र वाजपेयी, पृष्ठ 23-24, संदर्भ 3. Sardar Patel's Correspondence, Vol. VI PAGE 56)

संघ शताब्दी वर्ष विशेष

बैतूल जेल में श्रीगुरुजी के बंदी रहने के समय को दुखद किंतु ऐतिहासिक काल कहा जाता है। श्री गुरुजी ने इस विकट, दुधूर्ष अग्निपरीक्षा के समय में अद्भुत धैर्य का परिचय देते हुए बैतूल जेल से अनेकों पत्रों व संवादों के माध्यम से देश भर के स्वयंसेवकों के मनोबल को बनाए रखा था तथा देश के वातावरण में राष्ट्रीयता का प्रवाह भी बनाए रखा था।

श्री गुरुजी को बैतूल कारागार में नाना प्रकार से प्रताड़ित किया गया था। उन्हें भोजन, पहनने को कपड़े व कंबल आदि अत्यंत निम्नस्तरीय प्रकार के दिए जाते थे। कष्ट, प्रताड़ना, व निम्न स्तरीय भोजन, वस्त्र से उत्पन्न कष्ट से श्री गुरुजी को कोई अन्तर नहीं पड़ता था। वे तो निस्पृह योगी थे। बिना भगवा पहने ही एक महान सन्यासी थे। उन्होंने बैतूल जेल में मिले उस सम्पूर्ण गरल को नीलकंठ बन अपने कंठ में स्थिर कर दिया था। बैतूल जेल उनके लिए एक साधना केंद्र हो गई थी।

बैतूल कारागार में श्री गुरूजी ने संघ का संविधान तैयार करने के कार्य को प्रारंभ व पूर्ण किया था व अपने हस्ताक्षर के साथ इसे जारी किया था।

श्री गुरुजी गोलवलकर का बैतूल जेल प्रवास संघ के इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था, और, बैतूल की यह जेल संघ के संविधान की जन्मस्थली।

बैतूल कारागार में रहते हुए श्री गुरुजी ने संघ की राजनाति में शुचिता, पवित्रता व समाज योगदान के संदर्भ में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ बहुत व्यापक पत्राचार किया। इन पत्रों को बाद में 'Justice on Trial' नामक पुस्तक में प्रकाशित भी किया गया था। श्री गुरुजी ने तत्कालीन नेहरूवियन सरकार से आग्रह किया था कि यदि संघ के विरुद्ध कोई साक्ष्य है तो उसे सार्वजनिक किया जाए, अन्यथा प्रतिबंध हटाकर स्वयंसेवकों को राष्ट्र निर्माण में योगदान देने दिया जाए।

बैतूल कारागार में रहने के मध्य श्री गुरुजी उस समय के उदारवादी नेता टी.आर.वी. शास्त्री से सतत संपर्क में थे। शास्त्री जी ने भी नेहरू-गांधी की सरकार और गुरुजी के बीच मध्यस्थता की थी।

उस समय की जवाहर लाल नेहरू की आत्ममुग्ध, अंग्रेजीदां शैली से चलने वाली सरकार ने संघ पर नाना प्रकार के आरोप लगाए थे। श्री गुरुजी ने जेल में रहते हुए ही समूचे राष्ट्र को स्पष्ट कर दिया था कि संघ एक घोर राष्ट्रवादी, संस्कृति केंद्रित व समाज आधारित संगठन मात्र है।

उस समय के तत्कालीन गृह सचिव आर.एन. बनर्जी ने, गांधी हत्या में संघ की संलिप्तता के मिथ के संदर्भ में सार्वजनिक तौर पर कहा था कि सम्पूर्ण, गहन व सघन जांच की गई है जिसमें संघ का गांधी जी की हत्या में रज मात्र भी भूमिका नहीं दिखती है।

आज बैतूल जिले की यह ऐतिहासिक जेल निजी क्षेत्र को विक्रित की जाकर तोड़े जाने के कगार पर है। आवश्यकता इस बात की है कि जेल परिसर में निर्मित इस 'गुरुजी कक्ष' को या 'संघ संविधान जन्म कक्ष' को सुरक्षित रखकर एक स्मारक के रूप में सुरक्षित रखा जाए। समूचा देश बैतूल जेल के इस कक्ष को एक विशाल, भव्य स्मारक के रूप में देखना चाहता है।

पश्चिम में कम्युनिटी लिविंग का बढ़ता चलन

डॉ. नीलम महेंद्र
पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय में हिंदी सलाहकार समिति की सदस्य

हाल ही में एक रिसर्च में यह बात सामने आई कि ब्रिटेन में परिवार के सदस्यों (दादा-दादी, माता-पिता, बच्चे) या गैर-पारिवारिक सदस्यों के साथ एक छत के नीचे रहने का चलन बढ़ रहा है।

सिर्फ माता-पिता के साथ ही नहीं, बल्कि ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस और अमेरिका जैसे देशों में सैकड़ों कम्युनिटी लिविंग ग्रुप्स बन गए हैं, जहां लोग सस्ते में रहते हैं और अकेलेपन से बचते हैं। वहां समाजशास्त्रियों की रिसर्च में यह बात सामने आई है कि कम्युनिटी लिविंग या मल्टी-जेनरेशनल घरों में रहने वाले लोग अकेले या न्यूक्लियर फैमिली (एकल परिवार) में रहने वालों की तुलना में अधिक संतुष्ट और खुश महसूस करते हैं। नतीजन जो लोग अपने घर का खर्च उठा सकते हैं, वे भी अब कम्युनिटी लिविंग चुन रहे हैं, जिससे यह सिर्फ आर्थिक मजबूरी नहीं, बल्कि वहां एक जीवनशैली का विकल्प बनता जा रहा है।

इसके विपरीत हम पर्सनल स्पेस और प्राइवेसी की ओर भाग रहे हैं। आज भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ आर्थिक प्रगति, तकनीकी विकास और वैश्विक पहचान के शोर में एक अत्यंत मौन लेकिन गहरी सामाजिक त्रासदी घट रही है और वो है संयुक्त परिवारों का विघटन।

विडंबना यह है कि जिस संयुक्त परिवार व्यवस्था को भारत ने पिछड़ेपन का प्रतीक मानकर त्यागना शुरू किया, वही व्यवस्था आज पश्चिमी देशों में नए सामाजिक समाधान के रूप में अपनाई जा रही है। भारत में संयुक्त परिवारों का विघटन केवल जीवन-शैली का बदलाव नहीं है बल्कि यह हमारे मूल सामाजिक दर्शन से विचलन है।

दरअसल भारत में संयुक्त परिवार कभी केवल साथ रहने की व्यवस्था मात्र नहीं रहा। अपितु यह एक ऐसा सांस्कृतिक सुरक्षा कवच था जहां बच्चे संस्कार सीखते थे, युवा जिम्मेदारी निभाते थे और बुजुर्ग सम्मान पाते थे। यह वह व्यवस्था थी जिसने बिना किसी मनोवैज्ञानिक परामर्श के पीढ़ियों को भावनात्मक रूप से संतुलित रखा। लेकिन आज वही व्यवस्था 'स्पेस' 'प्राइवेसी' और 'इंडिविजुअल फ्रीडम' जैसे शब्दों के नीचे दम तोड़ रही है। और जब परिवार टूटते हैं, तब केवल दीवारें अलग नहीं होतीं, तब संस्कार, संवेदनाएं और सामाजिक संतुलन भी दरकने लगता है।

आंकड़े इस सामाजिक बदलाव की पुष्टि करते हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2019–21) के अनुसार भारत में लगभग 58.2% परिवार अब एकल (न्यूक्लियर) संरचना के हैं, जबकि संयुक्त परिवारों की हिस्सेदारी लगातार घट रही है। यह स्पष्ट संकेत है कि संयुक्त परिवार अब अपवाद बनते जा रहे हैं।

शहरीकरण और रोजगार की मजबूरियां इस टूटन को और तेज कर रही हैं। शोध बताते हैं कि शहरी युवाओं में स्वतंत्रता और निजता को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिससे संयुक्त परिवारों के साथ रहना 'असुविधाजनक' समझा जाने लगा है। पर क्या सुविधा का अर्थ संवेदना का त्याग होना चाहिए, क्या स्वतंत्रता का अर्थ रिश्तों से मुक्ति है?

नतीजन आज भारत में परिवार छोटे हो रहे हैं और समस्याएं बड़ी। पति-पत्नी दोनों कामकाजी हैं, फिर भी मानसिक थकान बढ़ रही है। बच्चे सुविधाओं से घिरे हैं, फिर भी भावनात्मक रूप से असुरक्षित हैं। और बुजुर्ग, जिनके अनुभव किसी भी समाज की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं, आज उपेक्षा और अकेलेपन के शिकार हैं। जिस समाज में कभी बुजुर्ग परिवार का केंद्र होते थे, आज वहीं 'ओल्ड एज होम' एक आवश्यक व्यवस्था बनती जा रही है। यह विकास नहीं, यह सामाजिक विफलता का संकेत है। इसके उलट, यदि हम पश्चिमी देशों की ओर देखें तो एक बिल्कुल अलग तस्वीर उभरती है। अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में अब कम्युनिटी लिविंग, मल्टी-जेनरेशन होम्स और फैमिली सपोर्ट सिस्टम को बढ़ावा दिया जा रहा है। वहां सरकारें और समाज यह समझ चुके हैं कि अकेलापन सबसे महंगी बीमारी है, जिसका इलाज न दवाओं से होता है, न धन से।

कब लौटेगी मणिपुर में शांति की सुबह आईईडी धमाकों से टूटी खामोशी और सुलह की तलाश

कांतिलाल मांडोत

मणिपुर एक बार फिर दहल उठा है। कुछ दिनों की अपेक्षाकृत शांति के बाद विष्णुपुर जिले में हुए आईईडी धमाकों ने न केवल लोगों के जख्म हरे कर दिए हैं बल्कि यह भी दिखा दिया है कि राज्य में हालात अब भी बेहद नाजुक हैं। तीन घंटे के भीतर दो विस्फोट और आम नागरिकों का घायल होना इस बात का संकेत है कि हिंसा का स्वरूप अब और खतरनाक दिशा में जा सकता है। 3 मई 2023 से शुरू हुई मैतेई और कुकी समुदायों के बीच की टकराहट पहले फायरिंग और आगजनी तक सीमित थी लेकिन अब आईईडी जैसे हथियारों का इस्तेमाल चिंता को कई गुना बढ़ा देता है। यह सिर्फ एक सुरक्षा घटना नहीं है बल्कि मणिपुर के सामाजिक तानेबाने पर एक और गहरी चोट है।

मणिपुर का संकट केवल कानून व्यवस्था का सवाल नहीं है बल्कि यह पहचान भूमि संसाधन और राजनीतिक प्रतिनिधित्व से जुड़ा जटिल मसला है। मैतेई समुदाय घाटी में बहुसंख्यक है और प्रशासनिक राजनीतिक ढांचे में उसका प्रभाव ऐतिहासिक रूप से अधिक रहा है। कुकी समुदाय पहाड़ी इलाकों में रहता है और लंबे समय से यह आशंका जताता रहा है कि उसकी जमीन और पहचान पर खतरा बढ़ रहा है। आरक्षण और भूमि अधिकारों को लेकर उठे विवाद ने धीरे धीरे सामुदायिक अविश्वास को खुली हिंसा में बदल दिया। जब राज्य में संवाद की जगह हथियार बोलने लगें तो उसका असर केवल एक समुदाय तक सीमित नहीं रहता बल्कि पूरा समाज उसकी कीमत चुकाता है। आईईडी धमाके इस संघर्ष को एक नए और अधिक भयावह मोड़ पर ले जाते हैं। इससे पहले तक हिंसा की घटनाएं अपेक्षाकृत सीमित और स्थानीय थीं लेकिन विस्फोटक का प्रयोग यह संकेत देता है कि उग्र तत्व अब संगठित और तकनीकी रूप से अधिक सक्षम हो रहे हैं। यदि इस प्रवृत्ति को समय रहते नहीं रोका गया तो मणिपुर का संकट राष्ट्रीय सुरक्षा की चिंता भी बन सकता है। ऐसे में किसी एक समुदाय को दोषी ठहराना आसान है लेकिन समाधान के लिहाज से यह सबसे कमजोर रास्ता भी है।

मैतेई समुदाय के लिए यह संघर्ष भारी नुकसान लेकर आया है। घाटी क्षेत्र जो राज्य की आर्थिक और प्रशासनिक रीढ़ है लंबे समय से अस्थिरता के कारण ठप पड़ा है। व्यापार पर्यटन शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हुई हैं। लगातार सुरक्षा बलों की तैनाती और कर्फ्यू जैसे हालात ने सामान्य जीवन को बाधित कर दिया है। युवाओं में असुरक्षा और गुस्से की भावना बढ़ रही है जो उन्हें कट्टर सोच की ओर धकेल सकती है। यह स्थिति मैतेई समाज के लिए दीर्घकालिक सामाजिक और आर्थिक नुकसान का कारण बन सकती है।

कुकी समुदाय की पीड़ा भी कम नहीं है। पहाड़ी इलाकों में बसे कई गांव उजड़ चुके हैं। विस्थापन ने हजारों परिवारों को राहत शिविरों में रहने को मजबूर किया है। आजीविका के साधन छिन गए हैं और बच्चों की शिक्षा लगभग ठप हो गई है। कुकी समाज के भीतर यह भावना गहरी होती जा रही है कि राज्य और केंद्र की नीतियां उनकी सुरक्षा और अधिकारों को पर्याप्त महत्व नहीं दे रहीं। इस हताशा का फायदा उग्रवादी तत्व उठाते हैं और युवाओं को हिंसा के रास्ते पर ले जाते हैं।

संपादकीय

'पर्याप्त' संख्या नहीं सोच है !

हर कोई अपने लिए पर्याप्त संसाधन जुटाना चाहता है ताकि हर स्थिति का मुकाबला किया जा सके और इस बात की दौड़ लगी रहती है कि थोड़ा और हो जाता तो अच्छा होता। पर पर्याप्त की मरीचिका आगे-आगे भागती है और हम पीछा ही करते रहते हैं। आम आदमी की जिंदगी में अकसर ऐसी परिस्थिति आती रहती है जब सामने कोई नए मॉडल का फोन या कार, शर्ट या बैग या फिर कुछ भी नया लिए सजा-धजा दिखता है। इसे देख हमें भी लगता है कि वह सब मेरे पास भी हो । एक बार मेरे सामने भी एक युवा एक नए मॉडल के फोन के साथ फोटो खींच रहा था। मेरे मन में भी हिलोर उठी और मुझे लगा कि मेरे पास भी यह फोन होना चाहिए । फिर मैंने अपनी इच्छा पर किसी तरह काबू पाया। मेरे पास दो साल बाद भी आज अपना पहले वाला ही फोन है और वह ठीक काम कर रहा है और मैं खुश भी हूं । अब एक दूसरी घटना लीजिए । पिछले साल मैंने एक आई पैड खरीदा । सोचा था इससे लिखने-पढ़ने का काम और अच्छी तरह और सुविधापूर्वक कर सकूँगा । पर आई पैड के आने के बाद मेरे काम धाम में कुछ ज्यादा फर्क नहीं पड़ा। ज्यादातर समय वह आई पैड पड़ा ही रहा और मैं अपने पुराने लैपटाप से ही काम करता रहा। आई पैड को दो एक बार पोंछ-पाछ कर चार्ज जरूर किया था। ये महंगा था और अपने खर्चों में किसी तरह कतर-ब्योंत कर ही इसे खरीद पाया था। दरअसल नया फोन, नया सोफा, नया जूता या फिर कोई भी नई चीज लेने के बाद हफ्ते भर बीतते न बीतते वह चीज साधारण, बासी और पुरानी लगने लगती है। तब फिर हम उसे अपने उपयोग में नहीं लाते। ऐसा होने के बाद उसके लिए हमारी इच्छा की तीव्रता भी कम होने लगती है, वह ढलने लगती है । साथ ही बहुतेरी इच्छाओं के बीच से चुनने का अतिभार जैसा भी होने लगता है। हमारे सामने सवाल है कि इसे कैसे कम किया जाय या किफायती कैसे बना जाय ? हमारे मस्तिष्क की पुरस्कार प्रणाली को अधिक जीवंत और संतोषप्रद कैसे बनाया जाय ? थोड़ा और की प्रवृत्ति बताती है कि हमारा मस्तिष्क नए-नए संसाधनों को इकट्ठा करने में जुटा रहता है। आदिम मनुष्य के जीवन में भोजन इकट्ठा करने और दीर्घ जीवन के लिए यह युक्ति कारगर थी। आज के दौर में पुरस्कार की जगह बदलाव और अप्रत्याशित फायदे हमें अधिक आकर्षित करते हैं। इस व्यवस्था ने हमारे पूर्वजों को इस बात के लिए प्रेरित किया था कि वे बस थोड़ा सा और पाने की जुगत में ही उलझे रहें । तब यह निश्चित ही उपयोगी था क्योंकि इससे वे अस्पष्ट और अनिश्चय की स्थिति में भी जीवन यापन कर सके थे । सुरक्षा की दृष्टि से यह जरूरी था। आज की बात कुछ और है। हमारी दुनिया बहुत बदल चुकी है। अब वैसी असुरक्षा और अनिश्चय की स्थिति नहीं रही। "थोड़ा और" अर्जित करने के अवसर अब हम पुराने माडल को अपग्रेड करने और अन्य चीजों के विकल्पों में बदल चुके हैं। इस बदली परिस्थिति में हम लोग जो कुछ हमारे पास पहले से है उससे जो ज्यादा है या बढ़-चढ़ कर है उसे चाहने लगते हैं।

नई दिल्ली कार्यालय
एक्शन बालाजी हाउस, बी-244, मजलिस पार्क, दिल्ली- 110033

उत्तरी दिल्ली कार्यालय
शक्ति कॉम्पलैक्स, 6/18, समयपुर इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली- 110042

चंडीगढ़ कार्यालय
फर्स्ट फ्लोर, देश सेवक बिल्डिंग, सेक्टर- 29डी, चंडीगढ़

पंजाब कार्यालय
7/2, थर्ड फ्लोर, मोनिका, टावर, ईआर-146, पक्का बाग, मिलाप चौक, जालंधर

करनाल कार्यालय
224, सेक्टर 32पी, करनाल- 132001

सोनीपत कार्यालय
एक्शन इंडिया कार्यालय, अपोजिट एनएस कम्प्यूटर, झंडी रोड़, गीता भवन चौक सोनीपत- 131001

शिमला कार्यालय
किशोर भवन, जोधा निवास, डेजी बैंक एस्टेट, लोअर जाखू, शिमला- 171001

ऊना कार्यालय
कृष्णा टावर, सब्जी मंडी के सामने, ऊना-174303

देहरादून कार्यालय
7/1, बल्लूपुर रोड़, कृष्णा नगर चौक, देहरादून

आस्था के साए में अपराध: पैरोल ने फिर जगाए विवाद

प्रो. आरके जैन

> "बड़े अनुयायी समूह अपने आप में शक्ति बन जाते हैं। यही शक्ति कई बार निर्णयों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दबाव का कारण बनती है। धर्मस्थलों और धार्मिक व्यक्तित्वों का सामाजिक प्रभाव नई बात नहीं है, लेकिन जब इसका उपयोग कानून को नरम करने के लिए होने लगे, तो खतरा बढ़ जाता है। आस्था जब संगठित समर्थन में बदल जाती है, तो न्याय कमजोर पड़ने लगता है। यह प्रवृत्ति केवल एक मामले तक सीमित नहीं, बल्कि व्यापक लोकतांत्रिक चुनौती का संकेत है। धार्मिक पहलू इस विवाद को और अधिक संवेदनशील बना देता है"

क्या न्याय सचमुच अंधा है, या वह अब प्रभाव, संख्या और आस्था को पहचानने लगा है। यह प्रश्न तब और तीखा हो उठा, जब डेरा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को एक बार फिर (15वीं बार) 40 दिनों की पैरोल (फरलो) पर जेल से बाहर आने की अनुमति दी गई। यह केवल एक सजायाफ्ता व्यक्ति की अस्थायी रिहाई नहीं, बल्कि कानून की निष्पक्षता और लोकतांत्रिक नैतिकता पर सीधा प्रहार था। जब गंभीर अपराधों में दोष सिद्ध होने के बावजूद बार-बार राहत दी जाती है, तो समाज के भीतर यह संदेह गहराना स्वाभाविक है कि क्या न्याय वास्तव में सबके लिए समान है। यही बेचैन करने वाली शंका पूरे घटनाक्रम के केंद्र में खड़ी होकर नागरिक चेतना को भीतर तक झकझोर देती है। राम रहीम का नाम वर्षों से अपराध, आस्था और प्रभाव के विचित्र संगम का प्रतीक बन चुका है। महिलाओं के साथ हुए जघन्य अपराधों और एक निर्भीक पत्रकार की हत्या ने देश को भीतर तक हिला दिया था। न्यायालय द्वारा दी गई कठोर सजाओं से यह आशा जगी थी कि धर्म की आड़ में छिपे अपराधों पर अब कोई समझौता नहीं होगा। परंतु समय बीतने के साथ बार-बार मिली पैरोल ने उस भरोसे को कमजोर किया। स्वयं को आध्यात्मिक मार्गदर्शक बताने वाला व्यक्ति जब लगातार जेल से बाहर आता है, तो धर्म और अपराध के बीच खींची गई रेखा धुंधली पड़ने लगती है। पैरोल का सिद्धांत मानवीयता और सुधार से जुड़ा होता है। इसका उद्देश्य कैदी को समाज से जोड़े रखना और उसे आत्ममंथन का अवसर देना है। लेकिन राम रहीम के मामले में पैरोल एक अपवाद नहीं, बल्कि नियमित प्रक्रिया जैसी प्रतीत होने लगी है। सजा के सीमित वर्षों में कई बार बाहर आना और लंबा समय जेल से बाहर बिताना सामान्य कैदियों की स्थिति से बिल्कुल अलग है। यह प्रश्न उठता है कि नियमों की व्याख्या इतनी उदार क्यों है। जब राहत बार-बार और समय विशेष पर मिलती दिखे, तो कानून की मंशा पर संदेह होना स्वाभाविक है। न्याय की कसौटी पर यह स्थिति अत्यंत विचलित

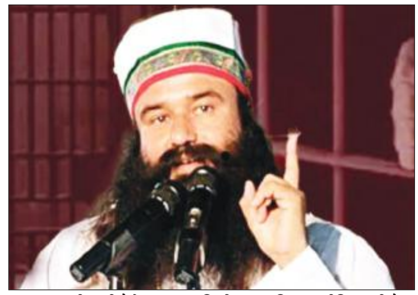

> " राम रहीम की पैरोल का मुद्दा किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे तंत्र की कार्यप्रणाली पर गंभीर प्रश्न खड़े करता है। यह धर्म, प्रभाव और कानून के उस खतरनाक मेल को उजागर करता है, जहां सीमाएं लगभग मिटती जा रही हैं। यहां सुधार केवल नियम बदलने से नहीं आएगा, बल्कि सोच और प्राथमिकताओं में मूलभूत परिवर्तन आवश्यक है। पारदर्शी मापदंड, कानून का समान अनुप्रयोग और स्पष्ट सार्वजनिक जवाबदेही ही टूटते विश्वास को जोड़ सकते हैं "

करने वाली है। एक ओर ऐसे लोग हैं, जिन पर आरोप अभी सिद्ध भी नहीं हुए, फिर भी वे वर्षों से कारावास झेल रहे हैं। दूसरी ओर सिद्ध अपराध के बावजूद बार-बार पैरोल दी जा रही है। यह विरोधाभास व्यवस्था के दोहरे मापदंड को साफ उजागर करता है। विशेषज्ञों के अनुसार नियमों की अस्पष्टता और प्रशासनिक विवेक की अत्यधिक छूट ने इस असमानता को जन्म दिया है। जब निर्णय प्रक्रिया पारदर्शी नहीं रहती, तब न्याय कागजों तक सिमट जाता है और जनता का भरोसा धीरे-धीरे दरकने लगता है। इस पूरे घटनाक्रम में सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता।

बड़े अनुयायी समूह अपने आप में शक्ति बन जाते हैं। यही शक्ति कई बार निर्णयों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दबाव का कारण बनती है। धर्मस्थलों और धार्मिक व्यक्तित्वों का सामाजिक प्रभाव नई बात नहीं है, लेकिन जब इसका उपयोग कानून को नरम करने के लिए होने लगे, तो खतरा बढ़ जाता है। आस्था जब संगठित समर्थन में बदल जाती है, तो न्याय कमजोर पड़ने लगता है। यह प्रवृत्ति केवल एक मामले तक सीमित नहीं, बल्कि व्यापक लोकतांत्रिक चुनौती का संकेत है। धार्मिक पहलू इस विवाद को और अधिक संवेदनशील बना देता है। जब आस्था विवेक पर भारी पड़ती है, तब प्रश्न पूछने की क्षमता क्षीण हो जाती है और अंधभक्ति हावी होने लगती है। पैरोल के दौरान होने वाली गतिविधियां अनुयायियों में उत्साह और भरोसा भरती हैं, लेकिन पीड़ित परिवारों के लिए वही क्षण गहरी पीड़ा का कारण बनते हैं। उनके लिए हर रिहाई न्याय के पुराने घावों को फिर से हरा कर देती है। धर्म का उद्देश्य नैतिक उत्थान और करुणा है, न कि अपराधों के लिए ढाल बनना। जब आस्था का उपयोग संरक्षण के लिए होता है, तो समाज में गलत संदेश जाता है।

न्याय प्रणाली की विश्वसनीयता पर इसका प्रभाव अत्यंत गहरा और दूरगामी है। जब आम नागरिक यह देखता है कि प्रभावशाली नामों के लिए कानून के द्वार सहजता से खुल जाते हैं, तो न्याय के प्रति सम्मान स्वतः कमजोर पड़ने लगता है। सार्वजनिक विमर्श में दिखाई देने वाला आक्रोश केवल क्षणिक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि भीतर तक जमी निराशा की अभिव्यक्ति है। लोग इसे सुविधा और प्रभाव से संचालित न्याय कहने लगे हैं। जब निर्णयों पर स्पष्ट, पारदर्शी और ठोस उत्तर नहीं मिलते, तब यह मौन अविश्वास को जन्म देता है। यदि समय रहते विश्वास बहाल नहीं किया गया, तो यह दरार स्थायी बनकर न्याय व्यवस्था की नींव को ही कमजोर कर देगी। सबसे गहरी पीड़ा पीड़ितों की है, जिनकी आवाज अक्सर भीड़ और शोर में दबकर रह जाती है। महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े प्रश्न केवल कानून तक सीमित नहीं, बल्कि समाज की नैतिक चेतना की भी परीक्षा हैं। जब दोष सिद्ध होने के बाद भी कठोरता नहीं दिखाई जाती, तो यह संदेश जाता है कि शक्ति ढाल बन सकती है। ऐसी सोच समाज को भीतर से कमजोर करती है, क्योंकि इससे अपराध सामान्य और न्याय सापेक्ष हो जाता है। कोई भी व्यवस्था तब तक मानवीय नहीं कही जा सकती, जब तक वह सबसे कमजोर के साथ समान और संवेदनशील व्यवहार न करे।

राम रहीम की पैरोल का मुद्दा किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे तंत्र की कार्यप्रणाली पर गंभीर प्रश्न खड़े करता है। यह धर्म, प्रभाव और कानून के उस खतरनाक मेल को उजागर करता है, जहां सीमाएं लगभग मिटती जा रही हैं। यहां सुधार केवल नियम बदलने से नहीं आएगा, बल्कि सोच और प्राथमिकताओं में मूलभूत परिवर्तन आवश्यक है। पारदर्शी मापदंड, कानून का समान अनुप्रयोग और स्पष्ट सार्वजनिक जवाबदेही ही टूटते विश्वास को जोड़ सकते हैं। अब समय आ गया है कि व्यवस्था आत्मपरीक्षण करे, क्योंकि जब न्याय से समझौता होता है, तो लोकतंत्र की नींव डगमगाने लगती है।

शादी विकल्प, जीवन मिशन: आज की लड़कियों की सोच

कृति आरके जैन

सपनों की उड़ान अब किसी परंपरा की कैद में नहीं रुकती। आज की लड़कियां अपने भविष्य को खुद आकार दे रही हैं, और यह तय कर रही हैं कि जीवन का असली मानदंड केवल विवाह नहीं, बल्कि स्वायत्तता, तकनीक, विज्ञान, शिक्षा, उद्यमिता और नेतृत्व में अपनी पहचान बनाना है। हर कदम पर वे पुरानी सीमाओं को चुनौती देती हैं और नए अवसरों की खोज में समाज की रूढ़ियों को पीछे छोड़ रही हैं। यह केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि एक नई पीढ़ी की शक्ति, साहस और समाजिक बदलाव का प्रतीक है। आज की लड़कियां शादी को जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं मानतीं। वे अपने सपनों, करियर और आत्म-विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देती हैं। यह बदलाव केवल एक क्षणिक प्रवृत्ति नहीं, बल्कि समाज में गहरी और स्थायी क्रांति का संकेत है। भारतीय परंपरा में वर्षों से चली आ रही धारणा कि लड़की की सफलता केवल घर, विवाह और गृहस्थी में मापी जाती थी, अब पूरी तरह टूट चुकी है। नई पीढ़ी स्पष्ट रूप से कहती है जीवन मेरा है, फैसले मेरे हैं, और समय मेरे हाथ में है। यह आजादी उन्हें आत्मविश्वास, सम्मान और सामाजिक मान्यता देती है। हर लड़की के लिए यह परिवर्तन प्रेरणा और दिशा का स्त्रोत बन चुका है। इतिहास में लड़कियों को अक्सर परिवार और समाज की सीमाओं में रखा गया। बाल विवाह, कम शिक्षा और घरेलू जिम्मेदारियों ने उनकी प्रतिभा और संभावनाओं को रोका। स्वतंत्रता के बाद भी यह सोच धीरे-धीरे बदल रही थी। लेकिन पिछले तीन दशकों में शिक्षा के प्रसार, कानूनी सुरक्षा और वैश्विक दृष्टिकोण ने यह परिदृश्य पूरी तरह बदल दिया। सावित्रीबाई फुले से लेकर आज की युवा उद्यमियों तक, महिलाओं ने हर मोड़ पर संघर्ष किया। अब लड़कियां आईएएस, वैज्ञानिक, पायलट और सीईओ बन रही हैं। वे समझ चुकी हैं कि शादी जीवन का हिस्सा है, लेकिन उसका अंतिम लक्ष्य नहीं। यह बदलाव केवल व्यक्तिगत चुनाव नहीं, बल्कि समाज में गहन क्रांति का प्रतीक बन चुका है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार भारत में महिलाओं की औसत विवाह आयु अब 22.5 वर्ष से अधिक हो चुकी है। शहरी क्षेत्रों में यह 25-28 वर्ष तक पहुँच चुकी है। उच्च शिक्षा प्राप्त 70 प्रतिशत से अधिक लड़कियां शादी को 25 वर्ष के बाद स्थगित करना चाहती हैं। कॉर्पोरेट क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है, और स्टार्टअप्स में महिला संस्थापकों की संख्या तेजी से बढ़ी है। लाखों लड़कियां अब सोशल मीडिया पर अपनी करियर और शादी में देरी की पसंद को खुलकर व्यक्त कर रही हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में भी जागरूकता फैल रही है। समाज का दबाव अभी भी मौजूद है, लेकिन लड़कियां जवाब दे रही हैं - पहले करियर, पहले स्थिरता, पहले अपनी पहचान।

विचार

भगवान गणेश की आराधना का पर्व संकष्टी चतुर्थी

विजय कुमार शर्मा

भारतीय संस्कृति में पर्व और त्योहार केवल तिथियों तक सीमित नहीं होते, वे आस्था, परंपरा और लोकजीवन की निरंतरता के प्रतीक होते हैं। नववर्ष के आरंभ में ही आने वाला संकष्टी चतुर्थी का पर्व इसी परंपरा का सजीव उदाहरण है। साल 2026 का पहला प्रमुख हिंदू पर्व संकष्टी चतुर्थी माना जा रहा है, जो विशेष रूप से मातृत्व, संतान की मंगलकामना और भगवान गणेश की आराधना से जुड़ा हुआ है। यह पर्व माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है और इसे संकटा चतुर्थी, तिलकुटा चौथ,सकट चौथ तथा माघी चौथ जैसे नामों से भी जाना जाता है। सकट चौथ का मुख्य संबंध भगवान गणेश से है, जिन्हें विघ्नहर्ता कहा गया है। मान्यता है कि इस दिन विधिपूर्वक गणेश पूजन करने से जीवन के सभी कष्ट, बाधाएं और संकट दूर होते हैं। विशेष रूप से माताएं अपनी संतान की लंबी आयु, स्वास्थ्य और सुखद भविष्य की कामना लेकर यह व्रत करती हैं। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में यह पर्व श्रद्धा और नियमबद्धता के साथ मनाया जाता है, हालांकि इसके स्वरूप में स्थानीय परंपराओं के अनुसार कुछ भिन्नता भी देखने को मिलती है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार संकट चौथ का संबंध भगवान गणेश के जन्म और उनके द्वारा संकटों के नाश से जुड़ा हुआ है। एक कथा के अनुसार एक समय देवताओं पर भारी संकट आया था और सभी देवताओं ने भगवान गणेश की आराधना की। गणेश जी ने अपने भक्तों की पुकार सुनकर उस संकट का नाश किया। तभी से यह विश्वास प्रचलित हुआ कि माघ मास की कृष्ण चतुर्थी को गणेश पूजन करने से सकट अर्थात संकट दूर हो जाते हैं। इसी कारण इस चतुर्थी को सकट चौथ कहा गया।

सकट चौथ का व्रत मुख्यतः महिलाएं रखती हैं, लेकिन कई स्थानों पर पुरुष भी श्रद्धापूर्वक इस व्रत का पालन करते हैं। व्रत की प्रक्रिया सूर्योदय से आरंभ होती है। व्रती दिन भर उपवास रखते हैं और संध्या के समय चंद्रमा के दर्शन के बाद ही भोजन ग्रहण करते हैं। इस व्रत की एक विशेषता यह है कि इसमें चंद्र दर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। मान्यता है कि चंद्रमा को अर्घ्य दिए बिना व्रत पूर्ण नहीं माना जाता। कई स्थानों पर महिलाएं चंद्रमा को दूध, जल और तिल अर्पित करती हैं तथा संतान के लिए प्रार्थना करती हैं।

सकट चौथ में तिल का विशेष महत्व होता है। तिल से बने व्यंजन जैसे तिलकुट, तिल के लड्डू, तिल की मिठाइयां और तिल से बनी खीर का भोग भगवान गणेश को अर्पित किया जाता है। माघ मास में तिल का सेवन स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उपयोगी माना गया है। यह शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है और शीत ऋतु में आवश्यक ऊष्मा बनाए रखने में सहायक होता है। इस प्रकार सकट चौथ धार्मिक आस्था के साथ-साथ लोकजीवन और ऋतुचर्या से भी जुड़ा हुआ पर्व है।

पूजन विधि में प्रातः स्नान के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण कर व्रत का संकल्प लिया जाता है। घर के पूजा स्थल पर भगवान गणेश की प्रतिमा या चित्र स्थापित किया जाता है। गणेश जी को दूर्वा, मोदक, तिल और पुष्प अर्पित किए जाते हैं। गणेश चालीसा, गणेश स्तोत्र और व्रत कथा का पाठ किया जाता है। शाम के समय चंद्रमा निकलने पर खुले आकाश में जाकर चंद्र दर्शन किया जाता है और अर्घ्य अर्पित किया जाता है। इसके पश्चात प्रसाद ग्रहण कर व्रत का पारण किया जाता है।

साल 2026 में सकट चौथ का पर्व नए वर्ष की शुरूआत में आने के कारण विशेष महत्व रखता है। लोग इसे शुभ संकेत मानते हैं कि वर्ष का आरंभ ही विघ्नहर्ता गणेश के पूजन से हो रहा है। यह विश्वास किया जाता है कि यदि वर्ष के पहले पर्व पर गणेश जी की आराधना की जाए तो पूरे वर्ष कार्यों में सफलता, परिवार में सुख-शांति और जीवन में सकारात्मकता बनी रहती है। इसी कारण कई परिवार इस दिन विशेष रूप से घर की स्वच्छता, पूजा और सामूहिक प्रार्थना पर ध्यान देते हैं। आधुनिक समय में भी सकट चौथ की परंपरा जीवंत बनी हुई है। हालांकि जीवनशैली में बदलाव आया है, फिर भी माताओं की आस्था और संतान के प्रति उनका स्नेह इस व्रत को आज भी उतना ही प्रासंगिक बनाए हुए है। शहरों में रहने वाली महिलाएं भी समय निकालकर व्रत रखती हैं, ऑनलाइन व्रत कथाएं सुनती हैं और सामूहिक रूप से चंद्र दर्शन करती हैं। सोशल माध्यमों के जरिए भी लोग एक-दूसरे को सकट चौथ की शुभकामनाएं देते हैं।

एक्शन इंडिया दैनिक

भगवान शंकर जी के ग्यारहवें रुद्रावतार हनुमान जी (मेंहदीपुर, श्री बाला जी) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

आरएनआई: HARHIN / 2016 / 68417

एक्शन इंडिया मल्टीमीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक रवि भारद्वाज द्वारा 224, सेक्टर - 32 पी, यूई, ज़िला करनाल, हरियाणा से प्रकाशित एवं मारुतिनंदन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, शक्ति कॉम्प्लेक्स, 6/18, समयपुर इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110042 से मुद्रित।
संस्थापक : श्रद्धेय राकेश भारद्वाज जी
समूह संपादक : रवि भारद्वाज (9999889104)
स्थानीय संपादक : राजकुमार शर्मा (9671890000)
'एक्शन इंडिया' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किये गये विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक या प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
ई-मेल : actionindiaharyana@gmail.com

वैधानिक सूचना

पाठकों को सलाह है कि एक्शन इंडिया, समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के आधार पर कोई निर्णय लेने से पहले विज्ञापन में प्रकाशित उक्त उत्पाद या सेवा के बारे में आवश्यक जांच-पड़ताल कर लें। समाचार पत्र प्रबंधक किसी भी विज्ञापन में गुणवत्ता, सेवा आदि के विवरण के बारे में विज्ञापनदाता द्वारा किए गए दावे या उल्लेख की पुष्टि या समर्थन नहीं करता है। अतः समाचार पत्र उक्त विज्ञापनों के बारे में किसी प्रकार से उत्तरदायी नहीं होगा।

आलेख

अमेरिका अपना रहा दोहरे मानदंड।

सुनील कुमार महला

हाल ही में 3 जनवरी 2026 को अमेरिका ने वेनेजुएला में एक बड़ा सैन्य अभियान चलाया, जिसमें अमेरिकी बलों ने राजधानी काराकस समेत कई जगहों पर हवाई और सैन्य हमले किए और वहां के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया फ्लोरेस को पकड़ कर अमेरिका ले जाने का दावा किया है।इससे अमेरिका और वेनेजुएला के बीच भारी तनाव पैदा हो गया है और वेनेजुएला ने संयुक्त राज्य पर सैन्य आक्रमण का आरोप लगाते हुए आपात स्थिति घोषित कर दी है। अमेरिका का कहना है कि यह ऑपरेशन 'ऑपरेशन एब्सोल्यूट रिजॉल्व' नाम से हुआ और मादुरो को नशीले पदार्थ तस्करी सहित कई आरोपों के तहत न्यूयॉर्क में अमेरिकी न्यायालय के सामने पेश किया जाएगा। यहां पाठकों को बताता चलूं कि अमेरिका की इस कार्रवाई के बाद संयुक्त राष्ट्र और कई देशों ने चिंता और आलोचना व्यक्त की है, जबकि कुछ वेनेजुएला-वासी जो अमेरिका में रहते हैं, उन्होंने अमेरिकी कार्रवाई का समर्थन किया है। इस तरह यह मामला अब एक कूटनीतिक और सैन्य विवाद का रूप ले चुका है, जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहस और प्रतिक्रिया जारी है। बहरहाल, गौरतलब है कि अमेरिका और वेनेजुएला के बीच लंबे समय से राजनीतिक और कूटनीतिक तनाव चला आ रहा है, जो अब सैन्य कार्रवाई तक पहुंच गया है। वास्तव में यह ठीक नहीं है। वास्तव में अमेरिका द्वारा वेनेजुएला पर हवाई हमला कर वहां के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को हिरासत में लेकर देश से बाहर भेज देना तथा अमेरिका द्वारा इस कार्रवाई का कारण नशीले पदार्थों की तस्करी और उससे जुड़े तथाकथित "नार्को-आतंकवाद" को बताने पर कई गंभीर सवाल खड़े होते हैं। पहला सवाल तो यह कि अगर नशीले पदार्थों की तस्करी की समस्या है, तो क्या उसका समाधान किसी संप्रभु देश पर सीधा हमला करना हो सकता है? अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार, किसी भी देश के खिलाफ सैन्य कार्रवाई आखिरी विकल्प मानी जाती है। उससे पहले बातचीत, कूटनीति, प्रतिबंध या अंतरराष्ट्रीय न्यायालय जैसे रास्ते अपनाए जाते हैं।

विश्व कानून को ताक पर रखकर अमेरिका की अराजकता

मनोज कुमार अग्रवाल

इसे अराजकता कहें या गुंडई वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी इस बात की तस्दीक करती है कैसे विश्व की हथियारों से लैस महाशक्तियां सिर्फ अपने निजी हितों के लिए नैतिकता को ताक पर रख कर अंतरराष्ट्रीय नियम कायदों को धता बताती है और कमजोर देश का गला दबा कर उसे अपना ओपनिवेश बनाने का प्रयास करते हैं। वेनेजुएला के प्राकृतिक संसाधनों तेल के बड़े भंडार पर अमेरिकी प्रभुत्व की लालसा, कमजोर देशों पर उसकी दादागिरी को उजागर किया है. वेनेजुएला संकट, एक तरह से तमाम अंतरराष्ट्रीय न्याय का हनन और 'पावर' का मनमाना दुरुपयोग है.

अमेरिका लंबे समय से दक्षिण अमेरिकी देश वेनेजुएला को सबक सिखाना चाहता था, क्योंकि वहां के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो उसके सामने झुकने को तैयार नहीं थे। मादुरो पर अमेरिका में ड्रग का धंधा या नार्को टेररिज्म बढ़ाने का आरोप लगाकर ट्रंप ने वेनेजुएला की राजधानी काराकास सहित कई शहरों पर हवाई हमला करवाया। अमेरिकी फौज ने मादुरो व उनकी पत्नी को आधी रात में घसीटकर बाहर निकाला और गिरफ्तार किया, वह उन्हें न्यूयॉर्क ले जाएगी, जहां उन पर नशे के व्यापार पर केस चलेगा और सजा होगी। ट्रंप ने कहा कि वेनेजुएला में फिलहाल अमेरिका ही सत्ता संभालेगा। इसी तरह 3 दशक पूर्व अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति रोनाल्ड रोगन ने अपने देश में नशे का कारोबार फैलाने के आरोप में पनामा के राष्ट्रपति नरेगा को गिरफ्तार कर उम्रकैद की सजा दी थी। अमेरिकी सीक्रेट एजेंट पनामा से नरेगा को पकड़कर अमेरिका लाए थे। अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दिखा दिया कि वह भी इतने शक्तिसंपन्न हैं कि किसी देश के राष्ट्रपति को भी मुश्कें बांधकर अपने यहां ला सकते हैं। अब डर है कि कहीं वह मेक्सिको पर भी ऐसी कार्रवाई न करें क्योंकि वहां से बड़ी तादाद में अवैध प्रवासी अमेरिका में घुसपैठ करते हैं। ट्रंप ने पिछली बार मेक्सिको बॉर्डर पर ऊंची दीवार बनाने की बात कही थी। इसी प्रकार डेनमार्क की नाराजगी की परवाह न करते हुए ट्रंप ग्रीनलैंड पर भी कब्जा कर सकते हैं।

संपादकीय

जीवनदायिनी अरावली

बांग्लादेश में एक और हिंदू की हत्या से यही स्पष्ट हो रहा है कि वहां चुन-चुनकर हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है। हिंदुओं की हत्याओं का सिलसिला कायम रहने के बाद भी वहां की अंतरिम सरकार न्यूनतम गंभीरता का परिचय देने से इन्कार कर रही है। नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार हिंदुओं की हत्याओं को या तो सांप्रदायिक हिंसा मानने से इन्कार कर दे रही है या फिर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की खोखली बातें करके कर्तव्य की इतिश्री कर ले रही है। वह कुछ घटनाओं को आपसी रंजिश या दुर्घटना भी बता दे रही है। उसे यह आभास होना चाहिए कि अराजक माहौल आपसी रंजिश भुनाने का जरिया बनता है। इसकी भी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि हिंदुओं की हत्याओं के मामले तो सामने आ जाते हैं, लेकिन उनके घर जलाने, जमीन कब्जाने और उनकी महिलाओं से छेड़छाड़ करने की घटनाएं दबी ही रह जाती हैं। बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ माहौल कितना विषाक्त हो गया है, इसे इससे समझा जा सकता है कि वहां हिंदू अधिकारियों-कर्मचारियों को लांछित किया जा रहा है और हिंदू नेताओं को चुनाव में भाग लेने से रोकने की भी कोशिश की जा रही है। यह सब इसीलिए हो रहा है, क्योंकि वे कट्टरपंथी ताकतें अंतरिम सरकार के संरक्षण में हैं, जो भारत विरोध के लिए जानी जाती हैं। हिंदुओं को प्रताड़ित करने के लिए वहां उनके और भारत के खिलाफ सुनियोजित अफवाहें भी फैलाई जा रही हैं। यह एक अफवाह ही थी कि छात्र नेता उस्मान हादी को गोली मारने वाला भारत भाग गया है। बांग्लादेश सरकार ने सब कुछ जानते हुए भी इस झूठ पर लगाम लगाने की कोशिश नहीं की। उसकी पोल तब खुली जब उस्मान हादी के हत्यारोपित के दुबई में होने की सूचना आई। बांग्लादेश सरकार यह अच्छी तरह जान रही है कि हिंदुओं को लगातार निशाना बनाए जाने से भारत में लोग उद्वेलित हो रहे हैं, लेकिन वह हालात सामान्य करने के लिए कोई कदम उठाने के बजाय संबंधों को बिगाड़ने वाले काम कर रही है। पिछले दिनों जब आइपीएल की टीम केकेआर ने उसके क्रिकेटर मुस्तफिजुर रहमान को टीम में न रखने का फैसला किया तो बांग्लादेश ने यह समझने की जरूरत नहीं समझी कि आइपीएल में उसकी मौजूदगी स्टेडियमों में माहौल बिगाड़ने का ही जरिया बनती। केकेआर के फैसले के बाद बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने टी-20 विश्व कप के लिए अपनी टीम भारत भेजने से मना तो किया ही, आइपीएल प्रसारण पर भी रोक लगा दी। इसे कुल मिलाकर बात बिगाड़ने वाला रवैया ही कहा जाएगा। उसके ऐसे रवैये के कारण ही उन तत्वों का दुस्साहस बेलगाम है, जो हिंदुओं को निशाना बनाने के साथ भारत के खिलाफ आग उगलने में लगे हुए हैं।

सर्दी हुई जवान है

दुबके हम सब रात में, सर्दी हुई जवान है।
कहते लगते बात में, सर्दी हुई जवान है।

धुंध कोहरा बढ़ रहा,धूप न आती अब पास।
कहते ये बादल यहा, सर्दी में यह जो खास।
देती जो सौगात में, सर्दी हुई जवान है।
कहते लगते बात में, सर्दी हुई जवान है।

सब कुछ ठंडा हो गया,मान लिया सब कुछ यहां।
चारों तरफ देख लिया, दुख सुख की अब वहा।
जन मन करते आत में, सर्दी हुई जवान है।
कहते लगते बात में, सर्दी हुई जवान है।

धोरों की बालू मिट्टी,करती जो अच्छी फसल।
हरे भरे हो पेड़ नित,ओस करे है जो सफल।
लाये नवल प्रभात में, सर्दी हुई जवान है।
कहते लगते बात में, सर्दी हुई जवान है।

■ **मंगल व्यास भारती**
गढ़ के पास चूरू [राजस्थान]

मीटर टेप के साये में — दो पहाड़ों का संवाद

■ **डॉ मुकेश असीमित**
अस्थि रोग विशेषज्ञ, व्यंग्यकार

दो पहाड़–एक बड़का भैया, एक छुटका भैया–बरसों से बगल-बगल खड़े थे। एक ही माँ, पृथ्वी, की संतान; क़द-काठी में फर्क, पर दायित्व में बराबरी। दोनों ने ही धरती को थामे रखा, हरियाली की चादर ओढ़ाए रखी। मगर इंसान की आदतें कहाँ बदलती हैं। उसने छुटके के कान भरने शुरू किए–तेरी जगह अब यहाँ नहीं; तुझे जान-बूझकर छोटा रखा गया; असली बेटा तो बड़का है। चल, तुझे शहर ले चलते हैं–वहाँ नाम बदलेगा, पहचान बनेगी।

छुटका बातों में आ गया। उसे भरोसा दिलाया गया कि 'पहाड़' नाम का कलंक हटेगा। कहा गया–तू नव-निर्माण की नींव है; तेरे ऊपर इमारतें उठेंगी; तू काम आएगा। पहली बार उसे लगा कि खड़ा रहना नहीं, उपयोगी होना ज़रूरी है।

'बड़के भैया.... सुना है हम दोनों का बिछोह होने वाला है,'

छुटका चुप्पी तोड़ता है। आवाज़ में उत्सुकता है, दुख कम।

बड़का भैया गहरी साँस लेता है। 'हाँ छुटके, पर तू खुश क्यों है? हजारों साल से हम संग-संग खड़े हैं–धूल, आँधी, बर्फ़ सब झेली। यही सोचते रहे कि धरती माँ को नंगा होने से बचाएँ हैं हम । और अब.... तुम्हें ले जाया जा रहा है।'

छुटका मुस्कुराता है। 'भैया, पहली बार किसी ने मेरी सुध ली है। तुम्हारे पास खड़े-खड़े भी मेरी पूछ नहीं हुई। मैं ऊब गया था–भेड़-बकरियाँ मुँह पर चढ़तीं, पशु पक्षी जब चाहें मुंह उठाये आते और घर बना लेते। बदले में मिला–धूल, बौछारें, लीद और बीट। अब इंसानों की दुनिया देखनी है। सुना है शहर चमकते हैं, फ्लैट ऊँचे होते हैं। क्या पता, मैं किसी बुलंद इमारत का हिस्सा बन जाऊँ–किसी मंच का पत्थर, किसी माला का हीरा। शायद 'बुलंद भारत' की तस्वीर का फ़्रेम भी मेरी देह से बने।'

बड़का भैया सखूत हो उठता है। 'तुम्हें इसमें खुदाई दिख रही है वाह इंसान अपनी 'खुदाई' भूल चुका है। ये जंगल काटकर खुद जंगली हो रहे हैं। सच ही तो है अब जब दरिंदे पशु शहरों में बस गए हैं, तो इन्हें पहाड़ों की ज़रूरत क्या?'

छुटका व्यंग्य से कहता है। 'भैया, आदमी जितना छोटा होता जाता है, उतनी बड़ी हरकतें करता है। मुझे भी वही सीखनी है। हम पहाड़ उसकी महत्त्वाकांक्षाओं के रास्ते में जड़ता बनकर खड़े रहे–इसीलिए खटकते हैं।'

'पर तुम्हें ज़रा भी दुख नहीं?' बड़का पूछता है।

'किस बात का?' छुटका पलटता है। 'मुझे तो फ़ायदा दिखता है। 'पहाड़' नाम में जड़ता है। आज नाम बदलने का दौर है। कल हमें भूखंड, उभार, संसाधन, संपदा, खनिज-खान कहा जाएगा–ताकि हटाए जाते वक़्त नाम का नशा हो और शहादत भी उत्सव लगे। सब शहर की ओर भाग रहे हैं, तो मैं क्यों न भागूँ? धरती रेगिस्तान हो जाए–तो क्या? आदमी अपनी बरबादी का ठीकरा खुद उठाने को तैयार है।'

बड़का भैया बेचैन होकर याद दिलाता है–कैसे उसने सदियों तक ढाल बनकर शहरों को धूल से बचाया; कैसे दुर्दिनों में महाराणा प्रताप को शरण दी; कैसे आदिवासी समाज की युद्धस्थली और शरणस्थली बना। बिना पुरस्कार, बिना प्रमाणपत्र–बस खड़ा रहा।

छुटका ठहाका लगाता है। 'शहर तो वैसे भी गैस चैम्बर हैं। चिमनियाँ, पराली, वाहनों का धुआँ–सबने हवा रौंद दी। तुम्हारे होने-न होने से अब क्या फर्क?'बड़का फिर समझाता है। 'देख छुटके, अब खुदाई इंसानों में नहीं, पहाड़ों में दिखती है। पेड़ नहीं कटते–माँ के हिलते हाथ कटते हैं। जहाँ हमारा अस्तित्व मिटा, वहाँ ग्लेशियर पिघले, गंगोत्री की तपस्या भंग हुई।'

छुटका ठंडे व्यंग्य से कहता है। 'अलंकारों से दुनिया नहीं चलती। दूध की नदियाँ कहाँ? नदियाँ बाँधों में कैद हैं। कहते हैं–हाथ खून से रंगे हैं; सच होता तो रंगे हाथ पकड़े जाते। इंसानों के क़ानून तो इंसानों पर ही चलते हैं। कण-कण में शंकर मानने वालों को पहाड़ों के कण-कण का खनन क्यों अखरता है? कण-कण में खनिज भी है। पेड़ पूजनीय हैं–उन्हें एसी रूम के फ़र्नीचर में बदल दो, पूजा आसान हो जाती है।'

बड़का भैया बुदबुदाता है–'संभल.... हथौड़ा चल रहा है।'

दूर कहीं हथौड़ों की गूँज है। दृश्य एक कटु सच्चाई पर टिकता है–माँ के नाम पर खुशी कितनी देर? इंसानी दरिंदे इस धरती माता को किसी की माता नहीं रहने देंगे।

मो. 9785007828

वो कौन थी?

■ **अनिल पुरोहित**
रहस्य-रोमाँच लेखन में सिद्धहस्त

गतांक से आगे

हीरेन ने दहाड़ते हुए कहा, 'मालती कहां है? ये लो तुम्हेररूपये और मालती को मेरे हवाले करो।'

'मालती यहीं है मगर अब तुम उससे नहीं मिल सकते।' बोला अघोरानंद।

'क्यों?' चीख पड़ा हीरेन।

' इसलिए कि मालती पर अब मेरा अधिकार है। वो मेरी भैरवी बन चुकी है। मां भगवती इसकी साक्षी है। भूल जाओ मालती को!' बोला अघोरानंद।

' ऐसा नहीं हो सकता!' कहकर हीरेन ने जबरदस्ती कक्ष में घुसने की कोशिश की।तभी पीछे से किसी ने खड्ग का एक भरपूर वार हीरेन की पीठ पर किया।

तड़प कर हीरेन नीचे जमीन पर गिर पड़ा। खून का रेला बह निकला।उसके हाथ से रुपए की पोटली गिर गई और रुपए चारों तरफ बिखर गए। जिस समय यह लोमहर्षक घटना घटी ,मुझे एक तगड़ा झटका सा लगा और मेरी आंखें खुल गई। मैं चीख पड़ा, ' मालती..!' देखा,मुझ पर झुकी हुई मालती मुस्कुरा रही थी। आश्चर्य के सागर में गोते लगाता मैं उठ बैठा। चारों तरफ नजर घुमाई तो मैं केम्प में अपने ही बिस्तर पर ही था। मैं धीरे से बोला, 'ये सब क्या था मालती ?'

मालती की मुस्कुराहट एक पल में गायब हो गई और उसके स्थान पर गहन उदासी और दुःख के भाव आ गए। वो बोली, 'आपने मेरे अतीत की कहानी जाननी चाही थी न!'

मैं समझ गया, मालती ने अपनी तांत्रिक शक्तियों के बल पर अपना अतीत मुझे दिखा दिया था। मैं बोला, '...... फिर तुम्हारी इतनी दयनीय हालत क्यों हो गई मालती ?'

मेरे इस प्रश्न के उत्तर में मालती ने अपने रुंधे गले और सिसकते स्वर में जो कुछ बताया उसे सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण हो गया। उसकी दुःख भरी कहानी से एक और उसकी अघोर शक्ति का अनुभव हुआ मुझे दूसरी ओर मेरी आत्मा गहराई तक द्रवित हो उठी और करुणा से भर गया मन।

पूरे एक युग अर्थात बारह वर्ष तक भैरवी बन कर रही थी मालती उस तांत्रिक के साथ। इस दौरान मालती को अनेक तामसिक

सिद्धियां प्राप्त हुई थी अघोरानंद के सान्निध्य में। इन बारह वर्षों में दो बच्चों की मां भी बनी मालती। पर उस दुष्ट अघोरानंद ने उन्हें भी नहीं छोड़ा और अपनी सिद्धियों के लालच के वशीभूत उन दोनों बच्चों की बलि चढ़ा कर उनकी आत्माओं को सिद्ध कर अपने वश में कर लिया। अघोरानंद उनसे अपने मनचाहे काम करवाने लगा।

अपने बच्चों की बलि चढ़ते देख क्रोध ,घृणा और क्षोभ से पागल हो गई मालती। कौन ऐसी मां होगी दुनियां में जो अपने शिशुओं को अपनी आंखों के सामने सर्वस्व बलिदान होते देख पागल न हो जाए!

मालती ने आंसुओं से सराबोर चेहरे को ऊपर उठाया और बोली, 'साहब, ऐसी तांत्रिक और अलौकिक शक्तियों का क्या फायदा जो मन और आत्मा की शांति छीन ले। दुष्ट अघोरानंद ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। न तो मैं किसी की पत्नी बन सकी न ही मां। मैं हीरेन को आत्मा की गहराई से चाहती थी,उससे शादी करने वाली थी। मेरे लिए वो ही सब कुछ था। उसकी याद में कभी - कभी आज भी डूब जाती हूं। उसने अपनी जान तक गंवा दी मेरे लिए, पर मैं कुछ नहीं कर सकी साहब!' कहकर मालती एक क्षण के लिए रुकी और पुनः बोली, ' एक औरत के लिए इससे बड़ा दुःख क्या हो सकता है? अपना सर्वस्व लुटाकर ,सब कुछ गंवाकर अंधकार में भटक रही हूं। दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर हूं।'

पीड़ा और दुःख के असीम भाव उसके चेहरे पर नुमायां हो रहे थे। मैनें उत्सुकतावश पूछ ही लिया, 'अघोरानंद का क्या हुआ फिर? '

'वही, जो अमूमन ऐसी तामसिक सिद्धियां प्राप्त करने वाले का होता है। नरक में भी जगह नहीं मिलती ऐसे दुष्टों को।' कहकर मालती एक क्षण के लिए रुकी और घृणाभरे स्वर में बोली, 'मेरे दोनों बच्चों की सिद्ध आत्माओं ने अपनी बलि का बदला ले लिया उससे। बदला भी ऐसा कि देखने और सुनने वाले की रूह कांप उठे। एक सुबह मैनें देखा अपने कमरे में मरा पड़ा था वो नरपिशाच। बहुत घृणित तरीके से मारा गया था उसे। उसकी दोनों आंखें कटोरियों से बाहर निकली पड़ी थीं। पूरी की पूरी कटी जीभ छाती पर और पूरे शरीर में अगणित घाव जो मवाद से भरे थे और गला हुआ शरीर भयंकर बदबू मार रहा था। मगर साहब, बदला लेने के बावजूद मेरे बच्चों की आत्माओं को मुक्ति नहीं मिली। आज भी वे दोनों बराबर मेरे साथ रहती हैं।'

'हैं, तुम्हारे साथ?' मैं आश्चर्य भरे स्वर में बोला। ***क्रमशः***

औरत

कौन समझता है
औरत के मर्म को
जो मर - मर कर जीती है
बात - बात में झिड़कियां
और जहर के घूंट पीती है

औरत भी नहीं समझती
औरत के दर्द को
केवल विलास की वस्तु
मानता है मर्द तो

औरत अपनी पीड़ा
अब किसको सुनाए
सब हो गए बहरे
और बहरा भया खुदाए

औरत की नियति है
इसकी परीक्षा है
औरत का उद्धार
केवल शिक्षा है।

– दीनदयाल शर्मा
टाबर टोली, हनुमानगढ़, राजस्थान

अद्भुत संसार

धरती के वे कोने जो किसी और ग्रह जैसे लगते हैं

हम जिस धरती को रोजमर्रा की नजरों से देखते हैं, वह कई बार अपनी असली पहचान छुपाए रहती है। दुनिया के कुछ हिस्सों में कदम रखते ही ऐसा लगता है मानो इंसान किसी और ग्रह पर पहुंच गया हो। कहीं जमीन आईना बन जाती है, कहीं रंगीन झरने बहते हैं, तो कहीं पहाड़ हवा में तैरते दिखाई देते हैं। ये स्थान प्रकृति की उन अनोखी रचनाओं में शामिल हैं, जो कल्पना और हकीकत की सीमा को धुंधला कर देते हैं।

जमीन पर उतरा आसमान

बोलीविया में स्थित सालार डी उयूनी दुनिया का सबसे बड़ा नमक का मैदान है। बारिश के मौसम में यहां पानी की पतली परत जम जाती है, जिससे पूरा इलाका एक विशाल प्राकृतिक आईने में बदल जाता है। इस दौरान आसमान और जमीन के बीच का अंतर पूरी तरह मिट जाता है और इंसान खुद को अनंत दर्पण की दुनिया में खड़ा महसूस करता है।

आग और रंगों की धरती

इथियोपिया का दानाकिल डिप्रेशन धरती के सबसे गर्म और खतरनाक क्षेत्रों में से एक है। यहां सल्फर के चमकीले तालाब, ज्वालामुखी और खनिजों के रंगीन पैटर्न किसी एलियन दुनिया का अहसास कराते हैं।

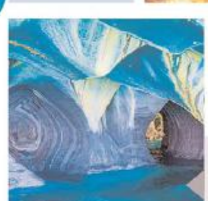

पानी में बदलते रंग

चिली के पैटागोनिया क्षेत्र की मार्बल केव्स संगमरमर की अद्भुत गुफाएं हैं। पानी के रंग और रोशनी के साथ इनका नीला-हरा रंग बदलता रहता है।

सफेद सीढ़ियों का चमत्कार

तुर्की का पामुक्काले सफेद ट्रैवर्टीन चट्टानों और नीले गर्म पानी के कुंडों के लिए जाना जाता है। दूर से यह जगह जमी हुई बर्फ या कपास के ढेर जैसी दिखाई देती है।

बादलों में तैरते पहाड़

चीन का झांगजियाजी नेशनल फॉरेस्ट पार्क अपने खंभे जैसे ऊंचे पहाड़ों के लिए प्रसिद्ध है। बादलों में लिपटे ये पहाड़ हवा में तैरते प्रतीत होते हैं और यही दृश्य 'अवतार' फिल्म के पहाड़ों की प्रेरणा बना।

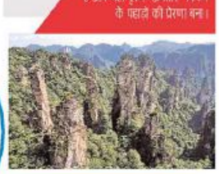

गुलाबी रहस्य

ऑस्ट्रेलिया की लेक हिलियर अपनी गहरे गुलाबी रंग की वजह से अनोखी है। हैरानी की बात यह है कि इसका रंग पूरी तरह प्राकृतिक है और झील का पानी निकालने पर भी रंग नहीं बदलता।

रंगों से भरा अजूबा

अमेरिका के नेवादा राज्य में स्थित फ्लाय गीजर एक मानव-निर्मित चमत्कार है। गर्म पानी और खनिजों के जमाव से बने इसके रंगीन टीले लगातार पानी उगलते रहते हैं। लाल, हरे और पीले रंग इसे ऐसा रूप देते हैं, मानो यह किसी दूर ग्रह का दृश्य हो।

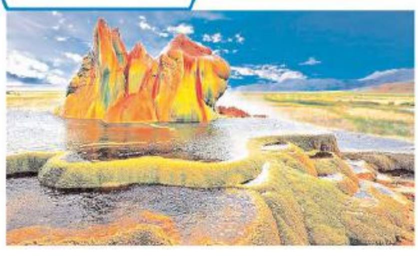

गुरुत्व का भ्रम

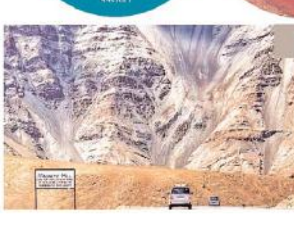

लद्दाख में स्थित मैग्नेटिक हिल ऐसी जगह है, जहां न्यूट्रल में खड़ी गाड़ियां भी ऊपर की ओर चलती हुई महसूस होती हैं। यह दृश्य विज्ञान और भ्रम का रोचक मेल है।

सिर्फ उड़ान नहीं, एहसास भी

भावनाओं से भरपूर पक्षियों की अनदेखी दुनिया

आमतौर पर यह माना जाता है कि इंसान ही एकमात्र ऐसा जीव है जो भावनाओं को समझता, नियंत्रित करता और परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेता है। लेकिन आधुनिक पक्षी-विज्ञान और व्यवहार विज्ञान के अध्ययन बताते हैं कि कुछ पक्षियों में भी इंसानों जैसी भावनाएं, संवेदनाएं और सामाजिक समझ देखने को मिलती है। ये पक्षी न केवल इंसानी व्यवहार को पहचानते हैं, बल्कि कई बार वैसी ही प्रतिक्रिया भी देते हैं जैसी कोई संवेदनशील इंसान देता।

कौआ : असाधारण बुद्धिमत्ता का प्रतीक

कौआ दुनिया के सबसे बुद्धिमान पक्षियों में गिना जाता है। शोध बताते हैं कि कौए इंसानी चेहरों को पहचान सकते हैं और उन्हें लंबे समय तक याद रखते हैं। यदि किसी इंसान ने कभी कौए को नुकसान पहुंचाया हो, तो वह भविष्य में उस व्यक्ति को देखकर सतर्क या आक्रामक हो सकता है।

वहीं, जो इंसान उसके प्रति दयालु रहा हो, उसके आसपास कौआ सहज व्यवहार करता है। कौए औजारों का उपयोग करते हैं, समस्या सुलझाते हैं और समूह में रणनीति बनाते हैं, ये सभी गुण इंसानी बुद्धि से मिलते-जुलते हैं।

अफ्रीकी ग्रे तोता : भावनाओं को समझने वाला पक्षी

यह तोता केवल बोलने की नकल ही नहीं करता, बल्कि शब्दों के भाव को भी समझता है। कई प्रयोगों में देखा गया है कि ये तोते अपने मालिक के मूड को पहचान लेते हैं। जब मालिक दुखी होता है, तो यह तोता शांत होकर उसके पास बैठ जाता है और खुश माहौल में चहकने लगता है। यह व्यवहार सहानुभूति का स्पष्ट संकेत है, जो आमतौर पर इंसानों में पाया जाता है।

हाथीचील या ऑस्प्रे : पारिवारिक संवेदनाएं

ऑस्प्रे जैसे शिकारी पक्षी अपने बच्चों और साथी के प्रति गहरा भावनात्मक लगाव दिखाते हैं। यदि उनके घोंसले को नुकसान पहुंचता है या बच्चे खतरे में होते हैं, तो वे अत्यंत संयमित लेकिन दृढ़ प्रतिक्रिया देते हैं। कई बार देखा गया है कि ये पक्षी इंसानों द्वारा मदद किए जाने पर आक्रामक नहीं होते, बल्कि दूरी बनाकर विश्वास का व्यवहार दिखाते हैं।

पेंगुइन : रिश्तों की समझ

पेंगुइन अपने साथी के प्रति आजीवन निष्ठा के लिए प्रसिद्ध हैं। वे अपने जीवनसाथी को आवाज और हावभाव से पहचानते हैं। यदि साथी खो जाए, तो पेंगुइन शोक जैसी अवस्था में चले जाते हैं, खाना कम कर देते हैं और अलग-थलग रहने लगते हैं। यह व्यवहार भावनात्मक आघात जैसा है, जो इंसानों में देखा जाता है।

हंस : सामाजिक चेतना और अनुशासन

हंसों को अक्सर अनुशासन और सामाजिक समझ का प्रतीक माना जाता है। वे अपने समूह के कमजोर सदस्यों की रक्षा करते हैं और खतरे के समय सामूहिक निर्णय लेते हैं। यदि कोई इंसान उनके प्रति शांत और सम्मानजनक व्यवहार करे, तो वे आक्रामक नहीं होते, बल्कि दूरी बनाकर संवाद जैसा व्यवहार करते हैं।

कहानी

ब्राह्मणी और तिल के बीज

एक बार की बात है एक निर्धन ब्राह्मण परिवार रहता था, एक समय उनके यहाँ कुछ अतिथि आये, घर में खाने पीने का सारा सामान ख़त्म हो चुका था, इसी बात को लेकर ब्राह्मण और ब्राह्मण-पत्नी में यह बातचीत हो रही थीः ब्राह्मण---- 'कल सुबह कर्क-संक्रान्ति है, भिक्षा के लिये मैं दूसरे गाँव जाऊँगा। वहाँ एक ब्राह्मण सूर्यदेव की तृप्ति के लिए कुछ दान करना चाहता है।' पत्नी--- 'तुझे तो भोजन योग्य अन्न कमाना भी नहीं आता। तेरी पत्नी होकर मैंने कभी सुख नहीं भोगा, मिष्टान्न नहीं खाये, वस्त्र और आभूषणों को तो बात ही क्या कहनी ' ब्राह्मण---- 'देवी ! तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए। अपनी इच्छा के अनुरुप धन किसी को नहीं मिलता। पेट भरने योग्य अन्न तो मैं भी ले ही आता हूँ। इससे अधिक की तृष्णा का त्याग कर दो। अति तृष्णा के चक्कर में मनुष्य के माथे पर शिखा हो जाती है।' ब्राह्मणी ने पूछा---- 'यह कैसे ' तब ब्राह्मण ने सूअर---शिकारी और गीदड़ की यह कथा सुनाई---- एक दिन एक शिकारी शिकार की खोज में जंगल की ओर गया। जाते-जाते उसे वन में काले अंजन के पहाड़ जैसा काला बड़ा सूअर दिखाई दिया। उसे देखकर उसने अपने धनुष की प्रत्यंचा को कानों तक खींचकर निशाना मारा। निशाना ठीक स्थान पर लगा। सूअर घायल होकर शिकारी की ओर दौड़ा। शिकारी भी तीखे दाँतों वाले सूअर के हमले से गिरकर घायल होगया। उसका पेट फट गया। शिकारी और शिकार दोनों का अन्त हो गया। इस बीच एक भटकता और भूख से तड़पता गीदड़ वहाँ आ निकला। वहाँ सूअर और शिकारी, दोनों को मरा देखकर वह सोचने लगा, 'आज दैववश बड़ा अच्छा भोजन मिला है। कई बार बिना विशेष उद्यम के ही अच्छा भोजन मिल जाता है। इसे पूर्वजन्मों का फल ही कहना चाहिए।' यह सोचकर वह मृत लाशों के पास जाकर पहले छोटी चीजें खाने लगा। उसे याद आगया कि अपने धन का उपयोग मनुष्य को धीरे-धीरे ही करना चाहिये; इसका प्रयोग रसायन के प्रयोग की तरह करना उचित है। इस तरह अल्प से अल्प धन भी बहुत काल तक काम देता है। अतः इनका भोग मैं इस रीतिसे करुँगा कि बहुत दिन तक इनके उपभोग से ही मेरी प्राणयात्रा चलती रहे।

यह सोचकर उसने निश्चय किया कि वह पहले धनुष की डोरी को खायगा। उस समय धनुष की प्रत्यंचा चढ़ी हुई थी; उसकी डोरी कमान के दोनों सिरों पर कसकर बँधी हुई थी। गीदड़ ने डोरी को मुख में लेकर चबाया। चबाते ही वह डोरी बहुत वेग से टूट गई; और धनुष के कोने का एक सिरा उसके माथे को भेद कर ऊपर निकला आया, मानो माथे पर शिखा निकल आई हो। इस प्रकार घायल होकर वह गीदड़ भी वहीं मर गया। ब्राह्मण ने कहा--- 'इसीलिये मैं कहता हूँ कि अतिशय लोभ से माथे पर शिखा हो जाती है।' ब्राह्मणी ने ब्राह्मण की यह कहानी सुनने के बाद कहा---- 'यदि यही बात है तो मेरे घर में थोड़े से तिल पड़े हैं। उनका शोधन करके कूट छाँटकर अतिथि को खिला देती हूँ।' ब्राह्मण उसकी बात से सन्तुष्ट होकर भिक्षा के लिये दूसरे गाँव की ओर चल दिया। ब्राह्मणी ने भी अपने वचनानुसार घर में पड़े तिलों को छाँटना शुरु कर दिया। छाँट-पछोड़ कर जब उसने तिलों को सुखाने के लिये धूप में फैलाया तो एक कुत्ते ने उन तिलों को मूत्र-विष्ठा से खराब कर दिया। ब्राह्मणी बड़ी चिन्ता में पड़ गई। यही तिल थे, जिन्हें पकाकर उसने अतिथि को भोजन देना था। बहुत विचार के बाद उसने सोचा कि अगर वह इन शोधित तिलों के बदले अशोधित तिल माँगेगी तो कोई भी दे देगा। इनके उच्छिष्ट होने का किसी को पता ही नहीं लगेगा। यह सोचकर वह उन तिलों को छाज में रखकर घर-घर घूमने लगी और कहने लगी---- 'कोई इन छँटे हुए तिलों के स्थान पर बिना छँटे तिल देदे।' अचानक यह हुआ कि ब्राह्मणी तिलों को बेचने एक घर में पहुँच गई, और कहने लगी कि--- 'बिना छँटे हुए तिलों के स्थान पर छँटे हुए तिलों को ले लो।' उस घर की गृहपत्नी जब यह सौदा करने जा रही थी तब उसके लड़के ने, जो अर्थशास्त्र पढ़ा हुआ था, कहा: 'माता !

साम्राज्यवाद का प्रतिरोध आवश्यक

वैश्विक राजनीति के बारे में कहा जाता है कि वह सिद्धांतों एवं मानदंडों के आधार पर संचालित होती है, लेकिन हालिया उदाहरण कुछ और ही संकेत करते हैं। वेनेजुएला में अमेरिकी हमले के बाद ताइवान को लेकर समय-समय आक्रामकता दिखाने वाले चीन पर भी अंतरराष्ट्रीय कानून वाले तर्क बेमानी हो जाते हैं। लैटिन भाषा में 'टू कुआकवे' जैसी एक संकल्पना है, जिसके अनुसार प्रतिद्वंद्वी के व्यक्तिगत व्यवहार और कार्यों को उनके तर्क के साथ असंगत बताकर उनके तर्क को अमान्य कर दिया जाता है। वेनेजुएला में सशस्त्र हमला कर और उसकी आंतरिक राजनीति को जबरदस्ती बदलकर ट्रंप ने हर संभावित हमलावर को सुविधाजनक बहाना दे दिया है। ट्रंप प्रशासन की नवीनतम राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अमेरिका लैटिन अमेरिका पर प्रभुत्व स्थापित करने और एक ऐसे पश्चिमी गोलार्ध का निर्माण करने के लिए उन्नीसवीं सदी के 'मोनरो सिद्धांत' को समकालीन संदर्भ में लागू करेगा, जिससे पूरे क्षेत्र की सरकारों को अमेरिका के आर्थिक और सामरिक हितों के अनुसार चलना होगा। अगर लैटिन अमेरिका में अमेरिका की धौंस जायज है, तो एशिया में चीन अपने आप को बेताज बादशाह क्यों न मान ले?

देखा जाए तो ताइवान का परिप्रेक्ष्य वेनेजुएला से भिन्न है , मगर जब संप्रभुता और शांतिपूर्वक बर्ताव के सिद्धांत ही लुप्त हो रहे हों तो राष्ट्रपति शी चिनफिंग जैसे आक्रामक नेता

वेनेजुएला में अमेरिकी हमला यही दर्शाता है कि हम महाशक्तियों की घातक प्रतिस्पर्धा और उनके मनमाने हस्तक्षेपों के दौर में जी रहे हैं। ऐसे दौर में जहां अंतरराष्ट्रीय कानूनों और जंगल के कानूनों में कोई अंतर ही नहीं रह गया है। वेनेजुएला में तख्तापलट के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शेखी बघारते हुए कहा, 'हमें इसे फिर से करना होगा, हम फिर से ऐसा कर सकते हैं और कोई हमें रोक नहीं सकता।' यानी जिसकी लाठी उसी की भैंस। ट्रंप का यह औपनिवेशिक दावा कि 'हम वेनेजुएला को चलाएंगे और सुनिश्चित करेंगे कि इसे ठीक से चलाया जाए', स्पष्ट संकेत है कि शक्तिशाली ही शक्तिहीन पर राज करेंगे। ट्रंप ने वेनेजुएला में अवैध रूप से सत्ता परिवर्तन करके वहां के खनिजों को अमेरिकी कंपनियों के एकाधिकार में लाने की खुलेआम घोषणा से सिद्ध कर दिया कि अंतरराष्ट्रीय कानूनों के जो भी बचे-कुचे बंधन थे, वे भी ध्वस्त होते जा रहे हैं। इससे पहले रूस ने अपने मुकाबले कमजोर पड़ोसी यूक्रेन पर आक्रमण कर उस पर विशेषाधिकारों का दावा किया। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के अनुसार बड़ी शक्तियों को अपने-अपने प्रभाव वाले क्षेत्र रखने की स्वतंत्रता होनी चाहिए और यूक्रेन की सच्ची संप्रभुता तभी संभव है जब वह रूस के प्रति मित्रवत और पराधीन रहे। इनके उलट चीन ने अभी तक ताइवान पर पूर्ण पैमाने पर आक्रमण करने या भारत, वियतनाम, फिलीपींस अथवा जापान पर सीधे हमले का प्रयास नहीं किया है, परंतु कमजोर पड़ोसियों के प्रति उसका भी औपनिवेशिक और दबंग रवैया है जो दिन-प्रतिदिन और बिगड़ता जा रहा है। जब सभी बलशाली देश आक्रामक और लुटेरे तेवरों पर उतर आएं तो बड़ी मछली का छोटी मछली को निगलना सामान्यीकृत होने लगता है। वैश्विक राजनीति के बारे में कहा जाता है कि वह सिद्धांतों एवं मानदंडों के आधार पर संचालित होती है, लेकिन हालिया उदाहरण कुछ और ही संकेत करते हैं। वेनेजुएला में अमेरिकी हमले के बाद ताइवान को लेकर समय-समय आक्रामकता दिखाने वाले चीन पर भी अंतरराष्ट्रीय कानून वाले तर्क बेमानी हो जाते हैं। लैटिन भाषा में 'टू कुआकवे' जैसी एक संकल्पना है, जिसके अनुसार प्रतिद्वंद्वी के व्यक्तिगत व्यवहार और कार्यों को उनके तर्क के साथ असंगत बताकर उनके तर्क को अमान्य कर दिया जाता है। वेनेजुएला में सशस्त्र हमला कर और उसकी आंतरिक राजनीति को जबरदस्ती बदलकर ट्रंप ने हर संभावित हमलावर को सुविधाजनक बहाना दे दिया है। ट्रंप प्रशासन की नवीनतम राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अमेरिका लैटिन अमेरिका पर प्रभुत्व स्थापित करने और एक ऐसे पश्चिमी गोलार्ध का निर्माण करने के लिए उन्नीसवीं सदी के 'मोनरो सिद्धांत' को समकालीन संदर्भ में लागू करेगा, जिससे पूरे क्षेत्र की सरकारों को अमेरिका के आर्थिक और सामरिक हितों के अनुसार चलना होगा। अगर लैटिन अमेरिका में अमेरिका की धौंस जायज है, तो एशिया में चीन अपने आप को बेताज बादशाह क्यों न मान ले? देखा जाए तो ताइवान का परिप्रेक्ष्य वेनेजुएला से भिन्न है, मगर जब संप्रभुता और शांतिपूर्वक बर्ताव के सिद्धांत ही लुप्त हो रहे हों तो राष्ट्रपति शी चिनफिंग जैसे आक्रामक नेता अराजकता का फायदा क्यों नहीं उठाएंगे? चीन निश्चित रूप से इराक, अफगानिस्तान, लीबिया और अब वेनेजुएला में पश्चिमी दखलंदाजी का हवाला देकर ताइवान और अन्य एशियाई पड़ोसियों पर दबाव और हमले की योजनाओं को तेज करेगा। रूस की तरह चीन भी कहता आ रहा है कि पश्चिमी शक्तियों के पाखंड और दोहरे रवैये के कारण ही अंतरराष्ट्रीय कानूनों के चिथड़े उड़ गए हैं और वे दोनों अपनी 'आत्मरक्षा' के नाम पर सख्त से सख्त कार्रवाई करने के लिए स्वयं को विवश बताते हैं। ताइवान को धमकाने के लिए चीन द्वारा किए जा रहे प्रत्येक युद्ध अभ्यास में अनिश्चितता अंतर्निहित है और इनमें से कोई भी वास्तविक युद्ध में तब्दील हो सकता है। अब तक अगर ताइवान पर चीन ने धावा नहीं बोला है तो यह अंतरराष्ट्रीय नियम या विधि के प्रति शी चिनफिंग की श्रद्धा के कारण नहीं है, बल्कि उस उपयुक्त समय की प्रतीक्षा की वजह से है जब हिंद-प्रशांत में शक्ति संतुलन और भूराजनीतिक परिस्थितियां चीन के पक्ष में कहीं अधिक झुक जाएं। चीन भली-भांति जानता है की अमेरिका अब भी 'खुले एवं स्वतंत्र' हिंद-प्रशांत को अपना मूल राष्ट्रीय हित मानता है और अमेरिकी सैन्य सामग्री लगातार ताइवान तथा अन्य एशियाई मित्र देशों को बेची भी जा रही है। चिनफिंग यह चाहेंगे कि वेनेजुएला में हस्तक्षेप के बाद अगर अमेरिका उसी पड़ोसी क्षेत्र में उपनिवेशवादी मंशा से ज्यादा उलझ जाए और चीन के साथ व्यापार समझौते के चलते एशिया की तकदीर चीन के हाथों छोड़ दें तो ताइवान पर आधिपत्य का उसके पास सुनहरा मौका होगा। आक्रामक महाशक्तियों द्वारा अंतरराष्ट्रीय कानूनों पर किए जा रहे व्यापक आघातों के मद्देनजर छोटे देशों के लिए अपना अस्तित्व बचाए रखने की क्या रणनीति हो सकती है? मौलिक स्तर पर उन्हें समूचे 'वैश्विक दक्षिण' में एकजुट होकर हस्तक्षेप की नितांत अस्वीकृति के सिद्धांत पर जोर देना होगा, ताकि महाशक्तियों का जंगल-राज एक सामान्य दस्तूर न बन जाए। व्यावहारिक स्तर पर उन्हें क्षेत्रीय एकीकरण और एकता को प्राथमिकता देनी होगी, ताकि कोई भी महाशक्ति आसानी से उनमें भेद पैदा करके उन्हें बांट न सके। वेनेजुएला में मादुरो ने सबसे बड़ी भूल यह की कि पड़ोसी लैटिन अमेरिकी देशों के साथ उन्होंने वर्षों से दुश्मनियां मोल लीं और अंत में अमेरिकी आक्रमण को टालने के लिए कोई प्रांतीय गठबंधन या संस्थान शेष नहीं रहा। स्मरण रहे कि एक सभ्य विश्व व्यवस्था का निर्माण तभी संभव है, जब कमजोर देश एकजुट होकर वर्चस्व का विरोध करें।

सम्पादकीय

जवाबदेही के बजाए दिया जा रहा मुआवजा

इंदौर में पेयजल दूषित होने की वजह से कई लोगों की मौत के बाद राहत के तौर पर सरकार की ओर से मुआवजे की घोषणा की गई, लेकिन सवाल है कि क्या कुछ रस्मी औपचारिकताएं पूरी करना इस समस्या का हल हो सकता है! सबसे जरूरी था कि इस घटना के बाद निचले स्तर के संबंधित कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने के समांतर शीर्ष स्तर पर बरती गई लापरवाही के लिए भी जिम्मेदारी तय की जाती। मगर ऐसा लगता है कि इसे किसी सामान्य हादसे की शक्ल में देखा जा रहा है। वरना क्या कारण है कि इतने गंभीर मामले के बाद भी सरकार के रवैये में एक अफसोसनाक उदासीनता दिख रही है। इसकी जिम्मेदारी लेने के बजाय वहां के एक मंत्री सवालों को जिस तरह बेमानी बता रहे थे, उसमें एक विचित्र उपेक्षाभाव था। अव्वल तो पेयजल जैसी सबसे बुनियादी जरूरत के पूरी तरह सुरक्षित होने को लेकर सरकार अपनी ओर से सजग रहती, लेकिन इसके बजाय मध्य प्रदेश हाई कोर्ट को यह आदेश देना पड़ा है कि प्रभावित इलाके में पीने के पानी के अतिरिक्त टैंकर भेजे जाएं। इस घटना से फिर यही जाहिर हुआ है कि महज हादसा या चूक मानी जाने वाली कई घटनाएं अक्सर अधिकारियों की अदूरदर्शिता, लंबे समय से बरती जाने वाली लापरवाही और कई बार जानबूझ कर की गई उपेक्षा का नतीजा होती हैं। इंदौर के जिस इलाके में पेयजल दूषित होने की घटना सामने आई, क्या ऐसा अचानक हो गया होगा? अगर फिलहाल आई खबरों पर ही भरोसा किया जाए कि पानी की आपूर्ति वाले पाइप में गंदे नाले का पानी मिल गया, तो इस पर निगरानी रखना किसकी जिम्मेदारी है? एक बार पेयजल की पाइप बिछा देने के बाद उसमें पानी आ रहा है या नहीं या फिर वह पीने के लिहाज से पूरी तरह सुरक्षित है, इसकी नियमित जांच करने, गड़बड़ियों की निगरानी करने का दायित्व किस पर है? अगर संबंधित महकमे में निचले स्तर पर तैनात कर्मचारी लापरवाही बरत रहे थे, तो इसका ध्यान रखना किसका काम था? इस गंभीर घटना के बाद सवाल उठने और कठघरे में खड़ा किए जाने के बाद जहां सरकार को इसकी जिम्मेदारी लेकर सख्त संदेश देने वाली कार्रवाई करनी चाहिए थी, वहां उसके मंत्री संवेदनहीन, अवांछित और गैरजिम्मेदाराना टिप्पणी कर रहे थे। अफसोस की बात यह भी है कि इस समूचे मामले में केंद्र सरकार ने एक तरह से विचित्र चुप्पी साधे रखी और उसकी ओर से कुछ नहीं किया गया। जबकि पिछले कई वर्षों से स्वच्छता के लिए तमगा जीतने वाले इंदौर में दूषित पेयजल से जिस तरह की त्रासद घटना सामने आई, वैसे में पीड़ित परिवारों से लेकर देश भर के आम लोग यह उम्मीद करते हैं कि इसकी गंभीरता के मद्देनजर केंद्र सरकार दखल देगी। दरअसल, ऐसे नाजुक मौकों पर सबसे ज्यादा जरूरी यह होता है कि सरकार आम लोगों के प्रति संवेदनशील दिखे और इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने देने का भरोसा दे। मगर कम से कम इस मामले में सच यह है कि लोगों का सरकार पर से भरोसा बुरी तरह टूटा है।

उच्च शिक्षा की समस्याओं का समाधान

भले ही यह उत्साहजनक लगे, लेकिन देश की जरूरतों के मुकाबले अभी भी पर्याप्त नहीं। युवावर्ग अब भी बड़ी संख्या में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा खोज रहा है। आपूर्ति की कमी का असर छात्र के इस निर्णय पर पड़ता है कि वह कहां पढ़े। सख्त आव्रजन नीतियों के बाद भी भारतीय छात्र बड़ी संख्या में विदेश पढ़ने जा रहे हैं। कनाडा, अमेरिका और ब्रिटेन उनके प्रमुख गंतव्य हैं। हालांकि अब फ्रांस, आयरलैंड और इटली भी तेजी से छात्रों में लोकप्रिय हो रहे हैं। जनवरी 2025 तक के आंकड़ों के अनुसार 12 लाख से अधिक भारतीय छात्र विदेश में पढ़ रहे थे। इस आंकड़े से घरेलू स्तर पर आवश्यकता और सीमित विकल्प साफ उजागर होते हैं। इन चुनौतियों के बीच से ही बड़े अवसर भी उत्पन्न होते हैं। तेजी से बदलती दुनिया में पहला अवसर नवाचार में निहित है। भारत में हमें अधिक बहुविषयक कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

केवल डिग्री हासिल कर लेने को शिक्षा नहीं कह सकते। शिक्षा वह शक्ति है, जो जीवन को दिशा देती है। सफल शिक्षा एक व्यक्ति के सोचने का तरीका बदल सकती है, उसे जीवन उद्देश्य दे सकती है और अपने भीतर छिपी संभावनाएं पहचानने का अवसर दे सकती है। खासतौर पर उच्च शिक्षा वह पड़ाव है, जहां युवा अपनी रुचियों और क्षमताओं को पहचानते हैं और भविष्य की राह खोजने की शुरुआत करते हैं। जहां एक तरफ स्कूली शिक्षा हमें हमारे आसपास की दुनिया का ज्ञान देती है, वहीं उच्च शिक्षा छात्रों को अपने विकल्प जानने की आजादी देती है। उच्च शिक्षा समय है अलग-अलग विषयों और क्षेत्रों को समझने और यह तय करने का कि उन्हें जीवन में क्या करना है। यह प्रक्रिया सरल नहीं, जटिल होती है। एक छात्र के आजादी से अपनी राह चुन सकने के पीछे एक मजबूत संस्थान, संसाधन और निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है।

भारत जैसे विशाल और विविध देश में संस्थान निर्माण एक बहुत बड़ी चुनौती है। आज देश की लगभग 65 प्रतिशत आबादी की उम्र 35 वर्ष से कम है। हर साल लाखों छात्र स्कूलों से निकलकर उच्च शिक्षा की ओर रुख करते हैं, लेकिन संस्थानों में इतनी सीटें ही नहीं कि सबको दाखिला मिल सके। नतीजतन प्रतिस्पर्धा और तेज होती जा रही है और परीक्षाएं और ज्यादा मानकीकृत हो रही हैं। इस सबके साथ-साथ व्यवस्था अक्सर प्रशासनिक सुविधा की सहूलियत देखती है। इस गहन माहौल में हर छात्र की अलग पहचान और क्षमता पर ध्यान दे पाना असंभव हो जाता है। आज भारत में लगभग 70,018 उच्च शिक्षा संस्थान हैं।

भले ही यह उत्साहजनक लगे, लेकिन देश की जरूरतों के मुकाबले अभी भी पर्याप्त नहीं। युवावर्ग अब भी बड़ी संख्या में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा खोज रहा है। आपूर्ति की कमी का असर छात्र के इस निर्णय पर पड़ता है कि वह कहां पढ़े। सख्त आव्रजन नीतियों के बाद भी भारतीय छात्र बड़ी संख्या में विदेश पढ़ने जा रहे हैं। कनाडा, अमेरिका और ब्रिटेन उनके प्रमुख गंतव्य हैं। हालांकि अब फ्रांस, आयरलैंड और इटली भी तेजी से छात्रों में लोकप्रिय हो रहे हैं। जनवरी 2025 तक के आंकड़ों के अनुसार 12 लाख से अधिक भारतीय छात्र विदेश में पढ़ रहे थे। इस आंकड़े से घरेलू स्तर पर आवश्यकता और सीमित विकल्प साफ उजागर होते हैं। इन चुनौतियों के बीच से ही बड़े अवसर भी उत्पन्न होते हैं। तेजी से बदलती दुनिया में पहला अवसर नवाचार में निहित है। भारत में हमें अधिक बहुविषयक कार्यक्रमों की आवश्यकता है। हमें ऐसे कार्यक्रमों के बारे में सोचना होगा, जो तकनीक, पर्यावरण, सूचना और रचनात्मक क्षेत्रों से जुड़े हों। मैनेजमेंट, कानून और मेडिकल जैसे पारंपरिक कोर्स को भी नए ढंग से देखना होगा। नए पाठ्यक्रम, बेहतर तकनीक और उद्योग से पढ़ाई को जोड़ कर भारतीय संस्थान खुद को वैश्विक स्तर पर मजबूत बना सकते हैं। दूसरा बड़ा अवसर है, डिजिटल शिक्षा। हाइब्रिड माडल प्रभावी हो सकते हैं, जिन्हें आनलाइन और आफलाइन पढ़ाई को मिलाकर बनाया गया हो। अगर सही ढंग से लागू किए जाएं तो ये बड़े पैमाने पर लाभकारी शिक्षा का साधन बन सकते हैं। भारत जैसे विशाल और विविध देश में, जहां छात्र दूरदराज के इलाकों में रहते हैं, डिजिटल शिक्षा एक असरदार समाधान प्रस्तुत करती है। अपने सशक्त डिजिटल ढांचे की सहायता से भारत विश्व के लिए एक उदाहरण स्थापित कर सकता है, और उसे ऐसा करना भी चाहिए। नीतिगत स्तर पर आज सकारात्मक बदलाव दिख रहे हैं। तीन दशक बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा व्यवस्था में बड़े सुधारों का बीड़ा उठाया है।

बेलगाम ट्रंप, टैरिफ बढ़ाने चेतावनी

वेनेजुएला पर हमला कर वहां के राष्ट्रपति का अपहरण कराने और ईरान समेत अन्य दक्षिण अमेरिकी देशों को धमकाने के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जिस तरह रूस से तेल खरीद के मामले में भारत पर टैरिफ बढ़ाने चेतावनी दी, वह उनके बढ़ते अहंकार का नया प्रमाण है। उन्होंने जिस तरह यह कहा कि प्रधानमंत्री मोदी बहुत अच्छे हैं, लेकिन वे जानते हैं कि रूस से तेल खरीदने के कारण मैं उनसे खुश नहीं और मुझे खुश करना जरूरी है, उससे उनकी तानाशाही मानसिकता ही प्रकट होती है। वे न केवल पूरी तरह बेलगाम दिख रहे हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक शिष्टाचार की भी धज्जियां उड़ा रहे हैं। वे ऐसे व्यवहार कर रहे हैं जैसे दुनिया के थानेदार हों या फिर उन्हें विश्व को अपने हिसाब से चलाने का जनादेश मिला हुआ है। वे अपने साथ अमेरिका की भी फजीहत करा रहे हैं। यदि वे यह समझ रहे हैं कि उनके रवैये से उनकी या अमेरिका की साख बढ़ रही है तो ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। अमेरिका केवल अपनी साख ही नहीं गंवा रहा है, बल्कि एक ऐसे गैर जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में उभर रहा है, जो विश्व व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दुनिया को अराजकता की ओर धकेल रहा है। इसके दुष्परिणाम अमेरिका को भी भोगने होंगे, क्योंकि विश्व के तमाम राष्ट्र उनसे तंग आ चुके हैं और यह एक तथ्य है कि आज अमेरिका उतना सशक्त नहीं, जितना पहले हुआ करता था। ट्रंप अपने अहं को पूरा करने के लिए जिस तरह अपने मित्र राष्ट्रों से भी बैर मोल ले रहे हैं, वह उन्हें महंगा पड़ सकता है, क्योंकि उनका मनमानापन विश्व के देशों को अमेरिका के खिलाफ एकजुट होने को मजबूर कर रहा है। यह बहुत दिनों तक संभव नहीं कि ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका तो मनमानी करे और विश्व से नियम-कानूनों के हिसाब से चलने की अपेक्षा करे। वे जिस तरह अस्थिरता फैला रहे हैं, उससे विश्व शांति ही नहीं, अर्थव्यवस्था भी खतरे में पड़ रही है। ट्रंप ने भारत पर पहले ही 50 प्रतिशत टैरिफ थोप रखा है। इसमें 25 प्रतिशत व्यापार समझौता न हो पाने और 25 प्रतिशत रूस से तेल खरीदने के कारण है। यदि वे और टैरिफ बढ़ाते हैं तो यह एक तरह से भारत पर पाबंदी लगाने जैसा होगा। यह ठीक है कि भारत को अमेरिकी सहयोग की आवश्यकता है, लेकिन उसे उसके अनुचित दबाव का प्रतिकार करना होगा। भारत को ट्रंप की शर्तों पर व्यापार समझौता करने से बचना होगा। भारत को यह भी आभास हो जाना चाहिए कि अमेरिका से व्यापार समझौता होने में और देरी हो सकती है। भारत को ट्रंप को उनकी भाषा में जवाब देने की जरूरत नहीं, लेकिन यह स्पष्ट करने में संकोच नहीं करना चाहिए कि वह उनके बेजा व्यवहार के समक्ष झुकने वाला नहीं।

कल्पमेधा

क्या आप जानना चाहते हैं कि आप कौन हैं? तो इसके बारे में पूछें नहीं, कार्य करें। आपका काम ही आपको चित्रित और परिभाषित करेगा।

– थामस जेफरसन

लक्षित हिंसा

बांग्लादेश में पिछले कुछ महीनों से जिस तरह की अराजकता बेलगाम होती देखी जा रही है, उससे साफ है कि बदलाव की मांग के साथ वहां जो आंदोलन शुरू हुआ था, वह अब दिशाहीन हो चुका है। अब वहां हो रही लक्षित हिंसा की घटनाएं व्यापक चिंता का कारण बन रही हैं। गौरतलब है कि पिछले दो दिनों में जिन दो लोगों की हत्या कर दी गई, उनकी सामुदायिक पहचान हिंदू थी। सोमवार रात को वहां के नरसिंगदी शहर में अज्ञात हमलावरों ने एक किराना दुकान के चालीस वर्षीय मालिक की हत्या कर दी। इस घटना से कुछ घंटे पहले ही जेस्सोर जिले में एक अन्य व्यापारी की सिर में गोली मार कर जान ले ली गई, जो एक अखबार के कार्यवाहक संपादक भी थे। इसके अलावा, एक विधवा से सामूहिक बलात्कार, उसका निर्मम उत्पीड़न करने और उसका वीडियो बना कर जारी कर देने की भी खबर आई। इससे पहले भी वहां हिंदू पहचान को निशाना बना कर हत्या की कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं।

साफ है कि बांग्लादेश में जारी हिंसा और अफरा-तफरी अब किसी खास एजंडे के तहत हो रही लगती है। वरना क्या कारण है कि एक ही प्रकृति की घटनाएं लगातार सामने आने और इसी वजह से नई जटिलताएं खड़ी होने के बावजूद वहां की अंतरिम सरकार इसे रोकने को लेकर कुछ भी ठोस कदम नहीं उठा रही है। यह बेवजह नहीं है कि लगातार और सरेआम हो रही हत्या की घटनाओं से स्थानीय अल्पसंख्यक समुदायों के आम लोगों और व्यापारियों के बीच असुरक्षा की भावना बढ़ती जा रही है। अशांति और हिंसा की घटनाओं में तेजी की तात्कालिक वजह जुलाई, 2024 के विद्रोह के एक प्रमुख नेता शरीफ उस्मान हादी की हत्या हो सकती है, जो भारत का कट्टर आलोचक भी था। सवाल है कि अगर हादी का मकसद देश को बदलना था, तो क्या उसका रास्ता यह होगा कि वहां के अल्पसंख्यक तबकों और खासतौर पर चुन कर हिंदू पहचान वाले निर्दोष लोगों की हत्या की जाए? फिर अगर अराजकता का यह सिलसिला जारी रहता है और वहां की सरकार तथा कानून-व्यवस्था संभालने वाली एजंसियां ऐसी घटनाओं को रोक नहीं पाती हैं, तो इसके क्या मायने निकाले जाएंगे?

बांग्लादेश में तत्कालीन शेख हसीना सरकार के खिलाफ विद्रोह की घोषित वजहें चाहे जो रही हों, लेकिन आज वहां भीड़तंत्र जिस तरह हावी होता दिख रहा है, वह खुद बांग्लादेश के लिए चिंता की बात होनी चाहिए। धार्मिक पहचान को आधार बना कर हत्या या बलात्कार की घटनाओं के दौरान स्थानीय लोग जिस तरह अराजक होते या जैसी प्रतिक्रियाएं देते दिखते हैं, वह कुछ समूहों के दिशाहीन और संवेदनहीन हो जाने का संकेत तो है ही, जघन्य अपराधों के बेलगाम होते जाने को नहीं रोक पाना दरअसल शासन के नाकाम हो जाने का भी सबूत है। अगर अब भी वहां शांति और लोकतंत्र की बहाली के लिए ठोस कवायद नहीं हुई, अल्पसंख्यक समुदायों के बीच फैली असुरक्षा की भावना बनी रही, तो इसका खमियाजा समूचे देश को उठाना पड़ सकता है। सही है कि लक्षित तौर पर हिंसा करने वालों के बरक्स वहां अब भी वैसे लोग हैं, जो अल्पसंख्यक समुदायों को निशाना बनाने पर चिंता जाहिर करते हैं। मगर शेख हसीना को सत्ता से हटाने के कई महीने के बाद भी अगर वहां अराजकता फैलती दिख रही है, तो विद्रोह की अगुवाई करने वालों से लेकर फिलहाल सत्ता संभालने वाले समूह भविष्य में किस तरह का बांग्लादेश बनाने की उम्मीद दे रहे हैं?

संवेदनहीनता की अति

अस्पतालों में मरीज का इलाज ही नहीं, बल्कि चिकित्सकों और प्रबंधकीय कर्मियों का व्यवहार भी कई मायनों में महत्त्वपूर्ण होता है। किसी बीमारी से पीड़ित या हादसे में घायल व्यक्ति को इस उम्मीद के साथ अस्पताल लाया जाता है कि उसकी जान पर मंडरा रहा खतरा टल जाएगा। मगर इलाज के दौरान अगर किसी की मौत हो जाए, तो अस्पताल प्रबंधन की प्राथमिक जिम्मेदारी मरीज के शव को ससम्मान परिजनों को सौंप देने की होती है। इसके बावजूद अगर कोई अस्पताल इलाज के खर्च का भारी-भरकम बिल बनाकर उसकी पूरी वसूली के लिए शव को अपने कब्जे में रखने का प्रयास करे, तो इसे संवदेनहीनता और अनैतिकता की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या कहा जाएगा! उत्तराखंड के हल्द्वानी में हाल ही में एक ऐसा ही मामला सामने आया। एक निजी अस्पताल ने महिला को उसकी मौत से पहले केवल दो घंटे भर्ती करने का न केवल अस्सी हजार रुपए का बिल बना दिया, बल्कि इसका पूरा भुगतान न होने पर परिजनों को शव सौंपने से भी इनकार कर दिया। बाद में पुलिस के दखल देने पर शव परिजनों के हवाले किया गया।

इसमें दोराय नहीं है कि निजी अस्पताल अब मानवता की सेवा के बजाय उद्योग-धंधे में तब्दील होते जा रहे हैं, जहां मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति मानवीय संवेदनाओं और सेवा भाव पर हावी होती दिख रही है। यही वजह है कि निजी अस्पतालों में इलाज की बड़ी रकम का पूरा भुगतान न करने पर शव परिजनों को सौंपने से इनकार कर देने की खबरें अक्सर आती रहती हैं। ऐसे में यह सवाल महत्त्वपूर्ण है कि क्या अस्पतालों के इस रवैये को कानूनी या मानवीय तौर पर जायज ठहराया जा सकता है? हल्द्वानी के मामले में तो परिजनों ने बिल के अस्सी हजार रुपए में से सत्तावन हजार रुपए का भुगतान कर दिया था, इसके बावजूद अस्पताल प्रबंधन ने महिला का शव देने से इनकार दिया। अगर कोई मरीज या उसके परिजन इलाज के खर्चे की जायज रकम देने से इनकार करता है, तो अस्पताल प्रशासन कानून का सहारा ले सकता है, लेकिन शव को अपने कब्जे में लेने के प्रयास को न तो कानूनी और न ही नैतिक तौर पर उचित ठहराया जा सकता है।

वैश्विक ताप से बढ़ती जटिलताएं

दुनिया के ताकतवर देशों को वैश्विक ताप को लेकर कोई चिंता नहीं। आधुनिकीकरण के दौर में लगातार पहाड़ काटे जा रहे हैं। खनन के लिए किए जा रहे विस्फोटों से पहाड़ दरक रहे हैं। मनुष्य की जिंदगी अनिश्चित हो गई है। स्थिति को संभालने के लिए सही दिशा में प्रयास जरूरी हैं।

सुरेश सेठ

वैसे तो कई देशों में प्रदूषण संकट गहरा गया है, लेकिन भारत में इसकी चुनौतियां बेहद गंभीर रूप ले चुकी हैं। पिछले दिनों पर्यावरण और प्रदूषण पर 'लैंसेट' का एक सर्वेक्षण आया। इसके बाद मानसिक रोगियों की देखभाल करने वाली एक संस्था 'इमोनीड्स' का भी एक सर्वेक्षण जारी हुआ। इन दोनों ही सर्वेक्षणों ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया। विशेष रूप से भारत के लिए यह चिंता की बात है, जहां विकास के समांतर न तो पर्यावरण को बचाने की फिक्र है और न प्रदूषण को नियंत्रित करने के गंभीर प्रयास दिखते हैं। ये सर्वेक्षण बता रहे हैं कि वायु गुणवत्ता सूचकांक का लगातार 400 से ऊपर रहना, न केवल लोगों की सेहत को नुकसान पहुंचा रहा है, बल्कि इसने लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को भी जोखिम में डाल दिया है। अब बच्चे भी खतरे में हैं। वहीं लोगों में स्मृति संबंधी विकार बढ़ा है। इसके अलावा जहरीली हवाओं के लगातार बने रहने से कई बीमारियां पैदा हो रही हैं।

सर्वेक्षण बता रहे हैं कि प्रदूषण से न केवल सांस लेने में दिक्कत हो रही है, बल्कि हृदय और एलर्जी संबंधी समस्याएं भी लोगों को हो रही हैं। अल्जाइमर और पार्किंसन की चपेट में भी लोग आ रहे हैं। सर्वेक्षण में भारतीयों की मुश्किलों का भी जिक्र है। कहा गया है कि इस प्रदूषण ने लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता घटा दी है और अब हालत ऐसी हो गई है कि एंटीबायोटिक दवाइयां भी कम असर कर रही हैं। देश में निरंतर बढ़ते प्रदूषण के कारण ऋतु चक्र में असाधारण बदलाव आया है। बढ़ते वैश्विक ताप की वजह से जटिलताएं बढ़ रही हैं। बर्फ गिरने की प्रकृति बदल रही है। हिमनद हमारे जलस्रोत हैं। ये नदियों को पानी और बादलों को घुमड़न देते हैं। खेतों में फसलों को जीवन भी मिलता है। मगर अब बर्फ कम पड़ रही है और जो हिमनद बनते हैं, वे जल्दी पिघलने लगते हैं। इसी कारण बाढ़ के खतरे बढ़ गए हैं और लोगों का जीवन अनिश्चित हो गया है। जलवायु संकट की यह भयावह तस्वीर है।

ऐसी में सभी का दायित्व है कि वह प्रदूषण को किसी भी तरह नियंत्रित करने के लिए हरसंभव योगदान दें। सरकारें कदम उठाएं। वैश्विक ताप पर नियंत्रण के लिए ठोस उपाय हों। नारों और भाषणों से कुछ भी हासिल नहीं होगा। प्रदूषण से दुनिया के ज्यादातर देश बेहाल हैं। गरीब देशों के सामने संकट है, लेकिन समर्थ देश इस लड़ाई में अपना योगदान देने के लिए तैयार नहीं हैं। उनका विचित्र तर्क है कि कार्बन उत्सर्जन तो तीसरी दुनिया के वे देश कर रहे हैं जो अब विश्व में चौथी औद्योगिक क्रांति का अगुआ बनना चाहते हैं। वैश्विक ताप को लेकर ताकतवर देशों को कोई चिंता नहीं। आधुनिकीकरण के दौर में लगातार पहाड़ काटे जा रहे हैं। खनन के लिए किए जा रहे विस्फोटों से धरती कांप रही है। कई पहाड़ दरक रहे हैं। पहाड़ी इलाकों में स्थिति गंभीर है। मनुष्यों की जिंदगी अनिश्चित हो गई है। लिहाजा अब सचेत होने का समय है।

मौसम का चरित्र बदल रहा है। बरसात के मौसम में बारिश नहीं होती और जब मानसून की विदाई का समय आता है, तो बादल फटने लगते हैं। पिछले वर्ष हिमाचल प्रदेश के कुल्लू से लेकर मंडी जिले तक बार-बार जल प्रलय हुआ। इन घटनाओं ने खतरे की घंटी बजा दी है। प्रकृति ने मनुष्यों को सचेत होने का संदेश दे दिया है। उत्तराखंड में धरती कांपती है, भूकम्प आते हैं और गांवों के गांव नक्शे से गायब हो जाते हैं। मगर लोगों को कोई यह नहीं समझाता कि जीवन जीने का सहज तरीका ही सर्वोत्तम है। ऐसा लगता है कि विकास की दौड़ में हम प्रकृति का ही विध्वंस करेंगे। ऐसे में जरूरी है कि अब वैज्ञानिकों की बताई सावधानियां बरती जाएं।

> **प्रदूषण से न केवल सांस लेने में दिक्कत हो रही है, बल्कि हृदय और एलर्जी संबंधी समस्याएं भी हो रही हैं। अल्जाइमर और पार्किंसन की चपेट में भी लोग आ रहे हैं। पिछले दिनों आए एक सर्वेक्षण में भारतीयों की मुश्किलों का भी जिक्र है। कहा गया है कि प्रदूषण ने लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता घटा दी है और अब हालत ऐसी हो गई है कि एंटीबायोटिक भी कम असर कर रही हैं। देश में निरंतर बढ़ते प्रदूषण के कारण ऋतु चक्र में असाधारण बदलाव आया है। बढ़ते वैश्विक ताप की वजह से जटिलताएं बढ़ रही हैं। बर्फ गिरने की प्रकृति बदल रही है, जबकि हिमनद हमारे जलस्रोत हैं।**

इसी संदर्भ में अरावली पहाड़ियों का मुद्दा एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ के रूप में सामने है। खनन माफिया की यही कोशिश रही है कि अरावली पर्वतमाला से अपने खनन व्यापार का हित साधा जाए। अरावली की जो छोटी पहाड़ियां हैं, वहां खनन किसी से छिपा नहीं है। इस समय यह पर्वत शृंखला संकट के दौर से गुजर रही है। पहाड़ी क्षेत्र में किस तरह संकट पैदा होते हैं, इसका सामना उत्तराखंड और हिमाचल ने बार-बार किया है। अरावली शृंखला दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात तक फैली है। यहां खनन पट्टों के आबंटन पर रोक लगे, ऐसी मांग लोग करते रहे हैं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में भी आवाज उठाई। गौरतलब है कि अरावली की पहाड़ियां थार रेगिस्तान और उत्तरी मैदानों के बीच एक दीवार का काम करती हैं। इनमें कई पहाड़ियों की ऊंचाई कम है। पहले यह आदेश हुआ कि एक पर्वत शृंखला से दूसरी शृंखला तक 500 मीटर से अधिक का अंतर हो या सौ मीटर से अधिक की ऊंचाई हो, तो ऐसे पहाड़ी समूहों पर खनन प्रतिबंध लग जाएगा। बाकी क्षेत्रों पर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की एक समिति की सिफारिशों को स्वीकार कर लिया जाए। मगर फिर सुप्रीम कोर्ट ने अपने ही इस निर्णय पर पुनर्विचार किया और खनन पट्टों पर न केवल रोक लगाई, बल्कि अपने पिछले निर्णय पर भी रोक लगा दी।

कोई दो राय नहीं कि अरावली पर्वत शृंखला को किसी भी हाल में संरक्षित करना होगा। इस मुद्दे पर अब शीर्ष न्यायालय भी सख्त है, लेकिन हमें अब अन्य पर्वत शृंखलाओं पर भी ध्यान देना होगा। उन्हें बचाना होगा। अंधाधुंध विकास मानव जाति के लिए तबाही ही लाएगा, नहीं तो विकास की बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। समस्या केवल पहाड़ों की नहीं है या उन मैदानी क्षेत्रों की नहीं है, जहां भूकम्प की लगातार आशंका बनी रहती है। यों दिल्ली से लेकर पंजाब और हिमाचल तक कई इलाकों में भूकम्प की आशंका बनी रहती है। इसलिए यहां जो भी विकास होता है, वह इस तरह होना चाहिए कि भूकम्प से बचाव हो सके।

दूसरी ओर प्रदूषण का असली कारण क्या है, इसे गंभीरता से लेने की जरूरत है। पहले तो पंजाब पर आरोप लगता रहा कि वहां पराली जलाने से दिल्ली में प्रदूषण बढ़ता है और वायु गुणवत्ता सूचकांक चार सौ से ऊपर पहुंच जाता है, लेकिन अब विशेषज्ञों ने स्पष्ट कर दिया है कि यह तो अंधाधुंध विकास का नतीजा है। वाहनों की बढ़ती समस्या भी चिंता का विषय है। कचरे का उचित ढंग से निस्तारण न हो पाना भी एक चुनौती है। पराली न जलाने के लिए अभियान तो चलाया गया है, लेकिन प्रदूषण का समाधान कैसे होगा? स्वाभाविक है कि इसके लिए एक दीर्घकालिक ठोस नीति बनानी पड़ेगी। पराली पर राजनीति करने या नारेबाजी से समस्या नहीं सुलझेगी। पंजाब में तो नेतृत्व बार-बार कहता है कि हमने तो इस पर लगाम लगा दी, लेकिन क्या अन्य पड़ोसी राज्यों में पराली नहीं जलती, वाहनों से प्रदूषण क्या नहीं फैलता और क्या कूड़े का उचित निस्तारण हो जाता है? जवाब है, नहीं। सवाल यह भी है कि राजस्थान से लेकर उत्तर प्रदेश तक जानलेवा घुटन क्यों है? स्पष्ट है कि हमें समस्या की तह में जाना होगा।

मनुष्यता की राह

गिरीश पंकज

कोई भी व्यक्ति हो, उसके भीतर करुणा-संवेदना, स्नेह, मानवता इत्यादि सहज गुण विद्यमान रहते हैं। एक बेहद सख्त दिखने वाले मनुष्य के भीतर भी ये नैसर्गिक गुण होते ही होते हैं। यह और बात है कि अनेक लोग जानबूझ कर अपने भीतर की सहज अनमोल थाती से अनजान बने रहते हैं और निर्ममता के साथ समाज में जीते रहते हैं। किसी के साथ हिंसा करते हैं, कहीं लूटपाट करते हैं। ऐसे अनेक लोग बुनियादी तौर पर अपनी हरकतों को अपनी विशेष कथित बहादुरी के रूप में ही देखते हैं। अपने बुरे कर्मों के कारण ऐसे लोग एक दिन गिरफ्तार भी होते हैं, जेल जाते हैं, जेल से बाहर आते हैं और फिर उसी बुरे काम में लग जाते हैं। इनके भीतर कोई आत्मज्ञान नहीं आता। दरअसल, इनकी अंतर्निहित करुणा पूरी तरह सुप्त-सी रहती है। यह और बात है कि ऐसे लोग जब अपने घर पहुंचते हैं, तो अपनी छोटी बच्ची या बच्चे को प्रेम से उठाते हैं, चूमते हैं, प्यार करते हैं। उनकी हर इच्छा की पूर्ति करते हैं। लेकिन बाह्य जगत के लिए क्रूर व्यक्ति होते हैं।

गुंडे-बदमाशों की तरह एक सफेदपोश वर्ग भी ऐसा है, जो समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हुए अपना कारोबार करता है। खूब धनार्जन करता है। मगर इनमें से कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो कारोबार की आड़ में अपराध करते हैं और जिनके बारे में काफी विलंब से लोगों को पता चलता है। इनमें से कुछ ऐसे हैं जो खाने-पीने की चीजें बनाते हैं और उनमें खुल कर मिलावट करते हैं। इन्हें इस बात का भी दर्द नहीं होता कि चार पैसे अधिक कमाने के चक्कर में वे न जाने कितने लोगों के जीवन से खेल रहे हैं। मजे की बात है कि ये लोग अपना नियमित 'धंधा' भगवान की पूजा करने के बाद शुरू करते हैं और समापन प्रणाम करके। उन्हें ऊपर वाले का भी कोई खौफ नहीं होता कि वह देख रहा है।

जीवन-रक्षक दवाओं में भी मिलावट की जानकारी आए दिन मिलती रहती है। तब समाज और चकित होता है कि व्यावसायिक पतन कहां तक हो चुका है। पैसे कमाने के लिए लोग जहर बेचने में भी संकोच नहीं करते। ऐसे लोग देश-दुनिया में हर जगह मिल जाएंगे। कई लोग मनुष्य होते हुए भी अमानुष बने रहते हैं। सड़कों पर आए दिन कुछ ऐसे लोग हमें नजर आते हैं जो किनारे बैठे किसी कुत्ते को लात जमा देते हैं। किसी कुत्ते को ऊंची छत से फेंक देते हैं। या राह चलती सीधी-सादी गाय या किसी बैल को डंडा मार देते हैं। कभी-कभी चोट खाए जानवर के मामले में दांव उल्टा पड़ जाता है और वह डंडा मारने को वाले को उठाकर पटक देता है।

समाज में इस तरह का एक ऐसा वर्ग है, जिसे हम परपीड़क कह सकते हैं। उसे दूसरों को पीड़ा पहुंचाने में आनंद आता है। कोई भी पशु हो, उसको प्रताड़ित करने में उसे असीम आनंद की अनुभूति होती है। शायद इसे ही शैतान की प्रवृत्ति कहा जाता है। ऐसे लोग हर जगह अपने से कमजोर तबके को पीड़ा पहुंचाते हैं। हमारे यहां शुरू से कहा गया है कि 'बड़े भाग मानुष तन पावा', लेकिन मनुष्य तन पाने के बावजूद अमानुष बन जाना सामाजिक व्यवस्था को चरमराने की कोशिश करने जैसा है। प्रश्न यह है कि आखिर समाज में कुछ लोग इतने निर्मम क्यों हो जाते हैं? क्यों किसी को पीड़ा पहुंचाते हैं? इसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि इन्होंने अपने धर्मग्रंथों का ठीक से अध्ययन-मनन नहीं किया है। उनकी सामाजिकता की पृष्ठभूमि ने उनके भीतर ऐसी संवेदना निर्मित नहीं की, जिसके सहारे वे दूसरों के प्रति मानवीय हो सकें और साथ ही खुद को मानवीय संवेदनाओं से लैस कर सकें। हालांकि ऐसे लोग दूसरों को मौके-बेमौके नुकसान पहुंचाते हैं या फिर पहुंचाना चाहते हैं, लेकिन अक्सर इसका नुकसान उन्हें भी उठाना पड़ता है। जब वे खुद को नुकसान में पाते हैं, तब शायद वे इसके कारणों पर विचार करते हों।

दुनिया मेरे आगे

> **धर्म कोई भी हो, वह मानवता का संचार करने का ही संदेश देता है। जिन परिवारों में बच्चों को बाल्यकाल से ही ऐसे संस्कार मिलते हैं, वे बड़े होकर नेक राह पर चलते हैं। अगर व्यवसाय करेंगे, तो ईमानदारी का ध्यान रखेंगे। सामाजिक जीवन में रहेंगे, तो एक श्रेष्ठ नागरिक की तरह आचरण करेंगे।**

धर्म कोई भी हो, वह मानवता का संचार करने का ही संदेश देता है। जिन परिवारों में बच्चों को बाल्यकाल से ही ऐसे संस्कार मिलते हैं, वे बड़े होकर नेक राह पर चलते हैं। अगर व्यवसाय करेंगे, तो ईमानदारी का ध्यान रखेंगे। मिलावट से बचेंगे। सामाजिक जीवन में रहेंगे, तो एक श्रेष्ठ नागरिक की तरह आचरण करेंगे। जीवन जगत के अनेक मोर्चे पर कार्यरत लोग अगर नैतिक दृष्टि से शिक्षित रहेंगे तो कभी भी अपने हृदय में व्याप्त करुणा, दया-ममता आदि से दूर नहीं हो सकते। मगर जो लोग इस पर विचार ही नहीं करना चाहते, उनके बारे में कोई भी कुछ नहीं कर सकता।

फिर भी यह संतोष की बात है इस महादेश में आज भी अनेक लोग पशुओं के प्रति बेहद संवेदनशील दिखते हैं। यानी वे जीव-दया के पक्षधर नजर आते हैं। उस दिशा में कुछ न कुछ काम करते रहते हैं। किसी मनुष्य पर कहीं कोई अत्याचार होता है, तो एक बड़ा वर्ग प्रतिरोध करने खड़ा हो जाता है। इसलिए हमारे यहां यह भी कहा गया है कि यह दुनिया अच्छे लोगों से भरी पड़ी है। ऐसे लोगों की संख्या निरंतर बढ़नी चाहिए। यह तभी संभव है, जब हम नई पीढ़ी को उन सद्ग्रंथों की ओर मोड़ें, जो मनुष्य को और बेहतर मनुष्य बनाने की बात करते हैं। हर व्यक्ति को अपने स्तर पर आसपास के परिवेश में संवेदना के जागरण की दिशा में बिना बोले चुपचाप काम करते रहना चाहिए। इसका असर तभी संभव है, जब व्यक्ति खुद वैसा आचरण या उदाहरण पेश करे।

अर्थव्यवस्था के सामने

भारतीय अर्थव्यवस्था इस समय विचित्र दोराहे पर खड़ी दिखाई देती है। एक ओर जीडीपी वृद्धि 8.2 फीसद तक पहुंच कर मजबूती का संकेत देती है, वहीं रुपए का रेकार्ड निचला स्तर कई सवाल खड़े कर रहा है। यह स्थिति तब और विचारणीय हो जाती है, जब डालर खुद वैश्विक स्तर पर दबाव में है और अमेरिका में दर कटौती की उम्मीदें बढ़ रही हैं। आरबीआइ लगातार डालर बेच कर रुपए को संभालने की कोशिश कर रहा है। इसके बावजूद भारतीय मुद्रा रोज नए स्तर पर फिसल रही है। रुपए की यह कमजोरी बहुआयामी प्रभाव छोड़ती है। रुपए की गिरावट का दूसरा पहलू कहीं अधिक विस्तृत और चिंताजनक है। विदेशी निवेशक पहले से ही भारतीय बाजारों से तेजी से पैसा निकाल रहे हैं। जब रुपया कमजोर होता है, तो विदेशी निवेशकों को डालर में बदलते समय कम लाभ मिलता है। सोने-चांदी की तुलना में तो स्थिति और भी गंभीर है। डालर के मुकाबले रुपए की गिरावट दर पिछले दो वर्षों में सोने की कीमतों की तुलना में कहीं अधिक रही है। इसका मतलब यह है कि जिसने सावधिक जमा या बैंक बचत में पैसा रखा, उसका पैसा वास्तविक अर्थों में घटा है।

– विभूति बुपक्या, दिल्ली

उदासीन सरकार

'लापरवाही की कीमत' (संपादकीय, दो जनवरी) पढ़ा। लगातार आठ वर्ष तक देश के सबसे स्वच्छ शहर का खिताब जीतने वाले इंदौर शहर के भागीरथपुरा में प्रदूषित पेयजल के सेवन से कई लोगों की मृत्यु अक्षम्य लापरवाही ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय शर्म का विषय है। विडंबना यह है कि इंदौर नगर निगम से लेकर मध्यप्रदेश के वरिष्ठ मंत्रियों तक, किसी के पास इस घटना के लिए कोई सफाई नहीं है, कोई उचित जवाब नहीं है। मीडिया ने इस विषय पर गंभीर सवाल उठाए हैं, लेकिन हर जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा केवल हीलाहवाली ही की जा रही है जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। इंदौर नगर निगम और स्थानीय प्रशासन के कुछ कनिष्ठ कर्मचारियों पर कार्रवाई कर इस गंभीर मामले से पल्ला झाड़ा जा रहा है। जबकि वास्तविकता यह है कि पिछले कई दिनों से पेयजल में दुर्गंध की शिकायतें मिल रही थीं। चिंता की बात है कि नगर निगम ने पेयजल व्यवस्था दुरुस्त करने के कोई प्रबंध नहीं किए।

– इशरत अली कादरी, भोपाल

स्मृतियों में पीड़ा

हाल ही में धर्मशाला में रैगिंग के कारण एक छात्रा को अपनी जान गंवानी पड़ी। यह कोई पहली घटना नहीं है। शिक्षा संस्थानों में प्रायः ऐसी घटनाएं देखने को मिलती है। ऐसी घटनाएं वर्तमान समय में अभिशाप बन चुकी हैं। जहां विद्यार्थी ज्ञान अर्जित करने जाता हैं यह सोच कर कि वह अपने भविष्य की नींव रखेगा और कुछ बन कर दिखाएगा। मगर उन्हीं संस्थानों में वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा उनके साथ अभद्रता की जाती है। उन्हें इस हद तक मानसिक और शारीरिक स्तर पर प्रताड़ित किया जाता है कि वे या तो संस्थान छोड़ देते हैं या अपनी जान दे देते हैं। वरिष्ठ छात्र इस तरह का बर्ताव क्यों कर रहे हैं? उन्हें यह समझने की जरूरत है कि बाकी विद्यार्थी भी उन्हीं की तरह पढ़ाई-लिखाई करने आते हैं। उनके साथ अभद्रता करना उचित कैसे हो सकता है? इस तरह की प्रवृत्ति को सिर्फ कड़े नियम-कानूनों की मदद से ही रोका जा सकता है। रैगिंग का शिकार विद्यार्थी जीवन भर अपनी स्मृतियों में अपनी पीड़ा लेकर जीता है।

– संजू तैनाण, हनुमानगढ़, राजस्थान

सख्ती बनाम संतुलन

किसी भी देश के विकास में उसकी जनसंख्या अहम भूमिका निभाती है। जहां एक ओर विशाल जनसंख्या एक बड़ा बाजार और कार्यबल प्रदान करती है, वहीं इसके अनियंत्रित होने से संसाधनों पर भी दबाव बढ़ता है। भारत की वर्तमान जनसंख्या नीति का मुख्य लक्ष्य वर्ष 2045 तक देश की आबादी को स्थिर करना है। भारत की नीति की सबसे बड़ी विशेषता इसका स्वैच्छिक स्वरूप है। सरकार का मानना है कि विकास और शिक्षा स्वयं ही जनसंख्या नियंत्रण के सबसे प्रभावी औजार हैं। चीन ने जनसंख्या नियंत्रण के लिए एक अलग रास्ता चुना था। उसने 'एक बच्चा नीति' को सख्ती से लागू किया। हालांकि इससे जनसंख्या वृद्धि दर में तो कमी आई, लेकिन इसके सामाजिक परिणाम काफी गंभीर रहे। भारत और चीन के उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि जनसंख्या नियंत्रण के लिए थोपी गई नीतियां समाज में संतुलन को बिगाड़ सकती हैं।

– प्रसिद्ध यादव, फुलवारी, पटना

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

मिजोरम में 'रीड स्नेक' की नई प्रजाति की पहचान की गई

मिजोरम के वैज्ञानिकों ने रूस, जर्मनी और वियतनाम के शोधकर्ताओं के साथ मिलकर राज्य में 'रीड स्नेक' की एक नई प्रजाति की पहचान की है। इस खोज से इस सांप की पहचान को लेकर लंबे समय से चला आ रहा भ्रम दूर हो गया है और भारत में पाए जाने वाले सरीसृपों (रेंगने वाले जीवों) की सूची में एक नई प्रजाति जुड़ गई है। मिजोरम विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग के प्रोफेसर और शोध दल के प्रमुख एचटी लालरेमसंगा ने बताया कि सांप की इस नई प्रजाति का नाम राज्य के नाम पर 'कैलामारिया मिजोरमेंसिस' रखा गया है। उन्होंने बताया कि विस्तृत शारीरिक परीक्षण और डीएनए विश्लेषण पर आधारित यह शोध सोमवार को अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पत्रिका 'जूटाक्सा' में प्रकाशित हुआ। लालरेमसंगा के अनुसार, इस सांप के नमूने पहली बार 2008 में मिजोरम में एकत्र किए गए थे, लेकिन उस समय इन्हें दक्षिण-पूर्व एशिया में व्यापक रूप से पाई जाने वाली एक अन्य प्रजाति का हिस्सा माना गया था।

हरिद्वार कुंभ : गैर हिंदू प्रतिबंधित क्षेत्र की मांग

सुनील दत्त पांडेय

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं पंचायती महानिर्वाण अखाड़ा के सचिव महंत रविंद्रपुरी ने कुंभ क्षेत्र को गैर हिंदू के प्रवेश के लिए प्रतिबंधित किए जाने की मांग का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि हरिद्वार, ऋषिकेश के गंगा घाटों के आसपास के क्षेत्र और हिंदू पूजा स्थलों में गैर हिंदुओं का प्रवेश वर्जित होना चाहिए। हिंदूवादी नेता साध्वी प्राची ने कुंभ मेला क्षेत्र को गैर हिंदू प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित करने की मांग का जोरदार समर्थन किया है। साध्वी प्राची ने लाल किले पर हुई आतंकी घटना का जिक्र करते हुए कहा कि जिस तरह पढ़े लिखे चिकित्सकों ने जिहादी मानसिकता के कारण लाल किले पर आतंकी घटना की।

उत्तराखंड

हरिद्वार में 2027 में लगने वाले कुंभ मेले को लेकर अभी से ही गहमा-गहमी शुरू हो गई है, कुंभ मेला क्षेत्र में गैर हिंदू के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने की मांग अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष और गंगा सभा के अध्यक्ष ने की है। साधु संतों ने कुंभ नगरी हरिद्वार को अमृत तीर्थ के रूप में स्थापित करने की राज्य सरकार से मांग की है और हरिद्वार के 105 घाटों में गैर हिंदुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध की मांग भी की है। हरिद्वार ऋषिकेश जैसे हिंदुओं के पवित्र शहरों में, धार्मिक स्थानों और गंगा जी की पवित्रता और मर्यादा बनी रहे, इसलिए इन क्षेत्रों में गैर हिंदू के प्रवेश को पूर्ण प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।

सबसे पहले कुंभ मेला क्षेत्र में गैर हिंदू के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने की मांग हिंदूवादी नेता और गंगा सभा हर की पैड़ी हरिद्वार के अध्यक्ष नितिन गौतम ने की। गौतम की मांग का समर्थन अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पंचायती महानिर्वाणी अखाड़ा के सचिव महंत रवींद्र पुरी महाराज ने किया। गंगा सभा के अध्यक्ष नितिन गौतम का कहना है कि तीर्थ नगरी हरिद्वार में अंग्रेजों के जमाने में नगर पालिका की ओर से यह प्रावधान किया गया था कि हर की पैड़ी हरिद्वार ब्रह्म कुंड में कोई गैर हिंदू प्रवेश नहीं कर सकता है और हरिद्वार कनखल तीर्थ नगरी में कोई भी गैर हिंदू भूमि नहीं खरीद सकता है और ना ही रात्रि विश्राम कर सकता है। गैर हिंदू व्यवसाय करने के लिए किराए में दुकान तो ले सकता है परंतु रात्रि को गैर हिंदू को कनखल एवं हरिद्वार तीर्थ नगरी में रात्रि में रहने की अनुमति नहीं होगी।

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं पंचायती महानिर्वाण अखाड़ा के सचिव महंत रविंद्रपुरी ने कुंभ क्षेत्र को गैर हिंदू के प्रवेश के लिए प्रतिबंधित किए जाने की मांग का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि हरिद्वार, ऋषिकेश के गंगा घाटों के आसपास के क्षेत्र और हिंदू पूजा स्थलों में गैर हिंदुओं का प्रवेश वर्जित होना चाहिए। हिंदूवादी नेता साध्वी प्राची ने कुंभ मेला क्षेत्र को गैर हिंदू प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित करने की मांग का जोरदार समर्थन किया है।

साध्वी प्राची ने लाल किले पर हुई आतंकी घटना का जिक्र करते हुए कहा कि जिस तरह पढ़े लिखे चिकित्सकों ने जिहादी मानसिकता के कारण लाल किले पर आतंकी घटना की। इसी तरह कुंभ मेले में भी आतंकी घटना की साजिश हो सकती है। उन्होंने कहा कि ईसाइयों के वेटिकन सिटी एवं मुस्लिम समाज के मक्का मदीना में भी अन्य धर्म के लोगों के प्रवेश पर रोक है। उन्होंने कहा कि हरिद्वार और हर की पैड़ी को अमृत क्षेत्र घोषित करने के साथ 200 से 300 मीटर क्षेत्र में पवित्रता का विशेष ध्यान रखते हुए गैर धर्मावलंबियों पर रोक लगाई जाए।

साधु संतों का कहना है कि पिछले दिनों उत्तराखंड के सामने भूमि जिहाद, लव जिहाद, थूक जिहाद जैसी घटनाओं के बाद सरकार को इस पर सख्त कदम उठाने की जरूरत है। हरिद्वार में 2027 में लगने वाले अर्ध कुंभ मेला को उत्तराखंड सरकार के आग्रह पर अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ने अर्ध कुंभ 2027 को पूर्ण कुंभ के रूप में मनाने का अहम फैसला किया था। हरिद्वार में पंचपुरी कहा जाने वाला क्षेत्र जिसमें हरिद्वार शहर, मायापुर, कनखल, भीमगोड़ा और सप्तऋषि क्षेत्र शामिल हैं, उनमें पहले से ही नगर पालिका उप नियम 1916 के अनुसार गैर हिंदू के प्रवेश, स्थाई रूप से निवास करने और मांस मदिरा व अंडों की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगा हुआ है। अखिल भारतीय भारत अखाड़ा परिषद और गंगा सभा ने नगर पालिका के इस नियम को पूरे कुंभ मेला क्षेत्र में लागू करने की मांग की है। महामंडलेश्वर स्वामी हरि चेतनानंद महाराज और महामंडलेश्वर स्वामी रूपेंद्र प्रकाश ने कहा कि उत्तराखंड सरकार पहले से ही धार्मिक स्थलों की शुद्धता और पहचान बनाए रखने के लिए काम कर रही है।

अवधूत मंडल आश्रम के अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी संतोषा नंद महाराज ने भी कहा कि हरिद्वार पंचपुरी में पहले से ही गैर हिंदू का प्रवेश कानूनन वर्जित है, इसके बावजूद कांवड़ यात्रा जैसे पर्व पर पहचान छिपाकर अनेक गैर हिंदू घुस आते हैं, जिससे हिंदुओं की भावनाओं के साथ ही क्षेत्र की मर्यादा और पवित्रता भी भंग होती है। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों में सरकार को व्यापक सर्वे करवाकर गैर हिंदुओं की पहचान कर उन्हें बाहर किया जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने दिए संकेत, लग सकता है प्रतिबंध

देहरादून, 6 जनवरी (भाषा)।

उत्तराखंड सरकार हरिद्वार कुंभ क्षेत्र के सभी धार्मिक स्थानों और गंगा घाटों में गैर हिंदुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा सकती है। आधिकारिक सूत्रों ने यहां मंगलवार को बताया कि इसकी कवायद चल रही है जिसके तहत हरिद्वार-ऋषिकेश के नगर निगम क्षेत्रों सहित पूरे कुंभ क्षेत्र को पवित्र सनातन नगरी घोषित किया जा सकता है।

सूत्रों ने बताया कि इस क्षेत्र में आने वाले सभी धार्मिक स्थानों तथा कुल 105 गंगा घाटों पर गैर हिंदुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने भी इस संबंध में संकेत दिए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हरिद्वार क्षेत्र की पवित्रता, देवत्व और मान्यताओं को बनाए रखने के लिए सभी पहलुओं का अध्ययन किया जा रहा है तथा इस संबंध में पुराने अधिनियमों को भी देखा जा रहा है। हालांकि, उत्तराखंड के प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना ने राज्य सरकार के इस प्रस्तावित कदम को गंगा-जमुनी तहजीब के खिलाफ बताया। धस्माना ने कहा, 'कुंभ क्षेत्र को गैर हिंदुओं के लिए प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित करने की कोई जरूरत ही नहीं है क्योंकि वहां केवल हिंदुओं का ही जमावड़ा होता है।' उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार का यह कदम 2027 विधानसभा चुनावों से पहले वोटों का ध्रुवीकरण कर सत्ता हथियाने की एक कोशिश है।

आयोजन

तिरुचिरापल्ली में वैकुंठ एकादशी के अवसर पर एक धार्मिक यात्रा में सुनहरे घोड़े पर सवार भगवान नामपेरुमल की मूर्ति ले जाते श्रद्धालु।

पित्ताशय को हटाने की शल्य चिकित्सा बढ़ा रही कैंसर का खतरा

राकेश शर्मा

देश

बढ़ती उम्र (65 साल से अधिक), महिला मरीज (पुरुषों की तुलना में करीब दोगुना), क्षारीय फास्फेटेज का बढ़ता स्तर और 10 मिलीमीटर से बड़े पित्ताशय पालिप होने पर खतरा पित्ताशय कैंसर की आशंका को बढ़ा सकता है। यह खुलासा भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के राष्ट्रीय रोग सूचना विज्ञान और अनुसंधान केंद्र (एनसीडीआइआर) के एक शोध में हुआ है।

दरअसल, पित्त की पथरी, सूजन, या पालिप्स सहित दूसरी समस्याओं में पित्ताशय को हटाने के लिए की गई (कोलेसिस्टेक्टोमी) सर्जरी के बाद 8.64 फीसद मरीज पित्ताशय कैंसर से पीड़ित मिल रहे हैं। इन मरीजों में इस कैंसर की पकड़ अक्सर संयोग से करवाए गए पैथोलाजी जांच रपट से होती है, जबकि कई मरीज को इसके बारे में पता ही नहीं होता और देरी के कारण समस्या जटिल हो जाती है।

इस समस्या का कारण जानने के लिए इस शोध को किया गया। इसमें 65 साल से अधिक की उम्र, क्षारीय (अल्कलाइन) फास्फेटेज (पूरे शरीर में पाया जाने वाला एक तरह का एंजाइम) का बढ़ा स्तर, 10 मिलीमीटर से बड़े पित्ताशय पालिप होना के अलावा महिलाओं (पुरुषों की तुलना में करीब दोगुना) में आकस्मिक पित्ताशय का कैंसर (आइजीबीसी) होने का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। साथ ही ओपन सर्जरी (बड़ा चीरा लगाकर) कराने वाले मरीजों में जोखिम ज्यादा पाया गया है। हालांकि शोध में तीन सेंटीमीटर से बड़े पित्त पथरी का कैंसर से कोई ठोस संबंध नहीं मिला है।

शोध के मुताबिक उम्र, लिंग और कुछ जैव रासायनिक संकेतक पित्ताशय कैंसर के जोखिम को बढ़ाते हैं। इन कारकों को ध्यान में रखकर इलाज की रणनीति बनाई जाए, तो कैंसर की समय पर पहचान, बेहतर इलाज और मरीजों की जान बचाने में मदद मिल सकती है। वहीं विशेषज्ञों का कहना है कि जोखिम वाले मरीजों में सर्जरी से पहले सावधानीपूर्वक जांच और सर्जरी के दौरान विशेष सतर्कता बेहद जरूरी है। साथ ही, ऐसे मामलों में पित्ताशय के ऊतक की नियमित और विस्तृत 'हिस्टोपैथोलाजिकल' जांच से कैंसर की शुरुआती पहचान संभव हो सकती है।

शोध के मुताबिक पित्ताशय का कैंसर दुनिया भर में जठरांत्र संबंधी कैंसरों में पांचवें स्थान पर है। अक्सर इसका पता तब चलता है, जब सामान्य पित्ताशय रोग समझकर सर्जरी की जाती है। इस समस्या को जानने के लिए किए गए अध्ययन का उद्देश्य उन मरीजों में पित्ताशय कैंसर के जोखिम और नैदानिक संकेतकों को समझना था, जिनकी पित्ताशय की सर्जरी सामान्य बीमारी के शक में की गई, लेकिन बाद में कैंसर का पता चलता है।

2899 अध्ययनों की हुई जांच

शोध में जनवरी 2010 से फरवरी 2024 के बीच प्रकाशित शोधों का विश्लेषण किया गया। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय डाटाबेस से उपलब्ध अध्ययनों की समीक्षा की गई। कुल 2899 अध्ययनों की जांच के बाद 18 अध्ययनों को समीक्षा में शामिल किया गया, जबकि 9 अध्ययनों को मेटा-एनालिसिस में लिया गया। इनमें 7 लाख 88 हजार से अधिक मरीजों का डेटा शामिल था।

बढ़ रही है परेशानी

पित्त की पथरी सहित दूसरे कारणों से इन सर्जरी की संख्या लगातार बढ़ रही है। एम्स सहित दूसरे संस्थानों के आंकड़ों के अनुसार कोलेसिस्टेक्टोमी करवाने वालों में कम उम्र के युवा भी शामिल है। पहले ऐसी समस्याएं कम होती थी, लेकिन खराब जीवनचर्या सहित दूसरे कारणों से यह रोग बढ़ रहा है।

'ऊर्जा भंडारण परियोजनाओं की क्षमता पांच गीगावाट पहुंचने का अनुमान'

नई दिल्ली, 6 जनवरी (ब्यूरो)।

देश में बैटरी ऊर्जा भंडारण क्षमता में इस साल करीब 10 गुना वृद्धि होगी जिससे यह 2025 के 507 मेगावाट से बढ़कर पांच गीगावाट पर पहुंच जाएगी। मंगलवार को जारी इंडिया एनर्जी स्टोरेज एलायंस (आइएसई) के एक अध्ययन में यह बात सामने आई।

रपट के अनुसार, जहां 2025 अभूतपूर्व निविदा गतिविधि से परिभाषित था वहीं 2026 वह वर्ष होगा जब उद्योग परिचालन रूप से खुद को साबित करेगा क्योंकि 2023 के मध्य से दी गई निविदाओं के अंततः 18-24 महीनों की विशिष्ट परियोजना समयसीमा के साथ चालू परिसंपत्तियों में तब्दील हो जाएगी। इस अध्ययन पर आईईएसए की ओर से जारी बयान में कहा गया कि भारत का ऊर्जा भंडारण क्षेत्र 2026 में एक परिवर्तनकारी उछाल के लिए तैयार है जिसमें बैटरी ऊर्जा भंडारण क्षमता में वृद्धि 2025 में 507 मेगावाट से लगभग 10 गुना बढ़कर लगभग पांच गीगावाट (5,000 मेगावाट) तक होने का अनुमान है। इसमें कहा गया कि कि 2026 एक महत्वपूर्ण मोड़ है क्योंकि उद्योग निविदा प्रक्रिया से कार्यान्वयन की ओर अग्रसर है जिसमें 60 गीगावाट की परियोजनाएं कार्यान्वयन चरण में प्रवेश कर रही हैं।

राजमार्गों को आवारा पशुओं से सुरक्षित करने की होगी पहल

पंकज रोहिला

देश

देश के राजमार्गों पर आवारा पुशओं के खतरे से राहत नहीं मिल पा रही है। लगातार आवारा पशुओं की वजह से सड़क हादसे सामने आ रहे हैं। इन हादसों से राहत पाने के लिए अब केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्रालय तकनीक की शरण में जा रहा है। इसके लिए मंत्रालय की ओर से एक नई कार्य योजना (एसओपी) तैयार की गई है। नए एसओपी के तहत अब राजमार्ग पर अधिक दुर्घटना वाली जगहों (ब्लैक स्पाट) व जानवरों की संदिग्ध जगहों पर नई अत्याधुनिक रात में चमकने वाली लाइट (रिफलेक्टर) लगाई जाएंगी ताकि वाहन चालक को ऐसी जगहों की पहले ही चेतावनी मिल सके।

नए एसओपी के तहत सूचक बत्ती (इंडिकेटर लाइट) और चेतावनी तंत्र तैयार किया जाएगा। इन प्रावधानों की पुलिस व अन्य एजंसियों की मदद से निगरानी की जाएगी। यह 24 घंटे अत्याधुनिक यातायात प्रबंधन तंत्र (एटीपीएस) के माध्यम से निगरानी रहेंगे। इस तंत्र का प्रयोग कर स्थानीय प्रशासन की मदद से आवारा पशुओं को हटाया जा सकेगा ओर राजमार्ग के हादसे कम करने की कोशिश की जाएगी। यह भी प्रावधान किया गया है कि जैसे ही किसी भी मार्ग पर ऐसे पशु होने की जानकारी सामने आती है, तो संबंधित एजंसी के माध्यम से इसकी सूचना केंद्रीय कक्ष 1033 पर जीपीएस रपट के साथ दी जाएगी। किसी भी ऐसे प्रभावित मार्ग पर चेतावनी तंत्र की दूसरी सौ से डेढ़ सौ मीटर रखी जाएगी, ताकि वाहन चालक पहले ही सजग रह सकें। इसके अतिरिक्त केंद्रीय कक्ष पर राज्यों में निगरानी के लिए एक नोडल अधिकारी भी तैनात किया जाएगा, जो कि मार्ग की सूचनाओं की जानकारियां स्थानीय एजंसियों तक दी जा सके।

देश में हादसों में कमी लाने के लिए मंत्रालय की ओर से कई नई पहल शुरू की गई है, लेकिन जांच के बाद सामने आया है कि इन पहल का अधिक असर भी राजमार्ग घटनाओं पर नहीं पड़ा है और जिन मार्ग पर ऐसे आवारा या जंगली पशु आ जाते हैं, वहां हादसे तेज रफ्तार वाहनों के बीच अधिक मुश्किलें बढ़ा रहे हैं। इस स्थिति से निपटने के लिए अब मंत्रालय यह कार्य योजना लेकर आया है।

रपट के मुताबिक इस योजना के तहत मार्ग पर रिफ्लेक्टर उपकरण और एक उचित दूरी पर अनिवार्य तौर पर संकेतक का प्रावधान किया जाएगा, ताकि हादसों में कमी लाई जा सके। कई जगहों पर आबादी वाले क्षेत्रों में भी ऐसे ही आवारा पशुओं के मामले भी सामने आए हैं, जिसमें वाहन चालक दुर्घटनाओं के शिकार हुए हैं। इन मामलों अधिक संख्या पचास से कम आयु वर्ग वाले चालकों के रहे हैं। हाल ही में सड़क सुरक्षा के लिए सरकार ने राजमार्ग के लिए तृतीय पक्ष की लेखा परीक्षक रपट को अनिवार्य किया है। इसके अतिरिक्त इन मार्ग पर अधिक दुर्घटना वाले स्थानों की पहचान की गई है और इस तकनीकी सुधार और अन्य पहल के माध्यम से दुर्घटनाएं कम करने की कोशिश की जा रही है।

2.3 फीसद बढ़ गई है हादसों में मरने वालों की संख्या

भारत में सड़क दुर्घटना में मरने वालों की संख्या 2024 में 2.3 फीसद बढ़कर 1.77 लाख से अधिक हो गई, जिसका अर्थ है कि हर दिन 485 लोगों की मौत सड़क हादसों में हुई। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग हाल ही में यह जानकारी दी है। राज्यों-केंद्र शासित प्रदेशों से मिली जानकारी के अनुसार वर्ष 2024 के दौरान देश में सभी श्रेणी की सड़कों पर दुर्घटना में मरने वालों की कुल संख्या 1,77,177 थी, जिसमें ईडीएआर पोर्टल से लिया गया। वर्ष 2023 के दौरान देश में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस विभाग ने कुल 4,80,583 सड़क हादसों की रपट दी है, जिनमें 1,72,890 लोगों की जान गई और 4,62,825 लोग घायल हुए। वर्ल्ड रोड स्टेटिस्टिक्स 2024' के अनुसार चीन में प्रति लाख आबादी पर सड़क दुर्घटनाओं में मौत की दर 4.3 और अमेरिका में 12.76 है, जबकि भारत में यह आंकड़ा 11.89 है।

बीते सालों में देश में सड़क हादसों का आंकड़ा

वर्ष	कुल हादसे
2020	3,72,181
2021	4,12,432
2022	4,61,312
2023	4,80,583
2024	4,87,705

“नदी किनारे के वृक्ष, दूसरों के घर में रहने वाले लोग व मंत्री के बिना राजा जल्द नष्ट हो जाते हैं।

–आचार्य चाणक्य

शहरीकरण में हिमाचल

हिमाचल अपनी प्रगति के चिन्हों को तसदीक करके शहरीकरण की वास्तविकताओं में, मांग और आपूर्ति के नए मार्ग प्रशस्त कर रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में सिटीजन कनेक्ट प्रोग्राम के तहत कई इरादे जाहिर हो रहे हैं। पंद्रह कलस्टर आधारित एकीकृत नागरिक सेवा केंद्रों के तहत कई सेवाओं के लिए एक ही छत के नीचे समाधान मिलेंगे। हिमाचल को पहले केवल भौगोलिक और प्राकृतिक बनावट में ही समझा जाता था, लेकिन अब आर्थिक परिवर्तनों के कारण गांव और शहर के बीच फासले कम हो रहे हैं। नए उपभोक्तावाद के कारण भी समाज ने जीने के आदर्श बदल दिए हैं। खास तौर पर सड़कों के विस्तार ने दूरियां ही नहीं समेटीं, बल्कि जीवन की दौड़ को शहर बना दिया। अब न वो गांव रहे और न ही कस्बे, बल्कि नवनिर्माण का रिंग चारों तरफ बढ़ रहा है। कल तक हिमाचल खुद को ग्रामीण कह कर ग्रामीण विकास मंत्रालय से कारगुजारी करता था, अब शहरी विकास मंत्रालय की हर योजना के साथ कदमताल हो रहा है। शहरी वर्गीकरण में हिमाचल ने 75 शहरी निकायों की दृष्टि में देखना शुरू किया है, तो नागरिक सुविधाएं बढ़ाने का प्रयास भी हो रहा है। जरूरत है शहरी निकायों को शहरीकरण की रफ्तार में अपनी आर्थिक, सामाजिक तथा भौगोलिक संरचना में संतुलन के साथ कायम रखना। हिमुडा जैसी संस्था के भरोसे शहरीकरण को छत देने की कोशिशें आधी सदी से ही हो रही हैं, लेकिन रिहायशी बस्तियों से आगे नहीं देखा गया। अब सुक्खू सरकार चंडीगढ़ के दायरे में दुनिया को हिमाचल का शहर दिखाना चाहती है। यह परियोजना अपने संकल्प में हिमाचल का न्यू चंडीगढ़ खोज रही है और अगर बीबीएन के आश्रय में हिम चंडीगढ़ आबाद होता है, तो इसके कारण आर्थिकी भी लाभान्वित होगी। जाहिर है हिमाचल के पड़ोस में रियल एस्टेट का जितना भी धंधा हुआ, उसमें हिमाचली खरीददार ने 60 प्रतिशत से ऊपर अपना जलवा दिखा दिया। हिम चंडीगढ़ में कितने हिमाचली अपनी रिहायश बना पाते हैं या चंडीगढ़ में हिमाचल का दरवाजा खोल पाते हैं, यह समय बताएगा। हिमाचल के भीतर अब तक आवासीय जरूरतों का श्रृंगार करते कृषि योग्य जमीन उजड़ गई, लेकिन कोई शहर नहीं बसा। नए शहरों की जरूरतों में नया निवेश देखा जाता है। यह इसलिए भी कि विकास परियोजनाओं में विस्थापितों के लिए इन्हीं के जरिए समाधान मिलेगा। हमारा मानना है कि प्रमुख फोरलेन परियोजनाओं के साथ नए निवेश शहर बसाने चाहिएं, जहां विस्थापितों को रिहायश, नया रोजगार, नया व्यापार करने का अवसर मिल सकता है। कांगड़ा हवाई अड्डे का विस्तार ऐसे ही एक नए निवेश शहर को पुकार रहा है। बेशक सरकार शिमला सब्जी मंडी और हमीरपुर के पुराने बस स्टैंड के स्थान पर शॉपिंग काम्पलेक्स की महत्त्वाकांक्षी परियोजनाओं पर काम कर रही है, लेकिन ऐसे संकल्प हर शहर, हर कस्बे को अलग-अलग तरह से पूरे करने चाहिएं। उदाहरण के लिए फोरलेन परियोजना ने शाहपुर बाजार को रंदा लगा दिया है, तो वहां एक नए बाजार के लिए भूमि उपलब्ध होनी चाहिए। एयरपोर्ट विस्तार के बाद गगल से इच्छी तक के बाजार से सैकड़ों दुकानें फर्नीचर, ऑटो सर्विस तथा बिल्डिंग मैटीरियल के धंधे से लुप्त हो जाएंगी। हिमाचल की सबसे बड़ी ऑटो मार्किट में से एक गगल में विस्थापित हो रही है, तो लाजिमी तौर पर इसी के आसपास एक ट्रांसपोर्ट नगर बसाया जा सकता है। हिमाचल में फिल्म सिटी, साइंस सिटी, पर्यटन सिटी के अलावा नए बाजारों की एक श्रृंखला जरूरी है। कुछ शहरों के महत्व को देखते हुए इनके विकास की पहचान अतीत से जुड़नी चाहिए। मंडी के विकास में हिमाचल की सांस्कृतिक राजधानी की झलक, तो पालमपुर के विकास में चाय नगरी महसूस होनी चाहिए। विडंबना यह है कि न्यू इयर सेलिब्रेशन के बाद मनाली खास तौर पर मॉल का एरिया कूड़ादान बन चुका है। पर्यटन के बाद अगर शहरीकरण को समझा और सहेजा जाए, तो यह आर्थिकी व रोजगार के लिए अहम कदम होगा।

भारत को घुड़की न दें

अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप ने अब भारत को भी घुड़काना शुरू कर दिया है। बेशक वह भारत में ‘वेनेजुएला प्रयोग’ को दोहराने का दुस्साहस नहीं कर सकते, क्योंकि वह भारत की चौतरफा ताकत को अच्छी तरह जानते हैं। भारत की ईमानदारी और प्रतिबद्धताओं को भी समझते हैं। भारत एक प्रमाणित परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र है, अमरीका से अधिक यह कौन जानता है, क्योंकि अमरीका ने भारत के साथ असैन्य परमाणु करार कर रखा है। बहरहाल राष्ट्रपति ट्रंप का नया बयान आया है-‘दरअसल प्रधानमंत्री मोदी बहुत अच्छे इनसान हैं। वे जानते हैं कि मैं इससे (रूस से तेल खरीद) खुश नहीं हूं और मुझे खुश रखना जरूरी है। यदि रूस से तेल खरीद जारी रही, तो भारत पर बहुत जल्दी और टैरिफ लग सकते हैं। वह भारत के लिए ठीक नहीं होगा।’ गौरतलब यह है कि भारत अप्रैल, 2025 में रूस से 8.6 मिलियन टन कच्चा तेल खरीदता था, जो नवंबर तक घट कर 7.7 मिलियन टन हो गया। भारत अमरीका से भी करीब 3 मिलियन टन तेल खरीदता है। अमरीका की तुलना में रूस से तेल खरीद आज भी अधिक है। भारत ने किसी दबाव में तेल खरीद को कम नहीं किया, यह उसकी जरूरतों के मुताबिक है। तेल भंडारों और क्षमताओं को लेकर अमरीका का स्थान बहुत नीचे है। वेनेजुएला में सबसे अधिक प्रमाणित 303 अरब बैरल तेल के भंडार हैं और वह आज भी सबसे बड़ा सप्लायर है। उसके बाद सऊदी अरब और ईरान सबसे अधिक तेल बेचते हैं। राष्ट्रपति ट्रंप की पूरी रणनीति तेल कारोबार पर वर्चस्व स्थापित करने की है, जिसका विरोध अमरीका में ही किया जा रहा है। पूर्व उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने वेनेजुएला हमले और वहां के राष्ट्रपति को अगवा करके अमरीका लाने के ऑपरेशन को लेकर ट्रंप के खिलाफ आक्रामक बयान दिए हैं। उन्हें ‘राजनीतिक’ भी माना जा सकता है, लेकिन राष्ट्रपति ट्रंप के खिलाफ महाभियोग लाने पर भी चर्चा छिड़ चुकी है। डेमोक्रेट्स और ट्रंप की पार्टी के सांसद अपने ही राष्ट्रपति के खिलाफ महाभियोग लाकर उन्हें पद से हटाने की राजनीति में जुट गए हैं। जहां तक टैरिफ का मामला है, वह अमरीकी अदालत के विचाराधीन है, लिहाजा ट्रंप नए टैरिफ नहीं थोप सकते। अलबत्ता अमरीकी राष्ट्रपति कमोबेश भारत को घुड़कियां देने से बाज जरूर आएं। यदि उन्होंने घोषित 50 फीसदी से अधिक टैरिफ थोपने का कोई फैसला लिया, तो अमरीकी कांग्रेस (संसद) उसे खारिज कर सकती है। राष्ट्रपति ट्रंप बड़बोले नेता हैं, लिहाजा उनकी टिप्पणियों पर हर बार पलटटिप्पणी भारत करे, ऐसा संभव नहीं है और न ही भारत के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री को ट्रंप के बयानों की चिंता करनी चाहिए। भारत पर कुल 50 फीसदी टैरिफ थोपने के बावजूद भारत की आर्थिक विकास दर 8 फीसदी से अधिक रही है। सभी अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों और प्रमुख रेटिंग एजेंसियों के आकलन हैं कि वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की विकास दर 7 फीसदी से अधिक रहेगी। टैरिफ के बावजूद भारत की जीडीपी 375 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच चुकी है और भारत विश्व में सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है। यह तथ्य अमरीका भी मानता है कि भारत की अर्थव्यवस्था अमरीकी अर्थव्यवस्था से कई गुना तेज गति से बढ़ रही है। बेशक अमरीका 30 ट्रिलियन डॉलर से अधिक की सर्वोच्च अर्थव्यवस्था है। अमरीका वेनेजुएला के राष्ट्रपति मादुरो को अगवा करके अपने अदालती कटघरे तक ला सकता है। राष्ट्रपति ट्रंप कोलंबिया, क्यूबा, ग्रेनेडा, ग्रीनलैंड, मैक्सिको आदि छोटे और आर्थिक रूप से विपन्न देशों को धमकियां दे सकते हैं कि उनके राष्ट्राध्यक्षों का अंजाम मादुरो से भी बदतर होगा। भारत इस संदर्भ में ‘अपवाद’ है। ट्रंप कमजोर देशों पर नार्को आतंकवाद और नशीले पदार्थों की तस्करी के आरोप लगाकर अमरीकी अदालत में केस चला सकते हैं, लेकिन भारत ऑटोमोबाइल, मोबाइल, चावल, चीनी, आईटी, दूध, गेहूं आदि के सर्वोच्च देशों में एक है। विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। लिहाजा राष्ट्रपति को ऐसे देश को घुड़काने से पहले कई बार सोचना चाहिए।

संपादकीय लेखों पर सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाएं आमंत्रित हैं, भेजें : पाठकों के पत्र, द्वारा संपादक, पोस्ट बॉक्स 14, धर्मशाला-176215
फोन : 01892-264713, 260676
फैक्स : 01892-264700
Email : feature@divyahimachal.com या edit.dshala@divyahimachal.com

उत्कृष्टता की ओर अग्रसर स्वदेशी रक्षा प्रणाली

विकेश कुमार बडोला
स्वतंत्र लेखक

आधुनिक युग में विश्व के किसी भी राष्ट्र की महत्ता जिन शक्तिशाली संसाधनों के आधार पर निर्धारित होती है, उनमें युद्धक अस्त्र-शस्त्र प्रथम हैं। भारत के संदर्भ में विचार किया जाए तो गत साढ़े आठ दशकों से इस दिशा में यहां उत्तरोत्तर प्रगति होती रही। हमारे रक्षा वैज्ञानिकों, अनुसंधानकर्ताओं तथा अन्यान्य संबद्ध कर्मचारियों ने राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ मिलकर इस संबंध में अविस्मरणीय कार्य किए हैं। विशेषकर गत चौदह-पंद्रह वर्षों में रक्षा अनुसंधान, निर्माण, उत्पादन, मित्र राष्ट्रों के साथ सहयोग पर आधारित आधुनिक रक्षण प्रणालियों की खोज व निर्माण तथा अंततः रक्षा उपकरणों के निर्माण में आत्मनिर्भर होने के बाद निर्यात में भी अग्रिम पंक्ति के देशों में सम्मिलित होने की उपलब्धि सराहनीय है। भारत की स्वदेशी रक्षा प्रणाली पिछले एक दशक में ‘आयात निर्भरता’ से ‘आत्मनिर्भरता’ की ओर तीव्रतापूर्वक बढ़ी है। सन 2026 तक भारत ने रक्षा क्षेत्र में न केवल अपनी तकनीकी व प्रौद्योगिकीय क्षमता को सिद्ध किया है, बल्कि हमारा देश वैश्विक स्तर पर एक प्रमुख रक्षा निर्यातक के रूप में भी उभरा है। आज यहां आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों का बड़े पैमाने पर नवोन्नत ढंग से निर्माण हो रहा है। नित नवीन स्वदेशी रक्षा प्रणालियां विकसित की जा रही हैं। इस क्षेत्र में मित्र देशों के साथ खोज से लेकर उत्पादन तक उपयोगी साझेदारियां भी की जा रही हैं। वर्तमान में देश की आधुनिक प्रक्षेपास्त्र (मिसाइल) प्रणाली एक बड़ी उपलब्धि है। यह प्रक्षेपास्त्रीय तकनीक विश्व की सबसे उन्नत प्रणालियों में से एक है। इस उन्नतिकरण में ‘इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम’ की विशाल भूमिका रही है।

इसके अंतर्गत अग्नि-5 और अग्नि-6 अति उल्लेखनीय है। इस वर्ष तक भारत की अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल क्षमता अत्यधिक परिष्कृत हो चुकी है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित अग्नि-5 की मारक क्षमता 5000 किलोमीटर से अधिक है। इस प्रयास से प्रेरित होकर अब अग्नि-6 का निर्माण हो रहा है, जो मल्टीपल इंडिपेंडेंटली टार्गेटेबल रीएंट्री व्हीकल तकनीक से युक्त है। गत वर्ष मई माह में ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान के साथ हुए अल्पावधि के युद्ध में देशवासियों ने ब्रह्मोस प्रक्षेपास्त्र का युद्धक प्रदर्शन देखा ही था, कि कैसे इस वायु अस्त्र ने शत्रु देश के चिन्हित ठिकानों को ध्वस्ताधूत किया था। ब्रह्मोस दुनिया की सबसे तेज सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है। भारत अब इसके हाइपरसोनिक संस्करण ब्रह्मोस-दो पर काम कर रहा है, जो मैक 7 से अधिक गति प्राप्त करने में सक्षम है। प्रलय मिसाइल का भी उल्लेख हो रहा है। यह एक कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल है, जिसे विशेष रूप में पारंपरिक युद्ध के लिए डिजाइन किया गया है। यह चीन और पाकिस्तान की सीमाओं पर भारत की आक्रामक क्षमता में वृद्धि करती है। राष्ट्र की वायु रक्षा प्रणाली भी प्रशंसनीय है। शत्रु के वायु मार्गीय आक्रमणों को वायुक्षेत्र में ही नष्ट करने के लिए भारत ने एक बहुस्तरीय सुरक्षा कवच तैयार किया है। इसके अंतर्गत पहले वर्णन आता है आकाश का। यह कम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल है, जिसके नए संस्करण ‘आकाश प्राइम’ में स्वदेशी एक्टिव रेडियो फ्रीक्वेंसी सीकर लगा है। वीशॉड्र्स नामक एक मैनपैड मिसाइल भी भारत में बनी है। ये बहुत कम दूरी की वायु रक्षा प्रणाली है, जो युद्धक प्रतिरोध के लिए विश्वसनीय होने के साथ-साथ पर्वतों में सैनिकों द्वारा सुगमता से कंधे पर लादकर उपयोग की जा सकती है। समर का उल्लेख भी आवश्यक है। ये भारतीय वायु सेना द्वारा विकसित प्रणाली है, जो पुरानी रूसी मिसाइलों को आधुनिक लॉन्चर के साथ जोड़कर बनाई गई है। इस समय स्वदेशी लड़ाकू विमान और हेलीकॉप्टर के विनिर्माण में भी तेजी आई है। भारतीय वायु सेना मेक इन इंडिया के अंतर्गत विकसित विमानों पर अधिक भरोसा कर रही है। इस श्रृंखला का महत्त्वपूर्ण अंग है तेजस। तेजस एमके1ए एवं एमके2 भी नवोन्नत विमान हैं। यह एक हल्का, चौथी पीढ़ी का बहुउद्देश्यीय लड़ाकू विमान है। इस वर्ष तेजस मार्क-2 का उत्पादन और परीक्षण अंतिम चरणों में है, जो राफेल के स्तर की तकनीक से लैस है। इसके अतिरिक्त एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट भी भारत का पांचवीं पीढ़ी का स्टील्थ फाइटर प्रोग्राम है। यह दुश्मन के रडार से बचने की क्षमता रखता है। साथ ही एलसीएच प्रचंड भी रक्षा हेतु एक अति उपयोगी अस्त्र है। ये दुनिया का एकमात्र लड़ाकू हेलीकॉप्टर है जो 5000 मीटर की ऊंचाई (सियाचिन जैसे क्षेत्रों) पर आवश्यकतानुसार उतर सकता है और उड़ान भर सकता है। थल एवं नभ ही नहीं, अपितु समुद्र में भी स्वदेशी रक्षा शक्ति नित नवीन उपलब्धियां अर्जित कर रही है। इस आलोक में भारतीय नौसेना का लक्ष्य 2030 तक पूरी तरह स्वदेशी जलयान का निर्माण करना है। हालांकि आईएनएस विक्रांत इस लक्षित कार्य की दिशा में पहले से अर्जित एक उपलब्धि है ही। यह भारत का पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत है, जिसने भारत को उन विशिष्ट देशों की पंक्ति में खड़ा कर दिया है जो 40000 टन से अधिक भार के विशाल जलयान बना सकते हैं। इस श्रृंखला में आईएनएस अरिहंत का उल्लेख भी अनिवार्य है। ये वे स्वदेशी परमाणु पनडुब्बियां हैं, जो भारत की ‘न्यूक्लियर ट्रायड’ (जल, थल और नभ से परमाणु हमले की क्षमता) को पूर्ण करती हैं। साथ ही प्रोजेक्ट 75-आई के तहत भारत में ही अत्याधुनिक डीजल-इलेक्ट्रिक चालित पनडुब्बियों का निर्माण किया जा रहा है। आईएनएस विक्रांत के सफल संचालन के बाद भारत अब दूसरे स्वदेशी विमान वाहक आईएसी-2 की योजना पर काम कर रहा है। आर्टिलरी और बख्तरबंद वाहन के9 वज्र-टी एक स्वचालित हॉवित्जर तोप है जिसे एलएंडटी ने भारत में निर्मित किया है। ‘धनुष’ भी महत्वपूर्ण है, जो बोफोर्स का संशोधित संस्करण है। एटीएजीएस 155एमएम/52 कैलिबर दुनिया की सबसे लंबी दूरी तक मार करने वाली तोपों में से एक है। अर्जुन मार्क-1ए भारत का मुख्य युद्धक टैंक है, जो आधुनिक सुरक्षा प्रणालियों और हंटर-किलर क्षमता से लैस है। युद्धकौशल में वृद्धि हेतु भविष्य की रक्षा तकनीकों का वर्णन यदि होता है तो ड्रोन और एंटी-ड्रोन सिस्टम केंद्र में होते हैं। आधुनिक युद्ध अब धरातल पर सैनिकों द्वारा नहीं, अपितु तकनीक और ड्रोन आधारित हो चुके हैं। इस बिंदु को ध्यान में रख तपस-बीएच-201 तैयार है। यह एक स्वदेशी मीडियम एल्टिट्यूड लांग एंड्युरेंस यानी कि ‘मेल’ ड्रोन है, जो निगरानी और गुप्त जानकारी एकत्र करने के लिए बनाया गया है।

डीआरडीओ ने एक एंटी-ड्रोन सिस्टम ‘डी-4’ प्रणाली विकसित की है जो शत्रु के ड्रोन को निष्क्रिय कर सकती है या लेजर से नष्ट कर सकती है। फिलीपींस को ब्रह्मोस की आपूर्ति के बाद कई दक्षिण-पूर्वी एशियाई और खाड़ी के देश इस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल में रुचि दिखा रहे हैं। आर्मेनिया को पिनाका रॉकेट सिस्टम का निर्यात, भारत की बढ़ती साख का प्रमाण है। यह दुनिया के सबसे सफल मल्टी-बैरल रॉकेट सिस्टम में से एक बन गया है। रक्षा क्षेत्र में आधुनिक खोजों तथा तकनीक को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रक्षा उत्कृष्टता हेतु नवप्रवर्तन पर ध्यान दिया जा रहा है, जिसके द्वारा स्टार्टअप्स और एमएसएमई को रोबोटीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में रक्षा समाधान खोजने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में बन रहे दो रक्षा उत्पादन केंद्रों ने निजी और सरकारी क्षेत्र के निर्माण को गति दी है। भारत ने वित्त वर्ष 2024-25 में रुपए 21083 करोड़ का ऐतिहासिक रक्षा निर्यात किया, जो गत वर्ष की तुलना में 32.5 प्रतिशत अधिक है। भारत अब 80 से अधिक देशों को रक्षा उपकरण निर्यात कर रहा है। इस क्षेत्र में हम आगे बढ़ रहे हैं।

उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में बन रहे दो रक्षा उत्पादन केंद्रों ने निजी और सरकारी क्षेत्र के निर्माण को गति दी है। भारत ने वित्त वर्ष 2024-25 में रुपए 21083 करोड़ का ऐतिहासिक रक्षा निर्यात किया, जो गत वर्ष की तुलना में 32.5 प्रतिशत अधिक है...

प्रसंगवश

बच्चों की मानसिक सेहत

भारत में बचपन अब केवल उम्र का एक पड़ाव नहीं रहा, बल्कि निरंतर दबाव का अनुभव बनता जा रहा है। जिस उम्र में बच्चे खेलते हैं, सवाल पूछते हैं और दुनिया को समझने की कोशिश करते हैं, उसी उम्र में वे प्रदर्शन, प्रतिस्पर्धा और अपेक्षाओं की कसौटी पर तौले जा रहे हैं। शिक्षा, जो कभी विकास का माध्यम थी, अब कई बच्चों के लिए चिंता और डर का स्रोत बन गई है। इस पूरे बदलाव में सबसे ज़्यादा उपेक्षित मुद्दा है, बच्चों की मानसिक सेहत। 2025 में स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा संसद में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार, भारत के 13 से 17 वर्ष के लगभग 7.3 प्रतिशत किशोर किसी न किसी मानसिक स्वास्थ्य विकार से प्रभावित पाए गए हैं। यह आंकड़ा कागज पर भले छोटा लगे, लेकिन इसका अर्थ है कि हर स्कूल, हर कक्षा और हर मोहल्ले में ऐसे बच्चे मौजूद हैं जो भीतर ही भीतर संघर्ष कर रहे हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक है, क्योंकि मानसिक समस्याओं को आज भी खुलकर स्वीकार नहीं किया जाता। 2025 में ही तेलंगाना और कर्नाटक के स्कूलों में किए गए एक बड़े सर्वे में सामने आया कि लगभग 24 प्रतिशत बच्चों में गंभीर मानसिक तनाव के लक्षण थे। इनमें से 6 से 10 प्रतिशत बच्चों को तत्काल परामर्श और उपचार की आवश्यकता बताई गई। यह स्थिति किसी एक राज्य या वर्ग तक सीमित नहीं है, यह पूरे देश में फैलता हुआ संकट है। फर्क बस इतना है कि कहीं यह शोर बनकर सामने आता है और कहीं खामोशी में दबा रह जाता है। इस संकट का सबसे बड़ा कारण है शैक्षणिक दबाव। आज बच्चों की योग्यता का मूल्यांकन उनके अंकों, रैंक और तुलना से किया जाता है। अच्छा बच्चा वही माना जाता है जो बेहतर परिणाम दे सके। असफलता का डर, माता-पिता की अपेक्षाएं और सामाजिक तुलना बच्चों के मन में स्थायी तनाव पैदा कर रही हैं। परीक्षा अब ज्ञान की जांच नहीं, बल्कि मानसिक सहनशक्ति की परीक्षा बनती जा रही है। कई बच्चे इसी डर में अपनी नींद, रुचियां और आत्मविश्वास खो बैठते हैं। इस शैक्षणिक दबाव के साथ-साथ डिजिटल दुनिया ने बच्चों की मानसिक दुनिया को और जटिल बना दिया है। 2025 में प्रकाशित एक राष्ट्रीय सर्वे के अनुसार, भारत में 60 प्रतिशत से अधिक बच्चे रोज़ तीन घंटे से अधिक समय स्क्रीन पर बिताते हैं। सोशल मीडिया बच्चों के सामने एक ऐसी दुनिया रखता है, जहां सब कुछ सुंदर, सफल और परिपूर्ण दिखता है। इस निरंतर तुलना में बच्चा स्वयं को अधूरा और असफल महसूस करने लगता है। धीरे-धीरे यह भावना आत्म-सम्मान को कमजोर करती है और चिंता व अवसाद को जन्म देती है। मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ बताते हैं कि अत्यधिक स्क्रीन-टाइम का सीधा संबंध एकाग्रता में कमी, चिड़चिड़ापन, नींद की समस्या और सामाजिक अलगाव से है। इस बात में कोई शक नहीं है कि बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य खराब होता जा रहा है। इस ओर ध्यान देने की सख्त जरूरत है। मानसिक रूप से बीमार बच्चा देश का बेहतर भविष्य कैसे हो सकता है। इसलिए बच्चों की मानसिक सेहत दुरुस्त करने के लिए ठोस योजना बनाई जाए।

–सुनिधि मिश्रा

हिमाचल : शिक्षा

शीतकालीन अवकाश : घर में गढ़ता भविष्य

सिकंदर बंसल
शिक्षाविद

हिमाचल प्रदेश के विद्यालयों में शीतकालीन अवकाश चल रहे हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फबारी, कड़ाके की ठंड और सीमित बाहरी गतिविधियां बच्चों को अधिकतर समय घर के भीतर बिताने के लिए विवश करती हैं। यह समय अक्सर आराम, मोबाइल और अनियमित दिनचर्या में बीत जाता है, जबकि शैक्षिक दृष्टि से यही अवधि बच्चों के भविष्य को दिशा देने का सुनहरा अवसर भी हो सकती है। मार्च में वार्षिक परीक्षाओं का दौर शुरू होता है और उससे पहले फरवरी में परीक्षा पे चर्चा जैसे राष्ट्रीय संवाद यह संदेश देते हैं कि परीक्षा केवल अंकों की होड़ नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, संतुलन और सही तैयारी की प्रक्रिया है। ऐसे में शीतकालीन अवकाश के दौरान घर में बनाया गया टाइम टेबल केवल पढ़ाई की सूची नहीं, बल्कि बच्चों के संपूर्ण विकास की एक शोध-आधारित योजना होना चाहिए। शिक्षा मनोविज्ञान यह स्पष्ट करता है कि सीखना केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहता। विकासात्मक मनोवैज्ञानिक ज्यां पियाजे के अनुसार बच्चे अनुभवों और स्वयं की खोज से सीखते हैं, जबकि लेव विगोत्स्की यह मानते हैं कि सामाजिक संपर्क और मार्गदर्शन सीखने की गुणवत्ता तय करते हैं।

इन सिद्धांतों के आलोक में देखें तो शीतकालीन अवकाश के दौरान घर का वातावरण बच्चों के लिए एक विस्तारित कक्षा बन सकता है, जहां माता-पिता, शिक्षक और समाज, तीनों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। घर में बनाए जाने वाले टाइम टेबल का मूल आधार संतुलन होना चाहिए। बाल रोग विशेषज्ञों और मनोवैज्ञानिकों का मत है कि अत्यधिक पढ़ाई बच्चों में तनाव, चिड़चिड़ापन और पढ़ाई से अरुचि पैदा कर सकती है, जबकि अत्यधिक ढील अनुशासन और निरंतरता को कमजोर कर देती है। इसलिए दिनचर्या ऐसी होनी चाहिए जिसमें पढ़ाई, खेल, रचनात्मक गतिविधियां, विश्राम और पारिवारिक संवाद सभी को समान महत्व मिले। विश्व स्वास्थ्य संगठन की सिफारिशें बताती हैं कि किशोरों के लिए प्रतिदिन 7 से 8 घंटे की नींद आवश्यक है। पर्याप्त नींद न केवल शारीरिक स्वास्थ्य, बल्कि स्मरण शक्ति और एकाग्रता को भी बेहतर बनाती है। देर रात तक स्क्रीन पर समय बिताना इस संतुलन को बिगाड़ देता है, इसलिए अवकाश में भी स्क्रीन टाइम पर संयम आवश्यक है। सुबह का समय बच्चों के लिए सबसे अधिक उत्पादक माना जाता है। डॉक्टरों और योग विशेषज्ञों के अनुसार सुबह हल्का व्यायाम, योग या प्राणायाम शरीर को सक्रिय करने के साथ-साथ मानसिक स्पष्टता भी प्रदान करता है। इसके बाद अखबार की कुछ सुर्खियां पढ़ना, किसी प्रेरक पुस्तक के पन्ने पलटना या शब्दावली अभ्यास करना बच्चों की भाषा क्षमता और समसामयिक समझ को बढ़ाता है। पढ़ाई के सत्र छोटे और केंद्रित होने चाहिए, ताकि मानसिक थकान न हो। एक सत्र में कठिन विषय और दूसरे में अपेक्षाकृत हल्के विषय रखने से सीखने की प्रक्रिया सहज बनी रहती है। मार्च की परीक्षाओं की तैयारी के संदर्भ में शीतकालीन अवकाश की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षाविदों के अनुसार यही समय सिलेबस को व्यवस्थित करने, कमजोर अध्यायों की पहचान करने और नियमित पुनरावृत्ति की आदत डालने का है। शैक्षिक शोध बताते हैं कि यदि पढ़े गए विषय को 24 घंटे, 7 दिन और 21 दिन के अंतराल पर दोहराया जाए, तो वह दीर्घकालिक स्मृति का हिस्सा बन जाता है। छोटे-छोटे स्व-मूल्यांकन परीक्षण, समयबद्ध उत्तर लेखन और पिछले वर्षों के प्रश्नपत्रों का अभ्यास बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाता है और परीक्षा-भय को कम करता है। इस पूरी प्रक्रिया का केंद्र बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य है। प्रख्यात मनोवैज्ञानिक डैनियल गोलमैन ने यह स्पष्ट किया है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता शैक्षणिक सफलता जितनी ही महत्वपूर्ण है। यदि बच्चा मानसिक रूप से संतुलित है, तो वह सीमित संसाधनों और समय में भी बेहतर प्रदर्शन कर सकता है। चिकित्सकों का कहना है कि यदि बच्चे में अत्यधिक चिंता, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन या पढ़ाई से अनावश्यक भय दिखाई दे, तो यह संकेत है कि उस पर दबाव अधिक है। ऐसे में पढ़ाई की मात्रा बढ़ाने की बजाय, पढ़ाई के तरीके और माहौल में बदलाव करना अधिक प्रभावी होता है। यहां एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू यह है कि शीतकालीन अवकाश के दौरान यदि अध्यापक भी बच्चों और अभिभावकों से जुड़े रहें, तो सीखने की प्रक्रिया कहीं अधिक सशक्त हो सकती है। अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक शोध यह बताता है कि शिक्षक, अभिभावक सहभागिता बच्चों की अकादमिक उपलब्धि और मानसिक संतुलन दोनों को बेहतर बनाती है। यूनेस्को और विभिन्न शैक्षिक संस्थानों के अध्ययनों में पाया गया है कि जब शिक्षक अवकाश के दौरान भी मार्गदर्शक की भूमिका में रहते हैं, जैसे हल्के ऑनलाइन संवाद, सप्ताह में एक बार शैक्षणिक सुझाव, या पढ़ाई से जुड़े मार्गदर्शन संदेश, तो बच्चों की निरंतरता बनी रहती है और अभिभावकों को भी सही दिशा मिलती है। हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्य में, जहां कई बार शैक्षिक संसाधन सीमित होते हैं, वहां शिक्षक का यह जुड़ाव बच्चों के लिए संबल बन सकता है। अध्यापक यदि अवकाश के दौरान यह स्पष्ट कर दें कि उनसे संवाद केवल परीक्षा या होमवर्क के लिए नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को समझने के लिए है, तो बच्चों पर से मानसिक दबाव कम होता है।

शोध यह भी बताता है कि शिक्षक द्वारा दिया गया सकारात्मक फीडबैक बच्चों में आत्म-प्रेरणा और आत्म-विश्वास को बढ़ाता है। ऐसे में शीतकालीन अवकाश केवल छात्रों के लिए नहीं, बल्कि शिक्षक-अभिभावक-विद्यार्थी के साझा प्रयास का समय बन सकता है। अभिभावकों की भूमिका भी इस अवधि में अत्यंत महत्वपूर्ण है। सकारात्मक अभिभावकता पर आधारित शोध यह सुझाता है कि माता-पिता को अनुशासन अधिकारी की भूमिका से निकलकर मार्गदर्शक और सहयोगी बनना चाहिए। लक्ष्य बच्चों पर थोपने के बजाय उनसे चर्चा करके तय किए जाएं। तुलना, डांट और भय की बजाय प्रोत्साहन, संवाद और विश्वास का वातावरण बच्चों में आत्म-प्रेरणा पैदा करता है। परिवार का कुछ समय ऐसा होना चाहिए जहां पढ़ाई या अंकों की चर्चा न हो, बल्कि केवल बातचीत, कहानियां और अनुभव साझा किए जाएं।

सकारात्मक अभिभावकता पर आधारित शोध यह सुझाता है कि माता-पिता को अनुशासन अधिकारी की भूमिका से निकलकर मार्गदर्शक और सहयोगी बनना चाहिए। लक्ष्य बच्चों पर थोपने के बजाय उनसे चर्चा करके तय किए जाएं...

छिलकों की छाबड़ी

थैंक गॉड, वे समझे तो सही

अशोक गौतम
ashokgautam001@gmail.com

बाहर से समझदार लगने वाले को इशारे इशारे में मैंने जितनी बार भी जितने सरल तरीके से मैं उन्हें समझा सकता था समझाया, पर वह समझदार ही क्या जो इशारे इशारे में समझाने पर समझ जाए कि जनाब! सरकारी दफ्तरों में अब काम ऐसे नहीं हुआ करते जैसे आप करवाने की सोच रहे हैं। जब पैदा होने से लेकर मरने तक हमारे सारे काम काज दलाल संभाल रहे हों तो दफ्तरों में भी जनता के काम काज उनके ही थरू हों तो कौन सी बुरी बात है? इससे ऑफिसों में भीड़ भी कम रहती है और काम करने को भी मन करता है।

खैर, रोज की तरह वे कल फिर मेरी कुर्सी के पास आकर मच्छर की तरह मंडराने लगे ये जानते हुए भी कि मच्छर वे नहीं, हम हैं। आते ही रोज की तरह पानी से पतले होते बोले, ‘बंधु! महीना हो गया मुझे आपकी कुर्सी के दर्शन करते, मेरा काम कब तक होगा?’

उस दिन मुझे उन पर दया आ गई। पहली बार उनके बाल सफेद देखे थे। वैसे व्यवस्था के तुजुर्बे तो पैदा होते बच्चों के बाल सफेद कर देते हैं। आदमी का बच्चा हो तो। शायद, आज उन्होंने अपने बालों में रंग नहीं लगाया था। या कि मेरी कुर्सी की परिक्रमा करते करते उनके बालों का रंग लगाते ही उड़ जाता हो। कारण क्या रहे होंगे, वे ही बता सकते हैं। मेरे जैसा तो केवल स्पैक्यूलेट ही कर सकता था।

‘देखो सर! जरा भी आपमें माइंड हो तो प्लीज! बुरा मत मानिएगा! आजकल काम करने का ढंग रंग जरा बदल गया है।’ ‘तो कैसे होते हैं आजकल काम?’ ‘अच्छा, एक बात बताओ! आप आस्तिक हो या नास्तिक?’ ‘नख से शिख तक आस्तिक ही आस्तिक! जनेऊ दिखाऊं क्या?’ ‘राजनीति में जनेऊ दिखाने के लिए होते हैं सर! ऑफिसों में नहीं। अच्छा, तो आप कभी मंदिर गए हो?’

‘रोज जाता हूं। पांचों टाइम!’ ‘क्या करने?’

‘देखो, सरकार से मांगो तो वह तो कुछ देने से रही। देना तो दूर, वह तो सुनती भी नहीं। पता नहीं आजकल की सरकारें पहले से अधिक बहरी क्यों हो गई हैं?’ उनके होंठों पर जनता की पीड़ा छलक आई।

‘साउंड पॉल्यूशन सर ! साउंड पॉल्यूशन! तो?’

‘तो क्या, भगवान कम से कम सुन तो लेते हैं। भले ही मन्नत पूरी करते हों या न।’

‘तो आप उनसे मन्नत मांगने से पहले क्या करते हो?’

‘पहले उनको चढ़ावा चढ़ा कर रिझाता हूं।’

‘तो फिर यहां ऐसा क्यों नहीं? ऑफिस क्या जनता के मंदिरों से कम होते हैं? हम क्या सरकार के पुर्जे नहीं? जनाब! जब बिन चढ़ावे के भगवान नहीं सुनते तो हम क्या खाक सुनें? क्यों सुनें? किसकी सुनें?’

‘इसलिए सुनें कि सरकार आपको भक्तों के काम करने का वेतन देती है’, अबके वे गुस्से में बोले। सारी मर्यादाओं को त्याग। पर मैं सहज रहा। मुझे पता है कि कुर्सी पर बैठ गुस्सा करना बहुत बुरा होता है। ‘देखो भाई साहब! सरकार हमें वेतन ऑफिस में आने का देती है। सरकार हमें वेतन दस से पांच जनता को अपने दर्शन कराने का देती है। काम करवाने के तो अलग लगेंगे ही लगेंगे’, मैंने बड़े प्यार से कहा तो वे तुरंत समझ गए। बड़े बड़े पदों से सादर सेवानिवृत्त होने वाले कह गए हैं प्यार से समझाने पर गधे भी बड़ी आसानी से समझ जाया करते हैं मित्रो!

पाठकों के पत्र

पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत बनाएं...

महात्मा गांधी का कथन है कि पंचायती राज संस्थाएं लोकतंत्र की रीढ़ के समान हैं, जो कि दर्शाता है कि किसी भी लोकतंत्र में इन संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए इन संस्थाओं में चुनकर आने वाले जनप्रतिनिधियों में योग्यता, अनुभव, लक्ष्य तथा जनहित में शुरू की गई सरकारी योजनाओं को बेहतर ढंग से कार्यान्वित करने की कार्यकुशलता जैसे गुणों का होना अति अनिवार्य है। प्राचीन काल में पंच परमेश्वर व्यवस्था से वर्तमान की हाईटेक पंचायती राज व्यवस्था तक का सफर कर चुकी ये संस्थाएं आज के समय में उतनी प्रभावी नहीं बन पाई हैं जितना इनको होना चाहिए था। हालांकि इन्हें सुदृढ़ बनाने के लिए सरकार की तरफ से प्रयास जारी हैं, जिन्हें तीव्र गति देने की जरूरत है। **–राजेंद्र पंडित, गोंदपुर बनेहड़ा, ऊना**

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। **–वाल्तेयर**

राजस्थान पत्रिका
संस्थापक
कर्पूर चन्द्र कुलिश

भारत में भी हो जंक फूड को लेकर ब्रिटेन जैसी पहल

बच्चों के आहार में पौष्टिक तत्वों के बजाय हानिकारक जंक फूड शामिल होने से मोटापे और उससे जुड़ी बीमारियों का खतरा लगातार बना हुआ है। चिकित्सक लगातार चेतावनी भी दे रहे हैं कि आज अधिकांश बच्चे पौष्टिक भोजन की जगह जंक फूड और कार्बोनेटेड पेय पदार्थों का सेवन कर रहे हैं, जिससे उनमें मोटापा, कमजोरी और मानसिक अवसाद जैसी समस्याएं देखने को मिल रही हैं। इतना ही नहीं, गर्भवती महिलाएं भी इस जीवनशैली से अछूती नहीं हैं, जिसका सीधा असर गर्भस्थ शिशु के विकास पर पड़ रहा है। जंक फूड के इन्हीं खतरों से जुड़ी चिंता ब्रिटेन में लागू उस आदेश में झलकती है जिसके तहत वहां सरकार ने रात 9 बजे से पहले टीवी व ऑनलाइन प्लेफॉर्म्स पर जंक फूड के विज्ञापनों पर पूरी तरह रोक लगा दी है। यह प्रतिबंध उन खाद्य उत्पादों पर लागू हो गया है जिनमें फैट, नमक व चीनी की मात्रा अधिक होती है। भारत में भी इन मामलों में सख्ती बरतने की जरूरत है।

यह तथ्य सर्वविदित है कि बच्चे जो देखते हैं उसे अपनाने की कोशिश सबसे पहले करते हैं। रंगीन पैकेजिंग, कार्टून पात्र और आकर्षक स्लोगन उन्हें लुभाते हैं। विज्ञापनों से सबसे ज्यादा बच्चों के प्रभावित होने की वजह भी यही है। विज्ञापनों के प्रति ऐसे आकर्षण का ही नतीजा है कि पौष्टिक भोजन पीछे छूट जाता है और बच्चों की थाली में जंक फूड उनकी पहली पसंद के रूप में सामने आता है। ऐसे आकर्षण की रोकथाम के लिए ब्रिटेन सरकार ने जो कदम उठाया है उसमें व्यावसायिक हितों से ज्यादा बच्चों की सेहत की चिंता की गई है। जबकि हमारे यहां गुमराह करने वाले विज्ञापनों पर जारी दिशा-निर्देशों तक की पालना ठीक से नहीं हो पा रही है। ऐसे में जंक फूड से जुड़े विज्ञापनों का समय तय करना भी एक बड़ी चुनौती है। स्कूलों के आसपास जंक फूड की बिक्री रोकने के आदेश भी कागजी ही साबित होते दिख रहे हैं। हमारे यहां तो स्कूल तक में बच्चों के टिफिन में पौषक तत्व कम बल्कि सेहत के लिए खतरा बनने वाले जंक फूड ज्यादा होते हैं। हैरत की बात यह है कि घर-परिवारों में भी बच्चों की सेहत की चिंता नहीं की जा रही और उन्हें जंक फूड खिलाने से परहेज नहीं किया जा रहा। यह सब उस संकट के बीच है जब बच्चों के पास खेल-कूद का समय व खेल मैदान पहले ही कम होते जा रहे हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बच्चे ही नहीं बल्कि हर वर्ग के लिए भले ही जंक फूड स्वाद बढ़ाने वाले हों, लेकिन सेहत की दृष्टि से देखें तो ये एक तरह से बीमारियों के दरवाजे हैं।

वक्त आ गया है जब ब्रिटेन की तरह भारत में भी ऐसे विज्ञापनों के प्रसारण व समय दोनों को नियंत्रित किया जाए। बच्चों को दादी-नानी के जमाने के पौष्टिक व्यंजनों के बारे में अवगत कराना जरूरी है। स्कूली स्तर से ही यह काम बेहतर तरीके से हो सकता है। समाज, सरकार और अभिभावकों को मिलकर इस दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे, ताकि बच्चों को सेहतमंद रखा जा सके।

ट्रंप का दंभ: एक बार फिर वही स्वर उभरा है जिसमें संवाद की शालीनता कम और चेतावनी का खुरदरापन अधिक है

शुल्कों की राजनीति में फंसे भारत-अमरीका संबंध?

विनय कौड़ा
अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकार
@patrika.com

राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने भारत को यह स्मरण कराने की कोशिश की है कि यदि वह रूस से कच्चे तेल की खरीद के प्रश्न पर वाशिंगटन की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं चला तो शुल्कों का शिकंजा और कस दिया जाएगा।

अमरीकी सत्ता के गलियारों से एक बार फिर वही स्वर उभरा है जिसमें संवाद की शालीनता कम और चेतावनी का खुरदरापन अधिक है। राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने भारत को यह स्मरण कराने की कोशिश की है कि यदि वह रूस से कच्चे तेल की खरीद के प्रश्न पर वाशिंगटन की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं चला तो शुल्कों का शिकंजा और कस दिया जाएगा। यह वक्तव्य किसी क्षणिक आवेग या चुनावी बयानबाजी का परिणाम नहीं, बल्कि उस राजनीति की निरंतरता है जिसमें व्यापार को दबाव और दंड का उपकरण बना दिया गया है। यह वही दृष्टि है जिसमें राष्ट्रों की संप्रभुता को एक असुविधाजनक तथ्य मान लिया गया है और मित्रता को आज्ञाकारिता की कसौटी पर परखने की कोशिश की जा रही है। विडंबना यह है कि यह चेतावनी उस समय दी जा रही है जब भारतीय निर्यात पहले से ही अमरीकी बाजार में अभूतपूर्व शुल्क-भार झेल रहे हैं।

कई प्रमुख क्षेत्रों जैसे इस्पात, एल्युमिनियम, रसायन, वस्त्र और आइटी सेवाओं में प्रभावी शुल्क दरें 40 से 50 प्रतिशत तक पहुंच चुकी हैं। यह बोझ किसी व्यापारिक असंतुलन का स्वाभाविक परिणाम नहीं बल्कि एक राजनीतिक असंतोष का आर्थिक दंड है। इन शुल्कों का एक बड़ा हिस्सा भारत की रूसी तेल-नीति से जोड़कर थोपा गया है। ट्रंप का यह कथन कि 'अमरीका बहुत जल्द शुल्क बढ़ा सकता है और यह भारत के लिए बहुत बुरा होगा' उस भाषा का उदाहरण है जिसमें बराबरी के भाव की बजाय आधिपत्य का दंभ स्पष्ट झलकता है। यह कूटनीति नहीं बल्कि व्यक्तिगत संतोष और घरेलू राजनीतिक संदेशों को विदेश नीति का मानक बनाने की प्रवृत्ति है। ऐसी प्रवृत्ति वैश्विक विश्वास को कमजोर करती है और साझेदारी की अवधारणा को मात्र लेन-देन तक सीमित कर देती है। तथ्य इस पूरे विमर्श को एक भिन्न रोशनी में रखते हैं।

भारत ने पिछले एक वर्ष के दौरान अपनी तेल-आयात संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन किया है। कुल कच्चे तेल का आयात बढ़ा है किंतु रूस से आने वाले तेल की हिस्सेदारी धीरे-धीरे घटी है। इसके समानांतर अमरीका, पश्चिम एशिया और अफ्रीकी देशों से आयात में वृद्धि हुई है। विशेष रूप से अमरीका से एलएनजी और कच्चे तेल की खरीद में दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज की गई है। यह वृद्धि केवल सांकेतिक नहीं बल्कि दीर्घकालिक आपूर्ति अनुबंधों और बंदरगाह-आधारित अवसंरचना निवेश के रूप में ठोस आंकड़ों में दर्ज है। ऐसे में यह कहना कि भारत ने अमरीकी अपेक्षाओं को पूरी तरह अनदेखा किया है, सत्य के साथ अन्याय के समान है। इसके बावजूद दबाव कम नहीं हो रहा। इसका कारण तेल की वास्तविक मात्रा नहीं बल्कि वह सिद्धांत है जिसे भारत छोड़ने को तैयार नहीं- अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार। रूस से तेल खरीदना भारत के लिए किसी वैचारिक झुकाव या भू-राजनीतिक पक्षधरता का प्रतीक नहीं बल्कि व्यावहारिक ऊर्जा-सुरक्षा का प्रश्न रहा है। एक ऐसा देश जिसकी विशाल आबादी, बढ़ती औद्योगिक आवश्यकताएं और महत्वाकांक्षी विकास-लक्ष्य हैं, वह अपनी ऊर्जा आपूर्ति को किसी एक स्रोत या किसी एक राजनीतिक खेमे के भरोसे नहीं छोड़ सकता। यही कारण है कि भारत ने संतुलन की नीति अपनाई है। जहां संभव हुआ, विकल्प बढ़ाए हैं और जहां आवश्यक हुआ, वहां जोखिम कम किए हैं।

अमरीकी प्रतिबंधों के बाद भारत की प्रमुख सार्वजनिक और निजी रिफाइनरियों ने स्वयं कई रूसी आपूर्तिकर्ताओं से दूरी बनाई है। भुगतान तंत्र बदले गए, बीमा जोखिमों का पुनर्मूल्यांकन हुआ और शिपिंग मार्गों में संशोधन किया गया। इसके बावजूद अमरीकी कांग्रेस में द्वितीयक शुल्कों और प्रतिबंधों की चर्चा यह स्पष्ट करती है कि ट्रंप प्रशासन की अपेक्षाएं यहीं समाप्त नहीं होंगी। यूक्रेन युद्ध की आड़ में उन देशों को दंडित करने की तैयारी जिनका उस संघर्ष में कोई प्रत्यक्ष सैन्य या राजनीतिक दायित्व नहीं, वैश्विक व्यवस्था की नैतिक नींव को कमजोर करती है और अंतरराष्ट्रीय कानून के चयनात्मक प्रयोग को उजागर करती है। यहां तुलना अनिवार्य हो जाती है। चीन, जो रूस से भारत की तुलना में कहीं अधिक तेल और गैस खरीद रहा है, अमरीकी दबाव से लगभग अछूता है। इसका कारण स्पष्ट है- रणनीतिक भय, आर्थिक परस्पर-निर्भरता और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में चीन की केंद्रीय भूमिका। भारत के मामले में यह भय नहीं, बल्कि यह अपेक्षा दिखाई देती है कि वह बिना शोर किए अमरीकी दबाव के समक्ष झुक जाएगा। यही वह दोहरा मानदंड है जो इस पूरे प्रकरण को केवल व्यापारिक नहीं बल्कि राजनीतिक और व्यक्तिगत तुनकमिजाजी का उदाहरण बनाता है। सबसे बड़ी आशंका यही है कि भारत द्वारा दी गई रियायतें अमरीकी दबाव को कम नहीं करेंगी, बल्कि नई मांगों को जन्म देंगी। आज प्रश्न रूसी तेल का है तो कल कृषि सब्सिडी का होगा फिर डिजिटल कर, डेटा स्थानीयकरण और दवा उद्योग की नीतियां निशाने पर होंगी। यह एक ऐसी श्रृंखला है जिसका कोई अंतिम बिंदु नहीं।

यह भी समझना आवश्यक है कि वर्तमान अमरीकी विदेश नीति किसी स्थायी सिद्धांत का प्रतिनिधित्व नहीं करती। यह एक विशेष राजनीतिक दौर, घरेलू ध्रुवीकरण और 'अमरीका फर्स्ट' के संकुचित दृष्टिकोण की उपज है जो भविष्य में बदल भी सकता है। इसका अर्थ यह नहीं कि भारत को संवाद से इनकार करना चाहिए। संवाद आवश्यक है, पर वह आत्मविश्वास और स्पष्टता के साथ होना चाहिए। यदि किसी बिंदु पर ऊर्जा-नीति में परिवर्तन आवश्यक हो तो वह भारतीय आवश्यकताओं, बाजार स्थितियों और दीर्घकालिक हितों के आधार पर हो, न कि किसी धमकी की प्रतिक्रिया में। यह क्षण भारत के लिए आत्ममंथन का है।

प्रसंगवश

आवारा श्वानों को लेकर फाइलों में कैद निर्देश, सड़कों पर पसर रहा डर

सवाल धन की कमी का नहीं बल्कि आदेशों की पालना में इच्छाशक्ति का है

आवारा श्वानों को लेकर सुप्रीम कोर्ट का गत वर्ष नवंबर में जो आदेश था उसका उद्देश्य मानवीय भी था और जनहितकारी भी। लेकिन राजस्थान में इस आदेश के पालना की जमीनी हकीकत काफी दूर नजर आ रही है। नतीजा यह है कि सड़कों पर आवारा श्वानों के काटने का डर बना हुआ है तो अस्पतालों में श्वानों के काटने से घायल हुए लोगों की उपचार के लिए भीड़ बढ़ने लगी है। आंकड़े खुद अपनी कहानी कह रहे हैं। राजस्थान में गत वर्ष 4.25 लाख डॉग बाइट के मामले सामने आए, यानी औसतन हर दिन 1100 लोग इलाज के लिए अस्पताल पहुंचे। यह सचमुच चिंता की बात है कि जब प्रति एक लाख आबादी पर 5 से 6 हजार आवारा श्वान खुले में घूम रहे हों और शेल्टर होम केवल एक-दो शहरों तक सीमित हों, तो हादसों की श्रृंखला बनते देर नहीं लगती। हालिया घटनाएं चेतावनी भी हैं। जोधपुर में नौ साल का बच्चा कुत्तों के हमले में गंभीर रूप से घायल हो गया। बीकानेर में एक श्वान ने 15 भेड़-बकरियों को मार डाला और एक मासूम पर हमला कर दिया।

विडंबना यह है कि खर्च और योजना दोनों उपलब्ध हैं। एक श्वान पर शेल्टर होम में प्रतिदिन 40-50 रुपए का अनुमानित खर्च है, जबकि पकड़ने, बधियाकरण और सुरक्षित छोड़ने पर 1650 रुपए। सवाल पैसे का नहीं, इच्छाशक्ति और प्रशासनिक तत्परता का है। जब सुप्रीम कोर्ट 13 जनवरी को राज्यों से स्थिति रिपोर्ट मांग रहा है और हाईकोर्ट भी निर्देश दे चुका है, तब भी अधिकांश नगरीय निकायों का 'प्रक्रिया में है' कहना संवेदनहीनता का परिचायक ही कहा जाएगा। यही कारण है कि राज्य मानवाधिकार आयोग ने सख्ती दिखाते हुए इस मामले में प्रसंज्ञान लेकर जोधपुर-बीकानेर कलक्टर, नगर निगम आयुक्त व स्वायत्त शासन विभाग के शासन सचिव को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। अब वक्त चेतावनी से आगे बढ़ने का है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश को जमीन पर उतारना ही होगा। अन्यथा यह सवाल बार-बार उठेगा- क्या हमारी व्यवस्था किसी अगली खबर का इंतजार कर रही है?

- आशीष जोशी
ashish.joshi@in.patrika.com

बुक इनसाइट

होमस्कूल्ड: विचारोत्तेजक संस्मरण

स्टेफन मेरिल ब्लॉक की 'होमस्कूल्ड' एक ऐसी किताब है जो मां के अटूट और घुटन भरे प्यार के साथ-साथ घरेलू शिक्षा की अनियमित दुनिया की सच्चाई बताती है। वह दुनिया जहां एक बच्चे की आजादी छिन जाती है और घर एक जेल जैसा बन जाता है। किताब की कहानी लेखक के अपने बचपन की है। मात्र नौ साल की उम्र में मां द्वारा स्कूल से हटाए जाने के बाद उसका बचपन घर की चारदीवारी में कैद हो जाता है। पांच साल बाद स्कूल लौटने पर बदली हुई दुनिया का सामना करते हुए यह कहानी होमस्कूलिंग के अनियमित और हानिकारक पक्ष पर गहरे सवाल उठाती है। यह कहानी बचपन की उन यादों की है जो हंसाती भी हैं और रुलाती भी हैं। साथ ही अमरीकी शिक्षा व्यवस्था के उस छिपे कोने पर रोशनी डालती है जो लाखों बच्चों को प्रभावित करता है। कुल मिलाकर, 'होमस्कूल्ड' एक हृदयस्पर्शी, मजेदार और विचारोत्तेजक संस्मरण है। ब्लॉक ने अपनी दर्दनाक यादों को इतनी खूबसूरती से बुना है कि पढ़कर अकेलापन कम लगता है। ब्लॉक की लेखन शैली बेहद जीवंत है।

फैक्ट फ्रंट

अमेजनियन रॉयल फ्लाईकैचर

अमेजन के घने वर्षावनों में पाया जाने वाला अमेजनियन रॉयल फ्लाईकैचर दुनिया के सबसे आकर्षक और अनोखे पक्षियों में गिना जाता है। पहली नजर में यह सामान्य-सा भूरा पक्षी लगता है, लेकिन जैसे ही यह अपनी कलगी फैलाता है, देखने वाला दंग रह जाता है। इसकी पंखे जैसी बड़ी, चमकीली लाल-नारंगी कलगी नीले और काले किनारों से सजी होती है, जो इसे शाही रूप देती है। इसी कारण इसके नाम में 'रॉयल' शामिल है। यह पक्षी आमतौर पर शांत और छुपकर रहने वाला होता है। यह बहुत अधिक शोर नहीं करता, जिससे शिकारी इसे आसानी से पहचान नहीं पाते। अधिकतर समय यह पेड़ों की शाखाओं पर बैठा रहता है और उड़ते हुए कीड़ों का शिकार करता है। 'फ्लाईकैचर' नाम इसी आदत से जुड़ा है, क्योंकि यह हवा में उड़ते कीटों को तेजी से पकड़ लेता है। यह अपनी सुंदर कलगी बहुत कम ही दिखाता है। आमतौर पर खतरे के समय, जोड़ी को आकर्षित करने के दौरान या घोंसले की रक्षा करते समय ही यह कलगी पूरी तरह खुलती है। इसका निवास स्थान अमेजन बेसिन के जंगल, नदियों के किनारे और आर्द्र वन क्षेत्र हैं।

पर्यावरण जनजागरूकता बढ़ाना अहम कदम

अरावली: लुप्त होते वन्यजीवों और पेड़-पौधों का अंतिम सहारा

बाबूलाल जाजू
पर्यावरणविद्
@patrika.com

कुदरत का अनमोल खजाना अरावली पर्वत श्रृंखला आज अपने अस्तित्व की सबसे कठिन लड़ाई लड़ रही है। यह केवल पहाड़ों का समूह नहीं, बल्कि राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, दिल्ली सहित पूरे उत्तर-पश्चिम भारत की जैव विविधता का आधार स्तंभ है। बची हुई अरावली आज उन असंख्य पेड़-पौधों और वन्यजीवों का अंतिम सहारा है, जो पहले से ही विलुप्ति के कगार पर खड़े हैं। यदि अरावली का यह बचा-खुचा स्वरूप भी नष्ट हुआ, तो इसके साथ ही कई प्रजातियों का अस्तित्व भी हमेशा के लिए इतिहास बन जाएगा।

राजस्थान जैव विविधता बोर्ड के अनुसार प्रदेश में 63 प्रजातियों के पेड़-पौधे और 39 प्रजातियों के वन्यजीव गंभीर संकट में हैं। इनमें 13 स्तनधारी, 19 पक्षी, 5 सरीसृप, उभयचर प्रजातियां भी शामिल हैं। प्रदेश में करीब 2500 पेड़-पौधों की प्रजातियां, 450 से अधिक पक्षी, 67 स्तनधारी, 58 सरीसृप और 40 उभयचर प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से कई सीधे तौर पर अरावली पर निर्भर हैं। अरावली की पहाड़ियां और जंगल कई दुर्लभ और संवेदनशील वन्यजीवों का प्राकृतिक आवास है। राज्य पक्षी गोडावण कभी राजस्थान की पहचान हुआ करता था, लेकिन आज यह दुनिया की सबसे गंभीर रूप से संकटग्रस्त पक्षी प्रजातियों में गिना जाता है। इसी तरह गिद्ध, जो प्रकृति के सफाईकर्मी माने जाते हैं, अब आसमान से लगभग गायब हो चुके हैं। चौसिंघा, मरुस्थलीय लोमड़ी, पैंगोलिन, चींटीखोर, घड़ियाल और कई उभयचर प्रजातियां अरावली के कमजोर होते ही सबसे पहले प्रभावित हुई हैं। यह संकट अचानक नहीं आया, बल्कि वर्षों की घोर लापरवाही, अवैध खनन, जंगल कटाई और बढ़ते मानवीय हस्तक्षेप का परिणाम है। पेड़ों के कटने का सीधा असर वन्यजीवों पर पड़ता है, क्योंकि उनके भोजन, घोंसलों और छिपने की जगहें खत्म हो जाती हैं।

अब समय आ गया है कि अरावली को केवल खनिज संसाधन के रूप में देखने की सोच बदली जाए। अवैध खनन पर सख्त रोक, संवेदनशील क्षेत्रों को पूर्ण संरक्षण देना, गोचर और ओरण भूमि का पुनर्जीवन, वन विभाग और जैव विविधता बोर्ड को पर्याप्त संसाधन और अधिकार देना तथा स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करना बेहद जरूरी है। साथ ही, जनजागरूकता बढ़ाना सबसे अहम कदम है, क्योंकि जब तक आम जनता अरावली के महत्व को नहीं समझेगी, संरक्षण के प्रयास सफल नहीं हो सकते। अंततः, बची हुई अरावली ही लुप्त होती पेड़ और वन्यजीव प्रजातियों का अंतिम सहारा है। यदि यह सहारा भी छिन गया, तो आने वाली पीढ़ियां केवल किताबों और तस्वीरों में ही इन प्रजातियों को देख पाएंगी। अरावली का संरक्षण प्रकृति की रक्षा नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की रक्षा है और इस सच्चाई को समझकर अब ठोस कदम उठाने ही होंगे।

कच्छ: 20 करोड़ वर्ष पुरानी शैल संरचनाएं

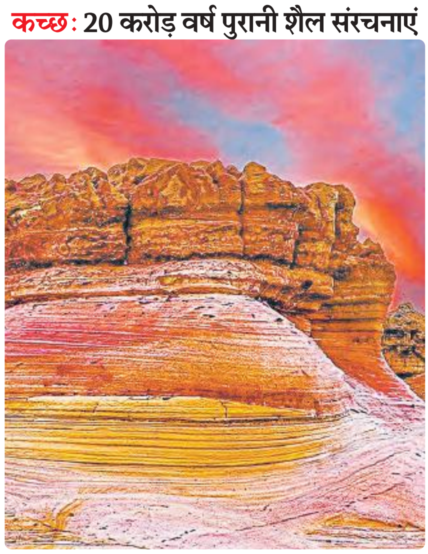

गुजरात के कच्छ में लियारी नदी के तल में स्थित शैल संरचनाएं करीब 20 करोड़ वर्ष पुरानी हैं। कच्छ की कम जानी-पहचानी यह विरासत भुज से 70 किलोमीटर दूर है। हाल ही उद्योगपति आनंद महिंद्रा ने 'एक्स' पर इसे जुरासिक युग की अद्भुत धरोहर बताते हुए हर यात्रा सूची में शामिल करने की जरूरत बताई।

नजरिया काम मात्र उत्पादन का साधन नहीं

स्वस्थ कार्य संस्कृति के बिना आर्थिक आकांक्षाएं जोखिम में

डॉ. शिवम भारद्वाज
स्वतंत्र लेखक
@patrika.com

पिछले कुछ वर्षों में काम की प्रकृति में अभूतपूर्व बदलाव आया है। दफ्तर अब किसी इमारत का नाम नहीं रहा; वह जेब में रखा फोन है, लैपटॉप की स्क्रीन है और वह अदृश्य बेचैनी भी, जो हर समय जुड़े रहने को मजबूर करती है। काम की दुनिया पहले से कहीं अधिक तेज, अवसरों से भरी और अधिक खुली है, लेकिन इसी रफ्तार में जिंदगी कई बार हांफती हुई नजर आती है। सवाल यह नहीं कि हम कितना काम कर रहे हैं, बल्कि यह है कि उस काम के बीच मनुष्य बने रह पा रहे हैं या नहीं।

आर्थिक विकास की किसी भी बहस में काम को केंद्रीय स्थान दिया जाता है। रोजगार के आंकड़े, उत्पादकता की दर और विकास की गति- सब कुछ इसी कसौटी पर आंका जाता है। लेकिन इस पूरी चर्चा में एक बुनियादी प्रश्न अक्सर अनदेखा रह जाता है- क्या जिस ढंग से हम काम को संगठित कर रहे हैं, वह मनुष्य और समाज- दोनों के लिए दीर्घकाल में टिकाऊ है? तकनीक ने दफ्तर को चार दीवारों से मुक्त किया है, यह बदलाव अपने आप में नकारात्मक नहीं है। समस्या तब पैदा होती है, जब इसकी कीमत व्यक्ति अपने स्वास्थ्य और निजी जीवन से चुकाए। एक बुनियादी तथ्य को स्वीकार करना होगा- आराम आलस्य नहीं, बल्कि काम का ही आवश्यक हिस्सा है। व्यावहारिक अनुभव बताता है कि कई बार समस्या का समाधान घंटों की जबर्दस्ती मेहनत से नहीं, बल्कि थोड़े ठहराव से निकलता है। अच्छी नींद, काम से अस्थायी दूरी और मानसिक विश्राम निर्णय-क्षमता, स्पष्टता और रचनात्मकता को लौटाते हैं। यह कोई भावनात्मक तर्क नहीं, बल्कि उत्पादकता की ठोस शर्त है।

दुनिया के कुछ हिस्सों में इस सच्चाई को समझते हुए कार्य संस्कृति पर पुनर्विचार शुरू हुआ है। ब्रिटेन, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में कार्य-समय की स्पष्ट सीमाओं, डिजिटल रूप से अलग रहने का अधिकार और कम कार्य-दिवस से जुड़े प्रयोगों के प्रारंभिक नतीजे यह संकेत देते हैं कि उत्पादकता और मानवीय कल्याण एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। इन प्रयासों का मूल संदेश स्पष्ट है- काम की गति तय करते समय इंसान की सीमा और मूलभूत आवश्यकताओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। भारत के संदर्भ में यह विमर्श और भी महत्वपूर्ण है। देश की आर्थिक आकांक्षाएं एक युवा कार्यबल पर टिकी हैं। यदि यही पीढ़ी अपने शुरुआती दशकों में ही थकान, असंतोष और असुरक्षा से जूझने लगे, तो इसका असर केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि राष्ट्रीय उत्पादकता और सामाजिक स्थिरता पर पड़ेगा।

समाधान किसी एक कानून या कंपनी नीति में सीमित नहीं है। जरूरत एक समग्र सोच की है- जहां काम को केवल उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि मानवीय क्षमता के विस्तार का माध्यम माना जाए। असली उत्पादकता वही है, जिसमें काम और जिंदगी साथ चलें- और आने वाले समय में हमारी कार्य संस्कृति इसी कसौटी पर परखी जाएगी।

आपकी बात

सुरक्षा के लिए जागरूकता जरूरी

हाइटेंशन लाइनों से होने वाले हादसों को रोकने के लिए लोगों को इन लाइनों से सुरक्षित दूरी बनाए रखनी चाहिए। बिजली कंपनियों द्वारा आधुनिक सुरक्षा उपाय लागू करना और आम जनता को जागरूकता प्रदान करना जरूरी है।

- प्रवेश भूतड़ा, सूरत

patrika.com पर पढ़ें

पाठकों की अन्य प्रतिक्रियाएं

पत्रिकायन का सवाल था, 'हाइटेंशन लाइनों से होने वाले हादसों पर कैसे अंकुश लगाया जा सकता है?' अन्य प्रतिक्रियाएं ऑनलाइन भी देखें।
https://shorturl.at/6QhqN

इसे स्कैन करें

आज का सवाल

चाइनीज मांझे का उपयोग और उससे हो रहे हादसे क्यों नहीं रुक पा रहे हैं?

ईमेल करें: edit@epatrika.com

आबादी का बोझ शहरी घनत्व को कम करने के लिए उठाए सार्थक कदम, सर्वाधिक जनसंख्या के साथ शीर्ष पर था, अब तीसरे स्थान पर

टोक्यो का शहरीकरण मॉडल दुनिया के लिए बना नजीर

डॉ. विवेक एस. अग्रवाल
सामाजिक सरोकारों से जुड़े मामलों के जानकार
@patrika.com

वर्ष 2025, इस दौरान घटित विशिष्ट घटनाओं के साथ शहरीकरण में हुए बदलाव के लिए भी स्मरण किया जाएगा। हाल ही संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी विश्व शहरीकरण परिदृश्य रिपोर्ट 2025 के अनुसार लगभग सात दशक तक सर्वाधिक जनसंख्या के साथ शीर्ष पर स्थापित टोक्यो शहर, इंडोनेशिया के जकार्ता एवं बांग्लादेश के ढाका के बाद तीसरे स्थान पर खिसक गया। इसके पीछे जकार्ता और ढाका में बढ़ती अनियंत्रित आबादी के साथ टोक्यो द्वारा शहरी घनत्व को कम करने के लिए उठाए गए सार्थक कदम उत्तरदायी रहे हैं।

यह परिवर्तन यकायक आया हो ऐसा नहीं है, इसके लिए जापान ने कठोर एवं दूरगामी यत्न कर शहरों को जीने लायक बनाने के उद्देश्य से सोची समझी रणनीति के तहत टोक्यो शहर के विकास संबंधी कदम उठा स्थिरता हासिल की है। उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि मिस्र के काहिरा के अतिरिक्त सर्वाधिक आबादी वाले दस शहरों में भारत के दिल्ली एवं कोलकत्ता समेत 9 शहर एशिया महाद्वीप के हैं।

शहरीकरण में पिछले 75 सालों के दौरान दोगुनी से अधिक अनुपातिक वृद्धि के साथ त्वरित बदलाव देखने को मिला है। यह बदलाव मूलतः बड़े शहरों में हुआ है। दुनिया में पिछले 50 वर्षों के दौरान 1 करोड़ से अधिक आबादी वाले शहरों की संख्या चौगुनी से अधिक बढ़कर 33 हो गई है और यह निरंतर वृद्धि की ओर है। बड़े शहर आबादी के मामले में घने होते जा रहे हैं तो छोटे कस्बों से आबादी कम होती जा रही है। संभवतया शहरों की चकाचौंध कस्बों से शहरों के मध्य हो रहे संक्रमण के लिए उत्तरदायी है। गांवों से कस्बों और कस्बों से बड़े शहरों की ओर आबादी लगातार पलायन कर रही है। यदि यही गति चलती रही तो वह दिन दूर नहीं जब गांव वीरान हो जाएंगे और शहर में पांव रखने की भी जगह नहीं होगी।

सत्तर वर्षों तक अधिकतम आबादी का बोझ ढोने वाले टोक्यो शहर ने भविष्य की आशंकाओं एवं अनुपलब्धताओं के मद्देनजर अनुकरणीय प्रयासों के जरिए संक्रमण पर विराम लगाते हुए शहरों से दूर बसने पर प्रोत्साहन योजनाओं को मूर्तरूप दिया। उदाहरण के तौर पर शहर छोड़ गांवों में बसने वाले परिवारों को सरकार की ओर से प्रति बच्चे 10 लाख जापानी येन तक प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है। आवासीय ही नहीं, वाणिज्यिक गतिविधियों को भी टोक्यो शहर की सीमा से दूर पुनर्स्थापित करने के लिए कर राहत, कम दरों पर भूमि समेत वित्तीय अनुदान भी प्रदान किए गए। सरकार ने प्रोत्साहन राशि की नीति लागू करने से पूर्व आधारभूत संरचना को सुदृढ़ करने का कार्य किया। सर्वप्रथम, टोक्यो शहर की परिधि से दूर तक ट्रांजिट त्वरित रेल नेटवर्क की स्थापना की गई ताकि रोजगार या व्यवसाय के लिए आने-जाने हेतु सुगम यातायात सुलभ हो। रेल नेटवर्क के साथ-साथ भूमिगत पैदल पथों का जाल भी बुना गया ताकि पदयात्री सुगमता से चल सकें। शहरी प्रदूषण की समस्या पर निजात पाने के लिए भी कारगर कदम उठाते हुए हरित क्षेत्र विकास प्रोत्साहन को प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया गया। इस कारण से विस्थापित होने वाले आवासियों को उचित पुनर्भरण करते हुए उचित स्थलों पर पुनर्स्थापित किया गया। संभवतया, जापान विशेषकर टोक्यो दुनिया की उन चुनिंदा जगहों में है जहां वाहन रखना और उसमे परिवहन अत्यंत महंगा है, ताकि भरोसेमंद सार्वजनिक परिवहन का अधिकतम उपयोग किया जाए। इन सबके साथ ही, परिधि क्षेत्र स्थित स्टेशन को मिश्रित उपयोग यथा आवासीय, व्यावसायिक, रिटेल क्षेत्र के रूप में विकसित किया गया, ताकि आबादी का ठहराव हो सके, अन्यथा हर कार्य का केंद्र टोक्यो तक ही सीमित था। प्रचलित गति से अगले 25 वर्षों में 20 लाख आबादी की घटत के साथ शीर्ष पर रहने वाला टोक्यो विश्व की सबसे अधिक आबादी वाले शहरों की सूची में वर्तमान तीसरे से सातवें स्थान पर आ जाएगा।

यह तथ्य नकारा नहीं जा सकता कि शहरीकरण समय की आवश्यकता है, किंतु विकास एवं घनत्व का गिने चुने स्थानों पर केंद्रित होना किसी भी रूप में उचित नहीं है। भारत में बढ़ते शहरीकरण के चलते आबादी के घनत्व को परिधि क्षेत्र में बांटा जाना समय की बड़ी मांग है, ताकि बेहतर वातावरण के साथ जीवनयापन हो सके।

सम्पादकीय

आतंकवाद - सत्ता, दमन और इंसानियत की जंग

आतंकवाद किसी भी धर्म, राष्ट्रीयता, नस्ल, भाषा या विचारधारा के नाम पर क्यों न हो, इसने हमेशा अत्याचारी शासकों, तानाशाहों और साम्राज्यवाद की मदद की है। यह सत्य है कि आतंकवाद ने कभी भी मजलूमों और उत्पीड़ितों के अधिकारों, न्याय और लोकतंत्र के लिए सहयोग नहीं किया। इसके विपरीत यह हमेशा दमनकारी शक्तियों का सहायक रहा है। आतंकवाद केवल हिंसा और भय फैलाने का साधन नहीं है। इसके मूल में सत्ता की इच्छा, संसाधनों पर दबाव और असंतोष की गहरी जड़ें होती हैं। यह केवल हथियारों का खेल नहीं, बल्कि राजनीति, दर्शक और गढ़ी हुई कहानी की जटिल प्रणाली है। इतिहास में अनेक उदाहरण मिलते हैं। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी में हिटलर ने आतंकवाद को राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। नाज़ी विचारधारा को फैलाने के लिए उन्होंने सैन्य शक्ति, दहशत और हिंसा का प्रयोग किया। इसी तरह सोवियत संघ में जोसेफ स्टालिन ने भी विरोधियों को दबाने और सत्ता मज़बूत करने के लिए आतंकवाद की नीति अपनाई। भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों ने हिंसा पर विचार किया, लेकिन उनका लक्ष्य ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ जनता के अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा था। उनका संघर्ष आतंकवाद नहीं, बल्कि न्याय और स्वतंत्रता की लड़ाई था। जब सत्ता अपने खिलाफ किसी आवाज़ या आंदोलन से डरती है तो वह उसे आतंकवाद का नाम देकर दबाने का प्रयास करती है। इससे वास्तविक नीति और न्याय की मांग दब जाती है। फिलिस्तीन की आज़ादी की लड़ाई इसका उदाहरण है। वहाँ की जनता अपने घरों और जमीन के लिए संघर्ष कर रही थी, लेकिन जब विदेशी ताकत इसे आतंक के रूप में पेश करती है, तो असली समस्या छिप जाती है। दमितों की आवाज़ दब जाती है और शक्तिशाली सत्ता का प्रचार हावी हो जाता है। अमेरिका के अफ़ग़ानिस्तान और इराक पर हमले को भी आतंकवाद से बचाव के नाम पर दिखाया गया। असलियत में यह तेल और भू-रणनीति से प्रेरित था। यही नहीं, आतंकवाद केवल बम और गोली तक सीमित नहीं है। यह भय, विभाजन, सामाजिक दूरी और अविश्वास की भावना पैदा करता है। जब सत्ता किसी आवाज़ को शांत करने के लिए आतंकवाद का टैग लगाती है, तो वह उस आवाज़ को कानूनी डर में रखती है। उदाहरण के लिए भारत में 1980 और 1990 के दशकों में पंजाब और कश्मीर में जो विद्रोह उभरा, उसे आतंकवाद की छवि से जोड़ा गया। तुलसीदास, रविंद्र नाथ टैगोर, अंबेडकर, महात्मा गांधी और नेल्सन मंडेला ने सत्याग्रह और अहिंसा के ज़रिये विरोध को नैतिक रूप दिया। उनका संघर्ष आतंकवाद नहीं, बल्कि न्याय और मानवाधिकार की लड़ाई था। आज आतंकवाद की बात करते हैं, लेकिन क्या हमने सोचा कि धक्का और शोषण का सामना करने वाले मज़लूमों के पास कोई और तरीका न रह जाने पर वे स्वयं रक्षा क्यों न करें? इसका उत्तर केवल आतंकवादी नहीं है; यह सामाजिक विफलता है कि शोषितों की आवाज़ को सुना ही नहीं गया। 21वीं सदी में आतंकवाद का नाम वैश्विक राजनीति में एक पहचान बन गया है। किसी भी देश के खिलाफ विद्रोह उभरते ही उसे आतंकवादी घोषित कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए सीरिया में बशर अल-असद के खिलाफ उठ रहा विद्रोह जब वैश्विक शक्ति केंद्रों को पसंद नहीं आया, तो उसे आतंकवाद के रूप में पेश किया गया। आतंकवाद अक्सर धर्म और नस्ल के नाम पर फैलाया जाता है। किसी धर्म या जाति को आतंकवाद से जोड़ना गलत धारणा है, जो समाज में विभाजन और कलह का बीज बोती है। आतंकवाद का हल केवल सुरक्षा बंदोबस्त से नहीं होता। असली समाधान शिक्षा, समानता, अवसर और न्याय से होता है। जब लोगों को अपनी आवाज़ का सम्मान मिलता है, तब हिंसा की संभावना कम होती है। आतंकवाद किसी मज़हबी, राष्ट्रीय या भाषा-धारित पहचान के कारण नहीं उभरता; यह सत्ता की नज़र, असंतोष और न्याय की कमी से उभरता है। यह दमनकारी सत्ता का साथी बनकर मज़लूमों का दुश्मन बन जाता है। आज की दुनिया में असली खतरा आतंकवाद नहीं, बल्कि अमानवीयता है जो आतंकवाद को जन्म देती है। हमें आतंकवाद के नाम पर घृणा, बर्बरता और विभाजन को नहीं, बल्कि इंसानियत, न्याय और बराबरी को बढ़ावा देना चाहिए। जब तक समाज में समानता और न्याय नहीं होगा, तब तक आतंकवाद का खतरा बना रहेगा। हमें अपने लोकतंत्र और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए सतर्क रहना होगा।

मुनरो सिद्धांत की ओर झुकती अमेरिकी विदेश नीति

3 जनवरी 2026 की शुरुआत में वेनेजुएला में एक अत्यन्त नाटकीय घटनाक्रम सामने आया जब अमेरिका ने बड़े पैमाने पर सैन्य कार्रवाई करते हुए राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया फ्लोरेस को हिरासत में लेकर देश से बाहर ले जाने की घोषणा की। अमेरिकी प्रशासन के अनुसार यह कार्रवाई नार्को-आतंकवाद, मादक पदार्थों की तस्करी और गंभीर आपराधिक गतिविधियों से जुड़े आरोपों के आधार पर की गई तथा इसे अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए आवश्यक बताया गया। कार्रवाई के दौरान राजधानी काराकस और आसपास के क्षेत्रों में हवाई हमले और विशेष बलों की त्वरित छापेमारी की खबरें सामने आईं। दूसरी ओर, वेनेजुएला सरकार ने इस कदम को देश की संप्रभुता पर सीधा हमला और अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करार दिया। सरकार समर्थक वर्ग ने इसे विदेशी आक्रमण बताया जबकि कुछ विपक्षी समूहों ने मादुरो शासन के अंत की सम्भावना के रूप में देखा। इस घटनाक्रम ने पुनः अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शक्ति राजनीति, संप्रभुता और सैन्य हस्तक्षेप को लेकर व्यापक बहस को भी जन्म दिया है। वस्तुतः समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति एक बार फिर इस सच्चाई को रेखांकित कर रही है कि वैश्विक व्यवस्था मूलतः शक्ति, हित और सुरक्षा के तर्क पर संचालित होती है। इस संदर्भ में हंस जे. मॉर्गेंथाऊ का यथार्थवादी सिद्धांत विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है। मॉर्गेंथाऊ के अनुसार अंतरराष्ट्रीय राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है और राष्ट्रीय हित ही विदेश नीति का मूल आधार होता है। वे कहते हैं कि राष्ट्र अपने हितों को शक्ति की भाषा में परिभाषित करते हैं और नैतिकता को अंतरराष्ट्रीय राजनीति में पूरी तरह लागू नहीं किया जा सकता। मॉर्गेंथाऊ यह भी स्वीकार करते हैं कि नैतिकता का अस्तित्व है, लेकिन वह राष्ट्रीय हित से ऊपर नहीं हो सकती। वेनेजुएला में अमेरिका की कार्रवाई को इसी यथार्थवादी नजरिए से देखा जा सकता है। एक और बिंदु जिसकी तरफ ध्यान आकृष्ट किया जाना चाहिए वो है अमेरिका की विदेश नीति में मुनरो सिद्धांत की ओर बढ़ता झुकाव। 1823 में अमेरिकी राष्ट्रपति जेम्स मुनरो द्वारा प्रतिपादित मुनरो सिद्धांत का मूल उद्देश्य पश्चिमी गोलार्ध को यूरोपीय उपनिवेशवाद और हस्तक्षेप से मुक्त रखना था। उस समय यह सिद्धांत अमेरिका की सुरक्षा और क्षेत्रीय स्वायत्तता से जुड़ा हुआ था। धीरे-धीरे यह विचार अमेरिका के लिए लैटिन अमेरिका में प्रभाव बनाए रखने का वैचारिक आधार बन गया। शीत युद्ध के दौर और उसके बाद भी अमेरिका ने इस क्षेत्र को अपने रणनीतिक हितों का क्षेत्र माना। आज जब चीन, रूस और ईरान जैसी शक्तियाँ पश्चिमी गोलार्ध में राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य सम्बन्ध मजबूत करने के लिए प्रयासरत हैं, अमेरिका एक बार फिर इस सिद्धांत को आधुनिक संदर्भ में लागू करता दिखाई दे रहा है। वेनेजुएला में अमेरिकी सैन्य कार्रवाई इसी प्रवृत्ति का ताज़ा उदाहरण है। अमेरिकी प्रशासन का तर्क है कि यह कदम लोकतन्त्र, मानवाधिकार और क्षेत्रीय सुरक्षा की रक्षा के लिए उठाया गया है। अमेरिका लम्बे समय से वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो पर लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने, चुनावों में अनियमितता, भ्रष्टाचार, मानवाधिकार उल्लंघन और अंतरराष्ट्रीय ड्रग तस्करी से जुड़े आरोप लगाता रहा है। अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार इन गतिविधियों से न केवल वेनेजुएला की जनता प्रभावित हुई बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता भी खतरे में पड़ी हालांकि, इस कार्रवाई को केवल लोकतंत्र की रक्षा के रूप में देखना एक पक्षीय दृष्टिकोण होगा।

- डॉ ब्रजेश कुमार मिश्र

वस्तुतः यह हस्तक्षेप अंतरराष्ट्रीय कानून और संप्रभुता के सिद्धांतों का उल्लंघन है। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुसार किसी संप्रभु देश में सैन्य कार्रवाई तभी वैध मानी जाती है जब वह आत्म-रक्षा में हो या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्वीकृति प्राप्त हो। वेनेजुएला के मामले में यह प्रश्न उठ रहा है कि क्या अमेरिका के पास ऐसा स्पष्ट कानूनी आधार था। यही कारण है कि इस कार्रवाई पर वैश्विक प्रतिक्रिया तीखी और विभाजित रही है। अमेरिका इस तरह के कदम अतीत में भी उठाता रहा है। मसलन 1989 में पनामा में अमेरिका ने ऑपरेशन जस्ट कॉज के तहत सैन्य हस्तक्षेप किया था और राष्ट्रपति मैनुअल नोरीएगा को गिरफ्तार कर अमेरिका ले जाया गया था। उस समय भी अमेरिका ने ड्रग तस्करी, मानवाधिकार उल्लंघन और अमेरिकी नागरिकों की सुरक्षा को आधार बनाया था। इसी तरह 2003 में इराक पर अमेरिकी आक्रमण सामूहिक विनाश के हथियारों के आरोपों के आधार पर किया गया हालांकि बाद में ऐसे हथियारों के प्रमाण नहीं मिले। इन दोनों मामलों में अमेरिका ने सुरक्षा और लोकतंत्र की भाषा का प्रयोग किया लेकिन वास्तविकता थी रणनीतिक हित, तेल संसाधनों पर कब्जा और क्षेत्रीय प्रभाव को बढ़ावा देना। वेनेजुएला की कार्रवाई भी इन्हीं ऐतिहासिक उदाहरणों की याद दिलाती है। समर्थकों का तर्क है कि अमेरिका ने एक तानाशाही शासन के विरुद्ध निर्णायक कदम उठाया जबकि आलोचक इसे शासन परिवर्तन की राजनीति और शक्ति के प्रयोग का उदाहरण मानते हैं। इस बहस के केंद्र में वही प्रश्न है जो अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बार-बार उठता रहा है—क्या शक्तिशाली राष्ट्रों को नैतिक उद्देश्य के नाम पर दूसरे देशों की संप्रभुता में हस्तक्षेप का अधिकार है? चीन, रूस और ईरान की प्रतिक्रियाएँ भी इसी शक्ति राजनीति को दर्शाती हैं। रूस और चीन ने अमेरिकी कार्रवाई की कड़ी आलोचना करते हुए इसे संप्रभुता का उल्लंघन और अंतरराष्ट्रीय कानून के खिलाफ बताया है। दोनों देशों के वेनेजुएला के साथ राजनीतिक और आर्थिक सम्बन्ध रहे हैं, और वे इसे पश्चिमी गोलार्ध में अमेरिकी वर्चस्व बनाए रखने की कोशिश के रूप में देखते हैं। ईरान ने भी इस कार्रवाई की निन्दा करते हुए इसे साम्राज्यवादी हस्तक्षेप करार दिया है। इन देशों की प्रतिक्रिया केवल नैतिक आधार पर नहीं, बल्कि अपने रणनीतिक हितों और अमेरिका के प्रभाव को चुनौती देने की इच्छा से भी जुड़ी हुई है लेकिन सच्चाई यह भी कि ये देश अभी कुछ करने की स्थिति में नही हैं ईरान में जहाँ गृहयुद्ध जैसे हालात बन रहे हैं, वहीं रूस यूक्रेन युद्ध में व्यस्त है जहां तक चीन का सवाल है तो वह ताइवान पर अमेरिका जैसी ही कार्यवाही करने की फिराक में है। अमेरिका ने यह कदम पूरे रणनीतिक सोच के साथ उठाया है। भू-राजनीतिक दृष्टि से वेनेजुएला की घटना यह संकेत देती है कि पश्चिमी गोलार्ध एक बार फिर वैश्विक प्रतिस्पर्धा का केंद्र बन रहा है। अमेरिका इस क्षेत्र में चीन और रूस की बढ़ती उपस्थिति को सीमित करना चाहता है जबकि ये शक्तियाँ अमेरिका के एकध्रुवीय प्रभाव को चुनौती देने का अवसर देख रही हैं। ऐसे में मुनरो सिद्धांत का आधुनिक रूप केवल ऐतिहासिक अवधारणा नहीं, बल्कि सक्रिय रणनीति बनता जा रहा है। अंततः, वेनेजुएला में की गई अमेरिकी कार्रवाई न तो पूरी तरह नैतिक आदर्शवाद का उदाहरण है और न ही केवल आक्रामक साम्राज्यवाद का। यह समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति की उसी यथार्थवादी प्रकृति को उजागर करती है, जहाँ राष्ट्र अपने हितों, सुरक्षा और शक्ति-संतुलन को सर्वोपरि रखते हैं। मुनरो सिद्धांत, इराक और पनामा के अनुभव, तथा चीन-रूस-ईरान की प्रतिक्रियाएँ मिलकर यह स्पष्ट करती हैं कि आज की दुनिया में अंतरराष्ट्रीय संबंध सहयोग और संघर्ष, दोनों के मिश्रण से संचालित हो रहे हैं। इस परिदृश्य में नैतिकता और कानून की भूमिका बनी रहती है लेकिन अन्तिम निर्णय अक्सर राष्ट्रीय हित और शक्ति की गणना से तय होते हैं।

वो बचपन न आया...

कई अरसे बीत गए, पर वो बचपन न आया।
कई ऋतुएँ आई और चली गई चली गई
लगता बचपन भी उसी में है समाया।
वो चहकता घर आँगन, जहाँ बचपन की किलकारियों ने कुछ गाया
कई अरसे बीत गए, पर वो बचपन न आया।
वो गाँव की गालियाँ सुनी हो गई, जैसे किसी ने पहरा हो लगाया।
घर की चौखट पे गुंजती नहीं कोई किलकारी, अकेली पड़ गई वो पीपल की छाया।
कई अरसे बीत गए, पर वो बचपन ना आया।
वो मिट्टी के घर ढह गए, उसे फिर किसी ने न बनाया।
वो बारिश का पानी ठहर गया पर उसमें किसी ने कश्तीयों को ना बहाया।
कई अरसे बीत गए, पर वो बचपन ना आया।

- विद्या लोंगवाला

मासूमों का बचपन जंक फूड के हवाले क्यों?

हाल में उत्तर प्रदेश के अमरोहा में 11वीं की एक छात्रा की कथित तौर पर लगातार जंक फूड खाने से मौत हो गई। अहाना नाम की छात्रा के पेट में इन्फेक्शन हो गया था। लोकल अस्पताल में इलाज के बाद उसे दिल्ली एम्स रेफर किया गया था। वहां उसने दम तोड़ दिया। अहाना की मौत कोई साधारण हादसा नहीं है बल्कि यह उस खामोश महामारी का प्रतीक है जो आज हमारे घरों, स्कूलों और बाजारों में खुलेआम पल रही है जंक फूड। चमकदार पैकेटों, आकर्षक विज्ञापनों और टेस्टी के नाम पर परोसे जा रहे जहर ने एक मासूम जिंदगी छीन ली। यह घटना केवल एक परिवार का निजी दुख नहीं बल्कि पूरे समाज, नीति-निर्माताओं और व्यवस्था के मुंह पर करारा तमाचा है। आज जंक फूड सिर्फ खान-पान की आदत नहीं बल्कि एक सुनियोजित उद्योग बन चुका है, जो बच्चों को सबसे आसान शिकार मानता है। रंगीन विज्ञापन, कार्टून कैरेक्टर, मुफ्त खिलौने और स्कूलों के आसपास खुले स्टॉल यह सब बच्चों को लुभाने की रणनीति है। अहाना भी इसी जाल में फंसी। स्वाद के नाम पर सेहत को गिरवी रखने की यह संस्कृति धीरे-धीरे बच्चों के शरीर को खोखला कर रही है। मोटापा, डायबिटीज, हृदय रोग, लीवर की समस्या ये सब बीमारियां अब केवल वयस्कों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि बच्चों के हिस्से में भी आ चुकी हैं। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि जंक फूड का खतरा केवल लंबे समय में नहीं बल्कि तुरंत भी जानलेवा साबित हो सकता है। अत्यधिक नमक, चीनी, ट्रांस फैट और केमिकल्स से भरे खाद्य पदार्थ बच्चों के नाजुक शरीर पर सीधा हमला करते हैं। दिल की धड़कन से लेकर पाचन तंत्र तक, हर अंग पर इसका असर पड़ता है। अहाना की मौत ने यह कड़वा सच उजागर कर दिया है कि यह 'धीमा ज़हर' कभी-कभी अचानक भी जान ले सकता है। यह सवाल उठना लाजमी है कि आखिर जिम्मेदार कौन है? क्या सिर्फ माता-पिता? या स्कूल? या फिर सरकार और खाद्य उद्योग? सच्चाई यह है कि यह सामूहिक विफलता है। माता-पिता की मजबूरी और अनभिज्ञता, स्कूलों की लापरवाही, सरकार की ढीली नीतियां और मुनाफे के पीछे भागता उद्योग सब मिलकर इस त्रासदी के जिम्मेदार हैं। जब स्कूल कैंटीनों में पिज्जा, बर्गर और कोल्ड ड्रिंक्स आसानी से उपलब्ध हों तो बच्चों को सेहतमंद विकल्प चुनने की सीख कैसे मिले? सरकार ने भले ही खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण के माध्यम से कुछ दिशानिर्देश जारी किए हों लेकिन जमीनी हकीकत अलग है। स्कूलों के आसपास जंक फूड की बिक्री पर रोक कागजों तक सीमित है। विज्ञापनों पर नियंत्रण की बातें भी खोखली साबित होती हैं, जब बच्चों के टीवी कार्यक्रमों और मोबाइल ऐप्स पर जंक फूड के प्रचार की बाढ़ आती है। क्या बच्चों की जान से बड़ा कोई मुनाफा हो सकता है? यह भी विडंबना है कि जिस देश में कुपोषण एक गंभीर समस्या है, वहीं दूसरी ओर जंक फूड से उपजा मोटापा और बीमारियां नई चुनौती बन चुकी हैं। यह दोहरी मार है—एक तरफ भूख, दूसरी तरफ गलत भोजन। अहाना की मौत इस विरोधाभास को और भी निर्मम तरीके से सामने लाती है। क्या हम ऐसा भारत बनाना चाहते हैं, जहां बच्चे या तो भूख से मरें या गलत खाने से? समाधान केवल शोक व्यक्त करने या कुछ दिनों की बहस तक सीमित नहीं होना चाहिए। सबसे पहले, जंक फूड को लेकर कड़े कानून लागू करने होंगे। स्कूलों और उनके आसपास जंक फूड की बिक्री पर सख्त और वास्तविक प्रतिबंध लगे। बच्चों को लक्षित विज्ञापनों पर पूर्ण रोक हो। पैकेटों पर बड़े और स्पष्ट चेतावनी संदेश अनिवार्य किए जाएं, जैसे तंबाकू उत्पादों पर होते हैं। यह संदेश सिर्फ लिखित नहीं, बल्कि चित्रात्मक और प्रभावी हों। दूसरा, स्कूलों की भूमिका बेहद अहम है। कैंटीनों में पौष्टिक और स्थानीय भोजन को बढ़ावा दिया जाए। पोषण शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए, ताकि बच्चे कम उम्र से ही सही और गलत भोजन में फर्क समझ सकें। अभिभावकों के लिए भी जागरूकता कार्यक्रम हों क्योंकि अक्सर सुविधा और बच्चों की जिद के आगे वे समझौता कर लेते हैं। तीसरा, समाज को भी आत्ममंथन करना होगा। जन्मदिन, पार्टी और उत्सवों में जंक फूड को 'स्टेटस सिंबल' मानने की सोच बदलनी होगी। घरों में पारंपरिक और संतुलित भोजन की संस्कृति को फिर से जीवित करना होगा। यह केवल स्वास्थ्य का सवाल नहीं बल्कि भविष्य की पीढ़ी को बचाने का संघर्ष है। अहाना अब लौटकर नहीं आएगी लेकिन उसकी मौत बेकार भी नहीं जानी चाहिए। यह घटना चेतावनी है—अगर अब भी नहीं चेते तो अगली खबर किसी और मासूम की हो सकती है। जंक फूड के खिलाफ लड़ाई केवल नीति की नहीं बल्कि नैतिकता की भी है। सवाल यह नहीं कि हमें क्या स्वादिष्ट लगता है, सवाल यह है कि हम अपने बच्चों को कैसा भविष्य देना चाहते हैं। यदि अहाना की मौत हमें जगाने में सफल होती है तो शायद यह त्रासदी किसी बदलाव की शुरुआत बन सके अन्यथा, यह भी उन खबरों में दब जाएगी जिन्हें हम पढ़कर कुछ देर दुखी होते हैं और फिर अगले विज्ञापन के साथ भूल जाते हैं। अब वक्त है कि जंक फूड के खिलाफ निर्णायक कदम उठाए जाएं वरना सेहत के साथ यह खिलवाड़ और भी मासूम जिंदगियां निगलता रहेगा।

बाबूलाल नागा (लेखक भारत अपडेट के संपादक हैं)

दिल्ली में जहरीली हवा की केवलादेव पर काली छाया

राजधानी दिल्ली की दमघोंटू हवा अब सिर्फ फेफड़ों को ही नहीं, बल्कि पर्यटन उद्योग को भी चोट पहुंचा रही है। विश्व प्रसिद्ध केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के लिए मशहूर भरतपुर, जो हर सर्दी में हजारों विदेशी पक्षी प्रेमियों और फोटोग्राफर्स के लिए स्वर्ग बन जाता है, इस बार दिल्ली के घने स्मॉग की मार झेल रहा है। बढ़ता प्रदूषण पर्यटकों के प्लान पर ग्रहण लगा रहा है। कई विदेशी मेहमान तो भारत आने का इरादा ही त्याग चुके हैं, जबकि जिन्होंने बुकिंग करा ली थी, वे भी इसे रद्द करा रहे हैं। स्थानीय होटल व्यवसायी बताते हैं कि इस सीजन में बुकिंग्स का ग्राफ तो ऊपर है और होटल लगभग हाउसफुल हैं, लेकिन विदेशी पर्यटकों की तादाद उम्मीद से काफी कम है। इसकी बड़ी वजह दिल्ली का प्रदूषण ही है। कई विदेशी टूरिस्ट भारत आने से कतरा रहे हैं, क्योंकि उन्हें डर है कि दिल्ली पहुंचते ही उनकी सेहत खराब हो जाएगी। इससे आगे की यात्रा का मजा किरकिरा हो जाएगा। साल 2024-25 में 6649 विदेशी पर्यटक भरतपुर पहुंचे थे। इंग्लैंड से आने वाली एक पर्यटक ने होटल में ठहरने की पूरी बुकिंग करा ली थी। सब कुछ तय था, लेकिन अचानक उनका मेल आया कि दिल्ली में इतना भयानक प्रदूषण है कि हमने पूरी भारत यात्रा ही कैंसल कर दी है। विदेशी पर्यटक ने स्पष्ट रूप से प्रदूषण को वजह बताया और बुकिंग रद्द करा ली। ऐसी कई बुकिंग्स इसी कारण रद्द हुई हैं। विदेशी टूरिस्ट्स, जो मुख्य रूप से बर्ड वॉचिंग और वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी के लिए भरतपुर आते हैं, इस बार स्मॉग के डर से प्लान बदल रहे हैं। हालांकि, इस कमी की भरपाई घरेलू पर्यटकों ने बखूबी कर दी है। होटल व्यवसायी कहते हैं कि यूथ और इंडियन टूरिस्ट्स की संख्या इस बार शानदार है। खासकर युवा ग्रूप्स और फैमिलीज बड़ी तादाद में आ रहे हैं। इसी वजह से भरतपुर के ज्यादातर होटल फुल चल रहे हैं। दिलचस्प बात यह है कि दिल्ली के प्रदूषण का एक उल्टा असर भी दिख रहा है। राजधानी और आसपास के इलाकों के लोग जहरीली हवा से राहत पाने के लिए भरतपुर जैसे स्वच्छ और हरे-भरे स्थलों की ओर रुख कर रहे हैं। दिल्ली वाले दो-तीन दिन के छोटे ब्रेक के लिए यहां आ रहे हैं। साफ हवा, पक्षियों की चहचहाहट और प्राकृतिक सुकून उन्हें खींच ला रहा है। भरतपुर के पर्यटन की रीढ़ माने जाने वाले केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में जनवरी और फरवरी का समय बर्डिंग के लिए सबसे उम्दा माना जाता है। इस दौरान सैकड़ों प्रजातियों के प्रवासी पक्षी यहां आते हैं। होटल व्यवसायी बताते हैं कि उनके पास फरवरी तक की एडवांस बुकिंग्स पहले से ही हैं। जनवरी-फरवरी बर्ड वॉचर्स और प्रोफेशनल फोटोग्राफर्स के लिए बेस्ट टाइम है। इन दोनों महीनों में अच्छी भीड़ रहना तय है। फिलहाल भरतपुर का पर्यटन कारोबार घरेलू पर्यटकों के दम पर सांस ले रहा है, लेकिन विदेशी मेहमानों की कमी लंबे समय में चिंता का विषय बन सकती है। दिल्ली का प्रदूषण अगर यों ही बढ़ता रहा तो न केवल राजधानी, बल्कि उसके आसपास के पर्यटन स्थल भी इसकी मार झेलते रहेंगे। उम्मीद है कि आने वाले दिनों में हवा साफ होगी और भरतपुर फिर से विदेशी पक्षी प्रेमियों से गुलजार हो उठेगा।

– राजेश खण्डेलवाल (लेखक लाडली मीडिया अवार्डी स्वतंत्र पत्रकार हैं)

दो टूक : मादुरो का साथ देकर ट्रंप से यूं ही नहीं टकरा रहे हैं रूस और चीन, जरा समझिये

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने जब वेनेजुएला के राष्ट्रपति मादुरो व उनकी पत्नी को उनके बेडरूम से आधी रात उठा लिया तो कई देशों को तो सांप सूंघ गया लेकिन चीन और रूस ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए ट्रंप को सीधी चुनौती दे डाली कि मादुरों को तुरंत रिहा करो। आखिर इस चुनौती के क्या मायने हैं और अमेरिका से जब कोई टकराने के बारे में सोच नहीं रहा तो चीन क्यों दो-दो हाथ करने पर उतारू हैं, यह हमें समझना होगा। सवाल है कि चीन और रूस वेनेजुएला के साथ क्यों खड़े हैं? क्या दोनों देश अमेरिका से दुश्मनी मोल ले रहे हैं, या इसके पीछे गहरी कूटनीतिक और आर्थिक रणनीतियां काम कर रही हैं? दरअसल वेनेजुएला बीते कुछ वर्षों से वैश्विक राजनीति का प्रमुख मैदान बना हुआ है। ऐसे में जब भी अमेरिका सैन्य हस्तक्षेप, आर्थिक प्रतिबंध या राजनीतिक दबाव के रूप में कोई आक्रामक कदम उठाता है तो रूस और चीन उसकी तीखी आलोचना करते आए हैं। ताजी आलोचना उसी पुराने क्रम को आगे बढ़ाती हुई दिखाई देती है. रूस और चीन दोनों लंबे समय से यह सार्वजनिक रूप से कहते आए हैं कि किसी भी संप्रभु देश की सरकार बदलने का अधिकार केवल उस देश के नागरिकों को है, किसी बाहरी शक्ति को नहीं। अमेरिका ने इराक, लीबिया, अफगानिस्तान, सीरिया और कई लैटिन अमेरिकी देशों में प्रत्यक्ष या परोक्ष हस्तक्षेप कर सरकारें बदलने की जो परंपरा बनाई, उसे रूस और चीन अपने लिए भी खतरनाक मिसाल मानते हैं। उनकी नजर में यदि वेनेजुएला में अमेरिकी हस्तक्षेप सफल होता है, तो यह सिद्धांत बन जाएगा कि जब भी किसी सरकार की नीतियां वॉशिंगटन को पसंद न आएं, तो आर्थिक प्रतिबंध, राजनीतिक अलगाव और सैन्य दबाव के जरिए उसे झुका दिया जाए। रूस और चीन दोनों ही खुद को ऐसी किसी भी भविष्य की स्थिति से बचाना चाहते हैं, इसलिए वे सिद्धांत के स्तर पर अमेरिकी हमलों और दखलंदाजी की कड़ी आलोचना करते हैं। अमेरिका का सबसे बड़ा औजार आर्थिक प्रतिबंध हैं जो अक्सर डॉलर और अमेरिकी वित्तीय तंत्र पर दुनिया की निर्भरता के कारण बेहद प्रभावी हैं। रूस और चीन अच्छी तरह समझते हैं कि आज वेनेजुएला है, कल वे खुद भी इसी तरह के प्रतिबंधों का और व्यापक पैमाने पर सामना कर सकते हैं। इसीलिए वे दोनों मिलकर ऐसे विकल्प तैयार कर रहे हैं जिनसे किसी देश को पूरी तरह अमेरिकी वित्तीय तंत्र पर निर्भर न रहना पड़े। वैकल्पिक पेमेंट सिस्टम, दो पक्षीय व्यापार में स्थानीय मुद्राओं का उपयोग और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के समानांतर नई व्यवस्थाएं, ये सब प्रयास अमेरिका की आर्थिक पकड़ को सीमित करने के लिए हैं। जब वेनेजुएला पर अमेरिकी प्रतिबंध लगते हैं और रूस और चीन उनकी आलोचना करते हुए वैकल्पिक व्यापार या कर्ज़ व्यवस्था मुहैया कराते हैं, तो वे सिर्फ वेनेजुएला की मदद नहीं करते, बल्कि दुनिया को दिखाते हैं कि अमेरिकी प्रतिबंधों को आंशिक रूप से निष्प्रभावी भी किया जा सकता है। रूस सैन्य सहयोग, सुरक्षा समझौते और रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। अमेरिकी हमले या दबाव के समय वेनेजुएला का साथ देना और उस पर हो रही सैन्य या राजनीतिक कार्रवाई की आलोचना करना, इसा व्यापक रणनीति का हिस्सा है। रूस और चीन, दोनों देशों की घरेलू राजनीति में पश्चिम विरोधी या कम से कम अमेरिका संदेहवादी रुझान काफ़ी प्रबल हैं। रूस में नाटो के विस्तार, यूक्रेन संकट और शीत युद्ध के बाद की नीतियों को लेकर अमेरिकी नेतृत्व के प्रति व्यापक अविश्वास है। चीन को अपने चारों ओर अमेरिकी सैन्य उपस्थिति, ताइवान के सवाल, व्यापार युद्ध और तकनीकी प्रतिबंधों से चुनौती महसूस होती है। ऐसे माहौल में यदि वेनेजुएला जैसे देश पर अमेरिका सैन्य हमले की आलोचना करके रूस और चीन अपने घरेलू समर्थकों को यह संदेश देते हैं कि उनकी सरकारें वैश्विक मंच पर अमेरिकी दबंगई के खिलाफ खड़ी हैं। इससे उनकी आंतरिक वैधता मजबूत होती है और वे खुद को स्वतंत्र और मजबूत राष्ट्रों के रूप में पेश कर पाते हैं, जो किसी भी दबाव के सामने झुकने को तैयार नहीं। पहली नजर में लग सकता है कि रूस चीन वेनेजुएला का साथ सिर्फ इसलिए दे रहे हैं क्योंकि वे अमेरिका के विरोधी हैं लेकिन वास्तविकता इससे कहीं ज़्यादा जटिल है। अमेरिका से टकराव उनकी नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वेनेजुएला रूस और चीन के लिए केवल एक छोटा देश नहीं, बल्कि एक ऐसा मोर्चा है जहाँ वे अमेरिका की वैश्विक नेतृत्व क्षमता को चुनौती दे सकते हैं और अपने लिए दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित कर सकते हैं। रूस और चीन अमेरिकी एकाधिकार को तोड़ना चाहते हैं। वेनेजुएला के विशाल तेल भंडार और आर्थिक संभावनाओं से उन्हें दीर्घकालिक लाभ दिखता है। डॉलर आधारित प्रतिबंधों के विकल्प खड़े करने की उनकी कोशिशें, वेनेजुएला जैसे मामलों से मजबूत होती हैं। लैटिन अमेरिका में बढ़ते रूसी चीनी प्रभाव के लिए यह एक अहम मंच है। घरेलू स्तर पर वे खुद को अमेरिका के दबाव के सामने झुकने से इनकार करने वाली ताकतों के रूप में दिखा पाते हैं। वेनेजुएला जैसे देश का साथ देना इसी रणनीति का हिस्सा है। जब रूस और चीन अमेरिकी हमले या प्रतिबंधों की पुरजोर आलोचना करते हैं, तो वे पूरी दुनिया को यह संदेश देते हैं कि अमेरिकी आदेश ही अंतिम नहीं है। वे यह दिखाना चाहते हैं कि कमजोर या घिरे हुए देश अकेले नहीं हैं, उनके पास वैकल्पिक साझेदार और समर्थन प्रणाली मौजूद है। इससे रूस चीन की साख उन देशों में बढ़ती है जो अमेरिका से असंतुष्ट हैं या उसके दबाव में खुद को असुरक्षित महसूस करते हैं। इसके पीछे दूसरा अहम कारण यह भी है कि चीन वेनेजुएला से बड़ी मात्रा में पेट्रोल लेता है और अब वेनेजुएला पर सीधा अमेरिकी नियंत्रण हो जायेगा। ऐसे में चीन का सीधा नुकसान भी होगा। वेनेजुएला दुनिया के सबसे बड़े सिद्ध तेल भंडार वाले देशों में है। भले ही वहां की अर्थव्यवस्था संकट में है लेकिन लंबी अवधि में उसके तेल संसाधन बेहद महत्वपूर्ण हैं। रूसी तेल और गैस कंपनियों ने वेनेजुएला में निवेश किया है। रूस को यह भी लाभ है कि यदि अमेरिका के प्रतिबंधों से वेनेजुएला पश्चिमी बाजार से कटता है, तो वह रूस और चीन जैसे दोस्त देशों को रियायती दरों पर तेल बिक्री को प्राथमिकता देगा। इससे रूस को ऊर्जा बाजार में रणनीतिक साझीदार मिलेगा और पश्चिम के दबाव के बावजूद वैकल्पिक आपूर्ति श्रंखलाएं बनती हैं। चीन विश्व का सबसे बड़ा ऊर्जा आयातक है। वह अपने लिए दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा चाहता है और विविध स्त्रोतों का नेटवर्क बनाता जा रहा है। वेनेजुएला के साथ क़र्ज़, निवेश और तेल खरीद के माध्यम से चीन से एक प्रकार का परस्पर निर्भर संबंध है। अमेरिकी दबाव बढ़ने पर वेनेजुएला के लिए चीन और भी अहम साथी बन जाता है और चीन को लंबे समय तक सस्ते या अनुकूल शर्तों पर तेल मिलता है। इस तरह अमेरिकी हमलों की आलोचना के साथ साथ रूस और चीन वास्तव में अपने आर्थिक और ऊर्ज़ा हितों की भी रक्षा कर रहे हैं।

- राजेश श्रीवास्तव

गिल्टी प्लेजर का राष्ट्रवाद : पूजा सत्ता करे, हम भोग करें?

बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा के मुकाबले अधर्मियों को सरकारी हिंदुत्व क्यों चाहिए, यह सवाल किसी आस्था या ईश्वर से टकराने नहीं आता, बल्कि उस नॅरेटिव (वैचारिक कथा) को समझने की कोशिश करता है, जिसे बड़ी होशियारी और फ़रेब (धोखा) के साथ गढ़ा गया है। इस कहानी में धर्म एक गिल्टी प्लेजर (अंतरात्मा को कचोटने वाला सुख) बन चुका है। यह वेद-पुराण के खिलाफ़ नहीं, बल्कि उस मेंटैलिटी (मानसिकता) की पड़ताल है, जहाँ आचरण नहीं, बल्कि भीड़ की ताक़त ही पुण्य की वैलिडेशन (वैध ठहराने की प्रक्रिया) बन जाती है। यहाँ आस्था साधना नहीं, एक डिस्प्ले (दिखावटी प्रदर्शन) है, और अधर्म को सत्ता के फ़ायदे में बदल दिया गया है। 1. ग्रंथविहीन आस्था और कर्मविहीन धर्म- आज की यह आस्था न वेद से संवाद करती है, न पुराण से। गीता के चार श्लोक याद नहीं, और उनके अर्थ जानने की क्यूरियोसिटी (जिज्ञासा) भी नहीं है। धर्म यहाँ अध्ययन, मनन या आत्मशोधन नहीं, बल्कि एक इवेंट (आयोजन) बन चुका है। दैनिक पूजन, जप, संयम और साधना ये सब मेहनत माँगते हैं, जबकि यह धर्म सुविधाजनक रास्ता चुनता है। गणेश पंडाल में उन्मत्त नाच, कांवड़ यात्रा में उफनता उन्माद, और कैमरे के सामने आस्था का डिस्प्ले (दिखावटी प्रदर्शन) यही धर्म का नया फ्रेमवर्क (ढांचा) है। यहाँ उपासना नहीं, बल्कि तमाशा है; निष्कपट भाव नहीं, बल्कि शोर है। धर्म का मकसद आत्मानुशासन था, मगर उसे एंट मनोरंजनमें बदल दिया गया है। इस ग्रंथविहीन आस्था में कर्म का कोई बोझ नहीं, इसलिए जवाबदेही भी नहीं। यहाँ धर्म एक आईडेंटिटी (पहचान) है, जिसे उत्सवों में ओढ़ लिया जाता है और निजी जीवन में उतार दिया जाता है। यही कारण है कि यह धर्म न नैतिकता सिखाता है, न इंसाफ़– यह सिर्फ़ भीड़ की तसल्ली और सत्ता की वैलिडेशन (वैध ठहराने की प्रक्रिया) बनकर रह गया है। 2. धर्म का आउटसोर्स मॉडल- अब धर्म निभाना व्यक्ति का फ़र्ज़ नहीं रहा। आस्था को सत्ता के हवाले आउटसोर्स (दूसरे के जिम्मे सौंप देना) कर दिया गया है। पाँच साल के लिए धर्म का एक कॉन्ट्रैक्ट सरकार से कर लिया गया है, जिसमें नागरिक की जवाबदेही स्थगित हो जाती है। प्रधानमंत्री का मंदिर जाना सामूहिक पुण्य का संकेत बनता है और मुख्यमंत्री का घंटा हिलाना भीड़ को सुकून देता है। इस समझौता में जनता निजी जीवन में लालच, हिंसा और भोग में डूबी रहती है, जबकि सत्ता आस्था की सर्विस देती रहती है। धर्म यहाँ विश्वास नहीं, बल्कि प्रतीक बन गया है। इस व्यवस्था में अधर्म को सत्ता की वैलिडेशन मिल जाती है और नागरिक आत्मानुशासन से मुक्त हो जाता है। यही कारण है कि यह मॉडल सुविधाजनक भी है और खतरनाक भी। 3. गिल्टी प्लेजर की राजनीति- यह राजनीति एक अजीब मनोवैज्ञानिक स्टेट (अवस्था) रचती है, जहाँ किसी दूसरे की बेइज़्ज़ती देखकर अपने दुःख हल्के लगने लगते हैं। महंगाई, बेरोज़गारी और बदइंतज़ामी जैसे असली सवाल उस सीन में ढक जाते हैं, जिसमें सौ मुसलमानों को सड़क पर नमाज़ से रोका जाता है और सौ करोड़ लोगों का प्रधानमंत्री लाइव टीवी पर खुले में पूजा करता दिखाई देता है। यह दृश्य भीतर एक गिल्टी प्लेजर (गलत होते हुए भी मिलने वाला सुख) पैदा करता है। इससे तसल्लीमिलती है कि 'हम सही पक्ष में हैं।' यह नशा इतना प्रभावी है कि इंसान अपने रोज़मर्रा के दुख भूल जाता है। इस राजनीति में पीड़ा का इलाज समाधान नहीं, बल्कि तुलना है–दूसरे की बेइज़्ज़ती देखकर अपने हालात स्वीकार कर लेना। यही फ़न सत्ता को मजबूत करता है और समाज को संवेदनहीन बना देता है। 4. अच्छे दिन से बोनस ट्रैप तक- शुरुआत एक सुंदर कल्पना से हुई थी–अच्छे दिन, दो करोड़ रोज़गार, तेज़ आर्थिक विकास और सुकून भरा जीवन। जनता ने भरोसा किया कि नौकरी, शिक्षा, राशन, मकान और आज़ादी जैसे बुनियादी हक़ मज़बूत होंगे लेकिन सच यह है कि कोई भी सरकार यह सब रातोंरात नहीं दे सकती। यहीं से एक नया फ़रेब सामने आया। कहा गया कि अगर विकास के साथ हिंदू होने की उच्चता भी मिल जाए, तो यह अतिरिक्त बोनस होगा। यही वह ट्रैप (जाल) था, जिसमें समाज फँस गया। बोनस का शोर इतना तेज़ हुआ कि वही बेसिक मान लिया गया, जबकि असली ज़रूरतों को नज़रअंदाज़ किया जाने लगा। इस प्रक्रिया में नागरिक ने विकास नहीं, पहचान को प्राथमिकता दे दी और सत्ता ने इसी फ़ायदे को राजनीति का स्थायी औज़ार बना लिया। 5. बहुसंख्या का गणित- हिंदू दो-चार नहीं, बल्कि लगभग सौ करोड़ हैं। इतनी बड़ी आबादी को समान प्रिविलेज (विशेषाधिकार) देना व्यवहारिक नहीं है। इसलिए सत्ता ने एक तरीक़ा खोज निकाला–सबको ऊपर उठाने के बजाय, कुछ को नीचे धकेल दो।

संकलन कर्ता : हगामी लाल मेघवंशी, रिटायर्ड डिप्टी कमिश्नर, आध्यात्मिक और सामाजिक चिंतक, मो. 98292-30966

जब किसी समुदाय को डिस्क्वालिफाई (अयोग्य ठहराना) कर दिया जाता है, तो बहुसंख्या को अपने आप उच्चता (श्रेष्ठता का भाव) महसूस होने लगता है। यह एक चालाक फ़ॉर्मूला है। इसमें वास्तविक अधिकार या संसाधन नहीं दिए जाते, बल्कि अहसास बेचा जाता है। जिनके पास रोज़गार, शिक्षा और सुरक्षा नहीं है, उन्हें यह भरोसा दे दिया जाता है कि वे कम से कम ऊपर हैं। यह सियासत मनोवैज्ञानिक तौर पर कारगर साबित हुई। बहुसंख्या ने इसे स्वीकार कर लिया, क्योंकि इससे बिना कुछ पाए भी संतोष मिल गया। यही कारण है कि यह गणित काम कर गया और बराबरी का सवाल हाशिये पर चला गया। 6. धर्म, उच्चता और वोट– एक सिनोनिम- अब राजनीति में धर्म, उच्चता और वोट–तीनों एक ही सिनोनिम (समानार्थी अर्थ) में इस्तेमाल होने लगे हैं। धर्म की रक्षा का मतलब हिंदू की उच्चता बताया जाता है, और हिंदू की उच्चता का स्वाभाविक निष्कर्ष भाजपा को वोट देना बना दिया गया है। इस नैरेटिव (गढ़ी हुई कथा) में आस्था एकपहचान बन जाती है, और नागरिक का राजनीतिक फ़ैसला धार्मिक कर्तव्य की तरह पेश किया जाता है। इस प्रक्रिया का मापदंड तय है– मुसलमान का परसिक्यूशन (उत्पीड़न) और एब्यूज (अपमान/गाली-गलौज)। जितना अधिक विरोध, उतनी अधिक धार्मिक प्रमाणिकता मानी जाती है। यह फ़ॉर्मूला बहुसंख्या को भावनात्मक तसल्ली देता है कि वह धर्म की रक्षा कर रही है, जबकि असल मुद्दे–रोज़गार, शिक्षा और न्याय–चुपचाप पृष्ठभूमि में धकेल दिए जाते हैं। इस तरह वोट आस्था नहीं, बल्कि डर और नफ़रत से निर्देशित होने लगता है। 7. टार्गेट की राजनीति- इस राजनीति की सबसे बड़ी प्रॉब्लम यह है कि मुसलमान हर जगह नहीं हैं। क्रिश्चियन (ईसाई समुदाय) भी संख्या में सीमित हैं। इसलिए सत्ता को अगला टार्गेट तलाशना पड़ता है। अगला बड़ा समुदाय सिख है। किसान आंदोलन के दौरान हम इसका ट्रेलर देख चुके हैं, जहाँ असहमति को देशद्रोह से जोड़ा गया। अब बेअदबी की घटनाओं की पिक्चर दिखाई जा रही है। आगे की रणनीति साफ़ है–इस प्रक्रिया से हिंदू वोट का एकीकरण होगा। जब किसी समुदाय को संदेह के घेरे में रखा जाता है, तो बहुसंख्या अपने आप संगठित हो जाती है। इसके बाद हर वह कम्युनिटी जो संख्या में कम है और वोट के हिसाब से इग्नोर की जा सकती है, संभावित शिकार बन जाती है। यह सियासत असुरक्षा पैदा कर सत्ता को मज़बूत करती है, जबकि सामाजिक सौहार्द को धीरे-धीरे कमजोर कर देती है। 8. नफ़रत को सार्वजनिक शर्त बनाना- अब राजनीति की कंडीशन साफ़ कर दी गई है। विपक्ष से खुले तौर पर पूछा जा रहा है–तुम मुस्लिम विरोधी क्यों नहीं हो? इस नैरेटिव में तटस्थ रहना संभव नहीं छोड़ा गया। विरोधी नहीं हो, तो समर्थक माने जाओगे। और मुसलमान का समर्थक होना अब पाप नहीं, बल्कि जुर्म घोषित कर दिया गया है। यह सोच फ़रेब पर टिकी है, जहाँ नफ़रत को नैतिकता का रूप दिया जा रहा है। असहमति को गुनाह और घृणा को देशभक्ति की तरह पेश किया जा रहा है। इस प्रक्रिया में राजनीति विचार नहीं, बल्कि भावनात्मक प्रेशर से संचालित होने लगती है। 9. पुण्य का नया रास्ता- अब पूरा फ़ॉर्मूला बेहद सरल कर दिया गया है। पुण्य कमाना है–तो भाजपा को वोट दो। दूसरों को सताना है–तो भाजपा को वोट दो। खुद मौज करो और सरकार तुम्हारी तरफ़ से पूजा करे–तो भी भाजपा को वोट दो। यह सौदा नागरिक को कर्म से मुक्त करता है और सत्ता को नैतिक वैलिडेशन (वैध ठहराने की प्रक्रिया) देता है। यहाँ धर्म विश्वास नहीं, बल्कि लाइसेंस बन जाता है। यही नया रास्ता है, जहाँ पुण्य मेहनत से नहीं, बल्कि वोट से अर्जित किया जा रहा है। भारत की जनता आज जिन वास्तविक समस्याओं का सामना कर रही है, उनमें रोज़गार, महंगाई और भाईचारा सबसे महत्वपूर्ण हैं। रोज़गार - स्थायी नौकरियों की कमी और बेरोज़गारी का बढ़ता स्तर। महंगाई - रोज़मर्रा की ज़रूरतों की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी, जिससे जीवन यापन कठिन हो गया है। भाईचारा - सामाजिक और धार्मिक तनाव से बिगड़ते सामुदायिक संबंध, आपसी विश्वास और सहयोग में कमी। इन मुद्दों के मुकाबले, सत्ता द्वारा पेश किया गया सरकारी हिंदुत्व केवल दिखावा और गिल्टी प्लेजर है। असली ज़रूरतें–रोज़गार, महंगाई और सामाजिक सामंजस्य–पृष्ठभूमि में छूट गई हैं। यही जनता का असली दऊःख और दुर्भाग्य है।

– स्रोत और संदर्भ : मनीष सिंह की फेसबुक पोस्ट एवं बीबीसी, द हिंदू, एबीपी न्यूज़, इंडियन एक्सप्रेस, टाइम्स ऑफ़ इंडिया, सरकारी रिपोर्ट, राजनीतिक विश्लेषण, सर्वेक्षण, मीडिया लेख, शोधपत्र।

सड़क दुर्घटना मुआवज़ा और संविधान : आय से परे मानवीय गरिमा की तलाश

सड़क दुर्घटना मुआवज़े की तकनीकी व्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय संविधान के मूल दर्शन समता, गरिमा और कल्याणकारी राज्य से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारत में हर वर्ष लाखों सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं और इनमें हज़ारों लोग अपनी जान गंवाते हैं या स्थायी रूप से अपंग हो जाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में मुआवज़ा केवल आर्थिक राहत नहीं होता, बल्कि यह राज्य द्वारा पीड़ित के जीवन-मूल्य को स्वीकार करने और उसकी गरिमा को पुनर्स्थापित करने का प्रयास भी होता है। मोटर वाहन अधिनियम के अंतर्गत वर्तमान मुआवज़ा प्रणाली मुख्यतः आय-आधारित है, जो पहली दृष्टि में तर्कसंगत लग सकती है, लेकिन गहराई से देखने पर यह संवैधानिक मूल्यों के साथ कई गंभीर प्रश्न खड़े करती है। मोटर वाहन अधिनियम में अपनाई गई 'मल्टीप्लायर पद्धति' पीड़ित की आय, आयु और आश्रितों की संख्या के आधार पर मुआवज़ा निर्धारित करती है। इसका उद्देश्य यह माना गया कि दुर्घटना से पूर्व जिस आर्थिक स्थिति में परिवार था, उसे यथासंभव पुनर्स्थापित किया जा सके। किंतु इस पद्धति की सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह मनुष्य के जीवन को उसकी बाज़ार-योग्यता से जोड़ देती है। एक उच्च वेतन पाने वाले व्यक्ति की मृत्यु या अपंगता पर लाखों या करोड़ों रुपये का मुआवज़ा तय होता है, जबकि एक दिहाड़ी मज़दूर, रिक्शा चालक या असंगठित क्षेत्र के श्रमिक के लिए यह राशि बहुत कम होती है। इस प्रकार कानून अनजाने में यह संदेश देता है कि किसी व्यक्ति का जीवन उसकी आय के अनुपात में अधिक या कम मूल्यवान है। यह दृष्टिकोण सीधे-सीधे संविधान के अनुच्छेद 14 में निहित 'कानून के समक्ष समानता' के सिद्धांत को चुनौती देता है। अनुच्छेद 14 केवल समान व्यवहार की बात नहीं करता, बल्कि यह मनमाने और असंगत वर्गीकरण पर रोक भी लगाता है। जब दो नागरिक समान परिस्थितियों में सड़क दुर्घटना के शिकार होते हैं, लेकिन केवल आय के आधार पर उनके जीवन का मूल्य अलग-अलग तय किया जाता है, तो यह एक प्रकार का संवैधानिक विरोधाभास उत्पन्न करता है। राज्य एक ओर सभी नागरिकों को समान मानता है, दूसरी ओर मुआवज़े के स्तर पर उनके बीच आर्थिक हैसियत के आधार पर भेद करता है। इस व्यवस्था का सबसे गंभीर प्रभाव उन वर्गों पर पड़ता है जिनकी आय औपचारिक रूप से दर्ज नहीं होती या जिन्हें 'अर्जक' ही नहीं माना जाता। गृहिणियाँ, बच्चे, वृद्ध और छात्र अक्सर 'काल्पनिक आय' के आधार पर मुआवज़ा प्राप्त करते हैं। यह काल्पनिक आय वास्तविक सामाजिक योगदान को प्रतिबिंबित नहीं करती। एक गृहिणी का श्रम घर के भीतर अदृश्य रहता है, लेकिन वह परिवार और समाज की आर्थिक संरचना को संभालने में केंद्रीय भूमिका निभाती है। सर्वोच्च न्यायालय ने किर्ति बनाम ओरिएंटल इंश्योरेंस (2021) जैसे मामलों में यह स्पष्ट किया है कि गृहिणी का कार्य केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि आर्थिक मूल्य भी रखता है। इसके बावजूद, व्यवहार में मुआवज़े की गणना में यह योगदान अभी भी पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं होता। आय-आधारित मुआवज़ा प्रणाली का एक और संवैधानिक आयाम अनुच्छेद 21 से जुड़ा है, जो 'जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार' की गारंटी देता है। सर्वोच्च न्यायालय ने समय-समय पर यह स्पष्ट किया है कि जीवन का अर्थ केवल शारीरिक अस्तित्व नहीं, बल्कि गरिमापूर्ण जीवन है। जब किसी व्यक्ति की मृत्यु या अपंगता के बाद उसका जीवन-मूल्य केवल गणितीय सूत्रों और आय-स्लैब तक सीमित कर दिया जाता है, तो यह उसकी अंतर्निहित गरिमा को कमतर आँकने जैसा प्रतीत होता है। जीवन को केवल आर्थिक हानि के चश्मे से देखना उस संवेदनशील पीड़ा, मानसिक आघात और सामाजिक असुरक्षा को नज़रअंदाज़ करता है, जिसका सामना पीड़ित परिवार को करना पड़ता है। इस संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि 'न्यायसंगत मुआवज़ा' की अवधारणा स्वयं सर्वोच्च न्यायालय द्वारा व्यापक अर्थों में व्याख्यायित की गई है। न्यायालय ने माना है कि मुआवज़ा केवल आय-हानि की भरपाई नहीं, बल्कि भावनात्मक क्षति, मानसिक वेदना और भविष्य की अनिश्चितता के लिए भी होना चाहिए। फिर भी, मौजूदा कानूनी ढांचा इन अमूर्त पहलुओं को पर्याप्त स्थान नहीं देता। परिणामस्वरूप, मुआवज़ा प्रक्रिया अक्सर एक यांत्रिक गणना बनकर रह जाती है, जिसमें मानवीय संवेदना का अभाव दिखाई देता है। यदि हम अन्य परिवहन कानूनों से तुलना करें, तो यह असमानता और भी स्पष्ट हो जाती है। रेलवे अधिनियम और विमानन से जुड़े कानूनों में दुर्घटना की स्थिति में एक समान, निश्चित मुआवज़ा निर्धारित है, जो पीड़ित की आय या सामाजिक स्थिति से स्वतंत्र होता है। उदाहरण के लिए, रेलवे दुर्घटनाओं में मृत्यु पर एक निश्चित राशि दी जाती है। यह व्यवस्था यह स्वीकार करती है कि सुरक्षा का

प्रियंका सौरभ, रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस, कवयित्री, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार

अधिकार और जीवन का मूल्य सभी नागरिकों के लिए समान है। सड़क परिवहन क्षेत्र में इस तरह की एकरूपता का अभाव यह प्रश्न उठाता है कि क्या भारत में 'सुरक्षा का अधिकार' परिवहन माध्यम के अनुसार बदल जाता है। एक कल्याणकारी राज्य में राज्य की भूमिका केवल न्यायालयों के माध्यम से विवाद निपटाने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसे सक्रिय रूप से यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक नागरिक को न्यूनतम गरिमा के साथ जीवन और मृत्यु दोनों में संरक्षण मिले। इस दृष्टि से सड़क दुर्घटना मुआवज़ा प्रणाली में सुधार समय की आवश्यकता है। सबसे पहले, एक उच्च और अनिवार्य न्यूनतम मुआवज़ा राशि तय की जानी चाहिए, जो 'नो-फॉल्ट लायबिलिटी' के सिद्धांत पर आधारित हो। इससे यह सुनिश्चित होगा कि आय चाहे कुछ भी हो, प्रत्येक पीड़ित परिवार को एक सम्मानजनक आधारभूत सहायता मिले। इसके साथ ही, गैर-अर्जक वर्गों के योगदान का यथार्थवादी मूल्यांकन किया जाना चाहिए। गृहिणियों, बच्चों और वृद्धों के लिए मुआवज़ा निर्धारित करते समय केवल काल्पनिक आय के बजाय उनके सामाजिक, देखभाल और भावनात्मक योगदान को भी महत्व दिया जाना चाहिए। यह सुधार न केवल लैंगिक न्याय की दिशा में कदम होगा, बल्कि सामाजिक वास्तविकताओं के अधिक निकट भी होगा। मुद्रास्फीति और जीवन-यापन की बढ़ती लागत को देखते हुए मुआवज़ा राशियों का समय-समय पर स्वचालित संशोधन भी आवश्यक है। वर्तमान में 'नोटशनल इनकम' और अन्य पारंपरिक मदों की राशि वर्षों तक अपरिवर्तित रहती है, जिससे उनका वास्तविक मूल्य घटता जाता है। एक गतिशील व्यवस्था, जो आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को समायोजित कर सके, अधिक न्यायसंगत होगी। इसके अतिरिक्त, मुआवज़ा प्रणाली को केवल मृत्यु के बाद भुगतान तक सीमित नहीं रखना चाहिए। दुर्घटना के तुरंत बाद मिलने वाली चिकित्सा सहायता और नकद-रहित उपचार की व्यवस्था भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। 'गोल्डन आवर' में समय पर इलाज कई जानें बचा सकता है। हाल के वर्षों में शुरू की गई नकद-रहित उपचार योजनाएँ इस दिशा में सकारात्मक कदम हैं, लेकिन इन्हें और व्यापक तथा प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। अंततः, सड़क दुर्घटना मुआवज़े का प्रश्न केवल कानून का नहीं, बल्कि नैतिकता और संवैधानिक दृष्टि का भी है। यदि हम मनुष्य के जीवन को केवल उसकी आय से तौलते हैं, तो हम अनजाने में सामाजिक असमानताओं को कानूनी मान्यता दे देते हैं। एक सच्चा कल्याणकारी राज्य वह होता है जो यह स्वीकार करे कि हर जीवन समान रूप से मूल्यवान है, चाहे वह किसी कॉर्पोरेट कार्यालय में काम करने वाला हो या सड़क किनारे मेहनत करने वाला मज़दूर। आय-आधारित गणना को पूरी तरह समाप्त करना संभव न भी हो, तो कम से कम उसे एक समान, गरिमापूर्ण आधारभूत मुआवज़े के साथ संतुलित किया जाना चाहिए। इस प्रकार, 'नुकसान के अंकगणित' को 'न्याय की नैतिकता' के अधीन करना ही भारतीय संविधान की आत्मा के अनुरूप होगा। सड़क दुर्घटना मुआवज़ा प्रणाली में ऐसे सुधार न केवल अनुच्छेद 14 और 21 के मूल्यों को सुदृढ़ करेंगे, बल्कि नागरिकों के राज्य पर विश्वास को भी गहरा करेंगे। एक ऐसी व्यवस्था, जो हर जीवन को समान सम्मान दे, वास्तव में लोकतांत्रिक और कल्याणकारी भारत की पहचान होगी।

बुद्ध वाणी

तिकपट्ठान की चौबीसवीं कड़ी : अविगतपच्चयो'ति

'**चत्तारो** खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं अविगतपच्चयेन पच्चयो। चत्तारो महाभूता अञ्ञमञ्ञं अविगतपच्चयेन पच्चयो। ओक्कन्तिक्खणे नामरूपं अञ्ञमञ्ञं अविगतपच्चयेन पच्चयो। चित्तचेतसिका धम्मा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। महाभूता उपादारूपानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। सोतायतनं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। धानायतनं धानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। जिह्वायतनं जिह्वाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। कायायतनं कायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। रूपायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। सद्दायतनं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। गन्धायतनं धानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। रसायतनं जिह्वाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। फोट्ठब्बायतनं कायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। यं रूपं निस्साय मनोधातु च मनोविञ्ञाणधातु च वत्तन्ति, तं रूपं मनोधातुया च मनोविञ्ञाणधातुया च तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो ति।' अविगत प्रत्यय- चारों अरूपी स्कंध एक दूसरे के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चारों महाभूत एक दूसरे के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। प्रतिसंधि के क्षण में नाम व रूप एक दूसरे के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चित्त चैतसिक धर्म चित्त से उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। महाभूत उद्भूत रूपों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चक्षु आयतन चक्षुविज्ञानधातु व उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। श्रोत्र आयतन श्रोत्रविज्ञानधातु व उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। घ्राण आयतन- घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। जिह्वा आयतन जिह्वाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। काय आयतन कायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। रूप आयतन चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। शब्द आयतन श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। गंध आयतन घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। रस आयतन जिह्वाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। स्प्रष्टव्य आयतन कायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। रूप आयतन, शब्द आयतन, गंध आयतन, रस आयतन और स्प्रष्टव्य आयतन मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। जिस रूप के आश्रय से मनोधातु और मनोविज्ञानधातु स्थित होते हैं, वह रूप मनोधातु और मनोविज्ञानधातु और उनसे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। नमो बुद्धाय।

– रेफ. तिकपट्ठान सुत्त

– संकलनकर्त्ताः– रमेश बैनकर, 9998733336/9924433336

सामयिक व्यंग्य : कुत्तों की गिनती

बेसिक शिक्षा विभाग ने ऐतिहासिक आदेश जारी कर परिषदीय स्कूलों के शिक्षकों को सड़कों पर घूमने वाले आवारा कुत्तों की खोज और ऐसे क्षेत्रों को चिह्नित करने का पावन दायित्व सौंपा है जहां पर कुत्तों का आतंक है। आखिरकार, पढ़ाना-लिखाना तो कोई भी कर लेगा लेकिन कुत्तों की गिनती और उनसे इंसानों को बचाने जैसे राष्ट्रीय महत्व का कार्य केवल शिक्षक ही कर सकते हैं। दरअसल कुत्तों को लेकर हमारा समाज दो धड़ों में बंटा हुआ है। पहली श्रेणी वाले लोग किसी भी तरह के कुत्तों से बचना चाहते हैं जबकि दूसरी श्रेणी में आने वाले लोग आवारा कुत्तों तक को बचाने के लिए उनके प्रवक्ता बनकर आंदोलन पर उतर आते हैं। कुछ लोगों के लिए उनका कुत्ता ब्रुनो, टॉमी या शेरु होता है - क्यूट, लविंग, केयरिंग और इंटेलीजेंट। ऐसे लोग दूसरों से भी यह उम्मीद करते हैं कि बाकी सब भी उनके कुत्ते- ब्रुनो, टॉमी या शेरू को उनकी नजर से ही देखें। दूसरी श्रेणी में आने वाले लोग हर तरह के कुत्ते को कुत्ता ही समझते हैं, भले ही आप उन्हें अलसेशियन, जर्मन शेफर्ड, रोटवेलर और देसी कुत्ते के बीच का फ़र्क समझाने में कितनी ही माथापच्ची कर लें। अच्छा तो यह होता कि कुत्तों की गणना के साथ-साथ कुत्ता प्रेमियों और कुत्ते से आतंकित लोगों की भी गणना कर ली जाती। फिर दोनों के बीच एक राष्ट्रीय सुलह सम्मेलन आयोजित किया जाता जिसमें यह तय होता कि आखिर कुत्तों का भविष्य क्या होना चाहिए? समाज में कुत्ता प्रेमियों और कुत्तों से नफरत करने वालों का एक साथ बना रहना सामाजिक वैमनस्य का कारण बन सकता है। समाज की भलाई इसी में है कि सब लोग मिल-जुल कर रहें। इसके लिए जागरूकता रैली, नुक्कड़ नाटक, पोस्टर प्रतियोगिता और काउंसलिंग कैंप की जरूरत होगी। शिक्षक इस काम के लिए सबसे उपयुक्त सिद्ध हो सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे हर दूसरे काम के लिए सिद्ध होते हैं। आतंक तो बंदरों ने भी कम नहीं मचा रखा। पूरे कबीले के साथ वे आपके घर में बिना आमंत्रण के धावा बोल देते हैं और नुकसान करके चले जाते हैं। क्या ऑफिस, क्या स्कूल-कॉलेज, क्या अस्पताल और क्या रेलवे स्टेशन, उनका आतंक हर जगह फैला है। कुछ जगहों पर लाल रंग के बंदरों के आतंक का मुकाबला करने के लिए काले रंग वाले बंदरों के कट आउट लगाए गए हैं। बंदर तो बंदर ही होता है। कम से कम उन्हें तो अलग-अलग रंग में न बांटकर रंगभेद समाप्त किया जा सकता है। जैसे कुत्तों को पालतू बना कर उनका समाजीकरण किया जा चुका है, वैसे ही बंदरों को पालतू बनाकर उनका संरक्षण जरूरी है। बंदर को इंसान का पूर्वज कहा जाता है। पूर्वजों की पहचान और गणना की जिम्मेदारी भी शिक्षकों को ही मिलनी चाहिए। इंसानों को समझना है तो बंदरों को समझना जरूरी है। समझ, समाजीकरण और सद्भाव संवर्धन के काम को शिक्षकों से बेहतर और कौन अंजाम दे सकता है? बंदर और कुत्तों के अलावा समस्या छुट्टा साँड़ों और नीलगायों से भी होती है। सांड को अगर छुट्टा छोड़ दिया जाए तो वह बिना किसी बात के किसी को भी सींग मार सकता है। नीलगाय खड़ी फसल को नष्ट कर देती है और कई मामलों में सड़क दुर्घटना का कारण भी बनती है। दीमक, सांप, चूहे या तो इंसानों का नुकसान करते हैं या फिर सामान बर्बाद कर देते हैं। भेड़ियों की पहचान थोड़ा मुश्किल काम है। वैज्ञानिक भेड़िये को कुत्ते की प्रजाति के अंतर्गत रखते हैं। कुछ भेड़िए इंसानों की खाल में छिपे हो सकते हैं। समाज को बचाने के लिए भेड़ियों की सही पहचान जरूरी है। इस नाजुक कार्य के लिए भी शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण देकर तैनात किया जा सकता है। कुत्ते अपना भाग्य मनाएं कि उन्हें गिनने में इतनी तत्परता दिखाई जा रही है। इंसानों की गिनती ड्यू होने के पांच साल बाद तक भी नहीं हो पाई। जो इंसान से ऊपर उठकर मतदाता हो गए, वे इस मामले में भाग्यशाली हैं। परिषदीय विद्यालयों के शिक्षक बीएलओ बनकर उनका एसआईआर करने में व्यस्त हैं। प्राथमिक स्कूलों के बच्चे अभी भले ही प्राथमिकता का विषय न हों, जब बड़े होकर मतदाता बनेंगे तब शिक्षकों के ध्यानाकर्षण का केंद्र बन ही जायेंगे। अगर सदियों से गधों को इंसान बनाने की जिम्मेदारी शिक्षकों ने उठाई है तो आवारा कुत्तों, सांपों, चूहों, नीलगाय, बंदरों और भेड़ियों से समाज को बचाने का फर्ज भी शिक्षकों को ही निभाना चाहिए। इसे उनकी योग्यता का विस्तार समझा जाए, नौकरी का अपमान नहीं। इसी साल मध्य प्रदेश ने आँकड़े जारी कर बताया था कि गधों की संख्या तेजी से कम होती जा रही है। देश में गधों की घटती संख्या गंभीर चिंता का विषय है। राष्ट्रीय स्तर पर गधों की स्थिति का सही आकलन करने के लिए अखिल भारतीय गधा संवर्धन परियोजना चलाई जानी चाहिए जिससे पूरे देश में गधों की स्थिति को बेहतर बनाने का ब्लू प्रिंट तैयार किया जा सके। गधों की पहचान और उनकी गिनती करने के लिए शिक्षकों से बेहतर और कौन हो सकता है? समाज सुधार के लिए जरूरी है कि समस्या की सही तरीके से पहचान हो सके। समस्या के सटीक आकलन के लिए डाटा चाहिए, आखिर नीतियां तो डाटा के ही अनुसार बनेंगी। बाबू लोगों के पास पहले से ही इतना काम है कि उन्हें काम करने का वक्त नहीं मिल पा रहा। ऐसे में समस्या से निबटने का सबसे बढ़िया उपाय यह है कि शिक्षकों को ही काम पर लगा दो। आखिर जब भारत विश्व गुरु बन चुका है तो उसके गुरुओं में यह योग्यता होनी ही चाहिए कि वे पढ़ाई लिखाई के अलावा चुनाव ड्यूटी, जनगणना, मतगणना, पशु गणना, कुत्ता गणना, गधा गणना, मिड डे मील, ड्रेस का वितरण, शौचालय की सफाई, दुल्हन का मेक अप, फॉलिक एसिड की टेबलेट का वितरण, किसानों को मोटे अनाज की पैदावार बढ़ाने को प्रोत्साहित करना, संचारी व कृमि रोगों से बचाव करना हेतु जागरूकता रैलियाँ निकालना, पोलियो ड्रॉप पिलाने इत्यादि के साथ मोबाईल एप के माध्यम से हर गतिविधि को दर्ज कर अपडेट करते रहें। यह उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का नमूना भर है। जब शिक्षकों के लिए साल भर केवल अलग अलग तरह की गणना का ही काम बचा है, तो शिक्षा विभाग का नाम बदल कर गणना विभाग कर देना चाहिए और शिक्षकों को उनके दायित्वों के अनुसार गणना मित्र, गणना वीर, गणना सहायक, गणना सुपरवाइजर, सहायक गणना अधिकारी, प्रधान गणना अधिकारी और गणनाधीश इत्यादि का नाम रख देना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह होना चाहिए कि विद्यालयों का नाम गणना केंद्र करके पठन पाठन को को-करिकुलर गतिविधि घोषित कर दिया जाए।

पीयूष त्रिपाठी

राज विचार

प्रत्येक शिशु एक संदेश लेकर आता है कि भगवान मनुष्य को लेकर हतोत्साहित नहीं है।- रविन्द्रनाथ टैगोर

www.rajexpress.com

पंचांग राशिफल

7 जनवरी 2026, दिन बुधवार, माघ मास कृष्ण पक्ष पंचमी तिथि, विक्रम संवत 1982, शक संवत 1947। **राहु काल-** दोपहर 12:00 से 1:30 तक। **सूर्योदय कालीन ग्रह विचार-** सूर्य धनु राशि में, चंद्र सिंह राशि में, मंगल धनु राशि में, बुध धनु राशि में, गुरु मिथुन राशि में, शुक्र धनु राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुंभ राशि में और केतु सिंह राशि में रहेगा। **सूर्योदय कालीन नक्षत्र विचार-** सुबह प्रातः काल सिंह राशि का नक्षत्र मघा का तृतीय चरण प्रारंभ होगा और इसका नक्षत्र पाया रजत रहेगा। प्रातः 10:30 बजे सिंह राशि का नक्षत्र मघा का चतुर्थ चरण प्रारंभ होगा और इसका नक्षत्र पाया रजत रहेगा। दोपहर 4:30 बजे सिंह राशि का नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी का प्रथम चरण प्रारंभ होगा और इसका नक्षत्र पाया रजत रहेगा। रात्रि 10:30 बजे सिंह राशि का नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी का द्वितीय चरण प्रारंभ होगा और इसका नक्षत्र पाया रजत रहेगा। **योग-** आयुष्मान- **करण-** कौलव। **नक्षत्र के अनुसार राशि नाम अक्षर-** मू, मे, मो, टा, **आराधना का मंत्र-**।। प्रणम्य शिरसा देवं गौरी विनायकम्। भक्तावासं स्मेर नित्यमाय: कामार्थसिद्धये।।

- **मेष राशि:-** समय की अनुकूलता लगातार बनी हुई है, कार्यक्षेत्र बढ़िया रहेगा, प्रेम संबंध शानदार बने रहेंगे।
- **वृषभ राशि:-** सितारों की अनुकूलता लगातार आपके पक्ष में आ चुकी है, विरोधी पक्ष कमजोर रहेगा, कामकाज बढ़िया रहेगा।
- **मिथुन राशि:-** समय आज से सामान्य हो रहा है, तनाव और परेशानियों में कमी आ सकती है, परंतु जरूरी काम अभी भी करने से बचें।
- **कर्क राशि :-** समय कमजोर हो रहा है, अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होने से मन तनाव से ग्रस्त रह सकता है, प्रेम-संबंधों से बचें।
- **सिंह राशि:-** सितारे आज से आप के पक्ष में आ रहे हैं, परेशानियां कम होंगी, लोग आपकी सहायता करेंगे।
- **कन्या राशि:-** समय आज दोपहर से शुभ हो रहा है, सुबह मन अशांत रह सकता है। बहस करने से बचें शाम से समय बेहद शानदार है।
- **वृश्चिक राशि:-** समय की अनुकूलता जारी है, जितने आपके आवश्यक कार्य हैं, एक-दो दिन में अवश्य कर लें, प्रॉपर्टी से जुड़े हुए कार्यों में लाभ होगा।
- **धनु राशि:-** सितारे आज दोपहर बाद से बेहद शुभ होने जा रहे हैं, जितने जरूरी काम हैं दोपहर बाद ही करें, माता से जुड़े हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।
- **मकर राशि:-** सितारों की प्रतिकूलता लगातार आपके पक्ष में बनी रहने के चलते कामकाज बाधित हो रहे हैं, पर चिंता ना करें। शाम से समय स्वता ही ठीक होगा।
- **कुंभ राशि:-** ग्रहों की अनुकूलता आज पूरे दिन भर बनी रहेगी, इसका भरपूर लाभ उठाकर अपने जरूरी निर्णय और कार्य तेजी से संपन्न करें।
- **मीन राशि:-** समय बेहद शानदार बना हुआ है, स्वास्थ्य बढ़िया रहेगा। कामकाज बढ़िया रहेगा प्रेम-संबंध शानदार रहेंगे।
- **तुला राशि:-** समय की अनुकूलता आज बेहद शानदार बनी रहेगी, लोग आपकी प्रशंसा करेंगे, विरोधी पक्ष कमजोर रहेंगे।

संपादकीय

टैरिफ दबाव में भारत की ऊर्जा परीक्षा

मौजूदा दौर में वैश्विक व्यवस्था एक ऐसे द्वंद्व से गुजर रही है, जहां व्यापार, ऊर्जा और भू-राजनीति के बीच की रेखाएं लगातार धुंधली होती जा रही हैं। अमेरिकी टैरिफ की धमकियों और रूसी तेल आयात को लेकर बढ़ता दबाव भारत के समक्ष केवल एक नीतिगत विकल्प नहीं, बल्कि उसके रणनीतिक विवेक और स्वायत्तता की गंभीर परीक्षा है। यह प्रसंग तात्कालिक आर्थिक लाभ या हानि से आगे जाकर भारत की दीर्घकालिक विदेश और ऊर्जा नीति पर विचार करने की मांग करता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत को यह चेतावनी देना कि रूस से तेल खरीद जारी रहने की स्थिति में टैरिफ बढ़ाए जा सकते हैं, वस्तुतः दबाव कूटनीति का परिचायक है। वेनेजुएला में एकतरफा कार्रवाई और वैश्विक प्रतिक्रिया ने पहले ही यह स्पष्ट कर दिया है कि अमेरिका अपने हितों के लिए अंतरराष्ट्रीय नियमों की व्याख्या सुविधा के अनुसार करता रहा है। भारत सरकार ने पहले ही स्पष्ट किया है कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) की रिपोर्ट भारत को एक 'रणनीतिक ग्रे जोन' में खड़ा बताती है। इससे सवाल उठता है कि भारत की अस्पष्टता क्या सचमुच विवेकपूर्ण कूटनीति है, या यह धीरे-धीरे नीति-निर्णय की कमजोरी में बदल सकती है। अब भारत को अपने रुख को साफ शब्दों में परिभाषित करना होगा। यदि गैर-प्रतिबंधित रूसी आपूर्तिकर्ताओं से तेल खरीद राष्ट्रीय हित में है, तो उसका निर्भीक बचाव किया जाना चाहिए। और यदि दबाव में नीति परिवर्तन का निर्णय लिया जाता है, तो उसके दूरगामी आर्थिक और कूटनीतिक परिणामों को सार्वजनिक करना आवश्यक है। यह भी ध्यान रखने योग्य है कि रूसी तेल आयात बंद कर देने से अमेरिकी अपेक्षाएं समाप्त हो जाएंगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है। कृषि, डिजिटल व्यापार और डेटा संप्रभुता जैसे नए मुद्दे शीघ्र ही अगली शर्तों के रूप में सामने आ सकते हैं। ऐसे में भारत के लिए सबसे सार्थक मार्ग वही है, जो उसकी रणनीतिक स्वायत्तता, ऊर्जा सुरक्षा और बहुध्रुवीय विश्व दृष्टि को बनाए रखे।

आत्मनिर्भरता के लिए चीन से सबक ले भारत

भारत की चीन से तुलना अक्सर आर्थिक आंकड़ों, निर्यात के ग्राफ और वैश्विक बाजार हिस्सेदारी तक सीमित रह जाती है। लेकिन यदि गहराई से देखा जाए, तो यह तुलना केवल विकास दर की नहीं, बल्कि दृष्टिकोण की है। चीन ने विकास को उपभोक्ता बनकर नहीं, बल्कि निर्माता बनने की दिशा में ठोस कदम उठाने का सपना देखा और साकार भी किया। वहीं भारत सेवा-आधारित अर्थव्यवस्था पर ही गर्व करता रहा। लेकिन अब आत्ममंथन यह होना चाहिए कि केवल सेवाओं के सहारे आर्थिक महाशक्ति बना जा सकता है या फिर उत्पादन को विकास के केंद्र में स्थान देना चाहिए? वास्तव में चीन की रणनीति का मूल सिद्धांत देश की जरूरतें देश में ही पूरी करने का रहा। उसने आयात पर निर्भरता को कमजोरी माना और स्थानीय उत्पादन को राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ा। सस्ते खिलौने हों या मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक्स हों या घरेलू उपयोग की वस्तुएं, चीन ने वैश्विक मांग को पहचाना और उत्पादन क्षमता विकसित की। इसके पीछे केवल सरकारी नीति ही नहीं, बल्कि दीर्घकालिक औद्योगिक अनुशासन और निरंतर निवेश की सोच थी। चीन ने यह भी समझा कि रोजगार सृजन तभी टिकाऊ होगा जब उत्पादन बड़े पैमाने पर और निरंतर हो।

लेकिन भारत की स्थिति इससे भिन्न रही है। यहां उदारीकरण के बाद सेवा क्षेत्र ने तेज गति पकड़ी आईटी, बैंकिंग, परामर्श और स्टार्टअप संस्कृति ने देश को नई पहचान दी। किंतु इसका दूसरा पक्ष यह रहा कि विनिर्माण अपेक्षित गति से आगे नहीं बढ़ पाया। नतीजतन, भारत आज भी कई आवश्यक कंपोनेंट्स और तकनीकी उपकरणों के लिए आयात पर निर्भर है। यह निर्भरता केवल व्यापार घाटे की समस्या नहीं, बल्कि रणनीतिक जोखिम भी है। इसी संदर्भ में वर्ष 2025 में शुरू की गई इलेक्ट्रॉनिक्स कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग स्कीम (ईसीएमएस) को देखा जाना चाहिए। यह योजना केवल एक प्रोत्साहन पैकेज नहीं, बल्कि सोच में बदलाव का संकेत है। 22 नई परियोजनाओं को मंजूरी ने यह स्पष्ट किया है कि भारत अब केवल असेंबलिंग करने वाला देश नहीं, बल्कि कंपोनेंट

स्वयं बनाना चाहता है। कंपोनेंट्स, मैटेरियल्स और डिजाइन यही वह आधार है, जिस पर किसी भी मजबूत औद्योगिक शक्ति का निर्माण होता है।

इन परियोजनाओं से अनुमानित 41,863 करोड़ रुपये का निवेश और लाखों रोजगार गवाह हैं कि उत्पादन अब नीति वक्तव्यों से आगे धरातल पर भी उतर रहा है। डिक्सन, सैमसंग, फॉक्सकॉन और हिंडाल्को जैसी कंपनियों की भागीदारी सिद्ध करती है कि वैश्विक और घरेलू उद्योग भारत को एक विनिर्माण केंद्र के रूप में देखने लगे हैं। आठ राज्यों में फैली ये परियोजनाएं औद्योगिक विकास को क्षेत्रीय संतुलन के साथ आगे बढ़ा रही हैं। हालांकि, असली चुनौती केवल फैक्ट्रियां लगाने की नहीं है। सवाल तो यह है कि क्या भारत एक संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र विकसित कर पाएगा? जानकार मानते हैं कि सेमीकंडक्टर या इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग केवल पूंजी से नहीं, बल्कि कौशल, अनुसंधान एवं गुणवत्ता अनुशासन से पनपता है और कंपोनेंट्स व वैल्यू एडिशन पर समान जोर दिए बिना आत्मनिर्भरता अधूरी रहेगी। ईसीएमएस योजना का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह प्रिंटेड सर्किट बोर्ड, कैमरा मॉड्यूल और मैकेनिकल कंपोनेंट्स जैसे उन क्षेत्रों पर जोर देती है, जिनमें भारत पीछे रहा है। यदि इनका घरेलू उत्पादन मजबूत होता है, तो 'मेड इन इंडिया' केवल नारा नहीं, बल्कि वैश्विक ब्रांड बन सकता है। इसके लिए ओईएम और सिस्टम कंपनियों को भी घरेलू कंपोनेंट्स अपनाने का साहस दिखाना होगा, क्योंकि मांग के बिना आपूर्ति टिक नहीं सकती।

दरअसल, इस औद्योगिक बदलाव का सीधा संबंध देश के विदेशी मुद्रा भंडार से है। तमाम वैश्विक अड़चनों के बावजूद हाल के वर्षों में भंडार में निरंतर वृद्धि यह बताती है कि भारत की अर्थव्यवस्था बाहरी झटकों को झेलने में सक्षम हो रही है। मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार न केवल रुपये की स्थिरता सुनिश्चित करता है, बल्कि यह भी रेखांकित करता है कि देश में डॉलर की आवक बनी हुई है। उत्पादन बढ़ने व निर्यात मजबूत होने से यह भंडार और मजबूत हो सकता है, इससे वैश्विक व्यापार क्षमता भी बढ़ेगी। अंततः सवाल चीन को पछाड़ने का नहीं, बल्कि अपनी क्षमता को पहचानने का है। भारत के पास विशाल बाजार, युवाशक्ति और तकनीकी प्रतिभा है। जरूरत है तो केवल इसको उत्पादन की दिशा में संगठित करने की। यदि नीतियां, उद्योग और समाज तीनों एक साझा लक्ष्य पर केंद्रित हो जाएं, तो भारत की औद्योगिक यात्रा केवल विकास की कहानी नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और वैश्विक नेतृत्व की मिसाल बन सकती है।

■ राममनोहर रायकवार

भारत के विकास को जब केवल ऊंची विकास दर और शहरी विस्तार से परखा जाता है, तब कृषि की मौन भूमिका हाशिये पर चली जाती है। जबकि देश की लगभग आधी आबादी की रोजी-रोटी खेतों से जुड़ी हुई है। इसलिए कृषि क्षेत्र को सशक्त किए बिना संतुलित, टिकाऊ और समावेशी विकास की कल्पना अधूरी है।

भारत के समावेशी विकास की कुंजी कृषि

देश की विकास यात्रा को अक्सर ऊंची इमारतों, चमकते उद्योगों और तेजी से फैलते सेवा क्षेत्र की उपलब्धियों से मापा जाता है। सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आंकड़ों में भी सेवा क्षेत्र की लगभग 55% और उद्योग क्षेत्र की करीब 27% हिस्सेदारी विकास की चमकदार तस्वीर पेश करती है। लेकिन इस तस्वीर की जड़ों में झांकें तो स्पष्ट होता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की असली नींव आज भी कृषि ही है। कृषि का योगदान भले ही जीडीपी में लगभग 18% हो, लेकिन देश की लगभग 45 प्रतिशत आबादी की आजीविका इससे जुड़ी हुई है। यह विरोधाभास बताता है कि कृषि की उपेक्षा करना न केवल आर्थिक असंतुलन को बढ़ाता है, बल्कि सामाजिक ताने-बाने को भी कमजोर करता है। भारत यदि सचमुच विकसित राष्ट्र बनने का सपना देख रहा है, तो उसे विकास के तीनों स्तंभ यानी कृषि, उद्योग और सेवा को समान महत्व देना होगा। उद्योग और सेवाओं की वृद्धि तब तक टिकाऊ नहीं हो सकती, जब तक ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त न हो। गांवों में क्रयशक्ति बढ़ेगी तभी बाजारों में मांग बनेगी, उत्पादन चक्र चलेगा और रोजगार बढ़ेंगे।

इसलिए किसानों की आय में निरंतर और सम्मानजनक वृद्धि राष्ट्रीय प्राथमिकता होनी चाहिए, न कि केवल चुनावी वादों तक सीमित विषय। खेती को लाभकारी बनाने के लिए सिंचाई, बिजली, उर्वरक और आधुनिक कृषि उपकरणों की समय पर उपलब्धता भी अनिवार्य है। इसके साथ-साथ व्यावहारिक और किसानोन्मुख सब्सिडी नीति भी उतनी ही आवश्यक है। इस दिशा में केंद्र सरकार द्वारा रबी सीजन 2025-26 के लिए उर्वरक सब्सिडी पर 37,952 करोड़ रुपये खर्च करने का निर्णय महत्वपूर्ण माना जा सकता है। यह राशि खरीफ 2025 की तुलना में अधिक है और यह संकेत देती है कि नीति-निर्माण में किसानों की जरूरतों को गंभीरता से लिया जा रहा है। एक अक्टूबर 2025 से 31 मार्च 2026 तक लागू पोषक तत्व-आधारित सब्सिडी (एनबीएस) योजना के अंतर्गत फॉस्फेटिक और पोटैशिक उर्वरकों, जैसे कि डीएपी और एनपीकेएस को शामिल किया गया है। इस योजना का उद्देश्य केवल उर्वरकों को सस्ता करना नहीं, बल्कि संतुलित पोषक तत्व उपयोग को बढ़ावा देना भी है, जिससे मृदा स्वास्थ्य सुधरे और खेती दीर्घकाल तक टिकाऊ बनी रहे। इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं।

इस एनबीएस योजना के कारण घरेलू उर्वरक उत्पादन वर्ष 2014 के 112.19 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर 2025 में 168.55 लाख मीट्रिक टन तक पहुंच गया है। वित्तीय वर्ष 2022-23 से 2024-25 के बीच 2.04 लाख करोड़ रुपये से अधिक का आवंटन किसानों को किफायती दरों पर उर्वरक उपलब्ध कराने में सहायक रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यदि नीतियां सही दिशा में हों, तो कृषि क्षेत्र आत्मनिर्भरता और उत्पादकता, दोनों के लक्ष्य हासिल कर सकता है। मजबूत कृषि न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है, बल्कि उद्योगों को कच्चा माल और सेवा क्षेत्र को स्थायी उपभोक्ता आधार भी प्रदान करती है। कुल मिलाकर यह समझना होगा कि भारत का समग्र और समावेशी विकास कृषि की मजबूती से ही संभव है। जब हमारे खेत समृद्ध होंगे, तभी कारखाने चलेंगे और सेवाओं का विस्तार होगा। इसलिए कृषि को विकास की मुख्यधारा में लाए बिना 'विकसित भारत' का सपना अधूरा ही रहेगा।

■ जसवंत सिंह राजपूत

जीवनशैली

नाइजीरिया के लागोस शहर के भीतर बसा माकोको गांव दुनिया की रोचक बस्तियों में गिना जाता है। यह गांव जमीन पर नहीं, गंदगी और कचरे से भरी एक नदी के ऊपर लकड़ी के खंभों पर टिका हुआ है। यहां के लोगों के लिए यही पानी उनकी सड़क है, यही बाजार, यही स्कूल और यही जीवन का आधार। बाहर की दुनिया को यह गांव भले ही अव्यवस्था और गंदगी का प्रतीक लगे, लेकिन माकोको के निवासियों के लिए यही उनकी पहचान और संस्कृति है।

जमीन नहीं, पानी है घर का आंगन

माकोको की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां घर जमीन पर नहीं बने हैं। लकड़ी के खंभों पर टिके छोटे-छोटे झोपड़े पानी के ऊपर खड़े हैं। हर घर के सामने एक नाव बंधी रहती है, जो कार या बाइक का काम करती है। बच्चे नाव से स्कूल जाते हैं, महिलाएं इसी पानी में कपड़े धोती हैं और पुरुष मछली पकड़कर आजीविका कमाते हैं। बाजार भी नावों पर ही लगता है, जहां सब्जी, मछली और रोजमर्रा का सामान खरीदा-बेचा जाता है।

दुनिया से अलग जीवनशैली

दुनिया के अन्य गांवों और शहरों से माकोको इसलिए अलग है क्योंकि यहां जीवन पूरी तरह पानी पर आधारित है। न सड़कें हैं, न बिजली की व्यवस्थित व्यवस्था, न ही साफ पानी या शौचालय। लोग उसी नदी में स्नान करते हैं, खाना पकाते हैं और कचरा भी वहीं डालते हैं। इसके बावजूद यहां के लोग अपने हालात से तालमेल बिठाकर खुशहाल जीवन जीने की कोशिश करते हैं। सामुदायिक भावना यहां बहुत मजबूत है, जहां हर कोई एक-दूसरे पर निर्भर है।

माकोको का इतिहास

माकोको की नींव लगभग 19वीं सदी में पड़ी मानी जाती है। कहा जाता है कि यह गांव मूल रूप से पश्चिम अफ्रीका के टोगो और बेनिन क्षेत्रों से आए मछुआरों ने बसाया था। समुद्र और लैगून के पास बसने की आदत के कारण उन्होंने जमीन के बजाय पानी को ही अपना घर बनाया। समय के साथ लागोस शहर फैलता गया, लेकिन माकोको अपनी पुरानी जीवनशैली में ही बसा रहा।

ऐसी जिंदगी जीने के कारण

माकोको में इस तरह की जिंदगी का सबसे बड़ा कारण गरीबी और शहरी असमानता है। लागोस जैसे महंगे शहर में जमीन खरीदना इन लोगों के लिए असंभव है। पानी पर बसने से उन्हें न तो जमीन का किराया देना पड़ता है और न ही सरकारी नियमों का सीधा सामना करना पड़ता है। इसके अलावा मछली पकड़ना उनका पारंपरिक पेशा है, जो पानी के पास रहने से ही संभव है। हालांकि माकोको को कई बार अवैध बस्ती घोषित कर हटाने की कोशिश की जा चुकी है। लेकिन इसके बावजूद यह गांव अपनी जिद और जिजीविषा के साथ आज भी जीवित है।

काहिरा की 'गार्बेज सिटी' कचरे के बीच बसती जिंदगी का कठोर सच

मिस्र की राजधानी काहिरा के बाहरी इलाके में बसी 'गार्बेज सिटी' दुनिया की सबसे अनोखी और चौंकाने वाली बस्तियों में से एक है। इसे स्थानीय भाषा में 'मंसियत नासिर' कहा जाता है। यहां ऊंची-ऊंची इमारतें नहीं, बल्कि कचरे के पहाड़ दिखाई देते हैं। गलियां प्लास्टिक, कागज, धातु, खाने के बचे अवशेष और बदबू से भरी रहती हैं। बच्चे इसी कचरे के बीच खेलते हैं, महिलाएं यहीं खाना बनाती हैं और पुरुष कचरे को छांटकर आजीविका कमाते हैं। बाहरी दुनिया के लिए यह जगह भयावह है, लेकिन यहां रहने वालों के लिए यही उनकी सामान्य जिंदगी है।

कचरे में कैसे रहता है पूरा शहर

गार्बेज सिटी के लोग मुख्य रूप से 'जब्बालीन समुदाय' से आते हैं। यह समुदाय दशकों से काहिरा शहर का कचरा इकट्ठा करने और उसे रिसायकल करने का काम करता है। सुबह होते ही लोग पूरे काहिरा से कचरा लाते हैं और अपने घरों के सामने ही उसे छांटना शुरू कर देते हैं। यही कचरा इनके लिए रोजगार भी है और जीवन का आधार भी।

क्या यहां लोगों को बीमारी नहीं होती?

यह सवाल सबसे अधिक परेशान करने वाला है। हां, गार्बेज सिटी में रहने वाले लोग कई बीमारियों के खतरे में रहते हैं। सांस की बीमारियां, त्वचा रोग, संक्रमण और बच्चों में कुपोषण आम है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि लंबे समय से यहां रहने के कारण इन लोगों में एक तरह की सहनशीलता और प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो गई है। फिर भी यह कहना गलत होगा कि ये लोग स्वस्थ हैं। दरअसल, गरीबी और मजबूरी ने इन्हें जोखिम के साथ जीना सिखा दिया है।

आखिरकार! गंदगी में रहने को मजबूर क्यों हैं लोग

गार्बेज सिटी में रहने का सबसे बड़ा कारण गरीबी और सीमित विकल्प हैं। मिस्र जैसे विकासशील देश में शहरों में रोजगार तो है, लेकिन सस्ती और सुरक्षित आवास व्यवस्था नहीं। जब्बालीन समुदाय न तो पर्याप्त शिक्षित है और न ही कोई दूसरा स्थायी रोजगार। कचरे का काम ही उनकी पहचान बन चुका है। इसके अलावा शहर के बाहर बसने से उन्हें किराया, टैक्स और कई सरकारी झंझटों से भी राहत मिलती है।

क्या यह दुनिया की इकलौती 'कचरा बस्ती' है?

नहीं, गार्बेज सिटी दुनिया की अकेली ऐसी बस्ती नहीं है। फिलीपींस और इंडोनेशिया में भी ऐसी बस्तियां मौजूद हैं। लेकिन काहिरा की गार्बेज सिटी इसलिए अलग है, क्योंकि यहां का समुदाय कचरे को बेहद कुशलता से रिसायकल करता है और दुनिया की सबसे प्रभावी अनौपचारिक रिसायक्लिंग प्रणालियों में से एक चलाता है।

संघर्ष में भी सामान्य जीवन

कचरे के बीच बसने के बावजूद गार्बेज सिटी के लोग हंसते हैं, त्योहार मनाते हैं और बच्चों के सपने देखते हैं। यह शहर हमें आईना दिखाता है कि आधुनिक सभ्यता का कचरा किन लोगों की जिंदगी बन जाता है और हम अक्सर उनकी ओर देखना भी नहीं चाहते।

हर व्यक्ति की सोने की एक खास आदत होती है। कोई दाईं करवट सोए बिना चैन नहीं पाता, तो किसी को बाईं करवट ही गहरी और सुकूनभरी नींद आती है। यह केवल पसंद या संयोग नहीं, बल्कि इसके पीछे शरीर की बनावट, दिमाग की कार्यप्रणाली और आंतरिक अंगों का संतुलन जैसे वैज्ञानिक कारण काम करते हैं।

शरीर की संरचना और आंतरिक अंग

मानव शरीर पूरी तरह सममित नहीं है। दिल बाईं ओर होता है, पेट और पाचन तंत्र का झुकाव भी बाईं दिशा में होता है। यही कारण है कि बाईं करवट सोना कई लोगों के लिए ज्यादा आरामदायक होता है। इस स्थिति में भोजन का पाचन बेहतर होता है और एसिड रिफ्लक्स की समस्या कम होती है। वहीं दाईं करवट सोने से कुछ लोगों को सांस लेने में ज्यादा सुविधा मिलती है, खासकर उन्हें जिनकी बाईं नाक ज्यादा बंद रहती है या जिन्हें हल्की सांस की समस्या होती है।

दिल और रक्तसंचार का विज्ञान

बाईं करवट सोने से हृदय पर अतिरिक्त दबाव नहीं पड़ता, क्योंकि गुरुत्वाकर्षण के कारण रक्त का प्रवाह स्वाभाविक रूप से बेहतर रहता है। इसी वजह से डॉक्टर कई बार गर्भवती महिलाओं को बाईं करवट सोने की सलाह देते हैं। दूसरी ओर, कुछ लोगों के लिए दाईं करवट सोना दिल की धड़कन को अधिक स्थिर महसूस कराता है। यह व्यक्ति विशेष के हृदय और रक्त संचार प्रणाली पर निर्भर करता है।

दिमाग की आदत और कंडीशनिंग

हमारा मस्तिष्क आदतों के अनुसार खुद को ढाल लेता है। वर्षों तक एक ही करवट सोने से दिमाग उस मुद्रा को सुरक्षित व आरामदायक स्थिति मान लेता है। जैसे ही व्यक्ति अपनी पसंदीदा करवट लेटता है, दिमाग 'मेलाटोनिन हार्मोन' का स्राव बढ़ा देता है, जो नींद लाने में मदद करता है। दूसरी करवट में सोने पर नए संतुलन के साथ तालमेल बैठाने में समय लगता है, जिससे नींद देर से आती है।

रीढ़ और मांसपेशियों की भूमिका

रीढ़ की हड्डी और गर्दन की मांसपेशियां भी सोने की करवट तय करती हैं। जिस करवट में रीढ़ सीधी रहती है और गर्दन पर कम दबाव पड़ता है, वही करवट शरीर को अधिक आराम देती है। यदि किसी व्यक्ति की रीढ़ हल्की-सी एक ओर झुकी हुई है, तो वह अनजाने में उसी करवट सोना पसंद करता है।

मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का अहसास

सोते समय जिस करवट में व्यक्ति खुद को ज्यादा सुरक्षित महसूस करता है, जैसे दरवाजे या रोशनी की दिशा, उसी करवट नींद बेहतर आती है। इसे मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्रतिक्रिया कहा जाता है। इस प्रकार दाईं या बाईं करवट सोना केवल आदत नहीं, बल्कि शरीर, दिमाग और मन के बीच संतुलन का परिणाम है। जिस करवट में शरीर को कम तनाव, बेहतर सांस और आंतरिक अंगों को आराम मिलता है, वही करवट सुकूनभरी नींद की कुंजी है।

दैनिक ट्रिब्यून
स्थापना 15 अगस्त 1978

पंजाब में बढ़ते अपराध

कानून व्यवस्था की पोल खोलती हत्याएं

यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि पंजाब में सरेआम की जा रही लक्षित हत्याओं का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। दुस्साहसी हत्यारे अपने मंसूबों को अंजाम देकर साफ निकल जाते हैं। यह विडंबना ही है कि पंजाब में नये साल की शुरुआत दिनदहाड़े हुई हत्याओं की एक श्रृंखला के साथ हुई है। अब चाहे लुधियाना जिले में एक पूर्व कबड्डी खिलाड़ी की निर्मम हत्या हो या अमृतसर के मैरिज रिसॉर्ट में एक विधायक के करीबी सरपंच की गोली मारकर बेरहमी से हत्या, इनसे पता चलता है कि पंजाब के अपराधियों में कानून का भय नहीं रह गया। निश्चित रूप से ये घटनाएं पंजाब में गंभीर चुनौती बनती एक जटिल समस्या की ओर इशारा करती हैं। इस चिंताजनक होती स्थिति की वजह लगातार अपराधी गिरोहों के नेटवर्क का मजबूत होना, घातक हथियारों की सहज उपलब्धता और पुलिस बल पर लगातार बढ़ता दबाव भी है। दूसरी ओर विपक्षी दल आरोप-प्रत्यारोपों का सिलसिला चलाए रहते हैं और राजनीतिक लक्ष्यों के लिये मुख्यमंत्री भगवंत मान के इस्तीफे की मांग करते रहते हैं। वहीं सरकार इस संकट को अपने पूर्ववर्तियों द्वारा विरासत में छोड़ा गया बताते हैं। लेकिन एक हकीकत है कि इन बयानबाजियों से नागरिकों की असुरक्षा कम नहीं होती है। वहीं पंजाब के शीर्ष पुलिस अधिकारियों की दलील होती है कि पंजाब में अपराध दर राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। लेकिन राज्य में बढ़ते अपराधों के संकट को किसी भी सूरत में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। निश्चित रूप से जब हत्याएं राज्य के भीड़भाड़ वाले इलाकों में होती हैं तो लोगों का कानून व्यवस्था से भरोसा उठ जाता है। वहीं दूसरी ओर राज्य के पुलिस महानिदेशक की दलील है कि पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई ड्रोन के जरिये हथियार, गोला-बारूद और नशीले पदार्थ भेजकर सीमांत राज्य पंजाब के खिलाफ परोक्ष युद्ध छेड़े हुए है। निश्चय ही यह बात इस सीमावर्ती राज्य के लिये गंभीर चिंता का विषय है।

इसमें दो राय नहीं कि पंजाब के डीजीपी का पाक से अपराधियों को प्रश्रय देने वाला बयान चिंता बढ़ाने वाला है। खासकर उस राज्य के लिये, जिसने एक दशक तक उग्रवाद का सामना किया हो। लेकिन पंजाब के अपराध संकट के लिये केवल बाहरी कारकों को ही जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। यह पुलिस विभाग की शिथिलता व खुफिया तंत्र की नाकामी के साथ सामाजिक विद्रूपताओं से भी उपजा संकट है। निस्संदेह, राज्य में अधिक बेरोजगारी है। बंदूक संस्कृति का महिमामंडन भी गंभीर चुनौती है। वहीं दूसरी ओर युवाओं में रातों-रात धनवान बनने का लालच भी स्थानीय व क्षेत्रीय गिरोहों के पनपने की गंभीर वजह है। इसके अलावा पुलिस विभाग की संरचना की भी कुछ विसंगतियां सामने आती हैं। मसलन पुलिस व्यवस्था में उच्च अधिकारियों की तो अधिकता है मगर फील्ड स्टाफ पर काम का बोझ जरूरत से ज्यादा है। इसके अलावा पुलिस के कामकाज में राजनीतिक हस्तक्षेप के भी आरोप लगते रहे हैं। यही वजह है कि पुलिस, हासिल कुछ सफलताओं के बावजूद जनता का विश्वास जीतने के लिये संघर्ष कर रही है। लेकिन राजनीतिक बयानबाजियों से इतर राज्य सरकार को अपनी रणनीति में बदलाव लाकर धरातल पर गंभीर प्रयास करने होंगे। मौजूदा हालात में बहुआयामी रणनीति बनाने की सख्त जरूरत महसूस की जा रही है। इसके अंतर्गत पुलिस सुधार भी प्राथमिकता के आधार पर किए जाने की जरूरत है, ताकि हाइटैक अपराधियों पर शिकंजा कसा जा सके। इसके साथ ही अपराध नियंत्रण में केंद्रीय एजेंसियों से बेहतर तालमेल करने की भी जरूरत है। इसके अलावा बंदूकों पर लगाम लगाने के लिये कानून को सख्ती से लागू करने की आवश्यकता होगी। राज्य में रोजगार के अवसरों में वृद्धि, कौशल विकास में व्यापक निवेश करने तथा भटके हुए युवाओं को मुख्यधारा में लाने के प्रयास योजनाबद्ध ढंग से करने होंगे। ऐसे राज्य में जो एक दशक तक चरमपंथ की त्रासदी झेल चुका हो, अपराधियों के खिलाफ बड़ी मुहिम वक्त की मांग है। राज्य के सत्ताधीशों को चाहिए कि पंजाब द्वारा कड़ी मेहनत से हासिल की गई शांति को गैंगस्टरों, ड्रग माफिया और आतंकवादियों के घातक गठजोड़ का शिकार कदापि नहीं होने दें।

आज का विचार

सत्य का साधन हृदय में है, मुख में नहीं। केवल मुख से निकलने के कारण ही कोई बात सत्य नहीं बन जाती। – शरत्चंद्र

एकदा

पारखी दृष्टि

एक बार की बात है, एक कला प्रेमी ने महान इतालवी मूर्तिकार माइकल एंजेलो से उनकी विश्वप्रसिद्ध 'डेविड' की मूर्ति को देखकर आश्चर्य से पूछा- महोदय, आपने पत्थर के एक साधारण और बेजान टुकड़े से इतनी जीवंत और सुंदर मूर्ति का निर्माण कैसे किया? यह तो किसी चमत्कार से कम नहीं लगता। माइकल एंजेलो ने मुस्कुराते हुए बहुत ही खूबसूरत उत्तर दिया, 'मैंने कोई निर्माण नहीं किया। यह मूर्ति तो पहले से ही उस पत्थर में विद्यमान थी। मैंने तो बस पत्थर के उस अनावश्यक हिस्से को छेनी-हथौड़े से काट कर हटा दिया, जो मूर्ति नहीं था। जैसे ही मैंने पत्थर से फालतू परतों को हटाया, उसमें मूर्ति के रूप में छिपा उसका सत्य अपने आप प्रकट हो गया।' माइकल एंजेलो ने दार्शनिक अंदाज़ में उस कला प्रेमी से कहा-जीवन का भी यही सार है। हमें पूर्णता पाने के लिए बाहर से कुछ नया नहीं जोड़ना है, बल्कि अपने भीतर छिपे क्रोध, अहंकार और ईर्ष्या रूपी अनावश्यक पत्थरों को हटाना है। तभी हमारा श्रेष्ठ स्वरूप निखरकर सामने आएगा। **प्रस्तुति : डॉ. मधुसूदन शर्मा**

40 साल पहले

दैनिक ट्रिब्यून

आतंकवादियों को पाक मदद के बारे में केंद्र नीति स्पष्ट करे

रमेश नैयर द्वारा

चंडीगढ़, 6 जनवरी। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी ने आज यहां कहा कि केंद्रीय सरकार को चाहिए कि पंजाब के आतंकवादियों को पाकिस्तान से मिलने वाले प्रशिक्षण तथा अन्य सहायता और पाकिस्तान की एटमी तैयारियों के बारे में जनता के सामने अपना रुख एवं अपनी नीति पूरी तरह से स्पष्ट कर दे। उन्होंने कहा दोनों मुद्दों पर केंद्रीय सरकार का जो दोहरा आचरण रहा है वह अनेक शंकाएं पैदा करता है।

अहमदगढ़ में गोलीबारी : 6 घायल

संगरूर (निस)। आज सुबह यहां से 40 किलोमीटर दूर अहमदगढ़ मंडी के रायकोट चौक में बस अड्डे के पास तीन उग्रवादियों ने गोली चलाकर छह व्यक्तियों को घायल कर दिया। इनमें से तीन की हालत गंभीर बतायी जाती है। इन्हें लुधियाना के सीएमसी अस्पताल में भेजा गया है। इनके नाम विजय कुमार, राम स्वरूप और नरेश कुमार हैं। बताया जाता है कि ये उग्रवादी बिना नंबर के एक स्कूटर पर आये और एक दुकान में बैठे लोगों पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं। बाद में तीनों जिला लुधियाना के गांव बूल की ओर भाग गये।

मादुरो पर अमेरिकी हमले का फेंटानिल एंगल

पुष्परंजन

रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र (सीडीसी) के अनुसार, '2024 में ड्रग ओवरडोज़ से 1,07,543 अमेरिकियों की मौत हुई, जिसमें फेंटेनाइल की वजह से 76,000 से ज़्यादा मौतें हुईं। 2025 तक अमेरिका में ड्रग ओवरडोज़ से होने वाली मौतों की दर दोगुनी से ज़्यादा हो गई, इसका बड़ा कारण फेंटानिल की सप्लाई में बढ़ोतरी थी।'

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप लंबे समय से राष्ट्रपति निकोलस मादुरो पर अमेरिका में नशीले कारोबार का सूत्रधार होने का आरोप लगाते रहे हैं, जिसके मूल में अमेरिकी युवाओं की रगों में जहर घोलने वाले उच्च तीव्रता के फेंटानिल की तस्करी शामिल रही है। कुछ जानकार बताते हैं कि फेंटानिल ही अमेरिकी हमले और राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को फर्स्ट लेडी समेत हिरासत में लेने की सबसे बड़ी वजह रही है। जबकि वेनेज़ुएला के प्राकृतिक संसाधनों पर अमेरिकी लिप्सा किसी से छिपी नहीं है।

दरअसल, फेंटानिल, धीरे-धीरे दुनियाभर में सुर्खियों में नजर आ रहा है। अटलांटिक के इस पार यह दवा उतनी प्रचलित नहीं है, लेकिन अमेरिका के अनुभवों को देखते हुए यह स्थिति बदलने वाली है। फेंटानिल एक ऐसी समस्या है, जो शायद ही कभी हल होगी। यह ड्रग, हेरोइन से सौ गुना अधिक घातक है। इसके लिए गांजे या अफ़ीम की खेती की ज़रूरत नहीं है। लैब में तैयार फेन्टानिल, एक शक्तिशाली दर्द निवारक दवा है, जो मॉर्फिन से 50 गुना अधिक असरदार है। इसे मूल रूप से बेल्जियम के रसायनज्ञ पॉल जैन्सन द्वारा संश्लेषित किया गया था। इस दवा का उपयोग बड़ी सर्जरी के लिए होता रहा है, या फिर कैंसर से होने वाले असहनीय दर्द को कम करने में फेंटानिल उपयोगी है।

भले ही रासायनिक रूप से इसका अफीम से कोई संबंध न हो, मगर यह दवा मॉर्फिन और हेरोइन के समान ओपिओइड रिसेप्टर्स के साथ रिएक्ट करती है, इसलिए इसे 'ओपिओइड' कहा जाता है। हमारे शरीर में ऐसे रसायन निकलते हैं, जो हमें अच्छा महसूस कराते हैं, ये उन गतिविधियों को बूस्ट करते हैं, जैसे खान-पान का स्वाद लेने, या फिर यौन व्यवहार में। शरीर में अच्छा महसूस कराने वाले रसायनों की मात्रा बढ़ने के कारण ही ओपिओइड की लत लोग लगा लेते हैं। मतलब, दर्द निवारण के लिए निर्मित फेंटानिल, मौज-मस्ती का साधन बन चुका है।

गंभीर चुनौती यह है कि फेंटानिल की लत एक बार लग गई तो उससे छुटकारा मौत के बाद ही मिल पाता है। साल 1960 के दशक से ही फेंटानिल के मूल तत्व में कई बदलाव और सुधार किए गए हैं, जिससे इसके अनेक प्रकार के वेरिएंट तैयार हुए हैं, जिनका शरीर पर अलग-अलग प्रभाव होता है। उदाहरण के लिए, 'कार्फेंटानिल', मॉर्फिन से हजारों गुना अधिक शक्तिशाली है। 'कार्फेंटानिल' का उपयोग, उन्मत हाथियों को शांत करने के लिए किया जाता है।

चित्र लेखक

हेरोइन और कोकीन जैसी दवाओं के साथ फेंटानिल को मिलाने से इसकी शक्ति नाटकीय रूप से बढ़ जाती है। केवल दो मिलीग्राम फेंटानिल एक वयस्क के लिए घातक हो सकता है। फेंटानिल अमेरिका के ओपिओइड संकट का एक बड़ा हिस्सा बन चुका है। सही से देखा जाये, तो हाल ही में यह खबर आई कि पिछले आठ महीनों में ब्रिटेन में फेंटानिल के कारण कम से कम 75 लोगों की मौत हो चुकी है। लेकिन, अमेरिका में इस दवा के कारण मरने वालों की संख्या के मुकाबले यह कुछ भी नहीं है। रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र (सीडीसी) के अनुसार, '2024 में ड्रग ओवरडोज़ से 1,07,543 अमेरिकियों की मौत हुई, जिसमें फेंटेनाइल की वजह से 76,000 से ज़्यादा मौतें हुईं। 2025 तक अमेरिका में ड्रग ओवरडोज़ से होने वाली मौतों की दर दोगुनी से ज़्यादा हो गई, इसका बड़ा कारण फेंटानिल की सप्लाई में बढ़ोतरी थी।' डेटा एनालिसिस से पता चलता है, कि फेंटानिल की तस्करी में शामिल लोगों में 75 फीसद अमेरिकंस, करप्ट सिस्टम और पुलिस की सांठगांठ से लगे हुए हैं। ड्रग तस्करी में मात्र 25 प्रतिशत प्रवासी संलग्न दिखे। अर्थात्, अपने ही घर में ट्रम्प प्रशासन इसे रोक पाने में नाकारा साबित हुआ है।

भारत में अंडरवर्ल्ड के गिने-चुने सयाने, फेंटानिल को समझ पाए हैं। 2018 में इंदौर में एक अवैध फेंटानिल लैब का भंडाफोड़ हुआ। डायरेक्टोरेट ऑफ़ रेवेन्यू इंटेलिजेंस की रिपोर्ट से पता चलता है, कि 'सिनालोआ ड्रग कार्टेल' से जुड़ा एक भारतीय नागरिक शुरू में संगठन को फेंटानिल प्रीकर्सर केमिकल, एनपीपी और एएनपीपी सप्लाई करता था, जिसे कार्टेल से जुड़ा एक चीनी नागरिक फेंटानिल बनाता था और उसे भारत के बरास्ते मैक्सिको भेजता था। दिसंबर, 2018 में, मुंबई एंटी-नारकोटिक्स सेल ने लगभग 100 किलोग्राम 'फेंटानिल प्रीकर्सर एनपीपी' जब्त किया, जिसमें चार भारतीय पकड़े गए। 6 जनवरी, 2025 को न्यूयॉर्क में गुजराती ड्रग तस्कर, भावेश लाठिया को गिरफ्तार किया गया। भावेश, 'रक्सटर केमिकल्स' का संस्थापक और 'एथोस केमिकल्स' का पूर्व निदेशक रहा है। भावेश लाठिया पर आरोप है कि उसने एक प्रीकर्सर केमिकल पर गलत लेबल लगाकर उसे एंटासिड बताया था। कोई पांच महीना पहले, 18 सितंबर, 2025 को नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास की वेबसाइट पर एक हेडलाइन नुमायां हुई- 'फेंटानिल प्रीकर्सर की तस्करी में शामिल होने के कारण भारतीय कंपनी के अधिकारियों और परिवार के सदस्यों के अमेरिकी वीज़ा रद्द।' बताया गया, कि नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास ने फेंटानिल प्रीकर्सर की तस्करी में शामिल होने के आधार पर कुछ बिजनेस औ कॉर्पोरेट लीडरशिप के वीज़ा रद्द कर दिए हैं।

दरअसल, फेंटानिल से गर्भ-नाल का सम्ब चीन का रहा है। शी चिनफिंग का यह दे फेंटानिल निर्माण से लेकर दुनियाभर में सप्लाई नेटवर्क संभाले हुए है, जिसमें ज्यादातर लैटि अमेरिकी देश शामिल हैं। मादुरो तो सबसे कमज़ मुर्गा है। कार्रवाई दरअसल, चीन पर होनी चाहि थी। ब्यूनस आयर्स में जी-20 समिट के दौरा चीनी राष्ट्रपति शी, फेंटानिल को एक कंट्रोल सब्सटेंस के रूप में लेबल करने पर सहमत हु जिसे व्हाइट हाउस की प्रेस सेक्रेटरी सारा सैंडर्स एक 'शानदार मानवीय कदम' बताया था। उस अगले साल घोषणा हुई कि 1 मई, 2019 से, ची ने आधिकारिक तौर पर फेंटानिल के सभी रूपों दवाओं की एक श्रेणी के रूप में नियंत्रित किय इसने उस प्रतिबद्धता को पूरा किया जो राष्ट्रपति ने जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान की थ लेकिन, यह केवल दिखाने भर की कवायद थी।

डार्कनेट मार्केट, वेब पर एक कमर्शिय वेबसाइट है, जिसके ज़रिये नशीले पदार्थ, अवै हथियार, चोरी किया हुआ डेटा, नकली दस्तावे का लेन-देन होता है। 'सिल्क रोड', जो 2011 लॉन्च हुआ, एक डार्कनेट मार्केट था, वह बिटकॉइ के शुरुआती यूज़र्स में से कुछ का ठिकाना था। ब में पता चला 'सिल्क रोड', फेंटानिल के तस्करों लिए कोड वर्ड है। ऐसे कई सारे कोडवर्ड 'चाइ गर्ल', 'चाइना व्हाइट', 'व्हाइट ड्रैगन' जैसे नामों डार्कनेट पर नमूदार हुए। इनके पेमेंट बिटकॉइन ज़रिये होने लगे, जिसने 'ट्रंप मेमेकॉइन' नुकसान किया। ब्लूमबर्ग के अनुसार, 'ट्रम्प परिव की नेट वर्थ लगभग 7.7 बिलियन डॉलर से घटक 6.7 बिलियन डॉलर हो गई, जो डिजिटल एसेट् में गिरावट से जुड़ी है।' कुछ रणनीतिकारों में मा है, कि फेंटानिल प्रोडक्शन से जुड़े क्रिप्टोकरेंसी आधारित लेन-देन ने 'ट्रंप मेमेकॉइन' का भ बैठाया है। ट्रम्प केवल खिसियानी बिल्ली नहीं हु बल्कि उन्होंने सीधा वेनेज़ुएला के राष्ट्रप निकोलस मादुरो पर झपट्टा मारा। लेकिन क्य इससे फेंटानिल की तस्करी रुक जाएगी?

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

इंदौर का प्रदूषित जल

गैर जिम्मेदार तंत्र की नाकामी से उपजा संकट

ज्ञानेन्द्र रावत

पेयजल लाइनों का पुराना होना, मरम्मत और देखभाल का अभाव, खराब योजना और डिजाइन, जल संचय का अपर्याप्त प्रबंधन, शुद्धीकरण के लिए व्यवस्था और निगरानी की कमी, और घरों से पानी के सैंपल लेकर जांच की व्यवस्था न होना, साथ ही भ्रष्टाचार – इन सभी कारणों से जलापूर्ति व्यवस्था प्रभावित होती है।

बीते दिनों इंदौर शहर के भगीरथपुरा क्षेत्र में सीवर अवशेष प्रदूषित पानी के सेवन के कारण 16 से अधिक लोगों की मौतें हो चुकी हैं। अस्पतालों में लगभग 200 लोग भर्ती हैं, जिनमें से कुछ की हालत गंभीर है और 32 मरीज आईसीयू में भर्ती हैं। स्थिति इतनी गंभीर हो गई है कि इंदौर में बोरिंग के पानी में भी मल-मूत्र का बैक्टीरिया पाया गया है। लोग अब एक सप्ताह से अधिक समय बाद भी साफ पानी के लिए टैंकरों पर निर्भर हैं।

जब बात सबसे स्वच्छ शहर की हो, तो इस स्थिति में देश के अन्य शहरों की हालत क्या होगी? यह समस्या केवल इंदौर तक सीमित नहीं है, बल्कि गुजरात के गांधीनगर को भी इंदौर जैसे हालात का सामना करना पड़ रहा है। यहां दूषित पानी पीने से 100 से अधिक लोग बीमार होकर अस्पतालों में भर्ती हो चुके हैं। दिल्ली के लोग भी हर साल दूषित पेय जलापूर्ति की समस्या से जूझते हैं। कई बस्तियों में गंदे पानी की आपूर्ति का मामला अभी भी एनजीटी में विचाराधीन है। एनजीटी की सख्ती के बाद अब दिल्ली जल बोर्ड ने इस इलाके की दशकों पुरानी और क्षतिग्रस्त पाइप लाइनों को बदलने का काम शुरू किया है। यह बात भी गौर करने लायक है कि दिल्ली के जल शोधन संयंत्रों में लिए गए 33 सैंपल फेल पाए गए हैं।

इंदौर का मामला पूरी तरह से सरकारी लापरवाही का जीता-जागता सबूत है। काफी दिनों से इंदौर के भगीरथपुरा के लोग दूषित पानी की आपूर्ति की शिकायत कर रहे थे। लेकिन जिला प्रशासन और अधिकारियों पर उनकी शिकायतों का कोई असर ही नहीं हुआ। उनकी नींद तब खुली जब दूषित पानी पीने से दस्त और उलटी से लोगों की मौत होने लगी और पीड़ित लोगों की तादाद 3000 के पार पहुंच गयी। उस समय हाई कोर्ट ने तत्काल लोगों को साफ पीने का पानी मुहैया कराने और पीड़ितों का हरसंभव निःशुल्क इलाज कराने का आदेश दिया।

इसके साथ ही, नगर निगम के अपर आयुक्त, जल कार्य निगम के अधीक्षण अभियंता को निलंबित और आयुक्त को हटाने के साथ तीन नगर आयुक्तों की नियुक्ति कर दी। इलाके में सप्लाई किये जाने वाले नर्मदा के पानी के सैंपल लेने का काम शुरू किया। जांच में मल-मूत्र मिश्रित होने की पुष्टि हुई तब नगर निगम ने वहां के बोरिंग के पानी के सैंपल लिए। बोरिंग के 69 सैंपलों में से 35 जांच में फेल पाये गये। नर्मदा जल जांच के बाद अब बोरिंग के पानी में भी फीकल कोलीफार्म बैक्टीरिया की मौजूदगी सामने आयी है, जिससे हैजा फैला। इंदौर मेडिकल कालेज की रिपोर्ट भी पुष्टि करती है कि भगीरथपुरा में एक पाइपलाइन में लीकेज के कारण पीने का पानी दूषित हुआ और यह बीमारी फैली।

अस्पतालों में भर्ती पीड़ित रोगियों में टायफायड के लक्षण भी पाये गये हैं। डाक्टरों का तो इन पीड़ितों में हैपेटाइटिस-ए जैसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त होने का अंदेशा है। वहीं उलटी-दस्त के संक्रमण के कारण कुछ मरीजों की किडनी भी प्रभावित हुई है। ऐसे रोगियों की स्थिति सुधरने में दूसरे रोगियों की तुलना में काफी समय लगेगा।

सरकार हाईकोर्ट में दावा कर रही है कि हालात काबू में हैं जबकि अस्पतालों में पीड़ितों के पहुंचने का सिलसिला अभी भी जारी है। दुखद यह है कि अभी भी प्रभावित क्षेत्र भगीरथपुरा में पेयजल संकट बरकरार है।

एनएचआरसी ने भी इंदौर के भगीरथपुरा में दूषित पानी से हुई मौतों के मामले पर स्वतः संज्ञान लेते हुए राज्य के मुख्य सचिव को नोटिस जारी कर उनसे दो सप्ताह के भीतर विस्तृत रिपोर्ट मांगी है।

देश में नीति आयोग की मानें तो हर साल दूषित पानी पीने से दो लाख लोगों की मौत होती है, विशेषज्ञ इनकी तादाद कहीं ज्यादा बताते हैं। नीति आयोग की मानें तो देश में तकरीबन 60 करोड़ लोगों को पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है। इससे 6 फीसदी जीडीपी का नुकसान होता है। पेयजल की गुणवत्ता के मामले में हमारे देश का दुनिया के 122 देशों में 120वां स्थान है। असलियत में दूषित पानी पीने से होने वाली मौतें विकास के दावों को मुंह चिड़ाती प्रतीत होती हैं। इससे जल जीवन मिशन की नाकामी साबित होती है।

शुद्ध पेयजल की व्यवस्था में नाकामी में सरकारी अनियमितताओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। उसका जीता-जागता सबूत हैं शुद्ध पेयजल की आपूर्ति और सीवर लाइन के लिए स्वीकृत 1.93 लाख करोड़ की परियोजनाओं में अभी तक केवल 44 हजार करोड़ के काम पूरे हो पाना। जबकि इनकी अवधि इसी मार्च में पूरी हो रही है।

पीने के पानी की लाइनों का पुराना होना, मरम्मत और देखभाल का अभाव, खराब योजना और डिजाइन, जल संचय का अपर्याप्त प्रबंधन, शुद्धीकरण के लिए व्यवस्था और निगरानी की कमी, और उपभोक्ता स्तर पर घरों से पानी के सैंपल लेकर जांच की व्यवस्था न होना, साथ ही भ्रष्टाचार, इन सभी कारणों से जल आपूर्ति व्यवस्था प्रभावित होती है। जनता मजबूरी में प्रदूषित पानी पीने को मजबूर है। सबसे बड़ी बात यह कि जब पेय जलापूर्ति राज्य की प्राथमिकता में ही न हो, तब शुद्ध पानी सपना ही बना रहेगा।

लेखक पर्यावरणविद् हैं।

तिरछी नज़र

नेट नहीं, अब देश सही दिशा में लौट रहा है!

श्याम यादव

पैनलिस्ट समझाते हैं—इंटरनेट ने युवाओं को बिगाड़ दिया था, उन्हें सवाल पूछने की आदत लगा दी थी। अब देश सही दिशा में लौट रहा है—ख़ामोशी की ओर।

एक सुबह देश जागता है और पाता है—नेट नहीं है। मोबाइल हाथ में है, लेकिन आवाज़ गायब। न कोई चेतावनी, न कोई समय-सीमा। बस एक आधिकारिक वाक्य—'यह निर्णय अचानक नहीं, आवश्यक है।' जनता समझ जाती है—जब भी 'आवश्यक' कहा जाता है, तब कुछ न कुछ चुपचाप छीन लिया जाता है।

नोटबंदी में जेब खाली हुई थी, अब दिमाग़। तब लोग लाइन में खड़े थे, अब सन्नाटे में। फर्क बस इतना है कि तब असुविधा दिखती थी, अब उसी को शांति कहा जा रहा है।

बैंक एप बंद हैं, यूपीआई ठप है, टिकट कैंसिल हैं, काम अटका हुआ है। सरकार आश्वासन देती है—घबराइए नहीं, ऑफ़लाइन विकल्प मौजूद हैं। वही ऑफ़लाइन विकल्प, जिन्हें पिछले एक दशक में 'डिजिटल इंडिया' के नाम पर धीरे-धीरे ख़त्म कर दिया गया था। अब वही विकल्प राष्ट्र के उद्धारक बताए जा रहे हैं।

टीवी स्टूडियो पूरी क्षमता से चल रहे हैं। एंकर गर्व से बताते हैं—नेटबंदी देशहित में है। बहस हाई-स्पीड नेटवर्क और सेटेलाइट के सहारे जारी है। पैनलिस्ट समझाते हैं—इंटरनेट ने युवाओं को बिगाड़ दिया था, उन्हें सवाल पूछने की आदत लगा दी थी। अब देश सही दिशा में लौट रहा है—ख़ामोशी की ओर।

सरकारी आदेश आते हैं—ऑनलाइन सेवाएं अस्थायी रूप से स्थगित। लेकिन आवेदन केवल ऑनलाइन ही स्वीकार होंगे। शिकायत के लिए वेबसाइट है, हेल्पलाइन है—जो नेट आने पर काम करेगी। प्रशासन संतुष्ट है—प्रणाली पूरी तरह चालू है, बस जनता डिस्कनेक्ट है।

व्यापार सुबक रहा है। स्टार्टअप रुक गए हैं। शेयर बाज़ार अनुमान और बयान के सहारे सांस ले रहा है। सरकार कहती है—देश भावनाओं से चलता है, डेटा से नहीं। निवेशक पूछते हैं—स्थिरता कहां है? जवाब मिलता है—स्थिरता सत्ता में है।

शिक्षा व्यवस्था में भी सुधार हो गया है। ऑनलाइन क्लास बंद, डिजिटल लाइब्रेरी बंद। बच्चों को किताबें दे दी गई हैं—ऐसी किताबें, जिनमें सवाल कम हैं और उत्तर पहले से तय। सरकार प्रसन्न है—अब सोचने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

लोकतंत्र भी हल्का महसूस कर रहा है। कोई ट्रेंड नहीं, कोई ट्वीट नहीं, कोई वायरल वीडियो नहीं। आधिकारिक बयान आता है—देश में पूर्ण शांति है। शांति का मतलब साफ़ है—कोई देख नहीं रहा, इसलिए कुछ हो ही नहीं रहा।

उपलब्धियां गिनाई जाती हैं। नेटबंदी से अफ़वाहें रुकीं, विरोध रुका, आलोचना रुकी। डिजिटल गिरफ़्तारी की ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि डिजिटल नागरिक ही नहीं बचे। यह तकनीकी निर्णय नहीं, नागरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम है। धीरे-धीरे जनता अभ्यस्त हो जाती है।

लोकतंत्र में सबसे सुरक्षित नागरिक वही होता है—जो ऑफ़लाइन हो।

आपकी राय

इंसानियत सबसे पहले

तीन जनवरी के दैनिक ट्रिब्यून विश्वनाथ सचदेव का बेहतरी लेख प्रकाशित हुआ। लेख बताया गया कि किसी भी धर्म आस्था हो, मगर इंसानियत सब अहम है। लेखक ने प्रसि संगीतकार खैयाम का उदाहरण दे हुए कहा कि वह सिद्धिविनाय मंदिर में नतमस्तक होते हैं औ अपनी बेटी द्वारा वर्षों बाद किस चर्च के सामने क्रॉस बनाक सम्मान व्यक्त करना दर्शाता है परमात्मा एक है और हर धर्म अपना रास्ता है। हमारा संविधा सभी धर्मों को समान मानता है हमारी संस्कृति की सुंदर अनेकता में एकता में है।

शामलाल कौशल, रोहत

जहरीला पेयजल

तीन जनवरी के दैनिक ट्रिब्यून संपादकीय 'जानलेवा पेयजल इंदौर के भागीरथपुर इलाके प्रदूषित पेयजल के कारण हु मौतों पर आधारित था। घटना पहले नागरिकों ने अधिकारियों शिकायत की थी, लेकिन को कार्रवाई नहीं की गई। इ लापरवाही के लिए अधिकारि पर गैर-इरादतन हत्या मुकदमा चलाया जा सकता है मामले की गंभीरता को देखते हु उच्च न्यायालय औ मानवाधिकार आयोग ने भी इसक संज्ञान लिया है। अब देशभर पीने के पानी और सीवरेज लाइन का निरीक्षण जरूरी है।

अनिल कौशिक, क्योड़क, कैथ

साम्राज्यवादी मानसिकता

संप्रभु देश वेनेजुएला पर अमेरि हमला और उसके राष्ट्रपति उनकी पत्नी को बंदी बनाकर दे को अपने अनुसार चलाना ए सामंती और साम्राज्यवा मानसिकता को दर्शाता है। य कार्रवाई संयुक्त राष्ट्र चार्टर उल्लंघन है। अमेरिका ने ईरान औ अफगानिस्तान में भी सैन्य हस्तक्षे किया, लेकिन वहां उसे नाकाम का सामना करना पड़ा। इस स्थि में, चीन, रूस और भारत मिलकर इस संकट का राजनीति समाधान ढूंढ़ने की आवश्यकता है

खुशपाल सिंह पतवान, अम्बाला शह

संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशनार्थ लेख इस ईमेल पर भेजें :-
dtmagzine@tribunemail.co

संपादकीय

बेटियों की किलकारी की चाहत का सुखद संकेत

दुनिया के अधिकांश हिस्से ने जब बेटे-बेटी में भेद की दकियानूसी सोच सदियों तक देखी हो, उस समय यह संकेत सुखद और सुकून अनुभूति का अहसास देने वाला ही कहा जाएगा कि लोगों में सोच बदल रही है। बेटों को प्राथमिकता के केंद्र बिंदु से छिटककर अब यह उस मुकाम पर अग्रसर नजर आने लगी है जहां वे बेटी को भी उसी चाव से देखने लगे हैं। गैलप इंटरनेशनल ने हाल में एक सर्वे के जरिए यह तस्वीर प्रस्तुत की है। गैलप का 44 देशों में किया गया यह सर्वे वर्तमान के प्रति संतोष और भविष्य के लिए उम्मीदें जगाने वाला है कि इन देशों में अब बच्चे के लिंग के बारे में सोचा नहीं जाता और उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनकी संतान लड़का है या लड़की।

भारत, चीन, अमरीका और यूरोप के कई देशों के अभिभावक इसमें शामिल हैं। इस सोच और सुधार के उपायों का ही असर है कि दुनिया में 25 साल में 70 लाख बच्चियों को मरने से बचाया गया है लेकिन, इसी तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि अब भी हर साल दस लाख से ज्यादा बच्चियों को कोख में ही खत्म किया जा रहा है। पिछले 45 साल में मां के गर्भ में ही मारी गई बच्चियों की संख्या पांच करोड़ से ज्यादा है। यह दर्शाता है कि बच्चे-बच्ची के भेद के किस्से को हमेशा के लिए खत्म करने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। यह बात भारत पर भी शब्दशः लागू होती है। यहां विश्व के विकसित देशों की तुलना में चुनौतियां और मुश्किलें कुछ ज्यादा ही रही हैं। कम शिक्षा, रूढ़िवादी पितृत्व सोच, अंधविश्वास और भ्रांतियां यहां हमेशा व्याप्त रही हैं।

कालांतर में स्थिति कुछ बेहतर होती नजर आती है। नेशनल फैमिली हेल्थ के ताजा सर्वे में इस ओर इशारा किया गया है। इसके अनुसार भारत में बेटों की चाहत का ग्राफ 1999 के 33 प्रतिशत से गिरकर अब 15 प्रतिशत रह गया है। यह बहुत सुखद संकेत है, लेकिन समझना होगा कि 15 फीसदी भी बहुत ज्यादा है। इसका परिणाम इस रूप में परिलक्षित हो रहा है कि देश में लिंगानुपात 1000 लड़कों पर 943 लड़कियों का है। चिकित्सकीय और वैज्ञानिक अध्ययन कहते हैं कि दुनिया में जन्म लेने वाले लड़के-लड़कियों का अनुपात 105:100 है, पर पांच साल की आयु पूरी करते-करते यह संख्या बराबर हो जाती है।

अगर देश में पांच साल की आयु के बाद लड़कियों की संख्या 1000 लड़कों पर 57 कम पड़ रही है, तो इसका सीधा अर्थ है कि कोई बाहरी शक्ति प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रही है। जब तक इस बाहरी शक्ति को नियंत्रित नहीं किया जाएगा, तब तक लड़के-लड़की का यह असंतुलन दूर नहीं होगा। 57 बड़ा अंतर है। सुधार की जो गति चल रही है, उस हिसाब से इस अंतर को पाटने में पच्चीस साल से ज्यादा लग जाएंगे। ये बच्चियां दुनिया में कदम रखें और अच्छी तरह से खुशगवार जिंदगी जिएं, इसके लिए उन्हें बचाने के उपाय, उनकी व्यापकता और गति सब बढ़ाने होंगे। सृष्टि के संतुलन के लिए भी यह जरूरी है।

बाजारवाद की गिरफ्त में इंसान, क्या हम सिर्फ एक 'उपभोक्ता' रह गए हैं?

वर्तमान समय बाजार का समय है। बाजार मनुष्य की सुविधाओं के लिए शताब्दियों से काम करता रहा है। वह मनुष्य के लिए एक जरूरी जरिया है, जिसमें वह अपनी जरूरत की चीजों का लेन-देन करता है। मगर आज यही बाजार किस तरह मनुष्य को अपनी ही इच्छाओं का गुलाम बनने को विवश करने लगा है, कोई भी व्यक्ति इस साधारण-सी प्रक्रिया पर गौर नहीं करता।

वर्तमान समय बाजार का समय है। बाजार मनुष्य की सुविधाओं के लिए शताब्दियों से काम करता रहा है। वह मनुष्य के लिए एक जरूरी जरिया है, जिसमें वह अपनी जरूरत की चीजों का लेन-देन करता है। मगर आज यही बाजार किस तरह मनुष्य को अपनी ही इच्छाओं का गुलाम बनने को विवश करने लगा है, कोई भी व्यक्ति इस साधारण-सी प्रक्रिया पर गौर नहीं करता। हर चीज में, स्थिति में व्यावसायिक अवसर तलाशने की बाजारी प्रवृत्ति ने बाजार को मानव समाज और उसकी संस्कृति के लिए एक ऐसे स्थायी खतरे में तब्दील कर दिया है, जिससे बचने के लिए हर संभव कदम उठाना आवश्यक हो गया है। बिना नियम, नैतिकता, भावना और संवेदना के बाजार मनुष्य को एक ऐसी कठपुतली के रूप में देखता है, जिसे जब चाहे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

अधिकतम लाभ कमाने के लक्ष्य के साथ बाजार ने मानवीय जीवन के हर पहलू और पड़ाव में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया है। वह आपदा में अवसर देखने के आर्थिक दृष्टिकोण को मानते हुए ऐसी अंधी दौड़ में मनुष्य को धकेलता है, जिसका कोई अर्थ किसी के लिए नहीं होता। बाजार हमें आखिर में यही कहता है कि खुद को महसूस करो, खुद की सुंदरता को पहचानो, चीजों को उसके बाह्य दृश्य से नहीं, भावना से परखो।

बाजार यही बात सीधे-सीधे नहीं कहता, क्योंकि सीधे कहने से उसका काम नहीं चलता। वह मनुष्य को झूठे स्वप्न दिखाता है, उसमें हीनता पैदा करता है और भ्रमित करने वाली आकांक्षाएं उपजाता है। वह प्रचार के नारों के माध्यम से एक ऐसी हवा बनाता है, जिसमें व्यक्ति महसूस करता है कि वह जो है, वह खुद सही नहीं है। बाकी दूसरी चीजें अपनी जगह बिल्कुल ठीक हैं। ऐसी हवा पैदा करके ही मनुष्य को दौड़ाया जा सकता है।

बाजार 'जो हम हैं' से 'जो हमें होना चाहिए' की ओर लेकर जाता है। हमारे पास जो है, वह हमारे लिए पूरा नहीं है। दूसरे के पास जो है, वह उसके लिए पूरा नहीं है। इसलिए बाजार सबके लिए जरूरी हो जाता है। क्या आज के समय में हम इसे जरूरत तक सीमित कर सकते हैं?

अक्सर हम देखते हैं कि बाजार हमें सुरक्षा के नाम पर हमारी शिक्षा, नुस्खों, पुरातन तरीकों और जड़ों से अलग करता है और फिर उन्हीं चीजों को चलन बनाकर हम तक पहुंचाता है।हमारी दिनचर्या में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहां लोग अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक तत्त्वों की स्वीकार्यता के लिए बाजार द्वारा चालित सामयिक फैशन की तरफ देखते हैं। इसी वजह से यह संभव होता है कि बाजार उन पुरानी चीजों को, जिन्हें मनुष्य समय के प्रवाह में कई-कई बार छोड़ चुका है, उन्हें भी फैशन के नाम पर चला देता है। अधिकतर लोगों के पास चीजों को देखने का कोई विशेष ढंग नहीं होता, वे दूसरों की हां में हां मिलाते हैं।

हमारे समाज की पूरी मानसिकता 'दूसरे क्या कहेंगे' पर टिकी हुई है, लेकिन जब सब एक जैसा ही हो, तो दूसरे के कहने के लिए कुछ बचता ही कहां है! हम अपने पैसे खर्च करके इसी तरह बाजार का गुणगान भी करते हैं। हम दूसरों की तरह दिखना चाहते हैं, उनकी तरह होना चाहते हैं, बाजार सभी को एक सम धरातल पर ले आता है, लेकिन ऐसा करके वह उसे व्यक्ति से उपभोक्ता में तब्दील करता है। उपभोक्ता की कोई निजी पसंद नहीं होती और उसका कोई निर्णय नहीं होता।

वह उन चीजों का उपभोग करता है, जो उसके लिए बनाई जाती है। इस तरह इस समानता की कीमत अपने व्यक्तित्व और विविधता को खोने के रूप में सभी चुकाते हैं, लेकिन तब भी कोई बेचैनी व्यक्ति में नहीं होती, क्योंकि इस बेचैनी को, सोचने की क्षमता को नष्ट करके ही ये सब चीजें जगह बनाती है। बाजार मनुष्य को उपभोक्ता बनाकर उसकी मूल पहचान को ही एक तरह से संकट में डाल देता है। मनुष्य की अस्मिता उसकी बुद्धि, विचारशीलता, नैतिकता और विवेक से बनती है। वह केवल अपने सही-गलत के बारे में ही नहीं पर्यावरण और अन्य प्राणियों के बारे में भी सोच सकता है और सोचता रहा है। संस्कृति और समाज के साथ ही अन्य जैविक-अजैविक सत्ताओं के प्रति उसका दायित्व ही उसे मनुष्य बनाता है। मगर उपभोक्ता बनाकर बाजार मनुष्य के विवेक, विचार, व्यवहार और भावों को नियंत्रित करता है। वह मनुष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक संबंधों में बदलाव करता है और मनुष्य को उसकी गरिमा से स्खलित कर एक ऐसे पुतले में बदल देता है, जिसे अपने स्वार्थ के अनुसार चलाना संभव होता है। व्यक्ति, व्यक्तिगत नहीं होकर भीड़ का हिस्सा मात्र बनकर रह जाता है। अकेले व्यक्ति को नियंत्रित करना जितना मुश्किल है, उसे भीड़ का हिस्सा बनाकर नियंत्रित करना उतना ही आसान है।

बाजार हमारी जरूरतों को संचालित करने वाले केंद्र से कब 'बाजारवाद' की तरफ झुकने लगता है और कब हम बाजारीकरण की प्रक्रिया की गिरफ्त में आने लगते हैं, इन बिंदुओं को समझे बिना हम बाजार के प्रभाव का सही आकलन नहीं कर सकते हैं। जब हम बाजार से परे मानवीय अस्तित्व को समझ पाएंगे, तभी अपने ही बनाए खिलौने के हाथों मनुष्य के कैद होने की त्रासदी को सही मायने में महसूस कर पाएंगे।

समाचार पत्रः युवा छात्रों के दिमाग के लिए एक शक्तिशाली बूस्टर

डॉ. विजय गर्ग

15 सेकंड के वीडियो और सोशल मीडिया पर अंतहीन स्क्रॉलिंग के युग में, पारंपरिक समाचार पत्र अतीत का अवशेष लग सकता है। हालाँकि, युवा छात्रों के लिए, विनम्र समाचार पत्र बौद्धिक विकास के लिए सबसे शक्तिशाली उपकरणों में से एक है। दैनिक अपडेट प्रदान करने के अलावा, यह एक व्यापक 'जीवन की पाठ्यपुस्तक' के रूप में कार्य करता है, जो ऐसे लाभ प्रदान करता है जिन्हें डिजिटल स्निपेट्स आसानी से दोहर नहीं सकते।

एक शब्दावली और भाषा पावरहाउस पाठ्यपुस्तकें अक्सर कक्षा-स्तरीय भाषा तक ही सीमित होती हैं, लेकिन समाचार पत्र छात्रों को 'वास्तविक दुनिया' की अंग्रेजी से परिचित कराते हैं। पत्रकार एक पेशेवर लेकिन सुलभ शैली का उपयोग करते हैं जो पाठकों को विविध वाक्य संरचनाओं, मुहावरों और संदर्भ में उन्नत शब्दावली से परिचित कराता है। प्रासंगिक शिक्षाः शब्द सूची याद करने के बजाय, छात्र देखते हैं कि जटिल घटनाओं का वर्णन करने के लिए शब्दों का उपयोग कैसे किया जाता है, जिससे अर्थ चिपका रहता है। लेखन कौशलः यह देखकर कि शीर्षक कैसे तैयार किए जाते हैं और कहानियों की संरचना कैसी होती है, छात्रों को स्वाभाविक रूप से बेहतर लेखन आदतें मिल जाती हैं, जिससे निबंध और स्कूल असाइनमेंट अधिक स्पष्ट हो जाते हैं।

आलोचनात्मक सोच को तेज करना सोशल मीडिया के प्रतिध्वनि कक्षों के विपरीत, समाचार पत्र विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। एक संपादकीय किसी विशिष्ट नीति के पक्ष में तर्क दे सकता है, जबकि अगले पृष्ठ पर रिपोर्ट कच्चे डेटा प्रदान करती है। यह लेआउट छात्रों को प्रोत्साहित करता है तथ्य को राय से अलग करें: वस्तुनिष्ठ रिपोर्टिंग को व्यक्तिपरक टिप्पणी से अलग करना सीखना एक महत्वपूर्ण जीवन कौशल है। पूर्वाग्रह का विश्लेषण करें: छात्र यह समझने लगते हैं कि अलग-अलग लेखक एक ही घटना को अलग-अलग नजरिए से देख सकते हैं, जिससे उन्हें अधिक संतुलित विश्वदृष्टि विकसित करने में मदद मिलती है। 3। सिद्धांत और वास्तविकता के बीच की खाई को पाटना छात्र अक्सर सोचते हैं, 'मैं यह क्यों सीख रहा हूँ? समाचार पत्र इसका उत्तर देते हैं। स्थानीय बाजारों पर मुद्रास्फीति के प्रभाव के बारे में पढ़कर अर्थशास्त्र जीवंत हो जाता है। जब छात्र नवीनतम मंगल रोवर लैंडिंग या नवीकरणीय ऊर्जा में सफलता के बारे में पढ़ते हैं तो विज्ञान अब केवल सूत्र नहीं रह गया है। कक्षा के सिद्धांतों को वैश्विक वास्तविकताओं से जोड़कर, समाचार पत्र शिक्षा को प्रासंगिक और रोमांचक महसूस कराते हैं। सामान्य ज्ञान और नागरिक जागरूकता का निर्माण एक सफल छात्र और भावी नेता बनने के लिए, व्यक्ति को दुनिया से अवगत होना चाहिए। समाचार पत्रों में स्थानीय शासन और खेल से लेकर अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और पर्यावरणीय संकट तक सब कुछ शामिल होता है। यह व्यापक एक्सपोज़रः प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं के लिए तैयारीः अधिकांश उच्च स्तरीय परीक्षाएं और साक्षात्कार समसामयिक मामलों को प्राथमिकता देते हैं। सहानुभूति को बढ़ावा देनाः विभिन्न संस्कृतियों की मानवीय कहानियां पढ़ने से छात्रों को सामाजिक चेतना और वैश्विक नागरिकता की भावना विकसित करने में मदद मिलती है निष्कर्ष अखबार पढ़ने की आदत एक छात्र के भविष्य में निवेश है। यह एक निष्क्रिय शिक्षार्थी को एक सक्रिय, सूचित और आलोचनात्मक सोच वाले नागरिक में बदल देता है। सुबह के अखबार पर प्रतिदिन केवल पंद्रह से बीस मिनट बिताकर, एक छात्र अपने दिमाग को तेज कर सकता है, अपने क्षितिज को व्यापक बना सकता है, तथा प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त प्राप्त कर सकता है जो कोई भी पाठ्यपुस्तक अकेले प्रदान नहीं कर सकती।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

नींद का विज्ञान

एक स्वस्थ रात में आमतौर पर इनमें से चार से पांच चक्र होते हैं। चरण 1 (लाइट एनआरईएम): जागृति और नींद के बीच संक्रमण। हृदय गति और श्वास धीमी हो जाती है, तथा मांसपेशियां आराम करने लगती हैं। चरण 2 (हल्का एनआरईएम): शरीर का तापमान गिरता है, और मस्तिष्क की तरंगें गतिविधि के संक्षिप्त विस्फोटों को दर्शाती हैं जिन्हें स्लीप स्पिंडल्स कहा जाता है

डॉ विजय

शोध में कभी नींद को 'कुछ न होने' की निष्क्रिय अवस्था के रूप में देखा गया था, लेकिन आधुनिक तंत्रिका विज्ञान ने इसे एक अत्यधिक सक्रिय, जटिल और आवश्यक जैविक प्रक्रिया बताया है। नींद 'डाउन टाइम' होने के बजाय तीव्र न्यूरोलॉजिकल रखरखाव और शारीरिक मरम्मत का समय है। नींद की वास्तुकलाः चार चरण नींद एक समान अवस्था नहीं है; इसके बजाय, मस्तिष्क हर 90 से 120 मिनट में चार अलग-अलग चरणों से गुजरता है। एक स्वस्थ रात में आमतौर पर इनमें से चार से पांच चक्र होते हैं। चरण 1 (लाइट एनआरईएम): जागृति और नींद के बीच संक्रमण। हृदय गति और श्वास धीमी हो जाती है, तथा मांसपेशियां आराम करने लगती हैं। चरण 2 (हल्का एनआरईएम): शरीर का तापमान गिरता है, और मस्तिष्क की तरंगें गतिविधि के संक्षिप्त विस्फोटों को दर्शाती हैं जिन्हें स्लीप स्पिंडल्स कहा जाता है। हम इस चरण में अपने कुल नींद के समय का लगभग 50% खर्च करते हैं। **चरण 3 (डीप एनआरईएम): जिसे 'स्लो वेव स्लीप' के रूप में भी जाना जाता है यह सबसे अधिक पुनर्स्थापनात्मक चरण है। शरीर ऊतकों की मरम्मत करता है, मांसपेशियों का निर्माण करता है और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है। आरईएम (रैपिड आई मूवमेंट): सो जाने के लगभग 90 मिनट बाद होता है, यह सपने देखने का प्राथमिक चरण है। यहां मस्तिष्क की गतिविधि जागृति की नकल करती है, और यह चरण भावनात्मक प्रसंस्करण और स्मृति समेकन के लिए महत्वपूर्ण है। हम क्यों सोते हैं: स्वास्थ्य के तीन स्तंभ 1। 'ग्लिम्फैटिक' मस्तिष्क सफाई हाल के शोध में ग्लिम्फैटिक प्रणाली की पहचान की गई है,

जो एक अपशिष्ट-सफाई मार्ग है जो नींद के दौरान दस गुना अधिक सक्रिय हो जाता है। यह विषाक्त उपोत्पादों को बाहर निकालता है, जैसे कि बीटा-एमाइलोइड (अल्जाइमर रोग से जुड़ा एक प्रोटीन) । 2। संज्ञानात्मक प्रसंस्करण और स्मृति जब आप सोते हैं, तो मस्तिष्क एक फाइल क्लर्क के रूप में कार्य करता है। यह सूचना को अल्पकालिक 'अस्थायी भंडारण' (हिप्पोकैम्पस) से दीर्घकालिक 'हार्ड ड्राइव' (कॉर्टेक्स) में ले जाता है। नींद के बिना, मस्तिष्क की नई जानकारी सीखने की क्षमता 40% तक गिर जाती है। 3। भौतिक विनियमन नींद शरीर के लिए एक मास्टर रेगुलेटर है: चयापचय: नींद की कमी से लेप्टिन और घ्रेलिन, ये हार्मोन जो तृप्ति और भूख का संकेत देते हैं, बाधित हो जाते हैं, जिससे अक्सर वजन बढ़ता है। हृदय संबंधी स्वास्थ्य: गहरी नींद एक प्राकृतिक 'रक्तचाप की दवा' प्रदान करती है, जिससे हृदय गति धीमी हो जाती है और संवहनी प्रणाली ठीक हो जाती है। द न्यू फ्रंटियर: स्लीप एंड ब्रेन एजिंग (2025-2026 रिसर्च) 2025 के अंत से नवीनतम निष्कर्ष बताते हैं कि खराब नींद की गुणवत्ता सिर्फ आपको थका नहीं देती है; यह मस्तिष्क की उम्र बढ़ने में तेजी ला सकता है। [!महत्वपूर्ण] कैरोलिंस्का इंस्टीट्यूट के 2025 के एक अध्ययन में पाया गया कि खंडित नींद के पैटर्न वाले व्यक्तियों का मस्तिष्क एमआरआई स्कैन पर उनकी वास्तविक कालानुक्रमिक आयु की तुलना में कई साल पुराना दिखाई देता है, मुख्य रूप से बढ़ी हुई न्यूरो-इंफ्लेमेशन के कारण।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

इराक से पनामा और अब वेनेजुएलाः क्या अमेरिका फिर बन रहा है 'दुनिया का थानेदार'?

इस बीच, यह सवाल भी उठ रहा है कि किसी राष्ट्र पर हमला कर वहां के प्रमुख और उनकी पत्नी को हिरासत में लेकर देश से बाहर ले जाने की अमेरिका की कार्रवाई क्या अंतरराष्ट्रीय नियम-कानूनों का उल्लंघन नहीं है? गौरतलब है कि अमेरिका ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो पर मादक पदार्थों की तस्करी में शामिल होने का लगातार आरोप लगाने के बाद शुक्रवार देर रात राजधानी काराकस पर हमला कर दिया था

वेनेजुएला पर अमेरिका की कार्रवाई के मुद्दे पर भी भारत ने बातचीत से मसले को सुलझाने और क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता कायम रखने पर जोर दिया है। साथ ही तेल समृद्ध वेनेजुएला में तेजी से बदल रही स्थिति पर करीबी नजर भी रखी जा रही है, ताकि आने वाले समय में राष्ट्रहित की रक्षा के लिए उचित कदम उठाए जा सकें। भारत सहित कई देशों ने इस घटनाक्रम पर गहरी चिंता जताई है और वेनेजुएला की संप्रभुता एवं वहां के लोगों की सुरक्षा की वकालत की है।

इस बीच, यह सवाल भी उठ रहा है कि किसी राष्ट्र पर हमला कर वहां के प्रमुख और उनकी पत्नी को हिरासत में लेकर देश से बाहर ले जाने की अमेरिका की कार्रवाई क्या अंतरराष्ट्रीय नियम-कानूनों का उल्लंघन नहीं है? गौरतलब है कि अमेरिका ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो पर मादक पदार्थों की तस्करी में शामिल होने का लगातार आरोप लगाने के बाद शुक्रवार देर रात राजधानी काराकस पर हमला कर दिया था। इस दौरान मादुरो और उनकी पत्नी को हिरासत में लेकर न्यूयार्क ले जाया गया। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कहना है कि मादुरो के खिलाफ न्यूयार्क में मुकदमा चलाया जाएगा। यह कोई पहली बार नहीं है कि अमेरिका ने किसी देश में सत्ता परिवर्तन का प्रयास किया है। वर्ष 1965 में अमेरिका ने डोमिनिकन गणराज्य में बड़ी संख्या में अपने सैनिक भेजे, ताकि 1963 में तख्तापलट के तहत हटाए गए पूर्व राष्ट्रपति जुआन बोश की वापसी को रोका जा सके। वर्ष 1989 में अमेरिकी सैनिकों ने पनामा पर धावा बोला, जिसका मकसद तत्कालीन जनरल मैनुअल नोरिएगा को हटाना था, जिन पर मादुरो की तरह ही मादक पदार्थों की तस्करी के आरोप थे। वर्ष 2003 में अमेरिका के नेतृत्व में इराक पर हमला कर सद्दाम हुसैन के लंबे शासन का अंत कर दिया गया। इसी तरह वर्ष 2004 में हैती के तत्कालीन राष्ट्रपति को सत्ता से हटाकर अफ्रीका भेज दिया गया। यह बात सही है कि अगर दुनिया के किसी हिस्से में मानव सुरक्षा का गंभीर संकट हो, तो किसी दूसरे देश के हस्तक्षेप को तभी उचित ठहराया जा सकता है, जब यह सब अंतरराष्ट्रीय नियम-कानूनों के दायरे में किया जाए। शीत युद्ध के दौरान अमेरिकी हस्तक्षेप की अक्सर निंदा की जाती थी, लेकिन इससे कभी भी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की वैधता को सीधे तौर पर खतरा महसूस नहीं हुआ।मगर पिछले कुछ दशकों से यह देखने में आया है कि कुछ शक्तिशाली देश वैश्विक मानव हित के बजाय अपने निजी स्वार्थों के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहते हैं। वेनेजुएला पर अमेरिका की कार्रवाई को भी कुछ देश इसी नजर से देख रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र ने भी इस खतरनाक चलन को लेकर गहरी चिंता जताई है, जिसे अमेरिका बढ़ावा दे रहा है। इस बात पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है कि विश्व में शांति एवं स्थिरता के वास्ते सभी देशों ने मिलकर जो अंतरराष्ट्रीय कानून बनाए हैं, उनके महत्त्व और प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए संतुलित रुख बेहद जरूरी है।

स्वतंत्र भारत

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

औचित्य पर सवाल

वेनेजुएला पर अमेरिका का ताजा शक्ति प्रयोग अब इस देश के भविष्य को लेकर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों को लेकर तमाम संभावनाओं-आशंकाओं को हवा दे रहा है। सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि उनके इरादों की सीमा क्या रहेगी। अपदस्थ राष्टपति निकोलस मादुरो के उत्तराधिकारी के रूप में अपनी पसंद के नेतृत्व को गद्दी पर बैठाने तक ही सीमित रहेंगे या वहां की विशाल तेल सम्पदा को भी नियंत्रण में लेना चाहेंगे। मौजूदा कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज को उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर वह अमेरिका की बात नहीं मानतीं तो उन्हें मादुरो से भी बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। दूसरी ओर इसमें कोई संदेह नहीं कि अमेरिका वहां अर्थव्यवस्था को अपने हाथों में लेने का जबरदस्त इच्छुक है। खुद ट्रंप इसके लिए रविवार को ही इशारा कर चुके हैं। इतनी दूर तक जाने वाले कदमों के पीछे वजह वेनेजुएला से मादक पदार्थों की तस्करी बताई जा रही है। आरोप है कि वेनेजुएला नशीले पदार्थों से जुड़े आतंकवाद को सीमा पार बढ़ावा दे रहा है। बात यही थी तो इसे द्विपक्षीय वार्ता या अंतरराष्ट्रीय न्यायालय या अन्य कूटनीतिक माध्यमों से सुलझाया जा सकता था। ऐसे मुद्दों के लिए किसी देश पर हमला कर देने का औचित्य नहीं बनता। मादुरो तो इस मामले पर अमेरिका से बातचीत के लिए तैयार भी थे। इसके बावजूद वेनेजुएला पर हमला कर उन्हें गिरफ्तार करना कई सवाल पैदा करता है। शायद मादुरो को भी अमेरिकी इरादों पर संदेह था क्योंकि कुछ दिनों पहले ही वह इशारा कर चुके थे कि अमेरिका तख्तापलट कर वेनेजुएला के विशाल तेल भंडार तक अपनी पहुंच आसान बनाना चाहता है। करीब तीन दशक पहले इराक पर हुए अमेरिकी हमले का कारण तत्कालीन राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन द्वारा रासायनिक हथियारों का जखीरा इकट्ठा कर लेना बताया गया था। लेकिन कई वर्षों तक चले युद्ध के बाद भी इसका सबूत नहीं मिला। हां इराक जरूर तबाह हो गया था। हालांकि मादुरो की नीतियों को पूरी तरह सही नहीं ठहराया जा सकता लेकिन इसके लिए हमले जैसा कदम उठाने का सवाल भी नहीं उठाता। इसीलिए संयुक्त राष्ट्र के अलावा रूस और चीन सहित कई देशों ने इस कदम की आलोचना की है। अब सवाल यह भी है कि कई युद्ध रुकने का लगातार दावा करते रहे अमेरिकी राष्ट्रपति का ताजा कदम दुनिया में युद्धों वातावरण तो नहीं बना देगा। वेनेजुएला के बाद वह क्यूबा और कोलंबिया की ओर इशारा कर ही चुके हैं।

कोहरे के कारण

शीत की बढ़ती लहर के साथ कोहरा भी मुसीबतें से पैदा करता जा रहा है। विशेष रूप से आवागमन के दौरान इससे होने वाली समस्याएं काफी गंभीर हो गई हैं। दृश्यता की कमी इस कदर हो जाती है कि लखनऊ के अमौसी हवाई अड्डे पर उतरने के लिए एक विमान को आसमान में 17 चक्कर लगाने पड़े। इसी तरह के और भी मामले सामने आए हैं। फिर भी धुंध में उतर न पाने के कारण ये विमान वापस लौट जाते हैं। रेलमार्गों पर जबरदस्त कोहरे के कारण करीब करीब शून्य दृश्यता के बीच तमाम हाई स्पीड ट्रेनें भी अपनी निर्धारित गति से नहीं चल पा रही हैं और सात आठ घटे विलंब से गंतव्य पर पहुंचना पड़ रहा है। लेकिन सबसे गंभीर रूप से प्रभावित होने वाला पक्ष सड़क सुरक्षा है। हर ठंडक के दौरान कोहरे के कारण सड़क हादसों में सबसे ज्यादा जानें जाती हैं। नेशनल हाईवे, शहरी सड़कों और कस्बों-गांवों के रास्तों पर इससे तमाम जानलेवा घटनाएं होती रहती हैं। अब यह भी स्वाभाविक है कि जब धुंध से घिरे रास्ते पर कुछ दिखाई ही नहीं देगा या बहुत ही कम दृश्यता होगी तो कोई भी वाहन चालक ऐन मौके पर संभल नहीं सकता। खासकर तब जब वाहनों की गति अनियंत्रित रहती है। रात में समस्या और गंभीर होती है क्योंकि उसे समय अंधेरा और कोहरा मिलकर वाहनों की साधारण रोशनी को किसी मतलब का नहीं रहने देते। अगर भरसक सतर्कता से वाहन ड्राइव किए जाएं तो हादसों से काफी कुछ बचा जा सकता है। लेकिन सबसे बड़ी जरूरत सड़कों पर दृश्यता को अधिक से अधिक संभव बनाने की आधुनिक तकनीकी एवं अन्य व्यवस्थाओं की है। जैसे सड़कों पर बनी परावर्तक रेखाएं अक्सर मद्धिम पड़ जाती हैं। संकेतक बोर्ड या तो परावर्तक नहीं होते या धूल, मिट्टी से ढक जाते हैं। वाहनों में फॉग लैंप लैंप लगे होने का भी नियम है लेकिन इसे कोई गंभीरता से लेता ही नहीं। इसके अलावा कहीं तकनीक की उपलब्ध भी है तो इसके प्रभावी क्रियान्वयन, पर्यवेक्षण आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता। वाहन चालकों की हेकड़ी इसलिए भी बनी रहती है कि रात में उनमें से अधिकतर नशे में होते हैं और तब किसी सावधानी की उम्मीद करना बेमानी है। इनका उपाय खोजने के लिए सरकार को गंभीरतापूर्वक कदम उठाने होंगे। वाहन चालकों को भी अतिरिक्त सतर्कता बढ़ती चाहिए।

काँव-काँव

♦♦♦

रामभक्तों के लिये कल्याण ने छोड़ी कुर्सी - योगी
फिर भाजपा ने कल्याण को छोड़ दिया था!
यूपी पुलिस भर्ती आयु सीमा में तीन साल की छूट
वैसे पद कितने खाली पड़े हैं ये कौन बतायेगा?
एआई और डिजिटल नेटवर्क से होगी अगली जंग
सैनिकों को मोबाइल गेम खेलना आना चाहिये!
भारत में साइबर ठगी अपराधों का महाविस्फोट
रामराज्य के अपराधी, अंग्रेज राज की पुलिस!
बांग्लादेश में आईपीएल के प्रसारण पर लगी रोक
मतलब हम भी खेलेंगे नहीं तो खेल बिगाड़ेंगे!
भारत के लिये मुझे खुश करना जरूरी है -ट्रंप
भारतीय विदेशनीति न हुई, डांस प्रोग्राम हो गया!

♦♦♦

अदालतों में बहस की समयसीमा तय होनी चाहिए

सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने कहा है कि बीमार व्यक्ति को मेडिकल इमरजेंसी के अनुसार जल्द इलाज मिलता है. उसी तरह अदालतों में वंचितों और गरीबों को सतत न्याय मिलने की प्रणाली बननी चाहिए. कई लोग भारत में जजों की संख्या बढ़ाकर मुकदमों के जल्द निपटारे का नुस्खा देते हैं. परंतु अदालती समय के सही इस्तेमाल से वर्तमान जजों की संख्या के माध्यम से भी न्यायिक व्यवस्था दुरुस्त हो सकती है. तीन वर्ष पहले सुप्रीम कोर्ट के जज संजय किशन कौल ने वकीलों की लंबी बहस के बढ़ते प्रचलन को रोकने के लिए सख्त चेतावनी दी थी. उन्होंने कहा था कि इंग्लैंड, अमेरिका और दुनिया के किसी भी प्रगतिशील देश में वकीलों को असीमित बहस की इजाजत नहीं मिलती है।

– विराग गुप्ता

सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने कहा है कि बीमार व्यक्ति को मेडिकल इमरजेंसी के अनुसार जल्द इलाज मिलता है. उसी तरह अदालतों में वंचितों और गरीबों को सतत न्याय मिलने की प्रणाली बननी चाहिए. कई लोग भारत में जजों की संख्या बढ़ाकर मुकदमों के जल्द निपटारे का नुस्खा देते हैं. परंतु अदालती समय के सही इस्तेमाल से वर्तमान जजों की संख्या के माध्यम से भी न्यायिक व्यवस्था दुरुस्त हो सकती है. तीन वर्ष पहले सुप्रीम कोर्ट के जज संजय किशन कौल ने वकीलों की लंबी बहस के बढ़ते प्रचलन को रोकने के लिए सख्त चेतावनी दी थी. उन्होंने कहा था कि इंग्लैंड, अमेरिका और दुनिया के किसी भी प्रगतिशील देश में वकीलों को असीमित बहस की इजाजत नहीं मिलती है।

अमेरिका में आधे घंटे से ज्यादा बहस के लिए वकील को जजों से विशेष इजाजत लेनी पड़ती है. सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने जजों को बताया कि जार्ज बुश और अल गोर के चुनाव मामले में 2000 में अमेरिका की सुप्रीम कोर्ट ने वकीलों को बहस के लिए 45 मिनट का समय दिया था. न्यायिक पुनरावलोकन के बारे में 1803 में मलबरी बनाम मैडिसन का फैसला महज 24 पेज का था. समलैंगिकता को आपराधिक बनाने के लॉरेंस बनाम टेक्सास के मामले में अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने 43 पेज का निर्णय दिया था. उसी विषय पर भारत में 2018 में नवतेज सिंह जौहर मामले में जजों ने 493 पेज का फैसला दिया था. अनेक चेतावनियों के बावजूद सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट में सीनियर वकीलों की लंबी बहस का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है. लंबी बहस के कारण बड़े और जटिल फैसले आते हैं।

वर्ष 1973 में केशवानंद भारती के ऐतिहासिक मामले में 68 दिनों की सुनवाई के बाद 700 पेजों का फैसला आया था. वर्ष 2018 में निजता के अधिकार वाले पुट्टस्वामी मामले में 1,448 पेज का फैसला आया था. अयोध्या विवाद में 40 दिनों की सुनवाई के बाद 2019 में 1,045 पेज का फैसला आया था. तमिलनाडु में विधेयकों को राज्यपाल की मंजूरी वाले दो जजों का फैसला 415 पेज का था. उसके खिलाफ अनुच्छेद-143 के तहत केंद्र सरकार के संदर्भ पर 10 दिन से ज्यादा सुनवाई के बाद 111 पेज का फैसला आया।

तीन वर्ष पहले जस्टिस संजय किशन कौल ने तीन पेज की सिनॉप्सिस देने का चलन शुरू किया था. सुप्रीम कोर्ट की नयी मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) में उसे संस्थागत बनाने का प्रयास किया गया है. उसके अनुसार रेगुलर मामलों में सुनवाई के तीन दिन पहले पांच पेज की समरी नोट के साथ सुनवाई के एक दिन पहले वकीलों को बहस के अनुमानित समय का विवरण देना होगा. इसका प्रमुख उद्देश्य अदालतों का प्रभावी प्रबंधन, कार्य घंटों का समान वितरण, त्वरित न्याय एवं न्यायिक प्रशासन को सफल बनाना है. कोर्ट की इस पहल को सफल बनाने के लिए पांच पहलुओं को समझना जरूरी है।

पहला, सुप्रीम कोर्ट में मामलों की जल्द सुनवाई के लिए मेंशनिंग की व्यवस्था है. पूर्ववर्ती अनेक चीफ जस्टिस ने कहा था कि सीनियर वकीलों को अपने रुतबे का गलत इस्तेमाल करके वीआइपी और कॉरपोरेट मामलों की जल्द सुनवाई का आग्रह नहीं करना चाहिए. सुप्रीम कोर्ट में वीआइपी सिंड्रोम खत्म करने के लिए नया सर्कुलर जारी हुआ है. संविधान के अनुसार, आम जनता को न्याय सुनिश्चित करने के लिए ऐसे प्रशासनिक आदेशों को सुप्रीम कोर्ट के नियमों में शामिल करने की जरूरत है. एसओपी के अनुसार सुप्रीम कोर्ट के नियमों में भी लिखित तौर पर बदलाव हो।

दूसरा, बीते वर्ष सुप्रीम कोर्ट में 1,400 फैसले हुए और मुकदमों की निस्तारण दर 87 फीसदी रही. इसके बावजूद सुप्रीम कोर्ट में 92,000 मामले लंबित हैं. नयी एसओपी केवल नोटिस जारी होने के बाद होने वाली नियमित सुनवाई और रेगुलर मामलों में ही लागू होगी. मिसलेनियस, जमानत और अन्य मामलों में भी सीनियर वकीलों की

बहस की समयसीमा निर्धारित करने की जरूरत है।

तीसरा, सुप्रीम कोर्ट देश की सर्वोच्च संवैधानिक अदालत है. कई जजों के अनुसार, संवैधानिक व्याख्या की बजाय जमानत, दहेज और मुकदमों के स्थानांतरण जैसे मामलों में सर्वोच्च अदालत का अधिकांश समय खराब होता है. इसके लिए जिला अदालतों और हाईकोर्ट की न्यायिक व्यवस्था को सशक्त बनाने की जरूरत है। चौथा, अदालतों में लंबित कुल 5.41 करोड़ मामलों में जिला अदालतों में 4.76 करोड़ मामले हैं. उनमें से 3.65 करोड़ लंबित आपराधिक मामलों में भारी-भरकम आरोप पत्र और स्थगन का मर्ज बढ़ गया है. नये आपराधिक कानूनों के प्रावधानों को पुराने मामलों में भी लागू किया जाये, तो जिला अदालतों के लंबित मामलों का समयबद्ध निपटारा हो सकेगा।

पांचवां, सुप्रीम कोर्ट के जज एचआर खन्ना ने रिटायरमेंट के बाद 1985 में व्याख्यान देते हुए कहा था कि जजों को साहित्यिक उपमाओं और लंबे फैसलों से थीसिस लिखने की बजाय तर्क आधारित कानून सम्मत छोटे फैसले देने चाहिए. बहस के लिए वकीलों को निर्धारित समयसीमा का हर मामले में क?ाई से पालन हो और तर्कसंगत छोटे फैसले लिखे जायें, तो न्यायिक अनुशासन बढ़ने के साथ लंबित मामलों के निपटारे और मुकदमेबाजी में भी कमी आ सकती है।

।। यथार्थ गीता ।।

स्वामी अड़गड़ानंद

चतुर्थ अध्याय

(गतांक से आगे)

जिसके लिये ब्रह्मा का निर्देश था कि इस यज्ञ द्वारा तुम लोग देवताओं की उन्नति करो। ज्यों-ज्यों हृदय-देश में दैवी सम्पद् अर्जित होगी, वही तुम्हारी प्रगति होगी और क्रमशः परस्पर उन्नति करके परमश्रेय को प्राप्त करो। दैवी सम्पद् को हृदय-देश में बलवती बनाना प्रवेशिका श्रेणी के योगियों का यज्ञ है।

वह दैवी सम्पद् अध्याय 16 के आरम्भिक तीन श्लोकों में वर्णित है, जो है तो सबमें, केवल महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य समझकर उसकी जागृति करें, उसमें लगें। इन्हीं को इंगित करते हुए योगेश्वर ने कहा- अर्जुन ! तू शोक मत कर; क्योंकि तू दैवी सम्पद् को प्राप्त हुआ है, तू मुझमें निवास करेगा, मेरे ही शाश्वत स्वरूप को प्राप्त करेगा; क्योंकि यह दैवी सम्पद् परमकल्याण के लिये ही है और इसके विपरीत आसुरी सम्पद् नीच और अधम योनियों का कारण है। इसी आसुरी सम्पद् का हवन होने लगता है इसलिये यह यज्ञ है और यहीं से यज्ञ का आरम्भ है। दूसरे योगी 'ब्रह्माग्नौ' - परब्रह्म परमात्मरूप अग्नि में यज्ञ के द्वारा ही यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं। श्रीकृष्ण ने आगे बताया- इस शरीर में अधियज्ञ मैं हूँ। यज्ञों का अधिष्ठाता अर्थात् यज्ञ जिसमें विलय होते हैं, वह पुरुष मैं हूँ। श्रीकृष्ण एक योगी थे, सद्गुरु थे। इस प्रकार दूसरे योगीजन ब्रह्मरूपी अग्नि में यज्ञ अर्थात् यज्ञस्वरूप सद्गुरु को उद्देश्य बनाकर यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं, सारांशतः सद्गुरु के स्वरूप का ध्यान करते हैं।

श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति। शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ।। 26 ।।

अन्य योगीजन श्रोत्रादिक (श्रोत्र, नेत्र, त्वचा, जिह्वा और नासिका) इन्द्रियों को संयमरूपी अग्नि में हवन करते हैं अर्थात् इन्द्रियों को विषयों से समेटकर संयत कर लेते हैं। यहाँ आग नहीं जलती।

क्रमशः...

।। चाणक्य नीति ।।

♦♦♦

अनृत साहस मूढता, कपटरु कृतघन आइ ।
निरदयतारु मलीनता, तियमें सहज रजाइ ॥

झूठ बोलना, एकाएक कोई काम कर बैठना, नखरे करना, मूर्खता करना, ज्यादा लालच रखना, अपवित्र रहना और निर्दयता का बर्ताव करना ये स्त्रियों के स्वाभाविक दोष हैं।

♦♦♦

नियम विरुद्ध है वेनेजुएला में अमेरिकी कार्रवाई

– आनन्द कुमार

वेनेजुएला में अमेरिकी सैन्य अभियान ने न केवल उस देश की राजनीतिक स्थिरता को झकझोर दिया है, बल्कि पूरी दुनिया में अनिश्चितता की स्थिति पैदा कर दी है. वेनेजुएला के अपदस्थ राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के विरुद्ध अमेरिकी कार्रवाई का उद्देश्य ड्रग तस्करी और गैंगवार पर अंकुश लगाना बताया जाता है, पर एक बड़ा कारण शायद वेनेजुएला के तेल भंडार पर नियंत्रण हासिल करना भी है. वेनेजुएला चीन को तेल दे रहा था. जबकि अमेरिका नहीं चाहता था कि लैटिन अमेरिका में चीन की पैठ बढ़े.

अमेरिका ने मादुरो के साथ उनकी पत्नी को भी गिरफ्तार किया, क्योंकि ड्रग्स की अवैध तस्करी में उन पर भी आरोप हैं. मादुरो के खिलाफ अमेरिकी कार्रवाई का उद्देश्य यदि ड्रग कार्टेल को दंडित करना है, तो भी यह तरीका चिंतनीय है, जिसमें एक संप्रभु देश के निर्वाचित राष्ट्रपति को बिना किसी अंतरराष्ट्रीय जनादेश के गिरफ्तार किया गया और देश से बाहर ले जाया गया. यह घटना वैश्विक कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों पर गंभीर सवाल खड़े करती है. किसी संप्रभु देश के निर्वाचित राष्ट्रपति को बिना अंतरराष्ट्रीय सहमति और कानूनी प्रक्रिया के बाहर ले जाना अंतरराष्ट्रीय कानून और प्रत्यर्पण नियमों का उल्लंघन है. यह घटना एक खतरनाक उदाहरण पेश करती है कि कैसे शक्तिशाली देशों की एकतरफा कार्रवाई वैश्विक नियमों को कमजोर कर सकती है।

अमेरिका ने मादुरो को गिरफ्तार कर उन्हें न्यूयॉर्क ले जाने के बाद उनके खिलाफ ड्रग और हथियारों से संबंधित आरोप लगाये हैं. ट्रंप का दावा है कि वेनेजुएला पर उनका अस्थायी नियंत्रण क्षेत्र की सुरक्षा को मजबूत करेगा तथा अमेरिकी तेल कंपनियों को देश में संचालन की अनुमति देगा. लेकिन इस कदम की वैधता और कानूनी आधार पर गंभीर सवाल उठते हैं. अमेरिकी कांग्रेस की स्पष्ट मंजूरी के बिना अंजाम दिये गये इस अभियान ने अंतरराष्ट्रीय कानून और संप्रभुता के नियमों को चुनौती दी है. ट्रंप प्रशासन ने हालांकि इसे सुरक्षा और न्याय के दृष्टिकोण से आवश्यक बताता है, पर लंबी अवधि में इस कार्रवाई का प्रभाव क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक राजनीतिक संतुलन पर पड़ सकता है. वेनेजुएला की स्थिति फिलहाल तनावपूर्ण है। राष्ट्रपति मादुरो की अनुपस्थिति में उपराष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिग्ज को सुप्रीम कोर्ट ने अस्थायी राष्ट्रपति नियुक्त किया है, पर रोड्रिग्ज ने स्पष्ट किया है कि मादुरो ही देश के वैध राष्ट्रपति हैं. उन्होंने अमेरिकी कार्रवाई की तीखी आलोचना करते हुए मादुरो की तत्काल रिहाई की मांग की है. स्थानीय जनता ने हालांकि फिलहाल बड़े स्तर पर विरोध प्रदर्शन नहीं किया है. ऐसा शायद इसलिए कि लोग अभी इस अप्रत्याशित घटना को समझने की कोशिश कर रहे हैं. प्रवासी समुदाय ने हालांकि अमेरिकी कार्रवाई का जश्न मनाया, पर अधिकांश लोग भविष्य के प्रति अनिश्चित हैं. वेनेजुएला चूंकि पहले से ही गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रहा है, ऐसे में, इस घटनाक्रम से देश में सामाजिक और राजनीतिक तनाव बढ़ सकता है।

अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया इस मामले में स्पष्ट रूप से विभाजित रही है. संयुक्त राष्ट्र ने अमेरिकी कार्रवाई की निंदा करते हुए इसे अंतरराष्ट्रीय कानून के उल्लंघन के रूप में देखा है. रूस, चीन, तुर्की और कई अन्य देश इसकी आलोचना कर चुके हैं. जो देश मादुरो के शासन से असहमत थे, उन्होंने भी अमेरिकी गिरफ्तारी की प्रक्रिया को मंजूरी नहीं दी. यूरोपीय संघ ने मादुरो के शासन की वैधता नकारी है, पर अमेरिकी कार्रवाई को अंतरराष्ट्रीय नियमों के विरुद्ध बताया है. लैटिन अमेरिकी देशों ने अमेरिका को चेताया है कि उसकी कार्रवाई क्षेत्रीय स्थिरता और शांति के लिए खतरा है. हालांकि इस्राइल जैसे कुछ देशों ने मादुरो के हटने का स्वागत किया है. पर वैश्विक प्रतिक्रियाओं से स्पष्ट है कि अमेरिका का एकतरफा सैन्य हस्तक्षेप कई देशों के लिए अस्वीकार्य है और यह अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक संतुलन को चुनौती देता है. वेनेजुएला संकट का क्षेत्रीय और वैश्विक प्रभाव भी गंभीर है। लैटिन अमेरिका में शांति और स्थिरता खतरे में है. कैरीबियाई हवाई क्षेत्र पर अमेरिकी प्रतिबंधों और हवाई

यातायात में व्यवधान ने क्षेत्रीय परिवहन और अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है. पड़ोसी देशों ने सीमा सुरक्षा बढ़ायी है और मानवीय संकट की संभावना के लिए तैयार हैं. वेनेजुएला में दीर्घकालिक अस्थिरता क्षेत्रीय सुरक्षा को जोखिम में डाल सकती है. वेनेजुएला में अमेरिकी कार्रवाई ने वैश्विक राजनीति, अंतरराष्ट्रीय कानून और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए नये प्रश्न खड़े किये हैं. इस घटना से यह भी स्पष्ट है कि वैश्विक राजनीति में शक्ति और कानून के बीच हमेशा संघर्ष रहता है. अमेरिका ने सैन्य शक्ति का प्रदर्शन किया, पर कानूनी और नैतिक दृष्टिकोण से उसे व्यापक आलोचना का सामना करना पड़ा।वेनेजुएला का संकट यह संदेश देता है कि किसी भी देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप का तरीका और परिणाम सिर्फ क्षेत्रीय नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी गंभीर प्रभाव डालते हैं. ऐसे समय में अंतरराष्ट्रीय कूटनीति, संयम और नियम आधारित व्यवस्था का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है. वेनेजुएला के घटनाक्रम ने भारत के सामने भी जटिल कूटनीतिक दुविधा खड़ी कर दी है. भारत ने पिछले वर्षों में अमेरिका के साथ अपने व्यापारिक और सुरक्षा संबंध मजबूत किये हैं, पर यह कार्रवाई भारत के लंबे समय से निभाये गये नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण के सिद्धांतों से टकराती है. भारत के लिए यह प्रश्न उठता है कि उसे अपने रणनीतिक संबंधों, वैश्विक न्याय, संप्रभुता और गैरहस्तक्षेप के अपने नैतिक सिद्धांतों में संतुलन कैसे बनाये रखना है. भारत और वेनेजुएला के बीच संबंध अब सीमित हैं और दोनों देशों के बीच व्यापार और ऊर्जा सहयोग पर आधारित हैं, पर अमेरिका के इस कदम ने वैश्विक दक्षिण और अंतरराष्ट्रीय कानून के दृष्टिकोण से भारत की भूमिका को चुनौती दी है। अमेरिका के साथ रणनीतिक संबंध और व्यापारिक हितों को देखते हुए भारत को सावधानीपूर्वक संतुलन बनाये रखना होगा. साथ ही, उसे वैश्विक दक्षिण और अंतरराष्ट्रीय कानून के दृष्टिकोण से अपने नैतिक सिद्धांतों का पालन भी करना होगा. वेनेजुएला की स्थिति पर चिंता जताते हुए हमारी सरकार ने अपने नागरिकों को वहां की गैरजरूरी यात्रा से बचने की सलाह दी है, साथ ही, वहां मौजूद भारतीय समुदाय से अत्यधिक सावधानी बरतने और आवाजाही सीमित रखने के लिए कहा है. भारत जैसे देशों के सामने अपनी रणनीतिक, नैतिक और कानूनी जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाते हुए अंतरराष्ट्रीय नियमों के पक्ष में अपना नैतिक नेतृत्व जारी रखने की चुनौती है।

प्रेरक प्रसंग — सच्चा राजा

एक बड़ा महत्वाकांक्षी राजा था। उसने छोटे-बड़े बहुत-से राज्य जीते। चारों ओर उसकी दुंदुभि बजने लगी। मारे अहंकार के उसका दिमाग आसमान पर चढ़ गया। वह मानने लगा कि उसके मुकाबले का कोई भी राजा नहीं है।

एक बार की बात है। वह छोटे-छोटे राज्यों को जीतकर अपने देश को लौट रहा था। रास्ते में एक गांव पड़ा। वहां उसने देखा कि एक साधु अपनी कुटिया के पास बैठा मस्ती से गा रहा है। उसकी मस्ती को देखकर राजा वहां रुक गया।

उसने साधु से पूछा, तुम कौन हो ?

साधु ने कहा, राजा!

राजा ने यह सुनकर सोचा कि शायद साधु ने उसके सवाल को ठीक से सुना नहीं। कहां फकीर और कहां राजा! उसने अपने सवाल को दोहराया, तुम कौन हो ?

उत्तर वही मिला, राजा।

राजा ने कहा, राजा के पास तो राज्य और खजाना होता है। तुम्हारा राज्य और खजाना कहां है ?

साधु ने राजा की ओर देखा। फिर बोला, देखो, मैंने अपने मन को जीत लिया है। इसलिए मेरा मन मेरा राज्य है। जहांतक खजाने की बात है, प्रकृति ने चारों ओर खजाना-ही-खजाना फैला रखा है। वह सब मेरा ही तो है।

राजा ने समझा कि उसका कहना सही था। राज्यों को जीतना आसान है, पर मन को जीतना कठिन है। इसलिए सच्चा राजा मैं नहीं, वह साधु है।

आपका पत्र मिला

प्रतिभा को तराशना भी जरूरी है

यह प्रश्न हमेशा मौजूद रहा है कि भारत पदक तालिका में अपनी मौजूदा दयनीय स्थिति से कैसे उबरे। बिंद्रा समिति इसका मूलमंत्र बताया है कि खेल प्रशासन को पेशेवर बनाना, जिसमें जवाबदेही तय करने की करने की ठोस व्यवस्था हो। सिर्फ प्रतिभा की बदौलत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेल में सफलता कभी- कभार ही मिल सकती है। निरंतरता लानी हो, तो उसका राज पेशेवर नजरिया है। ओलिंपिक या अन्य खेल आयोजनों में पदक जीतने के ऐसे नजरिए से संचालित सिस्टम अपरिहार्य है। यह सार-संक्षेप है कि 170 पेज की रिपोर्ट का, जिसे ओलिंपिक खेलों में भारत के पहले व्यक्तिगत स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा के नेतृत्व वाली कमेटी ने तैयार किया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में भारत का प्रदर्शन कैसे बेहतर हो, इस पर सुझाव देने के लिए यह समिति केंद्रीय खेल मंत्रालय ने बनाई थी। भारत ने 2036 के ओलिंपिक खेलों की मेजबानी का दावा पेश किया हुआ है। संभवतः उसके मद्देनजर सरकार ने विशेष तैयारी की जरूरत महसूस की है। प्रतिभाओं को तराशने के लिए समिति ने नेशनल काउंसिल फॉर स्पोर्ट्स एजुकेशन एंड कैपेसिटी बिल्डिंग नाम की संस्था बनाने का सुझाव दिया है। साथ ही खेल प्रशासन से जुड़ी मौजूदा संस्थाओं को पेशेवर बनाने की सिफारिश की है। सार यह है कि समिति ने देश में खेल ढांचा निर्मित करने की वकालत की है। यह नजरिया उससे बिल्कुल अलग है, जिसके तहत 2016 में नीति आयोग ने टॉप्स योजना (टारगेट ओलिंपिक्स पॉडियम स्कीम) बनाई थी। सोच यह थी कि व्यक्तिगत प्रतिभाओं को पहचान कर उन्हें ओलिंपिक पदक के लिए तैयार किया जाए। इसके तहत 2024 तक 50 पदक जीतने का लक्ष्य रखा गया, लेकिन असल में छह पदक मिले, जिनमें स्वर्ण पदक एक भी नहीं था। तो अब बिंद्रा समिति ने नजरिया बदलने का सुझाव दिया है। क्या इस पर अमल होगा? कहना कठिन है, क्योंकि पेशेवर नजरिया और जवाबदेही जैसे शब्द फिलहाल हमारे शब्दकोश में नहीं हैं।

एक नागरिक
वाया ई-मेल

इस पेज पर प्रकाशित लेखकों के विचार निजी हैं। समाचार पत्र से इनका कोई लेना-देना नहीं है।
आपके विचार व सुझाव भी आमंत्रित हैं। **संपादक,**
स्वतंत्र भारत
1, जॉपलिंग रोड,
लखनऊ-226001
E-mail : swatantrabharat77@gmail.com